

ॐ श्री गणेशाय नमः

ॐ गुरुभ्यो नमः

श्री वाराही देव्यै नमः

(कूर्माञ्चलीय रीति के अनुसार)

बृहद् वार्षिक व्रत पूजा दर्पण

सम्पादक

पं० घनानन्द जोशी आचार्य

भवली (नैनीताल) उत्तराञ्चल

प्रकाशक

हिमालय प्रकाशन

मूल्य रु० ४०/-

श्री गुरुभ्यो नमः

ॐ श्री गणेशाय नमः

श्री वाराहो नमः

कूर्माचलीय रीति के अनुसार—

बृहद्

वार्षिक व्रत पूजा दर्पण

(वर्ष भर की सभी पूजा विधियाँ)

विशेषता—गृह प्रवेश, वास्तु का नक्शा, ग्रहस्थापन पूजन कुश कण्डिका, हवन विधि, यज्ञोपवीत—प्रतिष्ठा, दुर्गा पूजा की विशेष—विधि, दुर्गा सप्तशती द्वारा होम विधि महामृत्युञ्जय जप विधि, षष्ठी, नामकर्म, अन्नप्राशन, काकविष्ठा, प्रथम रजोदर्शन शान्ति, बालक के बाल काटने व कान छेदने की विधि, नवग्रहों के नग जपदान आदि अनेक प्रार्थना, सरल स्तुति, आरती आदि।

सम्पादक :—पं० घनानन्द जोशी आचार्य, पो०—भुवाली, जिला—नैनीताल, उ० प्र०

प्रकाशक :—हिमालय प्रकाशन

प्रथम संस्करण

विषय—सूची

प्रातः स्मरण	५	अर्घ स्थापन	१८	अधि देवता ६	४०
नित्य स्नान संकल्प	८	सूर्यार्घदान	१८	प्रत्यधि देवता ६	४०
आवश्यकरीय	१०	मुख्य संकल्प	१६	नवग्रह स्तोत्रम्	४२
सुखपूर्वक प्रसव मंत्र	११	गणपति पूजन	२०	रक्षा बन्धन मंत्र	४२
बगलामुखी मंत्र	११	शंख घण्टा पूजन	२३	हवन विधि	४३
लक्ष्मी प्राप्ति साधन	१२	मातृ पूजा	२४	आचार्य वरण	४३
पिता पुत्र एक नक्षत्र	१२	प्रधान दीप पूजा	२५	अग्नि स्थापन	४३
त्रिखल शन्ति	१२	वसोर्धार मंत्र	२६	ब्रह्मा वरण	४३
गर्भ से दौत	१३	आभ्युदयिक क्रम	२८	कुश कण्डिका	४४
सामग्री सूची	१४	आभ्युदयिक विधि	२८	द्रव्य त्याग संकल्पः	४५
आचमन मंत्र	१५	ब्राह्मण वरण	३३	अग्नि पूजन	४५
तिलक मंत्र	१५	पुण्याह वाचन	३३	हवन विधिः	४६
पौराणिक आचमन मंत्र	१५	कलश स्थापन	३५	देवानां ध्यान मंत्राः	४६
स्वस्तिवाचन	१५	कंकण रक्षा विधि	३८	नव ग्रह समिधाः	४७
सर्व देव पुष्पाञ्जलि	१७	नव ग्रह स्थापन (संक्षिप्त)	४०	नव ग्रह विनियोगाः	४८

नव ग्रह मंत्राः	४८	दुर्गा सप्तशती से होम विधि	५६	उदक कुम्भ दानम्	८२
प्रायश्चित्त होम	४९	देवी अष्टोत्तरी	५८	वट सावित्री पूजा	८२
पूर्ण पात्र दान	५०	नवरात्र विधि	६०	हरकाली व्रत पूजा	८५
दिक्पाल बलिः	५०	दुर्गा पूजा	६०	रक्षाबन्धन	८६
क्षेत्रपाल विधिः	५१	दुर्गा अष्टोत्तरी	६४	यज्ञोपवीत-प्रतिष्ठा (रक्षा बन्धन)	८६
तर्पण मार्जन	५१	देवी स्तुति	६६	संकष्ट हर चतुर्थी पूजा	९०
पूर्णाहुति	५२	अपराध क्षमापन	६८	चन्द्रमा का पूजन (विनियोग मंत्र)	९५
मार्जन विनियोग	५२	कुमारी पूजनम्	७१	अमुक्ता भरण सप्तमी पूजा	९६
त्र्यायुष विनियोग	५३	रामनवमी	७३	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पूजा	९६
अग्नि विसर्जन मंत्र	५३	वैशाख स्नानम् (मधुसूदन पूजा,	७५	हरितालिका व्रत पूजा	१०५
देव विसर्जन मंत्र	५३	लक्ष वर्तिका)		(कथा सहित हिन्दी में)	
घृतच्छाया	५३	संकष्ट नाशन स्तोत्र	७६	ऋषि पंचमी	१०६
अभिषेक मंत्राः	५४	अक्षय तृतीया घट दान	८०	दूर्वाष्टमी	१११
तिलपात्र दानम्	५५	शक्तुदान (सत्तुदान)	८०	अनन्त चतुर्दशी	१११
अच्छिद्र विधिः	५५	अश्वत्थ मंत्र	८१	कार्तिके आकाश दीपदान	११४
अविनयमपनय आरती	५६	गंगादशहरा	८१	कार्तिक स्नानम्	११४
				कार्तिके राधा दामोदर पूजा	११५

महालक्ष्मी पूजा	११६	सत्यनारायण पूजा विधि	१५०	चूड़ाकरणम् (बालक के बाल)	१८५
श्री सूक्त	१२०	भैरव पूजन (भैरव अष्टोत्तरी)	१५७	काटने की विधि	
लक्ष्मी सूक्त	१२१	पीपल पूजा	१६१	अथ कर्ण वेध विधि (बालक के	
गोवर्धन पूजा	१२२	सन्तान गोपाल जप विधि	१६२	कान छेदन की विधि)	१८८
यमदीपदान	१२२	पुत्रेष्टिमंत्र	१६२	प्रथम रजो दर्शन शान्ति	१८६
तुलसी पूजन	१२३	महामृत्युञ्जय जप विधि	१६३	काक विष्टा शान्ति विधि:	१६१
मार्ग शीर्ष स्नान	१२५	मंगल व्रत पूजा	१६४	गृह प्रवेश (वास्तु पूजा)	१६३
पौष मासे सूर्य पूजा	१२६	नवग्रहों के नग, जप तथा दान	१६५	ध्वजा छत्र घण्टी चढ़ाना	२०३
माघ स्नान विधि	१२७	नवग्रह पीठ	१६७	अमावास्या तथा संक्रान्ति पर्व	२०४
आमलकी एकादशी पूजा	१२८	पंचगव्य	१६८	(नित्य दान विधि:)	
(धात्री पूजन)		षष्ठी महोत्सव	१६६	सर्वदेव स्थापन (प्रतिष्ठा विधि)	२०५
गोदान	१२६	षष्ठीस्तोत्रम्	१७५	पुरुषसूक्त	२०६
शय्या दान	१३६	नामकर्म	१७६	रुद्रसूक्त	२०७
पार्थिव पूजा (शिवाचन)	१३८	अन्नप्राशन	१८०	वास्तु वेदी	२०८
रुद्राभिषेक क्रम	१४२	वर्ष गाँठ (जन्मवार)	१८२		
शिव पंचाक्षर स्तोत्र	१४८	भूमिदान	१८४		

प्रातः स्मरणम्

ॐ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ गरुडध्वज ।
उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्ये मंगलं कुरु ॥१॥

मंगलं भगवान् विष्णुमंगलं गरुडध्वजः ।
मंगलं पुण्डरीकाक्षो मंगलायतनो हरिः ॥२॥

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती ।
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कर दर्शनम् ॥३॥

(पृथ्वी पर पैर रखना) समुद्र वसने देवि पर्वतस्तनमण्डले ।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्श क्षमस्व मे ॥४॥

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमि सुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहुकेतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥५॥

भृगुर्वशिष्ठः क्रतुरंगिराश्च मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः ।
रैभ्यो मरीचिशच्यवनश्च दक्षः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥६॥

सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः सनातनोऽप्यासुरिपिंगलौ च ।
सप्तस्वराः सप्त रसा तलानि कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥७॥

अश्वत्थामा बलिव्यासो हनुमाँश्च विभीषणः ।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः ॥८॥
सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम् ।
जीवेद् वर्षशतं सोऽपि सर्व व्याधि विवर्जितः ॥९॥

पुण्यशलोको नलो राजा पुण्यशलोको युधिष्ठिरः ।
पुण्यशलोका च वैदेही पुण्यशलोको जनार्दनः ॥१०॥
अहल्या द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा ।
पंचकं ना स्मरेन्नित्यं महा पातक नाशनम् ॥११॥

ॐ सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते ॥१२॥
अयोध्या मथुरा माया काशी कांची ह्यवन्तिका ।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्ष दायिका ॥१३॥

हे जिहे रससारज्ञे सर्वदा मधुरप्रिये ।
नारायणाख्य पीयूषं पिब जिहे निरन्तरम् ॥१४॥

गंगा गंगेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि ।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो विष्णु लोकं स गच्छति ॥

ॐ अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

प्रह्लाद नारद पराशर पुण्डरीक व्यासाम्बरीष शुक शौनक भीष्म दाल्भ्यान् ।
रुक्मांगदार्युन वशिष्ठ विभीषणादीन्पुण्यानिमान् परम भागवतान्नमामि ॥

शिवहरे शिवराम सखे प्रभो त्रिविधाताप निवारण हे विभो ।
अज जनेश्वर यादव पाहि मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥

ॐ आपदामपहर्तारं दातारं सर्व सम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥
श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव ॥

श्री घनानन्दाचार्य रचित "दुर्गा भक्ति मानस" से उद्धृत ध्यान-
हे चण्डी मधु कैटभादि मथनी हे शूल हस्ताशिवे,
मैया संकट हारिणी जननि हे विध्येश्वरी हे उमे।

माता खप्पर धारिणी त्रिनयना मुण्डेश्वरी कालिके,
वाञ्छा पूरय रोग शोक हरदे जै जै सदा चण्डिके ॥१॥

नाना रूप सुरुषिता सुखप्रदा सामीप्य सायुज्यदा,
नाना धाम विराजिता परपदा पूज्या परा पापहा।

नाना नाम सुपूजिता सुफलदा सेव्या सदा सौख्यदा,
ध्येया सा भुवनेश्वरी जय महा लक्ष्मी नमो अम्बिका ॥२॥

अन्तर्बाह्य गता च या रिपुकृता बाधा सदा नाशिनी,
नाना क्लेश हरा महा दुःखहरा वरुणा मनो दायिनी।

या नित्या करुणामयी मतिमयीमाता महा मंगला,
सा पूज्या जगदीश्वरी भगवती वागीश्वरी शारदा ॥३॥

अथ नित्य स्नान संकल्पः—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुर्नमः परमात्मने श्री ब्रह्मपुराण पुरुषोत्तमाय, तत्सदत्र पृथिव्यां

जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्त्ते विष्णु प्रजापति क्षेत्रे हिमवत्पर्वतैक देशे (अमुकस्थाने तीर्थे वा) ब्रह्मणोऽहिनि द्वितीय परार्द्धे श्रीश्वेत वाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथम चरणे प्रभवादि षष्ठिसम्बत्सराणां मध्ये अमुक नाम सम्बत्सरे अमुकायने अमुक ऋतौ अमुकार्के अमुकमासे अमुकपक्षे अमुक वासरान्वितायाम् अमुक तिथौ अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुकराशिः अमुकशर्मा (वर्मा, गुप्तः, दासः) अहं श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलावाप्तये कायिक वाचिक मानसिक ज्ञाताज्ञात भक्ष्याभक्ष्य गम्यागम्य सकल पाप क्षयपूर्वकं कायशुद्ध्यर्थं शीतलोदकेन (तप्तोदकेन) प्रातः स्नानं करिष्ये । ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु ॥ ॐ अश्वक्रान्ते रथ क्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे । मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ॥ ॐ सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः । आयान्तु स्नानकालेऽस्मिन्दुरित क्षय कारकाः ॥

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतो पिवा । यः स्मरे त्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः ३ ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन ।

महेरणाय चक्षसे यो वः शिवतमो रसस्तस्यभाजयतेहनः उशतीरिवमातरः तस्माऽरंग मामवो यस्य क्षयाय जिवन्थ आपो जनयथा च नः ॥

ॐ पुनातु ॐ भूः पुनातु ॐ भुवः पुनातु ॐ स्वः पुनातु ॐ भूर्भुवः स्वः पुनातु । इस प्रकार मार्जन करके स्नान करे । सदा पहले दाहिना पैर धोवें । नहाकर स्नानांगतर्पण करें—(जल देवें)

१. ॐ भो देवास्तृप्यन्ताम्, ॐ भो ऋषयस्तृप्यन्ताम्, ॐ भो पितरस्तृप्यन्ताम् ॥

मंगलाचरणम्

वाराहीं विकटं नाथं नत्वा वाणीं गुरूस्तथा ।

स्मृत्यर्थमर्पयाम्यद्य पार्वती पुरुषोत्तमौ ।।

आवश्यक्रीय

आदरणीय सज्जनो,

यद्यपि वार्षिक व्रत पूजा की अनेक पुस्तकें प्रचलित हैं तथापि यह बृहद् वार्षिक व्रत पूजा दर्पण अनेक उपयोगी विषयों के समावेश से कितनी महत्वपूर्ण है ? इसका निर्णय स्वयं पाठक कर चुके हैं । इस पुस्तक की लोकप्रियता तथा भारी मांग ही इसका प्रमाण है । यह दूसरा संस्करण परिवर्द्धित व संशोधित है ।

कुछ शास्त्रीय विधि निषेध—गणेश जी को दूर्वा, मोदक, रक्त चन्दन सिन्दूर प्रिय है । तुलसी नहीं चढ़ती । दुर्गा देवी श्रृंगार प्रिय है । दूर्वा नहीं चढ़ती । महालक्ष्मी को द्रव्य, गन्ना, दीपमाला प्रिय है । शंख प्रिय नहीं है, विष्णु को स्तोत्र मंत्र जौ तुलसी श्वेत चन्दन प्रिय है । अक्षत नहीं चढ़ते । शंकर जी को भस्म रुदाक्ष बिल्वपत्र धतूरा पारा (गरल) प्रिय है । केवड़ा नहीं चढ़ता, फल, फूल अधोमुख न चढ़ावें । दूर्वा अपनी ओर मुख करें । बिल्वपत्र अधोमुख चढ़ावें । तिलाज्य होम सर्वत्र प्रशस्त है । अधिदेवता प्रत्यधिदेवता ढाक की समिधा प्रिय है । गृह प्रवेशादि में वास्तु देवताओं को औदुम्बर (गूलर) की समिधा प्रिय है । सर्वत्र हवन में जौ कम हों । तिलाधिक्ये भवेत् लक्ष्मीः यवाधिक्ये दरिद्रता । घी अधिक होने से सब बन्धनों से मुक्ति होती है । शान्तिक कर्मों में चार कुश का पवित्र

अनामिका में धारण करके हवन करे । हवन में पत्नी दाहिनी ओर बैठे । ब्राह्मण पाद प्रक्षालने तथा कन्यादाने पत्नी दक्षिणतः शुभा ॥

सुवर्ण रजत ताम्रादि की मूर्ति या प्रतिमा के अभाव में पुंगीफल या नारिकेल में आवाहन करे । दध्यक्षत पुंजों में नवग्रह आवाहन की उत्तम विधि है । फोटो कलेण्डर में आवाहन न करें । मन्दिर तथा मण्डप का मुख पश्चिम को करें । देवता स्थापन में देवानां हि मुखं कार्यं पश्चिमायां सदा बुधैः । घर के मन्दिर या मण्डप के ईशान कोण में अष्टदल कमल बनाकर पुण्याह वाचन पूर्वक जौ (हरेला) बोवे । आभ्युदयिक में आमन्त्रण के चार भागों में प्रत्येक में युग्म (दो) ब्राह्मण भोजन प्रमाण तण्डुलादि का विधान है, दीपक का मुख पश्चिम दक्षिण न करें । पूर्व मुख उत्तम है । श्रद्धापूर्वक जप पूजा व्रत यज्ञ का फल सत है ।

सर्व प्रकार शुभ हेतु—सर्वोत्तम मंत्र—ॐ सर्वमंगल मागल्ये शिवेसर्वार्थ साधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ॥

इस मंत्र से सम्पुटित दुर्गा पाठ कल्याणकारी है ।

सुखपूर्वक प्रसव हेतु मंत्र—

ॐ मुक्ता पाशा विपाशाश्च मुक्ता सूर्येण रश्मयः । मुक्तः सर्वभयाद् गर्भं एहोहि माचिर स्वाहा इस मंत्र से जल अभिमंत्रित (१०८ बार) करके पिलावें ।

सिद्ध बगलामुखी जप मंत्र—

ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्रीं ॐ स्वाहा ।

यह ३६ अक्षर का मंत्र शुद्ध है।

लक्ष्मी प्राप्ति साधन छन्दः—इदं मे मंत्रस्य ब्रह्मा—ऋषिरनुष्टुभ छन्दः श्रीदेवता श्रीकामे जपे विनियोगः। (जप संख्या)

मंत्र—ॐ इदं मे ब्रह्म चक्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम्।

मयि देवा दधत श्रियमुत्तमां तस्यै ते स्वाहा ॥

यजुर्वेद ॥३२॥ १६॥ जपान्ते दशांश होमः।

पिता पुत्र एक नक्षत्र जन्म

१. यदि पिता पुत्र (या दो सगे भाई) एक नक्षत्र में उत्पन्न हो जाय तो गोमुख प्रसव करके शान्ति करें। गणेशादि पूजन करके नान्दी श्राद्धादि पूर्वांग कर्म करें। हवन वेदी के ईशान में कलश स्थापन करके दो रक्त वस्त्र आच्छादित करें। कलश के ऊपर जन्मनक्षत्र की सुवर्ण प्रतिमा स्थापित करें। (नक्षत्र के स्वामी की प्रतिमा) पूजन करें। हवन करें। (नक्षत्र के मंत्र से) अभिषेकादि करके प्रतिमा दान, गोदान करें।

२. यदि तीन कन्या के बाद पुत्र जन्म हो या तीन पुत्रों के बाद कन्या का जन्म हो तो शान्ति अवश्य करनी चाहिये। गणपति पूजनादि पूर्वांग कर्म करके कलश में पांच देवताओं की सुवर्ण प्रतिमा में आवाहन पूजन करें। (पाँच कलश)

१. ब्रह्मा, २. विष्णु, ३. महेश, ४. रुद्र, ५. इन्द्र ।।

१. ॐ ब्रह्म यज्ञानम्० । २-इदं विष्णु० । ३. त्र्यम्बकं यजामहे० । ४-नमस्तेरुद्र० ५. त्रातारमिन्द्रवतार० इन मंत्रों से पूजन करके समिधा तिलाज्यादि से १०८ या २८ आहुति प्रत्येक मंत्र से हवन करें। अभिषेकादि कर्म करके गौ तथा सुवर्ण प्रतिमादान एवं भोजन करावें। घृतच्छाया आदि कर्म पूर्ण करें।

३. यदि गर्भ से ही दौत निकले हों या पहले ऊपर के दौत निकलें तो शान्ति विधान जरूरी होता है। पूर्वांग कर्म करते हैं। शिशु को चौकी पर बैठाकर पंचगव्यस्नान तथा हल्दी पीली सरसों (सर्वौषधिस्नान) से गंगादि पावन जलों से स्नान करावें। चौकी पर स्वस्तिक का मांगलिक चिह्न अंकित करें। पैर के नीचे सुवर्ण पीस दबाकर अर्थात् सुवर्ण पीठ पर बैठाकर पूर्वाभिमुख स्नान तथा कलश स्थापन करें। सुवर्ण प्रतिमा या दध्याक्षत पुंजों में छः देवताओं का आवाहन पूजन करें। १. धाता, २. अग्नि, ३. सोम, ४. वायु, ५. पर्वत, ६. केशव ।। ॐ धात्रे नमः, ॐ अग्नये नमः, ॐ सोमाय नमः ॐ वायवे नमः, ॐ पर्वतेभ्यो नमः, ॐ केशवाय नमः। धाता को चरु तथा अग्नि आदि पाँच देवताओं को घृत आहुति दें। हवन पूर्ण करके अभिषेकादि कर्म करें। सप्ताह पर्यन्त ब्राह्मण भोजन करावें। आठवें दिन सुवर्णादि प्रतिमा दान करते हैं। छठे महीने में दौत निकलें तो बृहस्पति के मंत्र से पीपल की समिधा का हवन करें। प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ पंचम मास में दौत निकलने पर भी उपरोक्त शान्ति विधान आवश्यक है। आदरणीय सज्जनों, माता भगवती की अदभुत प्रेरणा से निकट भविष्य में हमारी स्वरचित "श्री दुर्गाभक्ति मानस" पुस्तक आपके कर कमलों में पहुँचेगी। उसके कुछ अंश पूजा पाठा की पुस्तकों में छापे हैं। यह पुस्तक दोहा चौपाई छन्द में लिखी है।

सामग्री सूची

श्रीफल	सप्तमृतिका	गुगुल	चन्दन चूरा	इत्र सेन्ट	पंच पल्लव
रोली	गंगा की रेंती	शहद	मखाने	छाता जूता	समिधा ६ प्रकार
रक्तचन्दन	गंगा जल	घी	सिन्दूर	नौरंग के वस्त्र ६	जायफल
श्वेत चन्दन	गोले	तिल का तेल	शृंगार सामग्री	नौ अनाज	कच्चा नारियल
कुंकुम	सतनाजा	जौ तिल	चुनरियाँ ६+१	चावल पूर्णपात्र	कस्तूरी
केसर	गोलोचन	हवन सामग्री	छैल छबीला	चावल आभ्युदयिक	निम्ब
रुई	सर्वोषधि	भोजपत्री	मोथा गिलोय	चावल दान हेतु	सर्पकंचुकी
कपूर	जनेऊ	कमल गट्टे	अनार	कुशा दूर्वा पुष्प	बच
कच्ची हल्दी	पाँचों रंग	इन्द्र जौ	दाड़िम के फूल	गन्ना	बन हल्दी
पीली सरसों	अबीर गुलाल	काला अगर	पारा, धतूरा	केले के स्तम्भ	दूध दही
पान सुपारी	गुड़	वस्त्र लाल	सुवर्ण प्रतिमा	सूजी	गोबर
लौंग	साबुत उड़द	वस्त्र सफेद	थाली लोटा	दीये छोटे बड़े	गोमूत्र
छोटी इलायची	रक्षा का तागा	धातियाँ	कांसे की कटोरी	घट स्थापनार्थ-	पुष्पमाला
पंचरत्न	मिश्री	कुर्ते वगैरह	वरण के वस्त्र	कलश	ध्वजा दण्ड
पंचमेवा	शक्कर	आसन	ध्वजा	शय्यादान सामग्री	
पंच मिठाई	अगरबत्ती	चमकचूरा	महाध्वजा	बेलपत्री	
पंचफल	धूप, समुद्रफेन	बतासे	घण्टी घुंघरू	बेल फल	

पंचफल	धूप, समुद्रफेन	बतासे	घण्टी घुंघरू	बेल फल
			१४	

ॐ श्री गणेशाय नमः

बृहद् वार्षिक व्रत पूजा दर्पण

आचमन मंत्र—ॐ ऋग्वेदाय स्वाहा, ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा, ॐ सामवेदाय स्वाहा, ॐ अथर्व वेदाय नमः ॥ दीपं प्रज्वाल्य तिलकम्—ॐ भद्रमस्तु शिवं चास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु । रक्षन्तु त्वां सदा देवाः सम्पदः सन्तु सर्वदा ॥ सपत्ना दुर्ग्रहाः पापा दुष्ट सत्वाद्युपद्रवाः । तमाल पत्र मालोक्य निष्प्रभावा भवन्तु ते ॥ अक्षताः पान्तु ॥ स्त्रीणां तिलकः ॐ श्रीश्चतै लक्ष्मीश्च पत्न्या व्वहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यातम् । इष्णान्निषाण मुम्म ऽऽषाण सर्व लोकम्मयिषाण ॥ सौभाग्यवती भव ॥ बालकानां तिलकः—यावद् गंगा कुरुक्षेत्रे यावच्चन्द्रार्क मेदिनी, यावद् रामकथा लोके तावद् जीवतु बालकः ॥ आयुष्मान् भव ॥ कन्या तिलकः—जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी । दुर्गाक्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तु ते ॥

अथ पौराणिक आचमनमंत्र—ॐ केशवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः । ॐ माधवाय नमः । ॐ गोविन्दाय नमः ।

स्वस्तिवाचनम्

ॐ स्वस्ति नो मिमीता मश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः । स्वस्ति पूषाऽसुरो दधातुनः स्वस्ति द्यावा पृथिवी सुचेतुना ॥ १ ॥ स्वस्तये वायुमुपब्रुवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः । बृहस्पतिं सर्वगण ८ स्वस्तये स्वस्तयऽआदित्यासो भवन्तु नः ॥ २ ॥ विश्वेदेवानोअद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये देवाऽअभवन्त्वृभवः

स्वस्तये स्वस्तिनो रुद्रः पातवँ हसः ।।३।। स्वस्ति मित्रा वरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति, स्वस्तिनऽइन्द्रश्चाग्निश्चस्वस्ति
नो अदितये कृधि ।।४।। स्वस्ति पन्था मनुचरेम सूर्या चन्द्रमसाविव । पुनर्ददताघ्नता जानता संगमे महि ।।५।।
स्वस्त्ययनं तार्क्ष्यमरिष्ट नेमिं महद् भूतं वायसं देवतानाम् । असुरघ्नमिन्द्र सखं समत्सु बृहद्यशो नावमिवारुहेम ।।६।।
अंहो मुच मां गिरसं हयं च स्वस्त्यात्रेयं मनसा च तार्क्ष्यं प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये स्वस्ति संवाधेष्वभयन्नोऽस्तु ।।७।।

ॐ आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो दध्यासोऽपरीतासऽ उद्भिदः । देवानो यथा सदमिदवृधेऽसन्न
प्रायुवोरक्षितारो दिवे दिवे ।।९।। देवानाम्भद्राः सुमति ऋजूयतां देवानां रातिरभिनो निवर्तताम् । देवानां
सकथ्यमुपसेदि मा वयं देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ।।१२।। तान्पूर्वया निविदा हूमेह व्वयम् । भगमित्रमदितिन्दक्ष-
मस्त्रिधम् । अर्यमणं वरुण ८ सोममश्विना सरस्वतीनः सुभगामयस्करत् ।।१३।। तन्नोव्वातो मयो भुव्वातु
भेषजन्तन्माता पृथिवीतत्पिताद्यौ । तद् ग्राबाणः सोम सुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतन्धिष्यायुवम् ।।१४।।
तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिं धियत्रिजन्मवसे हूमेह व्वयम् । पूषानो यथा व्वेदसामसद् वृधे रक्षितापायुरदब्धः
स्वस्तये ।।१५।। स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाव्विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽरिष्ट नेमिः स्वस्तिनो
बृहस्पतिर्दधातु ।।

पृषदश्वा मरुतः पृशिनमातरः शुभं य्यावानो व्विदथेषु जग्मयः । अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो व्विश्वेनो
देवाऽअवसागमन्निह ।।१७।। भद्रकर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँ सस्तनूभिर्व्यसे
महि देवहितं यदायुः ।।१८।।

ॐ शुभ मुहूर्तमस्तु । ३ । शुभं कल्याणं भवतु ।।

पुष्पम् गृहीत्वा—ॐ सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।। विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे
तथा । संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।। ॐ विघ्नवल्लीकुठाराय गणाधिपतये नमः ।। श्री मंगलमूर्तये नमः ।।

ॐ वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ । अविघ्नं कुरु मे देव शुभकार्येषु सर्वदा ।।

विष्णु—ॐ शुक्लाम्बर धरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्याये सर्वविघ्नोपशान्तये ।। लाभस्तेषां
जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः । येषामिन्दीवरः श्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ।। वटुक भैरव—ॐ कर कलित कपाल
कुण्डली दण्डपाणिस्तरुणतिमिर नील व्याल यज्ञोपवीती क्रतुसमयसपर्या विघ्न विच्छेद हेतुर्जयति वटुक नाथः
सिद्धिदः साधकानाम् ।। भगवान् शंकर जी ॐ कर चरण कृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवण नयनजं वा मानसं
वाऽ पराधम् । विहितमविहितं वा सर्वमेतद्क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेवशम्भो ।। श्री सत्यनारायण—नवाम्भोजनेत्रं
रमाकैलिपात्रं चतुर्बाहु चामीकरं चारुगात्रम् । जगत्त्राणहेतुं रिपुधूम्रकेतुं सदा सत्यनारायणं स्तौमि देवम् ।।

देवी जी—ॐ सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते ।
श्रीरामजी—दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे तु जनकात्मजा । पुरतोमारुतिर्यस्य तं वन्दे रघु नन्दनम् ।। श्री कृष्ण
जी—योगेश्वराय देवाय योगिनां पतये विभो । योगोद्भवाय नित्याय गोविन्दाय नमो नमः ।।

श्रीगुरुचरण—ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः । गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

श्री हनुमानजी-अतुलित बलधामं हेमशैलाभ देहं दनुज वन कृशानुं ज्ञानिना मग्न गण्यम् । सकलगुण निधानं वानराणा मधीशं रघुपतिवर दूतं वात जातं नमामि ।।

ॐ विश्वेशं माधवं दुर्दिष्टं दण्डपाणिं च भैरवम् । वन्दे काशीं गुहां गंगां भवानीं मणिकर्णिकाम् ।। ॐ वाणीहिरण्य गर्भाभ्यां नमः । ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । ॐ उमा महेश्वराभ्यां नमः । ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः । ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः । इष्ट देवता० कुल देवता० वास्तुदेवता० क्षेत्रदेवता० ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । ॐ मातृपितृ चरण कमलेभ्यो नमः ।। ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ।। अर्घस्थापनम्-भूमौ स्वात्माग्रे गन्धादिना त्रिकोणं षट्कोणं विलिख्य बहि श्चतुरस्त्रं विलिख्य शंखचक्रादिकं लिखित्वा ॐ भूम्यै नमः इत्यासनं दत्त्वा त्परि-अर्घ्यं संस्थाप्य अर्घ्यं चतुर्भुजस्थानेषु गन्धाक्षतैः सम्पूज्य जलम्-ॐ शन्नोदेवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंयोरभिष्रवन्तु नः । गंगाजलम्-ॐ गंगाद्याः सरितः सर्वास्तीर्थानि जलदा नदाः । आयान्तु पूजा काले स्मिन्दुरित क्षयकारकः ।

ॐ सर्वेभ्यस्तीर्थेभ्यो नमः । ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।। ॐ विष्णवे नमः ।। ३ ।। इति तेन जलेन आत्मानं सूर्यार्घदानं सामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य प्राणानायम्य । सूर्यध्यानम्-ॐ ध्येयः सदा सवितु मण्डल मध्यवर्ती नारायणः सरसिजासन सन्निविष्टः केयूरवान्मकर कुण्डलवान् किरीटी हारीहिरण्मयवपुर्धृत शंख चक्रः ॐ अरुणोरुण पंकजे निषण्णः कमलेऽभीतिवरौ करैर्दधानः । स्वरूपाहित मण्डलस्त्रिनेत्रो रविराकल्पशतात्कुलोऽवतान्नः । आवाहनम्-ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्ग देशोद्भव काश्यप सगोत्र

रक्तवर्ण भगवन्सूर्य इहागच्छ त्वामावाहयामि । इत्यावाह्य पादयोः पाद्यं दत्त्वा घण्टी बजाते हुए—अर्घ्यम्—एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजोराशे जगत्पते । अनुकम्प्य मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर ॥ नमोस्तु सूर्याय नमोस्तु भानवे नमोस्तु वैश्वानर जातवेदसे । ममैतदर्घ्यं प्रतिगृह्य देव देवाधिदेवाय नमो नमस्ते ॥ ततो गन्धाक्षत पुष्पैः पूजयेत् । ॐ भास्कर देवाय नमः गन्धं समर्पयामि । ॐ भास्करदेवाय नमः । अक्षतान् समर्पयामि । ॐ भास्करदेवाय नमः पुष्पाणि समर्पयामि । प्रार्थना—ॐ नमः सवित्रे जगदेक चक्षुषे जगत्प्रसूति स्थिति नाश हेतवे । त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे विरञ्चिनारायण शंकरात्मने ॥ ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्मृतं मर्त्यञ्च । हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन् । (जौ सरसौ अक्षत से भूतोत्सादन करे चारों दिशाओं में छिड़के (दिकशुद्धि) अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ बाँये हाथ से तीन चुटकी देकर तालत्रयेण विघ्नान्—उत्सार्य छन्दः—ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः ।

ॐ पृथिव त्वयाधृता लोका देवि त्वं विष्णुनां धृता । त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ इति आत्मासनं दत्त्वा गन्धाक्षतपुष्पैः पूजयेत् । ॐ ह्रीं आधार शक्तये पृथिव्यै नमः । ॐ वाराह्यै नमः । ॐ कूर्मासनाय नमः तीन दूर्वा अपने दाहिने पैर के नीचे दवायें (आत्मासन) । इति सम्पूज्य पुनर्घर्षं संस्थाप्य गन्धाक्षतैः सम्पूज्य जलम्—अंकुश मुद्रया तीर्थानावाह्य ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन्संनिधिं कुरु ॥ ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । प्राणानायम्य । अस्त्राय फट् । ॐ तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम । भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि । पूजासंकल्पः—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने श्रीब्रह्मपुराण पुरुषोत्तमाय तत्सदत्र पृथिव्यां विष्णु प्रजापति क्षेत्रे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे

हिमवत्पर्वत समीपे अमुक ग्रामे (नगरे) सत्यत्रेता द्वापरान्ते ऽष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथम चरणे प्रभवादि षष्ठि सम्बत्सराणां मध्ये अमुक नाम सम्बत्सरे अमुकायने अमुकर्त्ता अमुकर्त्ता अमुकमासे अमुक पक्षे अमुकवासरे अमुकतिथौ अमुक राशिस्थितेसूर्ये अमुक राशिस्थिते चन्द्रे अमुक राशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा—यथा राशि स्थान स्थितेषु सत्सु अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुक शर्मा अहं (सपत्नीकोऽहं) श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलावाप्तये करिष्यमाण अमुक कर्मणि निर्विघ्नता सिद्धये भगवतो गणेश्वरस्य (प्रतिष्ठावाहन पूर्वकं) यथामिलितोपचारैर्यथाज्ञानेन च पूजनं करिष्ये । यवैः प्रतिष्ठा ॐ एतन्तेदेव सवितर्यज्ञ ४ प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमवतेन यज्ञपतिं तेन मामव । ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्विरिष्टं यज्ञ ४ समिमं दधातु ।

विश्वेदेवा सऽह मादयन्तामोऽम् प्रतिष्ठः । ॐ भूर्भुवः स्वः गोमय गणपते (अस्यां मूर्तौ) प्रतिमायां वा भगवन् गणेश्वर इहागच्छ इहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव । पीठपूजा—(लाल अक्षतौ से) ॐ तीव्रायै नमः ॐ ज्वालिन्यै नमः । ॐ नन्दायै नमः । ॐ भोगदायै नमः । ॐ कामरूपिण्यै नमः । ॐ उग्रायै नमः । ॐ तेजोवत्यै नमः । ॐ सत्यायै नमः । ॐ मध्ये विघ्नविनाशिन्यै नमः । ॐ सर्वशक्ति कमलासनाय नमः ।

ध्यानम्—एकदन्तं शूर्पकर्णं गजवक्त्रं चतुर्भुजम् । पाशांकुशधरं देवं ध्याये सिद्धिविनायकम् । आवाहनम्—विनायक नमस्तेऽस्तु उमामलसमुद्भव । इमां मया कृतां पूजां गृहाण सुरसत्तम । आसनम्—नानारत्न समायुक्तं मुक्ताहारविभूषितम् । स्वर्णसिंहासनं चारुप्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् । । पाद्यम्—गौरीप्रिय नमस्तेऽस्तु शंकर प्रिय सर्वदा । भक्त्या पाद्यं मया दत्तं गृहाण प्रणतप्रिय । अर्घ्यम्—व्रतमुद्दिश्य देवेश गन्ध पुष्पाक्षतैर्युतम् । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं सर्वसिद्धिप्रदोभव । आचमनीयम्—पंचामृत स्नानम्—स्नानं फचामृतैर्देव गृहाण गणनायक । अनाथनाथ सर्वज्ञ गीर्वाणपरिपूजित । ॐ

गणानान्त्वा गणपति ८. हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ८. हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ८. हवामहे वसोमम ।
आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् ॥ आचमनीयम्—ॐ सिद्धिविनायकाय नमः आचमनीयम् समर्पयामि । वस्त्रम्
(दोनों लाल) रक्तवस्त्रयुगं देव देवांग सदृशप्रभम् । भक्त्या दत्तं गृहाणेदं लम्बोदर हरप्रिय ॥ वस्त्रांगमाचमनीयम् ।
यज्ञोपवीतं—राजतं ब्रह्मसूत्रं च काञ्चनस्योत्तरीयकम् । गृहाण चारु सर्वज्ञ भक्तानां सिद्धिदायक ॥ पुनः
आचमनीयम् ॥

गन्धम्—गन्धं कर्पूरसंयुक्तं दिव्यं चन्दनमुत्तमम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठ प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ कुंकुम—ॐ
कुंकुमकान्तिदं दिव्यं कामिनी काम सम्भवम् । कुंकुमेनार्चितो देव प्रीयतां गणनायक ॥

सिन्दूरम्—ॐ सिन्दूर मरुणाभासं जपा कुसुमसंनिभम् ।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ।

अक्षताः—अक्षतान्धवलान्देव सुरगन्धर्व पूजित । सर्वदेव नमस्कार्य गृहाण मदनुग्रहात् ॥ पुष्पाणि—ॐ
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो । मयानीतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् । धूपम् (देवता के बाँये
भाग में) दशांगं गुग्गुलं धूपं सुगन्धिं सुमनोहरम् । उमासुत नमस्तुभ्यं धूपम् प्रतिगृह्यताम् ॥ दीपम् (देवता के दाहिनी
ओर) गृहाण मंगलं दीपं घृतवर्त्ति समन्वितम् । दीपं ज्ञानप्रदं देव रुद्रप्रिय नमोस्तुते ॥ नैवेद्यम्—सगुडान्सघृतौश्चैव
मोदकान्घृतपाचितान् । नैवेद्यांसफलं दत्तं गृह्यतां विघ्ननाशन ॥ एकं मोदकं फलसहितं गणधिपाय दद्यात् ॥

(पंचमेवा पंचमिठाई बतासे चढ़ावे) शर्करा खण्ड खाद्यानि दधि क्षीर घृतानि च । आहारो भक्ष्य भोज्यं च गृह्यतां

गणनायक ।। नैवेद्यांगमाचमनीयं दद्यात्-ॐ सिद्धि विनायकाय नमः । क्षणं ध्यात्वा (गणेश जी का ध्यान करके जप करें) ॐ सिद्धि विनायकाय नमः ।। ८ ।। (ॐ गं गणपतये नमः) ॐ गुह्यातिगुह्य गोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात् गणेश्वर ।।

(लौगं इलायची तथा सुपारी सहित) ताम्बूलम्-पूगीफलं महद्विव्यं नागवल्ली दलान्वितम् । एलादि चूर्णं संयुक्तम् ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।। फलम्-इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि ।। भूषणार्थं द्वयम्-हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिप्रयच्छ मे ।। अथ मोदकदान संकल्पः-अद्योह० अमुकशर्माऽहं करिष्य माण अमुक कर्मणि निर्विघ्नतया कार्यं सिद्ध्ये कृताया गणपति पूजायाः सादगुण्यार्थं इमान् दश मोदकान् गणपति प्रीतये ब्राह्मणाय दास्ये ॐ तत्सन्मम ।। ब्राह्मणहस्ते अर्घ्यं दद्यात्-ॐ भूमिदेवाग्रजन्मासि त्वं विप्र पुरुषोत्तम । प्रत्यक्षो यज्ञपुरुष-अर्घ्योऽयं प्रतिगृह्यताम् ।। गन्धविलेपनम्-ॐ नमो ब्रह्मण्य देवाय गोब्राह्मणाहिताय च । जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ।। इति गन्धाक्षतपुष्पैः सम्पूज्य (फिर दुबारा अर्घ से जल देवे) अर्चनविधिः सर्वः परिपूर्णोऽस्तु ।। इति यजमानोक्तिः । ब्राह्मणः-अस्तुपरिपूर्णः ।। अथमोदक दान मंत्रः-विघ्नेश विप्र रूपेणगृहाण दशमोदकान् । दक्षिणाघृत ताम्बूलगुडयुक्तान्ममेष्टदः ।। दाता विघ्नेश्वरोदेवो गृहीता सर्व विघ्नराट् । तस्मादिदं मया दत्तं परिपूर्णं तदस्तु मे । प्रतिग्रह-मंत्रः-ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेशिवनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।। प्रार्थना-विनायक नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय । निर्विघ्नं कुरु मे देव शुभ कार्येषु सर्वदा ।।

(कुछ लोग यहाँ पर "एकं मोदकं गणाधिपाय दद्यात्" मानते हैं)

अथ दूर्वार्पणम्—(दो दो दूर्वा अक्षत सहित, अपनी ओर अग्रभाग करें दूर्वा अर्पण करके प्रणाम करें) ॐ गणाधिप नमस्ते स्तु । गणाधिपाय नमः ॐ उमापुत्र नमस्तेस्तु । उमापुत्राय नमः । ॐ अधनाशन नमस्तेस्तु । अध नाशनाय नमः । ॐ विनायक नमस्तेस्तु । विनायकाय नमः । ॐ ईशपुत्र नमस्तेस्तु । ईशपुत्राय नमः । ॐ सर्वसिद्धिप्रदायक नमस्तेस्तु । सर्व सिद्धि प्रदायकाय नमः । ॐ एकदन्त नमस्तेस्तु । एक दन्ताय नमः । ॐ इभवक्त्र नमस्तेस्तु । इभवक्त्राय नमः । ॐ मूषक वाहन नमस्तेस्तु । मूषक वाहनाय नमः । ॐ कुमार गुरवे तुभ्यं नमः । ॐ चतुर्थीश नमस्तेस्तु । चतुर्थीशाय नमः । ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि । एवानो दूर्वं प्रतनु सहस्रेण शतेन च ।।

नीराजनम्—(बत्ती पूजन गन्धाक्षत पुष्प से) ॐ भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने ।। त्राहि मां निरयाद घोराद्दीपज्योतिर्नमोस्तु ते ।।

शंखपूजनम्—ॐ शंखादौ चन्द्रदैवत्यं कुक्षौ वरुण देवता । पृष्ठे प्रजापतिश्चैव ह्यग्रे गंगा सरस्वती ।। त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया । शंखे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्मात् शंखं प्रपूजये ।। शंखगायत्री—ॐ पाठ्यज न्याय विदमहे । पावमानाय धीमहि तन्नः शंखः प्रचोदयात् ।

घण्टापूजनम्—ॐ आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं च रक्षसाम् । घण्टापूजार्थं करोम्यहं सदैकार्यार्थं सिद्ध्ये ।। आरती उतारं—ॐ अग्नि ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा । सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा । अग्निर्वचो ज्योतिर्वचः स्वाहा । सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वचः स्वाहा । ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा । चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च । त्वमेव सर्व ज्योतीषि आरार्तिं प्रतिगृह्यताम् ।।

(विशेषार्घ्य फल सहित घुटने टेक कर शंख से) ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक । भक्तानामभयं कर्ता त्राता भय भवार्णवात् ।। वरद त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थदः अनेन सफलाध्यर्णेण वरदो भव सर्वदा ।। पुष्पाञ्जलिः प्रार्थना च-ॐ सुमुखश्चैक दन्तश्च० । ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय । नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ।। पुनः प्रणाम करें । ॐ अविरल मद जल निवहं भ्रमर कुलानीक सेवितकपोलम् । अभिमतफलं दातारं कामेश गणपतिर्हृन्दे ।। ॐ विघ्नराजाय नमः । तीनप्रदक्षिणा-यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च । तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणापदेपदे ।।

दक्षिणासंकल्पः-अद्योह० अमुक कर्मणि पूर्वागत्वेन निर्विघ्नतया कार्यसिद्धये कृताया गणपति पूजायाः सादगुण्यार्थं इमां दक्षिणां ब्राह्मणाय दास्ये ॐ तत्सन्ममम् ।। दक्षिणां दत्त्वा मंत्रपाठः-ॐ गणानान्त्वा गणपति 8. हवामहे प्रियाणात्वा प्रियपति 8. हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति 8. हवामहे वसो मम । आहम जानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् ।। मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः । शत्रवो मित्रतां यान्तु मित्राणामुदयस्तव ।। गणपति पूजा प्रसादोऽस्तु । धन सन्तान वृद्धिरस्तु ।। पूजा सुफलमस्तु ।।

अथ मातृपूजनम्

(चौके पर गोमय दूर्वा से १६ गौय्यादि तथा गणेश व ६ ब्राह्मण्यादि रोली से एवं ७ कुंकुम बिन्दु से श्रियादि सबसे ऊपर बनावे । (नये चूल्हे की प्रतिष्ठा)

मातृपूजा के समय प्रधान दीपक तथा भोजन पाक पात्रों की प्रतिष्ठा करके ५ बत्ती जलाकर सुहागिन मातायें मंगलगीत गाती हुई ताम्र के दो पाकपात्र चूल्हे को ले जाती हैं) मातृ पूजा में दो जनाने वस्त्र चढ़ाने चाहिये ।।

प्रधान दीपं प्रज्वाल्य प्रधान संकल्पं कुर्यात् । । अघोह० अमुकगोत्रः अमुकराशिः अमुकशर्माऽहं (सपत्नीकोऽहं) करिष्यमाण अमुककर्मणः पूर्वागत्वेन सकलमंगलाभिवृद्धये गणपति सहित गौर्यादिषोडशमातृणां तथा ब्रह्माण्या दीनां श्रियादीनां तथा कर्मसाक्षिणः प्रधान दीपस्य च प्रतिष्ठा वाहन पूर्वकं पूजनं करिष्ये । । प्रतिष्ठा-ॐ एतन्ते देवसवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमवतेन यज्ञपतित्तेनमामव । मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ४ समिमन्दधातु । विश्वेदेवासऽइहमा-दयन्तामोम्रतिष्ठ । ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतिसहित गौर्यादिषोडशमातरः तथा ब्रह्माण्यादयस्तथा श्रियादयः एवं प्रधान दीप इहागच्छन्तु इह तिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु । प्रथमं प्रधान दीपपूजनम्-ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत । श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत । । ॐ भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवायपरमात्मने । त्राहि मां निरयाद घोराद दीपज्योतिर्नमोस्तु ते । । इति सम्पूज्य गणपतिश्च यानम्-ॐ वरदाभयपाणिश्च दिव्याभरण भूषितः । शुक्लः सुशीलवासश्च पदमस्योपरि संस्थितः । । ॐ गणेश्वरायनमः । ॐ गौरी पदमाशची मेधा सावित्री विजया जया । देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातर । । धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता । । १ । ॐ ब्रह्माणी कमलेन्दु सौम्यवदना माहेश्वरी लीलया कौमारी रिपुदर्प नाशनकरी चक्रायुधा वैष्णवी वाराही घनघोर घर्घर मुखी चैन्द्री च वजायुधा चामुण्डा गणनाथ रुद्र सहिता रक्षन्तु नो मातरः । ॐ गणपति सहित गौर्यादिषोडश मातृकाभ्यो नमः ॐ ब्रह्माण्यादिभ्यो नमः ॐ श्रियादिभ्यो नमः । ध्यानंसमर्पयामि । । (आवाहन, आसन, पाद्य) अर्घ्यम्-ॐ अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् । । अर्घ्यं दत्त्वा आचमनीयम् स्नानम् स्नानांगमाचमनीयम् वस्त्रम् (गन्धाक्षत, पुष्प अवीर, गुलाल से पूजन करे) ॐ गणपतये नमः । ॐ गौर्यै नमः ॐ पदमायै नमः । ॐ शच्चै नमः । ॐ मेधायै नमः ॐ

सावित्र्यै नमः । ॐ विजयायै नमः । ॐ जयायै नमः । ॐ देवसेनायै नमः । ॐ स्वधायै नमः । ॐ स्वाहायै नमः । ॐ मातृभ्यो नमः । ॐ लोक मातृभ्यो नमः ॐ धृत्यै नमः ॐ पुष्ट्यै नमः ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः (यहाँ पर अपनी कुल की देवी का नामोच्चारण करके गन्धाक्षत अर्पण करे) ॐ ब्रह्माण्यै नमः । ॐ माहेश्वर्य्यै नमः । ॐ कौमार्य्यै नमः । ॐ वैष्णव्यै नमः ॐ वाराह्यै नमः । ॐ ऐन्द्र्यै नमः । ॐ चामुण्डायै नमः । ॐ गणनाथाय रुद्राय नमः ॐ श्रियै नमः । ॐ लक्ष्म्यै नमः । ॐ धृत्यै नमः । ॐ मेधायै नमः । ॐ स्वाहायै नमः । ॐ प्रज्ञायै नमः । ॐ सरस्वत्यै नमः । ॐ धूप, दीप, नैवेद्य, जल देकर जप करे उपरिलिखित नामों से जप करे) अथवा ॐ मातृकाभ्यो नमः । ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्र्यो वै गृहन्त्वस्मत्कृतं—जपम् । सिद्धिर्भवतु भो देव्यो भवतीनाम्प्रसादतः । ॐ (फल, ताम्बूल, द्रव्य समर्पण करके वसोर्धारा संकल्प करे) अद्येह० अमुक कर्मणि सकलमंगलाभिवृद्ध्ये मातृणाम्प्रीतये गुडसर्पिषा वसोर्धाराः पातयिष्ये । ॥ आज्यं यतो हि देवानामशनं मंगलात्मकम् । ततो मातृ—समुद्दिश्य घृतधारा ददाम्यहम् । ॥ श्रियादि सप्तमातृभ्यो घृतमातृभ्य एव च । गुडेन मेलायिष्यामि ताः सर्वार्थप्रसाधिकाः । ॥ (कुंकुम के सात बिन्दुओं से नीचे को सात धारा पूर्वोत्तर वृद्धि से देवे) मंत्रः—ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः (सात धारा देकर शेष से यजमान को तिलक करे । १) नीराजनं कृत्वा (तब नारियल या गोला अर्पण करे) ॐ यदंगत्वेन भो देव्यः पूजिताविधिमार्गतः । कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम् ॥

प्रार्थना पुष्पाणि—गणेश ॐ हरात्मज चतुर्बाहो वारणास्य महोदर । प्रसन्नोभव मह्यं त्वं गौरीपुत्र नमोस्तुते ॥ १ ॥ गौरीचन्द्रास्ये चन्द्र कलया विभूषित कपालिके । प्रसन्ना भव मह्यं त्वं शिवगौरि नमोस्तु ते ॥

नमोस्तुते ॥ ११ ॥ गौरीचन्द्रास्ये चन्द्र कलया विभूषित कपालिके । प्रसन्ना भव मह्यं त्वं शिवगौरि नमोस्तु ते ॥

२६

पदमा-दुग्धोद सम्भवे भव्ये सरोजोपरि संस्थिते । प्रसन्ना भव मह्यं त्वं हरिपदमे नमोस्तुते ॥ शची-सदा सौभाग्य संयुक्ते मन्दार कुसुमार्चिते । प्रसन्ना भव मह्यं त्वमिन्द्र कान्ते नमोस्तुते ॥ मेधा-शुक्लाम्बरधरे देवि वीणा पुस्तक धारिणी । प्रसन्ना सरस्वति ॥ सावित्री-जगत्सृष्टिकरी धात्री देवीं प्रणव मातृकाम् । वेदगर्भा यज्ञमयीं सावित्रीं प्रणमाम्यहम् ॥

विजया-सौभाग्ययुक्ते सौभाग्यदायिके दुःख वर्जिते । प्रसन्ना भव मह्यं त्वं विजये ते नमोनमः ॥ जया-चरुणा शुभपदमेन राजमानेऽर्कसंयुते । प्रसन्ना भो जये ते नमोनमः । देवसेना-अनेक वर्ण संयुक्ते नाना शास्त्र समन्विते । प्र० देवसेने ॥ स्वधा-पितृणां वल्लभे शान्ते शान्तियुक्ते शुभंकरे । प्र० स्वधेदेवि ॥ स्वाहा-सप्तार्घिवल्लभे सप्त स्वर सन्तान संयुते । प्र० स्वाहा देवि ॥ मातरः-वराभयकरा भव्याः प्रसन्न मुखपंकजाः । सुप्रसन्नाः प्रजायन्तां मह्यं ताभ्यो नमो नमः ॥ लोकमातरः-रक्षिका सर्वलोकानां नितरां लोकमातरः । जयन्ती प्रमुखादेव्यो भवतीभ्यो नमो नमः ॥ धृतिः-धृति संजनिके धैर्य युक्ते सर्व समर्चिते । प्र० धृति देवि ॥ पुष्टिः-सर्वेषां पुष्टि जनिके पूर्णकाम समन्विते । प्र० पुष्टि देवि ॥ तुष्टिः-सर्व सन्तोष जनिके सन्तोषेण समन्विते ॥ प्र० तुष्टि देवि ॥ आत्मनः कुलदेवता-ॐ कुलदेवि महाभागे कुलाद्रि कृत केतने । प्र० कुलदेवि नमोस्तुते ॥ ॐ ब्रह्माणी कमलेन्दु सौम्यवदना ॥ संकल्प पूर्वकं दक्षिणां दत्त्वा आशिषं दद्यात्-ॐ समकख्ये देव्या धिया सन्दक्षिणयोरु चक्षसा माम आयुः प्रमोषीर्माहं तव वीरं विदेय तव देवि सन्दृशि ॥ ॐ अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥ मातृणां प्रसादोऽस्तु ॥ धन सन्तान वृद्धिरस्तु पूजा सुफलमस्तु ।

२७

अथ आभ्युदयिक विधि ।।

(आभ्युदयिक का क्रम—कुल १५ संकल्प होते हैं—१. नीवी का संकल्पः । २. प्रतिज्ञा संकल्प । चार संकल्प आसनदान के । दो आसनार्चनविधौ० के । चार संकल्प आमन्त्रण के । दो संकल्प दक्षिणा सम्बन्धि । एक विसर्जन संकल्प । — १५ । आभ्युदयिक में विश्वेदेवा के बाद पहले मातृपक्ष पितृपक्ष, मातामहपक्ष—(सपत्नीक) यह क्रम है । पहले विश्वेदेवा का आसन होता है । अतः आमन्त्रण में भी पहला भाग (पहला संकल्पः) विश्वेदेवा का होता है । दक्षिणा सम्बन्धि संकल्प में पहला संकल्प—मातृ आदि, पितृ आदि मातामह आदि सपत्नीक होते हैं । तब दूसरा संकल्प, विश्वेदेवा का होता है)

उदङ्मुखो भूत्वा पुष्पं गृहीत्वा—ॐ यं ब्रह्म वेदान्त विदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये । विश्वोदगते कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्न विनाशनाय । अभीप्सितार्थं सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः । सर्वं विघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः ॐ शुक्लाम्बरधरं विष्णु शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्याये सर्वविघ्नोपशान्तये । स्वदक्षिणभागे कर्मपात्रस्थापनार्थं भूमि स्पर्शः—ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धत्री पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ४. ह पृथिवीं माहि ४. सीः । । भूमौ गन्धादिना त्रिकोणं षट्कोणं चतुरस्रं विलिख्य तदुपरि शंख चक्रादिलिखित्वा आसनार्थं दूर्वा काण्डत्रयं निधाय पात्रं पात्रोपरि दूर्वाकाण्डत्रयं ॐ पवित्रेस्थोवैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । जलम् ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु नः । यवान्—ॐ यवोसि यवयास्म द्वेषो यवयारातीर्हि वेत्वान्तरिक्षाय त्वा पृथिव्यै त्वा शुन्धतौल्लोकाः पितृषदनाः पितृषदनं मसि । इति यव गंधपुष्पाक्षतादि तूष्णीं निक्षिपेत् । कर्मपात्रं सुसम्पन्नं सुसम्पन्नमस्तु, तेन जलेन आत्मानं नान्दीमुखश्राद्ध सामग्रीं

च सम्प्रोक्ष्य ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः । ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः ३ इति त्रिः सम्प्रोक्ष्य प्राणायामं विधाय ॐ देवताभ्यो महायोगिभ्य यव च । नमः स्वाहाये स्वाहाये नित्यमेव नमो नमः । ॥ तीन बार बोले ॥ ३ । सप्त व्याधा दशार्णेषु मृगाः कालंजिरे गिरौ । चक्रवाकास्सरद्वीपे हसाः सरसि मानसे । तेऽपि जाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः । प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ । श्राद्धकाले गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम् । मनसा च मातुः ध्यात्वा नान्दीश्राद्धं समारभेत् । ततो यवदूर्वाङ्कुरान् गृहीत्वा ॐ विष्णुः ३ अद्यहामुकगोत्राणां मातृपितामहीप्रपितामही नाम अमुकी अमुकीदेवीनां नान्दीमुखीनां तथा मुकगोत्राणां पितृपितामहप्रपितामहानाममुकामुकदेवानां नान्दीमुखानां तथा अमुक गोत्राणां मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानाम् अमुकामुक देवानां सपत्नीकानां नान्दीमुखानां सत्यवसुसंज्ञक विश्वेदेव पूर्वकं संक्षिप्त संकल्प विधिना आमन्त्रेन आभ्युदयिक श्राद्धं समारभे । दक्षिण कट्यां नीवीं (दूर्वा दाहिनी कमर में) आरोपयेत्—ॐ सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्मासि शर्म यजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि । दिग्बन्धनं दूर्वाकुरैः ॐ अग्निष्वात्ताः पितृगणाः प्राचीं रक्षन्तु मे दिशम् । तथा बर्हिषदः पान्तु यामीं ये पितरस्तथा । प्रतीचीमाज्यपास्तद्वद्—उदीचीमपि सोमपाः । विदिशश्च गणाः सर्वे रक्षन्तूर्ध्वमधोपिवा । (दूर्वा से कर्मपात्र अभिमन्त्रित करे) ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम् । अग्निर्म्मा तस्मादेनसो विश्वाफुञ्चन्त्वं ४. हसः । यदि दिवा यदि नक्तमेनाँसि चकृमा वयम् । वायुर्म्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चन्त्वं ४. हसः । यदि जाग्रद्यदि स्वप्नऽनाँसि चकृमा वयम् । सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चन्त्वं ४. हसः । गायत्र्या च अभिमन्त्र्य—आमान्नादीनां पवित्रतास्तु । जल के छीटे देकर अन्नादि को पवित्र करलें) (दूर्वा यव जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करे)

ॐ विष्णुः ३ अद्योह० अमुकगोत्राणां मातृपितामही प्रपितामहीनां अमुक्यमुकीदेवीनां तथा अमुकगोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहानाम् अमुकामुक देवानां नान्दी मुखानां तथा अमुक गोत्राणां मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहानाम् अमुकामुक देवानां सपत्नीकानां नान्दी मुखानां अमुकगोत्रोत्पन्नो अमुकराशिः अमुकशर्माऽहं (अपना राशि नाम बोलें) करिष्यमाण अमुककर्मणि उत्तरोत्तर हर्षाभ्युदयावाप्तये सत्यवसुसंज्ञक विश्वेदेव पूर्वकं संक्षिप्त सकल्पविधिना आमाम्नेन आभ्युदयिक श्राद्धं करिष्ये ॥ कुरुष्व ॥ नमो वृद्धिवृद्धिश्रियै ।

दूर्वायव जलमादाय (आसनदानं उत्तरवृद्धया कार्यं) ॐ विष्णुः ३ अद्योह० अमुकगोत्र मात्रादित्रय पित्रादि त्रय, मातामहादित्रय श्राद्ध सम्बन्धिनां सत्यवसु संज्ञकानां विश्वेषां देवानां नान्दीमुखश्राद्धे इदमासनं यथाविभागं वो नमो वृद्धि वृद्धिश्रियै । ११ । ॐ विष्णुः ३ अद्योह० अमुकगोत्राणां मातृपितामही प्रपितामहीनां अमुकीअमुकीदेवीनां नान्दीमुखीनां इदमासनं वो नमो वृद्धि वृद्धिश्रियै ॐ विष्णुः ३ अद्योह० अमुकगोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहानाम् अमुकामुकं देवानां नान्दीमुखानां इदमासनं०

ॐ विष्णुः ३ अद्योह० अमुकगोत्राणां (ननिहाल) मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानाम् अमुकामुक देवानां सपत्नीकानां नान्दीमुखानां इदमासनं वो नमो वृद्धि वृद्धि श्रियै (स्नान आचमन वस्त्र गन्धाक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य ताम्बूल फल द्रव्यादि से पूजें) मन्त्रः—ॐ सप्तऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम् सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागतोऽस्वप्न जौ सत्रसदौ च देवौ । ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्य ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च । प्रियो देवानान्दक्षिणायै दातुरिह भूयाः समयम्मै कामः समृद्धयताम् । १.

सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । २. नान्दीमुखीभ्यो मातृ पितामही प्रपितामहीभ्यो नमः । ३. नान्दी मुखेभ्यः पितृ पितामह प्रपितामहेभ्यो नमः । ४. नान्दी मुखेभ्यः सपत्नीकेभ्यो मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहेभ्यो नमः । संकल्पः ॐ विष्णुः ३ अद्योह० अमुकगोत्र मात्रादित्रय श्राद्धसम्बन्धिनः तथा अमुकगोत्र पित्रादित्रय श्राद्धसम्बन्धिनः तथा अमुकगोत्र मातामहादित्रय श्राद्धसम्बन्धिनः सत्यवसु संज्ञक विश्वेदेवा आसनार्चन विधौ—इमानि गन्धाक्षत पुष्प धूप दीपादीनि यथाविभागं वो नमो वृद्धि वृद्धिः श्रियै । ॐ विष्णुः ३ अद्योह० अमुकगोत्राः, मातृ पितामही प्रपितामह्यो ऽमुकीअमुकी देव्यो नान्दीमुख्य तथा अमुकगोत्राः पितृ पितामह प्रपितामहाः अमुकामुक देवाः नान्दीमुखाः तथा अमुकगोत्राः मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहाः अमुकामुक देवाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः आभ्युदयिक श्राद्धे आसनार्चन विधौ—इमानि गन्धाक्षत०

(दधि घृतादि सहित सभी सामग्री रखकर आमन्त्र (चावल) के चार भाग करे)

ॐ सप्त ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम् । सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागतोऽअस्वप्नजौ सत्र सदौ च देवौ । ॐ यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च इत्यन्तं सम्पूज्य १. ॐ विष्णुः १३ । अमुक गोत्रमात्रादित्रय श्राद्ध सम्बन्धिभ्यः, तथा अमुकगोत्र पित्रादित्रय श्राद्ध सम्बन्धिभ्यः, तथा अमुकगोत्र मातामहादि त्रय श्राद्ध सम्बन्धिभ्यः सत्यवसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्य आभ्युदयिक श्राद्धे इदमामान्नं सोदकं सोपस्करं घृतादि सहितं यथा विभागं वो नमो वृद्धि वृद्धिः श्रियै । २. अमुकगोत्राभ्यः मातृ पितामही प्रपितामहीभ्यः अमुक्यमुकी देवीभ्यो नान्दीमुखीभ्यः आभ्युदयिक श्राद्धे इदमाम्नं० । ३. अमुकगोत्रेभ्यः पितृ पितामह प्रपितामहेभ्यः अमुकामुक देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्य आभ्युदयिक श्राद्धे इदमामाम्नं० । ३१

४. अमुकगोत्रेभ्यो मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहेभ्य अमुकामुक देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्य आभ्युदयिक श्राद्धे इदमामान्० ।। दक्षिणा संकल्पः—अद्येह अमुकगोत्रः अमुकराशिः अमुकशर्माऽहं अमुकगोत्राणां मातृ पितामही प्रपितामहीनां अमुक्यमुकी देवीनां नान्दीमुखीनां तथा अमुक गोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहानां अमुकामुक देवानां नान्दीमुखानां तथा अमुकगोत्राणां मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता महानां अमुकामुकदेवानां सपत्नीकानां नान्दीमुखानां करिष्यमाण अमुक कर्मणः पूर्वागत्वेन कृतैतत्संक्षिप्त संकल्प विधानेन सत्यवसु संज्ञक विश्वेदेवपूर्वकमाभ्युदयिक श्राद्धस्य सांगता सिद्ध्यर्थ मिमां दधि द्राक्षमलक निष्करिणीं दक्षिणां यथा विभागं वो नमो वृद्धि वृद्धि श्रियै ।। (इसी प्रकार “विश्वेदेवा” के लिये भी संकल्प करे ।।)

स्वतिलकम् ॐ अंहोमुच मां गिरसं हयच स्वस्त्यात्रेयं मन चतार्क्ष्यम् प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये, स्वस्ति संवाधेष्वभ्यं नो ऽअस्तु ।। विशेषपूजा—(उठकर अक्षत पुष्प दोनों हाथों से अर्पण करे) ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमा क्षिभिर्यजत्रा स्थिरै रंगै स्तुष्टुवाँ सस्तनू भिर्यसे महि देवहितं यदायुः ।। ततः प्रार्थना ॐ देवताभ्यो देवताभ्यो महायोगिभ्य एव च । नमः स्वाहायै स्वाहायै० ॐ सप्तव्याधा दशार्णेषु० मनसा च मातृर्वात्त्वा ॐ विष्णुः ३ अमुककोत्राणां मातृ० पितृ० मातामह० सपत्नीकानां नान्दीमुखानां सत्यवसुसंज्ञक विश्वेदेवपूर्वकाभ्युदयिक श्राद्धं विसृजे ।। इदमाभ्युदयिक श्राद्धं विधिहीनं मन्त्रहीनं देशहीनं कालहीनं वाक्यहीनं दक्षिणाहीनं श्रद्धाहीनं यत्कृत तत्सुकृतमस्तु यन्नकृतं तत् श्रीभगवद् विष्णुप्रसादात् ब्राह्मण वचनात्सर्वं परिपूर्णमस्तु, अस्तुपरिपूर्णम् ।। आशिषं प्रतिगृह्य कर्मपात्रं गृहीत्वा प्रदक्षिणां कुर्यात् ।। ॐ आमाब्वाजस्य प्रसवो जगम्या देवे द्यावा पृथिवी विश्वरूपे आमागन्तां पितरामातरा चामा सोमोऽअमृतत्वेन गम्यात् ।। इतित्रिः प्रदक्षिणीकृत्य कर्मपात्रस्थं जलं भूमौ निरस्य

अधोमुखं निधाय नीविविसृज्य आचम्य ॐ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियासु च । न्यूने सम्पूर्णतायाति
सद्योवन्दे तमच्युतम् । ॐ अच्युताय नमः । ॥ ३ ॥ ब्राह्मणं सम्पूज्य आमन्त्रादिकं दद्यात् । ॐ चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च
द्वाभ्यां पंचभिरेव च । हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः । ॥ विसर्जनं स्वयं करे । तब हस्तपाद प्रक्षालन करे ।

अथ पुण्याहवाचनम्

(आचमन गणेश मातृका पुष्पाञ्जलि देकर अर्घ्य स्थापन करके चार ब्राह्मणों का वरण करे ।)

ॐ विष्णुः ३ । ॥ करिष्यमाण अमुक कर्मणः पूर्वागत्वेन सकल मंगलाभि वृद्धयर्थं ब्राह्मणैः पुण्याहं वाचयिष्ये
तदंगत्वेन ब्राह्मणानां पूजनपूर्वकं वरणं च करिष्ये । (अर्घ्यादि से पूजन करके) वरण—एभिर्वरण द्रव्यैः करिष्यमाण अमुक
कर्मणि सकल मंगलाभिवृद्धयर्थं पुण्याह वाचनार्थं भो ब्रह्मन् त्वामहं वृणे । ॥ ब्राह्मणः—वृत्तोस्मि । ॥ यजमानोऽञ्जलिं—
बद्ध्वा—ब्राह्मणाः ।—ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विशीमतः सुरुचो ज्वेनऽआवः । सबुद्ध्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः
सतश्च योनि मसतश्चविव । ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्योऽहर्द्युमद्विभाति क्रतु मज्जनेषु । यदीदयच्छवसऽऋत प्रजा
ततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् । ॥ यजमानः—ब्राह्मं पुण्यमहर्ष्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम् । वेद वृक्षोद्भवं पुण्यं तत्पुण्याहं
ब्रुवन्तु नः । ॥ भो ब्राह्मणा मम सपरिवारस्य गृहे पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु । ॥ ३ (तीन बार बोले) ब्राह्मणाः—ॐ पुण्याहम् । ३ ।
ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः । पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहिमाम् । ॥ यज०—स्वस्ति
या—अविनाशाख्या लोक कल्याण सिद्धिदा । विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः । ॥ भो ब्राह्मणा मम
सपरिवारस्यगृहे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु । ॥ ३ ॥ ब्राह्मणाः—ॐ स्वस्ति । ३ ॥ ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति

नः पूषा विश्ववेदाः । स्वरित नस्तार्क्ष्योऽरिष्ट नेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥ यजमानः—सागरस्य तु
या—ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृताः । सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिं च ब्रुवन्तु नः ॥ भो ब्राह्मणा मम सपरिवारस्य
गृहे ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ३ ॥ ब्राह्मणाः—ॐ ऋद्धयताम् ॥ ॐ सत्रस्यऽऋद्धिरस्य गन्मज्योतिरमृता अभूम । दिवं
पृथिव्याऽद्ध्या—रुहामा विदाम देवान्स्वज्ज्योतिः ॥ यजमानः—वैधृतौ व्यतिपाते च संक्रान्तौ राहुपर्वणि । यादृवृद्धि
मवप्नोति तां च वृद्धिं ब्रुवन्तु नः ॥ भो ब्राह्मणा मम० गृहे वृद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ३ ॥ ब्राह्मणाः—ॐ वृद्धयताम् ॥ ३ ॥
ॐ ज्यैष्ठ्यत्रयमऽआधिपत्यं च मे मन्युश्च मे भामश्च मे मश्च मे ये माच मे महिमा च मे व्वरिमा च मे प्रथिमा
च मे वर्षिमा च मे द्राघिमा च मे वृद्धश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ यजमानः—पृथिव्यामुद्-धृतायान्तु
यत् त्याणं पुरा कृतम् ! ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः ॥ भो ब्राह्मणा ममसपरिवारस्य गृहे कल्याणं
भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ३ ॥ ॐ कल्याणम् ॥ ३ ॥ ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः । ब्रह्मराजन्याभ्यां
शूद्रायचार्य्याय च स्वाय चारणाय च । प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयाः समयं मे कामः समृद्धयतामुपमादोनमतु ॥
यज०—सरित्पतेश्च या कन्या याश्रीर्विष्णु गृहे स्थिता । सर्व सौख्यवती लक्ष्मीस्तां श्रियञ्च ब्रुवन्तु नः । भो ब्राह्मणा
मम सपरिवारस्य गृहे श्रीरस्तु—भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ३ ॥ ब्राह्मणाः ॐ श्रीरस्तु ॥ ३ ॥ ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः
सत्यमशीय । पशूनां रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयताम् ॥ यजमानः—शंखासुर विपत्तौ च यथा शान्तिर्धरातले ।
यथा च देवदेवानां तां शान्तिं च ब्रुवन्तु नः ॥ भो ब्राह्मणा मम सपरिवारस्य गृहे शान्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ३ ॥
ब्राह्मणाः—ॐ शान्तिः ॥ ३ ॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ४ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः
शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व ४ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥ (यदि अभिषेक करणा हो

तो दक्षिणा संकल्प के पूर्व ही होगा. क्योंकि यहाँ पर अभिषेक पण्याहवाचन का अंग है) ॐ विष्णुः ॥ ३ ॥ कृतस्य

तो दक्षिणा संकल्प के पूर्व ही होगा, क्योंकि यहाँ पर अभिषेक पुण्याहवाचन का अंग है) ॐ विष्णुः ॥ ३ ॥ कृतस्य पुण्याह वाचन कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थ मिमा दक्षिणां पुण्याह वाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दास्ये तथा अनेभ्य उपविष्ट ब्राह्मणेभ्यो नट नर्तक गायकेभ्यश्च भूयसीं दक्षिणां दास्ये ॐ तत्सन्मम ॥ दक्षिणां दत्त्वा (सपरिवार को तिलक आशीर्वाद देवें) तत्रमंत्रः—ॐ स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु गोवाजि हस्ति धनधान्य समृद्धिरस्तु । ऐश्वर्यमस्तु विजयोऽस्तु रिपुक्षयोऽस्तु सन्तान वृद्धि सहिता हरिभक्तिरस्तु ॥ ॐ विश्वानि देवसवितर्दुरितानिपरासुव । यद्गदं तन्नऽआसुव ॥ मन्त्रार्थाः सफला सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः । शत्रुणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥ पुण्याह वाचन प्रसादोऽस्तु । धनसन्तान वृद्धिरस्तु । पुण्याहं सम्पत्तिरस्तु । आयुष्यमस्तु ॥

अथ कलश स्थापनम्

भूमौ कुंकुम गन्धादिना अष्ट कमलं विलिख्य तत्र सप्तधान्योपरि कलशम् स्थापयेत् । तत्रादौ भूमिस्पर्शः—ॐ महीधौः पृथिवी चनऽइमं यज्ञ मिमिक्षताम् । पिपृतानो भरीमभिः । अथ सप्तधान्यम्—ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा । यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ४. राजन्यारयामसि । (कलश में स्वस्तिक बनाकर दध्यक्षत तथा चन्दन चर्चित करके स्थापित करे) स्थापनमंत्र—ॐ आजिघ्न कलशं महात्वा विशन्तिवन्दवः पुनरूर्जा निवर्त्तस्वसानः सहस्रन्धुक्षोरु धारा पयस्वती पुनर्माऽविशताद्रयि ॥ जलम्—ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भ सर्जनीस्थो वरुणस्यऽऋत सदन्धसि वरुणस्यऽऋत सदनमसि वरुणस्य, ऋतसदनमासीद । जलम् गंगाजलम्—ॐ पञ्चनद्यः सरस्वती मपियन्ति सम्रोतसः सरस्वती तु पञ्चधासो देशे भवत्सरित् ॥ अथ ब्रह्माणं संस्नाप्य स्थापयेत् । कुश ब्रह्मा को

स्नान करावें, कलश में स्थापित करें । ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइष व्योति व्याधी महारथो जायतां दोग्धी धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सतिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः । सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमौ नः कल्पताम् ॥

(कलश में) गन्धम्—ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपहृये श्रियम् । अथदुर्वकुराः—ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि । एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥ अथ हरिद्रा सर्वोषधीः—(कच्ची हल्दी) ॐ याऽओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा । मनेनु बभ्रूणामह ८. शतं धामानि सप्ता च ॥ पूंगीफलम्—ॐ याः फलिनीर्याऽफला अपुष्यायाश्च पुष्पिणी बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चत्व ८. हसः ॥ पंचपल्लपवाः—ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता गोभाज इत्किला सथ यत्सनवथ पूरुषम् । सप्तमृदः—ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्म सप्रथाः । पञ्चरत्नानि—ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् । दधद्रत्नानि दाशुषे ॥ अथ दुग्धम्—ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ दधि ॐ दधिक्राव्योऽअकारिषं जिष्णो रश्वस्य वाजिनः सुरभिणो मुखाकरत्त्रणऽआयूँ षितारिषत् ॥ घृतम्—ॐ घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुधे सुपेशसा । द्यावा पृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते ऽअजरे भूरि रेतसा ॥ अथ सुवर्णम्—ॐ हिरण्य गर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् ॥ सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ वस्त्रयुग्मम्—(जोड़ा) ॐ यदश्वायवाऽउपस्तृणन्त्यधी वासंय्या हिरण्यान्यस्मै सन्दानमर्वन्ताम्पड्वीशं प्रिया देवेष्वायामयन्ति । रक्त सूत्रेण वेष्टनम्—ॐ युवा सुवासाः परिवीतऽआगात्स ऽउश्रेयान्भवति जायमानः । तन्धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ॥ अथ कलशोपरि धान्यपात्रम्—ॐ

पूर्णादिवि परापत सुपर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणा वहा इष मर्ज ८. शतक्रतोः ॥ अथ वरुणमावाहयेत् ॐ तत्वायामि

पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणा वहा इष मूर्ज ४. शतक्रतोः ॥ अथ वरुणमावाहयेत् ॐ तत्त्वामि
ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानोहविर्भिः । अहेडमानो वरुणेहवोद्धयुरुश ४. समानऽआयुः प्रमोषीः । ॐ भूर्भुवः
स्वः ।

भगवन्वरुण इहागच्छेह तिष्ठ पूजार्थं त्वामावाहयामि स्थापयामि । देवावाहनम्—ॐ सर्वे समुद्राः
सरितस्तीर्थानि जलदानदाः । आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरित क्षय कारकाः । कलशं स्पृशेत्—ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः
कण्ठे रुद्रः समाश्रितः । मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणः स्मृतः ॥ कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा
वसुन्धरा । ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥ अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशान्तु समाश्रिताः । गायत्री चैव
सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा । कलश प्रार्थना—उत्तरे हिमवत् पार्श्वे क्षीरोदो नाम सागरः । प्रारब्धं मन्थनं तत्र
देवैर्दानव संयुतैः ॥ मन्थानं मन्दरं कृत्वा नेत्रं कृत्वा तु वासुकीम् । मूले कूर्मत्रय संस्थाप्य विष्णु प्रभृति देवताः ॥
देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ । उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥ अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा
सरस्वती कावेरी वैष्णवी रौद्री गंगा चैव महानदी ॥ त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः । त्वयि तिष्ठन्ति
भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥ शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः । आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा
मरुदगणाः ॥ त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः । त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं (इमां पूजां) कर्तुमीहे जलोद्भव ॥
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा । ॐ स्थिरो भव वीङ्गवऽआशुर्भव वाज्यर्वन् । पृथुर्भव सुखदस्त्व मग्नेः
पूरीषवाहणः ॥

ॐ आवाहयाम्यहम् देवं वरुणं भुवनेश्वरं । सर्वौषधिरसं दिव्यममृतं प्राणधारकम् ॥ अपाम्पते जगन्नाथ
रसरूपगदाधर । पद्मोद्भव इहागच्छ शक्रेण सहित प्रभो । सगणश्च सभार्यश्च शिशुमारैकवाहन । एहि देव जलाद्
यक्ष कुम्भेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

अथ रक्षा विधानम्

(हरिद्रा, नीम के पत्ते सर्पकंचुकी आदि कंकण सामग्री, जौ कुश दूर्वा, पीली सरसो, गन्धाक्षत, गोमय, दधि सहित रक्षा सूत्र
ताम्रपात्र में रखकर उन्हें स्पर्श करते रहे)

ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम् । विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् ॥ क्षेत्रपालं
नमस्कृत्य दिननाथं निशाकरम् । धरणीगर्भसम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम् ॥ दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्य पुत्रं महाग्रहम् ।
राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः ॥ शक्राद्यादेवताः सर्वा नमस्कृत्य मुनिं तथा । गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं
मुनिपुंगवम् ॥ वशिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं महामुनिम् । व्यासं कविं नमस्कृत्य सर्वशास्त्रविशारदम् ॥ विख्याता
मुनयो ये च ह्याचार्याश्च तपोधनाः । सर्वे ते मम यज्ञस्य रक्षां कुर्वन्तु विघ्नतः ॥ प्राचीं रक्षतु गोविन्द आग्नेयीं गरुडं
वज्रः । यामीं रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैऋतिम् ॥ केशवो वारुणीं रक्षेद्वायवीं मधुसूदनः । उदीचीं श्रीधरो रक्षेद्दशानीच
गदाधरः उद्धर्ध्वगोवर्धनधर अवाचीं धरणीधरः, एवं दश दिशो रक्षेद् वासुदेवो जनार्दनः ॥ यज्ञाग्रेरक्षताच्छंखः पृष्ठे
पद्मं तथोत्तमम् । वामपार्श्वे गदा रक्षेद्दक्षिणे च सुदर्शनः ॥ उपेन्द्रः पातु ब्रह्माणमाचार्यम्पातु वामनः । अच्युतः
पातु ऋग्वेदं यजुर्वेदमथोक्षजः ॥ कृष्णो रक्षतु सामानि ह्यथर्व माधवस्तथा ॥ उपविष्टास्तु ये विप्रास्तेऽनिरुद्धेन
रक्षिताः ॥ यजमानं सपत्नीकम् पुण्डरीक विलोचनः । रक्षाहीनन्तु यत्स्थानं तत्सर्वं रक्षताद्धरिः ॥

गायत्री पाठः ॥ ॐ गणानान्त्वा गणपति ४. हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ४. हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ४. हवामहे व्वसोमम । आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् ॥ ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निजहाति वेदः सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिधुर्दुरिता त्यग्निः ।

ॐ न तद् रक्षाँ सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमज ४. ह्येतत् । यो विभर्ति दाक्षायण ४. हिरण्य ४. स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः । ॐ यदाबद्धन्दाक्षायणा हिरण्य ४. शतानीकाय सुमनस्यमानाः तन्मआबद्धनामिशतशारदाययुष्मान् जरदष्टिर्यथासम् ॥

ॐ त्रिवृदसि त्रिवृतेत्वा प्रवृदसि प्रवृते त्वा विवृदसि विवृतेत्वा सवृदसि सवृतेत्वा क्रमोस्याक्रमायत्वा संक्रमोसि संक्रमाय त्वोत्क्रमोस्युत्क्रमाय त्वोत्क्रान्तिरस्युत्क्रान्त्यैत्वाधिपतिर्नोजोर्जिजन्त्वः ।

ॐ रक्षोहणं बलगहनं वैष्णवीमिदमहन्तं बलगमुत्किरामि यस्मै निष्ठो यममात्यो निचषानेदमहन्तम्बलगमुत्किरामि यस्मै समानो यमसमानो निचषानेदमहन्तं बलगमुत्किरामि यस्मै स बन्धुर्यमसबन्धु निचषानेद महन्तं बलगमुत्किरामि यस्मै सजातो यम सजातो निचषानोत्कृत्याकिरामि ।

ॐ स्वराडसि सपत्नहा सत्र राडस्यभिमातिहा जनराडसि रक्षोहा सर्व्वराडस्यमित्रहा । रक्षोहणो वोब्लगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान् रक्षो हणो बलगहनोवनयामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो बल गहनोवस्तृणामि वैष्णवान् रक्षोहणो वां बलगहना ऽउपदधामि रक्षोहणो वां बलगहनो पर्य्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवास्थ ।

(इन मंत्रों से अभिमंत्रित करके प्रतिष्ठा हेतु कलश में रखते हैं ।)

अथ संक्षेपेण नवग्रह स्थापनं पूजनं च । । (नवग्रहों के वेद मंत्र हवन प्रकरण में हैं)

ग्रह पूजा

जलम् गृहीत्वा—ओंकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः परमात्मा देवताव्याहृतीनां विश्वमित्र जमदग्नि भरद्वाजा ऋषयः गायत्री—उष्णिक् अनुष्टुप् छन्दांसि—अग्नि वायु सूर्या देवताः सूर्यादि नवग्रहादि देवानां—आवाहन

पूर्वकं स्थापने (पूजने च) विनियोगः । ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रमसे नमः चन्द्रमसमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवः स्वः भौमाय नमः भौममावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवः स्वः बुधाय नमः बुधस्पतये नमः बृहस्पतिमावा० । ॐ भू० बृहस्पतये नमः शुक्रमावा० । ॐ भू० शुक्राय नमः शनैश्चरमावाह० । ॐ भू० राहवे नमः राहुमावा० । ॐ भू० केतवे नमः केतुमावा० । (इसी प्रकार दध्यक्षत पुंज से अधि प्रत्यधि आदि स्थापित करे) अधिदेवता—ॐ भू० ईश्वराय नमः ईश्वरमावा० । ॐ भू० उमायै नमः उमावावा० । ॐ भू० स्कन्दाय नमः स्कन्दमावा० । ॐ भू० विष्णवे नमः विष्णुमावा० । ॐ भू० ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावा० । ॐ भू० इन्द्राय नमः इन्द्रमावा० । ॐ भू० यमाय नमः यममावा० । ॐ भू० कालाय नमः कालमावा० । ॐ भू० चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तमावा० । ॥ अथ प्रत्यधि देवता—ॐ भू० अग्नये नमः अग्निमावा० । ॐ भू० अद्भ्यो नमः आप आवाहयामि० । ॐ भू० पृथिव्यै नमः पृथिवीमावा० । ॐ भू० विष्णवे नमः विष्णुमावा० । ॐ भू० इन्द्राय नमः इन्द्रमावा० । ॐ भू० इन्द्रायै नमः इन्द्राणीमावा । ॐ भू० प्रजापतये नमः प्रजापतिमावा० । ॐ भू० सर्पेभ्यो नमः सर्पानावा० । ॐ भू० ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावा० । अथ पंच लोकपालाः—ॐ भू० विनायकाय नमः विनायकमावा० ॐ भू० वायवे नमः वायुमावा० ॐ भू० दुर्गायै नमः दुर्गमावा० ॐ भू० आकाशाय नमः आकाशमावा० ॐ भू० अश्विभ्यां नमः अश्विनावावाहयामि । ॥

अथ दश दिक्पालाः—ॐ भू० इन्द्राय नमः इन्द्रमावा ॐ भू० अग्नये नमः अग्निमावा ॐ भू० यमाय नमः यममावा० ।

अथ दश दिक्पालाः—ॐ भू० इन्द्राय नमः इन्द्रमावा ॐ भू० अग्नये नमः अग्निमावा ॐ भू० यमाय नमः यममावा० ।
ॐ भू० निऋतये नमः निऋतिमावा० । ॐ भू० वरुणाय नमः वरुणमावा० । ॐ भू० वायवे नमः वायुमावा० । ॐ भू० कुबेराय नमः कुबेरमावा० । ॐ भू० ईशानाय नमः ईशानमावा० । ॐ भू० ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावा० । ॐ भूर्भुवः
स्वः अनन्ताय नमः अनन्तमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भू० क्षेत्राधिपतिभ्यो नमः । क्षेत्राधिपतीन् आवा० ॐ भू०
वास्तोष्पतये नमः वास्तोष्पतिमावा० । ग्राम देवता० इष्ट देवता० भूमि० स्थान० सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः
हस्तौ प्रक्षाल्य प्रतिष्ठा—एतन्ते देव सवितर्य ४. प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञ मवतेन यज्ञपतिं तेन मामव । ॐ
मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमं तनोत्व रिष्टं यज्ञ ४. समिमदधातु० । ॐ भूर्भुवः स्वः कलशेदध्यक्षत पुंजेषु
आवाहिता ब्रह्मवरुण रक्षा सूत्र (कंकण) सहिता आदित्यादि नवग्रहादयः इहागच्छन्तु इहतिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठिता वरदा
भवन्तु । नवग्रहादि ध्यानम्—ॐ ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च । गुरुश्च शुक्रः शनि राहु
केतवः सर्वे ग्रहाः शांतिकरा भवन्तु । वरुणध्यानम्—ॐ नागपाशधरः स्वर्ण भूषणः पदिमनी प्रियः । वरुणो ऽम्बुपतिः
श्रीमान्सौम्यो मकरवाहनः । ॐ वरुणाय नमः ध्यानं समर्पयामि । आवाहितेभ्यो देवेभ्यो नमः ध्यानं समर्पयामि ।

आवाहनम्, आसनं, पाद्यं, अर्घ्यम्, आचमनीयम् नाना वस्त्र, यज्ञोपवीत, आच० चन्दन रौली, कुंकुम, अबीर
गुलाल, केसर कस्तूरी अक्षत, नानारंग के पुष्प, धूप दीप नैवेद्य (६ प्रकार के अनाज) पंच मेवा पंच मिठाई पक्वान्न
आदि का भोग, जप—ॐ आवाहितेभ्यो नवग्रहादिभ्यो नमः ८ । ॐ गुह्याति गुह्य गोप्तारो गृह्णत्वस्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवाः प्रसादात् भवताम्सदा ।। ताम्बूल, फल, द्रव्य, नीराजन, मंत्रपुष्पाञ्जलिः ॐ ब्रह्मा
मुरारिस्त्रिपुरान्तकारि० ॐ सूर्य, शौर्यमथेन्द्रुरिन्द्रपदवीं सन्मंगलं मंगलो सदबुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुख

शं शनी राहुर्बाहु बलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिं नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु ममते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः ।। आयुश्च वित्तं च तथा सुखं च धर्मार्थलाभौ बहुपुत्रतां च । शत्रु क्षयं राजसु पूज्यतां च तुष्टाग्रहाः क्षेमकरा भवन्तु ।। ॐ आदित्यादि नव ग्रहादिभ्यो नमः ।।

अथ नवग्रह स्तोत्रम्—ॐ जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् । तमोरि सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् । दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदारणव सम्भवम् । नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुट भूषणम् ।। धरणीगर्भ सम्भूतं विद्युत्कान्ति समप्रभम् । कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम् ।। प्रियंगु कलिका श्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् । सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ।। ऋषीणां चैव देवानां गुरुं कारुचन संनिभम् । बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ।।

हिम कुन्द तुषाराभं दैत्यानां परमं गुरुम् । सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ।। नीलाञ्जन समाभासं सूर्यपुत्रं यमाग्रजम् । छाया मार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ।। अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम् । सिंहिकागर्भं संभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ।। पलाश पुष्प संकाशं तारकाग्रह मर्दनम् । रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् । इतिव्यास मुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः । दिवावा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ।। ऐश्वर्यं मतुलं तेषा मारोग्यं पुष्टिवर्द्धनम् । नरनारी नृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम् ।। रक्षा बन्धनमंत्रः—ॐ त्वं यविष्ठ दाशुषो नृः पाहि शृणुधीर्गिरिः । रक्षातोकमुतन्मना ।। येन वद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः । तेन त्वामपि बध्नामि रक्षे माचल माचल ।। रक्षा सुरक्षा भूयात् ।।

इति श्री घनानन्दाचार्य सम्पादिते० बृहद वार्षिक व्रत पूजा दर्पणे पूर्वांग कर्म समाप्तम् ।।

अथहवन विधिः

(चौकोर वेदी के मध्य में लाल रंग से सप्तकोणात्मक अग्निजिह्वा बनाकर तथा नाना रंगों से पीत श्वेत आदि अग्नि की नौ शक्तियाँ कल्पित करे। परिस्तरण में कुशा का अग्रभाग पूर्व और उत्तर करे अनामिका में चार कुश की (चतुर्दशश्च शान्ति के) पवित्री धारण करे। पत्नी दाहिनी और बैठे। अन्य देवताओं के ध्यान के पूष अग्नि में चढ़ावे। आसन न बदले। आहुति देने में तर्जनी और कनिष्ठिका रहित मृगी मुद्रा प्रशस्त है)

आचार्य वरण-संकल्पं कुर्यात्-अस्मिन् यज्ञ कर्मणि आचार्य कर्म कर्तुं आचार्यस्य पूजन पूर्वकं वरणं च करिष्ये।

आचार्यम्-अर्घ्यादिभिः सम्पूज्य (गन्धाक्षत करके) एभिर्गन्धाक्षत पुष्प पूंगीफल द्रव्य यज्ञोपवीत पुष्पमाला वस्त्रादिभिः करिष्यमाण अमुकयज्ञ कर्मणि आचार्य कर्म कर्तुं आचार्यत्वेन त्वामहम् वृणे। आचार्यः-

वृत्तोऽस्मि ॥ प्रार्थना-आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रदीनां बृहस्पतिः। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्-आचार्यो भव सुव्रत ॥ अंगुष्ठ ग्रहणम्। त्वं मे आचार्यो भव। अहं भवानि। तत आचार्यः त्रिभिर्दभैः पांशून्-अपसार्य, गोमयोदकेन-उपलिप्य, श्रुवेण तिस्रोरेखाः कृत्वा अनामिका अंगुष्ठाभ्यां ताभ्यः रेखाभ्यः पांशून्-उद्धृत्य ईशानकोणे निक्षिपेत्। मणिकोदकेन अभ्युक्ष्य ताम्रपात्र स्थितमग्निं वेद्यां स्वाभिमुखं स्थापयेत्। ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवौ २ ॥ आसादयादिह ॥ इत्यग्निं संस्थाप्य संकल्प पूर्वकं ब्रह्माणं अर्घ्यादिभिः सम्पूज्य अस्मिन् यज्ञ कर्मणि कृताकृतावेक्षणादि ब्रह्मकर्मकर्तुं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ॥ प्रार्थना-यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेद विशारदः। तथा त्वं

मम यज्ञोऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ।। त्वं मे ब्रह्मा भव । अहं भवानि । यथा विहितं कर्म कुरु । यथा ज्ञानं करवाणि । एवं सर्वेषां याज्ञिकानां वरणं कृत्वा प्रार्थयेत्—अस्य यज्ञस्य निष्पत्त्यै भवन्तोऽभ्यर्चिता मया । सुप्रसन्नैश्च कर्तव्यं शान्तिकं विधिपूर्वकम् ।। कुशकंडिका—अथ आचार्यः आत्मासनं यज मानासनं दक्षिणतो ब्रह्मासनं दत्वा अग्नेरुत्तरतः कुशासन द्वयं कल्पयित्वा प्रणीता पात्रं चतुर्षु स्थानेषु गन्धाक्षतैः सम्पूज्य वामहस्ते कृत्वा जलेन आपूर्य दर्भैः आच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्य प्रथम आसने निधाय अनामिका अंगुष्ठाभ्यां द्वितीय आसने स्थापयेत् । ततो ईशानादि उत्तर पर्यन्तं वेद्यापरिस्तरणं (चार—चार कुश से) कुर्यात् । प्राग् दक्षिणतः पश्चात् उत्तरतः दिशं वेद्या परिस्तरणं कुर्यात् ।। पवित्र च्छेदनार्थं त्रीणि कुश तरुणानि द्वे पवित्रे (अर्थात् दो कुश) साग्रे अनन्तर्गर्भे प्रोक्षणीपात्रम् आज्यस्थाली चरुस्थाली सम्मार्जन कुशाः पत्र्य, उपयमन कुशा सप्त, समिधः तिस्रः । श्रुवः गव्यमाज्यम् (गाय का घृत) तण्डुलाः पूर्णपात्रं कमोपयोगिनी दक्षिणा, (२५६ मुद्गी चावल) ततः त्रिभिः कुशैर्द्वेच्छेद्ये प्रादेशमात्रे पवित्रे कृत्वा प्रोक्षणीपात्रं वामकरे कृत्वा प्रणीतोदक मासिंच्य तदुदकेन पवित्रेण आज्यस्थालीं, चरुस्थालीं सम्मार्जन कुशान् आज्यं पूर्णपात्रं च प्रोक्ष्य प्रोक्षणीम् अग्निं प्रणीतयोर्मध्ये स्थापयेत् । आज्यं ब्रह्मा अधिश्रयति । आज्ये ज्वलदुल्मुकं भ्रामयेत् । सु वं अधोमुखम् अग्नौ प्रताप्य, सम्मार्जन कुशाग्रैः मूलतोऽग्र पर्यन्तं मूलैरग्रमारभ्य अधस्तात् मूल पर्यंतं । (मूलैर्मूलं मध्यभागैः मध्यं अग्रभागैः अग्रभागं) संमृज्य प्रणीतोदकेन प्रोक्ष्य पुनः उत्तानम् प्रताप्य कराभ्यां मार्जयित्वा दक्षिणतो दर्भोपरि निदध्यात् । आज्यम् उत्थाप्य अग्नेः दक्षिणतः पश्चाद् आनीय पवित्राभ्यां आज्यम् उत्पूय, ऊर्ध्वं निक्षिप्य, अवलोक्य, अपद्रव्य निरसनं कृत्वा, पुनः प्रोक्षणीम् उत्पूय, वामहस्ते उपयमन (पंच) कुशान् आदाय, उत्तिष्ठन् घृताक्ताः समिधः मध्य भागे धृत्वा अग्नौ प्रक्षिपेत् । तत्र मन्त्रः—ॐ समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् ।

अस्मिन्हव्या जुहोतन ।। सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन । अग्नये जातवेदसे ।। तन्त्वा समिद्धिरंगिरो घृतेन
वर्द्धयामसि । बृहच्छोचा यविष्ठ ।। उपत्वाग्ने हि वष्वतीर्घृताचीर्यन्तु हर्यत । जुषस्व समिधो मम ।। स्वाहा ।। ततः
प्रोक्षणी उदकेन सपवित्रेण दक्षिणचुलूकं गृहीतेन अग्निम् ईशानादि उत्तर पर्यन्तं पिरिषिच्य पवित्रे प्रणीतायां
निदध्यात् । ततो द्रव्यत्याग संकल्पः—अघेह० अमुकोऽहं अमुक होमकर्मणि इदमाज्यं आघाराज्य भागदेवताभ्यः,
तिलाज्यादिभिः (मुख्य होम का उच्चारण करके) अमुकदेवप्रीतये अमुक मंत्रेण अमुकसंख्यया तथा अमुकसंख्यया
आदित्यादिनवग्रहभ्यः अधिप्रत्यधि विनायकादि पञ्चलोकपालेभ्य तथा इन्द्रादि दश दिक्पालेभ्यः वास्तोस्पतये
क्षेत्राधिपतये (गायत्री बटुकभैरव शिव विष्णु राम हनुमान महामृत्युञ्जय देवी, कृष्ण आदि सभी देवी देवताओं के
निमित्त सामग्री के अनुसार द्रव्य त्याग संकल्प के अनुसार आहुतियाँ देवे) ग्राम देवताभ्यः इष्टदेवताभ्यः
भूमिदेवताभ्यः (अपने इष्ट देवता का नामोच्चारण करे) अग्नये स्विष्टकृते शेषं आज्यम् महाव्याहृतिदेवताभ्यः
सर्वप्रायश्चित्त देवताभ्योऽग्नये प्रजापतये च मया परित्यक्तम् यथा देवतमस्तु तथा—एतद् होमकर्मणि अमुक नामाग्नेः
(वरद नामाग्नेः) प्रतिष्ठावाहन पूर्वकं पूजनं करिष्ये । प्रतिष्ठा—ॐ एतन्ते० ॐ भूर्भुवः स्वः वरदनामाग्ने इहागच्छ
इहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव । अग्निध्यानम्—ॐ चत्वारि श्रृंगा त्रयोऽस्य पादाद्वे शीर्षे सप्त हस्तासौऽस्य
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवोमर्त्या २ ।। २५ आविवेश । ॐ वरद नामाग्नये नमः इति आवाहनादिभिः सम्पूज्य
गन्धाक्षत पुष्पैः प्रथमं रेखाः पूजनं—पूर्व रेखायां ॐ ब्रह्मणे नमः । मध्यरेखायां ॐ विष्णवे नमः । उत्तररेखायां ॐ रुद्राय
नमः । जिह्वा पूजनम्—ॐ कराल्यै नमः । ॐ धूमिन्यै नमः, श्वेतायै०, लोहितायै०, नीललोहितायै०, सुवर्णायै०,
पद्मसरागायै० । (अग्नि की नौ शक्तियाँ पूजे) ॐ पीतायै नमः, ॐ श्वेतायै नमः, अरुणायै०, कृष्णायै०, धूम्रायै०,

तीक्ष्णायै०, स्फुलिगिन्यै०, ज्वलिन्यै०, ज्वलिन्यै नमः । पुनः प्रार्थना—ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् । सुवर्णवर्णममलं प्रसन्नं विश्वतो मुखम् ॥ चतुरंगुलं सुखं विहाय मनसा प्रजापतिं ध्यात्वा जुहुयात् ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा (अग्नि उत्तरे) इदम् प्रजापतये (नमः) शेषं प्रणीतायाम् । ॐ इन्द्राय स्वाहा (अग्नि दक्षिणे) इदमिन्द्राय (नमः) । शेषं प्रणीतायाम् । ॐ सोमाय स्वाहा (मध्ये) इदम् सोमाय० ॥ शेषं प्रणीतायाम् । ततः प्रधानहोमं कुर्यात् । (यदि प्रधान देवी हो तो पुष्प लेकर ध्यान करे) ॐ विद्युद्दाम समप्रभां मृगपति स्कन्ध स्थितां भीषणांकन्याभिः करवाल खेट विलसद्दस्ताभिरासेविताम् । हस्तैश्चक्र गदासिखेट विशिखां श्चापं गुणं तर्जनीं विभ्रणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गा त्रिनेत्रां भजे ॥ ॐ जगदम्बादेव्यै नमः ध्यानं समर्पयामि ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा (पूरी आहुतियाँ देकर) इदं जगदम्बादेव्यैनमम ॥ (दुर्गा सप्तशती के पाठ से हवन की विधि ५६ पृष्ठ में देखें) ।

विष्णुध्यानम्—ॐ सशंख चक्रं सकिरीट कुण्डलं सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम् । सहारवक्षस्थल कौस्तुभ श्रियं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम् ॥ ॐ विष्णवे नमः ध्यानं समर्पयामि ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय स्वाहा ॥ इदं भगवते वासुदेवाय नमः ॥ (अथवा पुरुष सूक्त के १६ मंत्रों ॐ सहस्रशीर्षा० (पुरुष सूक्त अन्त में छपा है) से आहुतियाँ देवें । प्रत्येक मंत्र के अन्त में ॐ कार न लगाकर “नाराणाय स्वाहा” बोले । मंत्र के आदि में ओंकार का उच्चारण अवश्य करे ॥

शिवजी का ध्यान—ॐ ध्याये नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारु चन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमुगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ॥ पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृतिं वसानं विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं

निखिलिभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥ ॐ शिवाय नमः ध्यानं समर्पयामि ॥ “ॐ नमः शिवाय स्वाहा” इदं शिवाय

निखिलिभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ।। ॐ शिवाय नमः ध्यानं समर्पयामि ।। "ॐ नमः शिवाय स्वाहा" इदं शिवाय नमः ।। अथवा पञ्चमाध्याय रुद्री के १६ मन्त्रों (रुद्रसूक्त) से आहुतियाँ देते हुये मंत्रों के अन्त में "शिवाय स्वाहा" का उच्चारण करे ।।

गायत्री ध्यान—ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा, श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च भूषिता ।। आदित्य मण्डलस्था च ब्रह्मलोक गताथवा । अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासन गताथवा ।। ॐ गायत्री सावित्री सरस्वती रूपायै नमः ध्यानं समर्पयामि ।। ततो गायत्री मन्त्रेण तथासंकल्पितं होमं कुर्यात् ।।

श्रीराम ध्यानम्—ॐ ध्यायेदाजानु बाहुं धृतशर धनुषं बद्धपद्मासनस्थं पीतं वासो वसानं नव कमल दल स्पर्धि नेत्रं प्रसन्नम् । वामाकारुढ सीता मुख कमल मिलल्लोचनं नीरदाभं नाना लङ्कार दीप्तं दधत मुरु जटा मण्डलं रामचन्द्रम् ॐ भगवते रामचन्द्राय नमः ध्यानं समर्पयामि ।। ॐ रां रामाय नमः स्वाहा । इदं रामाय नमः ।। बटुकभैरव—ॐ कर कलित कपालकुण्डली दण्ड पाणिस्तरुण तिमिर नील व्याल यज्ञोपवीती क्रतु समय सपर्या विघ्न विच्छेद हेतुर्जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ।। ॐ वटुक भैरवाय नमः ध्यानं सम० ।। ॐ ह्रीं वं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं ।। लक्ष्मी ॐ नमस्तेस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते । शंख चक्र गदा हस्ते महालाक्ष्मि नमोस्तुते ॐ हिरण्यवर्णाहरिणीं० श्री सूक्त के १६ मंत्रों से हवन करे—महालक्ष्म्यै स्वाहा "अन्त में इदं महा लक्ष्म्यै नमः" । अथवा—ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै स्वाहा ।।

नवग्रहहोमः—(नवग्रहों की समिधा—आक; ढाक, खैर, चिड़चिटा (साजी) पीपल, गूलर, शमी दूर्वा; कुशा ये ६ सूर्यादि की क्रमशः हैं । दूर्वा और कुशा, तीन २ बाँधे तब एक बनती है । तीन दूर्वा की एक समिधा तीन कुशा की एक समिधा कहलाती है ।

छन्दः ॐ आकृष्णीति हिरण्य स्तूप ऋषिस्त्रिष्टुप छन्दः सूर्यो देवता सूर्यप्रीतये अमुक संख्याया तिलाज्यादि होमे विनियोगः एकाहुत्या चाज्येनोहयक्ष्ये । ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्मृतं मर्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा ।। इदं सूर्याय नमः ।। ॐ इमन्देवेति गौतम ऋषिस्त्रिष्टुप छन्दः सोमो देवता सोमदेव प्रीतये अमुक संख्याया तिलाज्यादि होमे विनियोगः । ॐ इमं देवाऽअसपत्न ८. सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रममुष्य पुत्रमस्यै पुत्रमस्यै विवशऽएष वोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा । स्वाहा ।। इदं चन्द्रमसे ० ।। ॐ अग्निमूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअय मपां रेतान् सि जिन्वति देव प्रीतये ० तिलाज्यादि होमे विनियोगः ॐ अग्निमूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअय मपां रेतान् सि जिन्वति स्वाहा ।। इदं भौमाय नमः ।। ॐ उदबुध्यस्वेतिमंत्रस्य परमेष्ठि ऋषिः त्रिष्टुभ छन्दः बुधोदेवता ० ॐ उदबुध्यस्वाने प्रतिजागृहित्वमिष्टा पूर्ते स ८. सृजेथामयञ्च । अस्मिन्तसधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत । स्वाहा ।। इदं बुधाय नमः ।। ॐ बृहस्पत इति मंत्रस्य गृत्समद ऋषिस्त्रिष्टुप छन्दो बृहस्पतिदेवता बृहस्पतिदेव प्रीतये ० ॐ बृहस्पतयेऽअतियदर्योऽअर्हाद्युमाद्विभाति क्रतु मज्जनेषु यदीदयच्छवसऽऋत प्रजा ततदस्मासु द्रविणं देहि चित्रम् स्वाहा ।। इदं बृहस्पतये नमः ।। ॐ अन्नात्परिश्रुत इति प्रजापत्यशिवसरस्वतीन्द्रा ऋषयोऽति जगतीच्छन्दः शुक्रोदेवता शुक्रप्रीतये अमुक संख्याया ० ।। ॐ अन्नात्परिश्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रम्पयः सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ८. शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतम्मधु स्वाहा ।। इदं शुक्राय नमः ।। ॐ शन्नोदेवीति दध्यंगाथर्वण ऋषिर्गायत्री छन्दः शनिदेवता शनिदेव प्रीतये अमुक संख्याया ० ॐ शन्नो देवी राभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये । शंयोरभिस्रवन्तु नः स्वाहा ।। ॐ कयानश्चित्रेति वामदेव ऋषिर्गायत्री छन्दो राहुदेवता राहु प्रीतये अमुकसंख्याया तिलाज्यादि होमे विनियोगः । ॐ कनयानश्चित्रऽआभुवदूती सदा वृधः सखा, कयाशचिष्ठया वृता

स्वाहा । इदं राहवे नमः ।। ॐ केतुं कृण्वन्निति मधुश्छन्दः ऋषिर्गायत्री छन्दः केतुदेवता केतुदेव प्रीतये अमुक संख्याया तिलाज्यादि होमे विनियोगः । ॐ केतुं कृण्वन्निति मधुश्छन्दः ऋषिर्गायत्री छन्दः केतुदेवता केतुदेव प्रीतये अमुक

स्वाहा । इदं राहवे न मम । ॐ केतुं कृण्वन्निति मधुश्छन्दः ऋषिर्गायत्रीः छन्दः केतुर्देवता केतुर्देव प्रीतये अमुक संख्यया तिलाज्यादि होमे विनियोगः (अधिप्रत्यधि के नाम ग्रहस्थापन में हैं) ॐ अधिदेवताभ्यः स्वाहा । इदं । ॐ

प्रत्याधिदेवताभ्यः स्वाहा । ॐ विनायकादि पञ्च लोक पालेभ्यः स्वाहा । ॐ इदं ॐ इन्द्रादिदशादिक्पालेभ्यः स्वाहा । इदं । ॐ क्षेत्राधिपतये स्वाहा । इदं । ॐ वास्तोष्पतये स्वाहा । इदं । ॐ ग्रामदेवताभ्यः ॐ इष्ट देवताभ्यः ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यः ॐ अग्नये स्विष्ट कृते स्वाहा । इदं (ब्रह्मा घी से भूरादि नौ आहुति देवें) छन्दः ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः परमात्मा देवता, व्याहृतीनां विश्वामित्र जमदग्नि भरद्वाजा ऋषय, गायत्री उष्णिक् अनुष्टुप् छन्दासि अग्नि वायु सूर्या देवता प्रायश्चित्त होमे विनियोगः । ॐ भूः स्वाहा । इदमग्नये । ॐ भुवः स्वाहा । इदम्वायवे । ॐ स्वः स्वाहा । ॐ इदं सूर्याय ॐ । ॐ छन्दः—ॐ त्वन्नोऽअग्न इति वामदेवऽअग्निस्त्रिष्टुप् छन्दोऽअग्निवरुणौ देवते सर्व प्रायश्चित्त होमे विनियोगः । ॐ त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवया सिंसीष्ठा यजिष्ठो वहितमः शोशुचानो विश्वाद्देषाँ सिप्रमुग्ध्यस्मत् स्वाहा । ॐ इदमग्निवरुणाभ्यां न मम । ॐ सत्त्वन्नोऽअग्न इति वामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दोऽअग्नि वरुणौ देवते सर्व प्रायश्चित्त होमे विनियोगः । ॐ सत्त्वन्नोऽअग्ने वमो भवो ति नेदिष्ठोऽअस्याऽउषसो व्युष्टौ । अवयक्ष्व नो वरुण ४. रराणो वीहि मृडीक ४. सुहवो नऽअग्निः स्वाहा । ॐ इदमग्निवरुणाभ्यां न मम । ॐ अयाश्चाग्न इति प्रजापतिऽअग्निर्विराट् छन्दोऽअग्निर्देवता सर्वप्रायः ॐ अयाश्चाग्नै स्यनभिशस्ति पाशः सत्यमित्व मयाऽअसि । अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषज ४. स्वाहा । ॐ इदमग्नये न मम । ॐ

ॐ येतेशतमिति शुनः शोफ ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो वरुण सवितु विष्णुविश्वेदेवमरुत्स्वर्का देवताः सर्वप्रायः० ।।
 ॐ येते शतम्वरुण ये सहस्रं यज्ञिया पाशा वितता महान्तः ते भिनोऽअद्य सवितो त विष्णुविश्वे मृचन्तु मरुतः
 स्वर्काः स्वाहा । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्कैर्भ्यश्च न मम ।। ॐ उदुत्तममिति
 शुनः शोफ ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो वरुणादित्यादिति देवताः सर्व प्रायश्चित्त होमे विनियोगः ।। ॐ उदुत्तमं
 वरुणपाशमस्मदवाधमं विमध्यम ४. श्रथाय । अथावयमादित्य व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा ।।
 इदम्वरुणायादित्यायादितये न मम ।। ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदम्प्रजापतये न मम ।। इति हुत्वा संश्रवप्राशनम्,
 पवित्राभ्यां मुखमार्जनम्, पवित्रयोरग्नौ प्रतिपत्तिः प्रणीताविमोक्तः । ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्—ॐ विष्णुः ३ ।।
 कृतैतद्धोमकर्मणः सांगफल प्राप्तये अपूर्णपूर्णार्थं इदं पूर्णपात्रं स सुवर्णं (सद्रव्यं) ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे ॐ
 तत्सन्नमम ।। ब्रह्मा पूर्णपात्रं गृहीत्वा (ॐ स्वस्ति) आशिषं दद्यात्—ॐ अक्क्रन्नकर्म कर्मकृतः सहवाचा मयोभुवः ।
 देवेभ्यः कर्मकृत्वा तम्प्रेत सचाभुवः । अन्येभ्यो याज्ञिकेभ्यो दक्षिणं दद्यात् (आचार्याय गोदानम् दद्यात्)

दिक्पालेभ्यो बलिदानम्—संकल्पः ॐ अद्योह० आवाहितानां देवानां प्रीतये बलिदानं करिष्ये । (१० दीपक
 जलाकर वेदी या कुण्ड के चारों ओर रखकर गन्धाक्षत पुष्प नैवेद्यादि से पूजे । दध्यक्षत पुंज भी रखे)

जलं गृहीत्वा—आवाहितेभ्यो देवेभ्यो दध्यक्षत बलिर्नमम प्रार्थना—भो २ आवाहिता देवा दीपसहित दध्यक्षत
 बलिं गृह्णन्तु मम (यजमानस्य) सपरिवारस्य आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः—शान्तिकर्तारः तुष्टि पुष्टि कर्तारः भवत ।।
 (गृह प्रवेश के क्षेत्रपाल का पत्थर छत पर रखते हैं । अन्य यज्ञादि कर्म का ध्वजा गर्त में स्थापित करे । कृषरान्न
 तिलतण्डुल या साबुत उड़द चावल एक पत्तल में रखकर व दीप चतुष्पथ पर रखे)

पूर्णाहुतिहोमः—अद्येह० कृतस्य अमुकहोम कर्मणः साद गुण्यार्थं अपूर्ण पूर्णार्थं मृडनामाग्नौ पूर्णाहुति होमं करिष्ये । प्रतिष्ठा—ॐ भूर्भुवः स्वः मृडनामाने इहागच्छ इतिष्ठ इतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव । ॐ मृडनामाग्नये नमः इति सम्पूज्य (नारियल या गोला घी भरकर पान के ऊपर सुचि पर रखकर पुष्पमाला वस्त्रादि से अलंकृत करे । सुचिपूजन करके अधोमुख सुवा से ढक कर उठकर ब्रह्मा सुचि में घृत देते रहें)

प्रथमं सूचि पूजनम्—ॐ सुचश्च मे चमसा च मे वायव्यानि च मे द्रोण कलशश्च मे ग्रावाणश्च मे धिषवणे , मे पूतभृच्चमऽआधवनीयश्च मे वेदिश्च मे बर्हिश्च मे ऽवभृथश्च स्वगाकारश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् । ॐ सुचै नमः गन्धादिभिः सम्पूज्य जुहुयात् ।

तत्र विनियोगः—ॐ मूर्ध्वा निमित्यस्य भारद्वाज ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो महावैश्वानरो देवता पूर्णाहुति होमे विनियोगः । ॐ मूर्ध्वा नंदिबोऽरतिं पृथिव्या वैश्वानर मृत आज्ञातमग्निं कवि ८. साम्राज्यमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्तो देवाः । ॐ पूर्णाद्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणा वह्ना इषमूर्ज ८. शतक्रतोः स्वाहा । ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारम् वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुखा कामधुक्षः स्वाहा । ॥ इदमग्नये महावैश्वानराय नमः । ॥ प्रार्थना—श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं बलं श्रियम् । आयुष्यं तेजमारोग्यं देहि मे हव्य वाहन । ॥ मार्जन विनियोग—ॐ तनूपा इत्यादीनां बृहदेवा ऋषयो यजुश्छन्दोऽग्निर्देवता मुखमार्जने विनियोगः ।

ॐ तनूपाऽग्नेऽसि तन्वमेपाहि । आयुर्दाऽग्नेऽस्यायुर्मे देहि । व्वर्चोदाऽग्नेऽसि व्वर्चो मे देहि । अग्ने यन्मे

तन्वाऽऊनन्तन्मऽ आपृण । ॐ मेधाम्मे देवः सविताऽआदधातु । मेधान्देवी सरस्वतीऽआदधातु । मेधाम्मऽश्विनौ देवा
वाधत्ताम्पुष्कर स्रजौ । अंगानि च मऽ आप्यायन्ताम् । वाक् च मऽ आप्यायताम् । प्राणाश्चमऽ आप्यायन्ताम् । चक्षुश्चमऽ
आप्यायताम् श्रोत्रञ्चम आप्यायताम् । यशो बलं च मऽ आप्यायताम् ।

त्र्यायुष धारणम्—ॐ त्र्यायुषमिति नारायण ऋषिरुष्णिक् छन्दोऽग्निर्देवता त्र्यायुषकरणे विनियोगः । ॐ
त्र्यायुषं जमदग्ने । ललाटे ।। कश्यपस्य त्र्यायुषम्—ग्रीवायाम् । यदेवेषु त्र्यायुषम्—दक्षिणांसे । तन्नोअस्तु त्र्यायुषम्—हृदये ।।

महानीराजनम् मंडप पूजनम् व्यासपूजनम् च कृत्वा ।

रक्षाबन्धन, धृतच्छाया, अभिषेक, तिलक आशीर्वादान्त कर्म कुर्यात् ।।

अग्नि विसर्जन—ॐ यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ (स्वाहा)

एषते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाक् सर्व वीरस्तं जुषस्व स्वाहा ।।

ॐ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर । यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ।। (अक्षत छोड़े)

देव विसर्जन—यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम् । इष्टकाम प्रसिद्धयर्थं पुनराग—गमनाय च ।।

धृतच्छाया—आज्यपात्रं (ताम्रपात्रं) सद्व्यं चतुर्षु स्थानेषु गन्धाक्षतैः सम्पूज्य कुशैः, अभिमंत्रयेत् । ॐ आज्यं
परमयज्ञीयमाज्यं तेजोमयो निधिः । आज्यं हि देव देवानां प्रियमाज्ये स्थितं हविः ।। तदाज्य वीक्षणे भक्त्या कृते
मंगलमाप्नुयात् । दुःस्वप्नो दुर्निमित्तं च विघ्नौघो नश्यति ध्रुवम् ।। तेजः प्रज्ञा च शौर्यं च बलं चापि प्रवर्द्धते । पुण्यं
सप्तांग राज्यं च भवेदन्यदभीप्सितम् ।। ज्ञात्वा वाऽज्ञानतो वापि मनो वाक्कायकर्मभिः । कृतं यत्पातकं तन्मेघृत

स्पर्शाद्विनश्यतु ॥ अघेह० सर्वादिष्ट निवृत्तिपूर्वकमल्पमृत्यु निवारणार्थं, आज्यावेक्षणं करिष्ये ॥ छन्दः—ॐ तेजोसीति परमेष्ठी ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः आज्यं देवताऽआज्यावेक्षणे विनियोगः ॥ ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियन्दवानामना धृष्टं देव यजनमसि ॥ आज्यं तेजः समुद्दिष्टमाज्यं पापहरं परम् ॥ आज्ये चैव मुखं दृष्ट्वा सर्वं पापैः प्रमुच्यते ॥ (आज्ये मुखमवलोक्य) दानसंकल्पः—ॐ विष्णुः ३ ॥ इदमवलोकितमाज्यं सद्रव्यं (सपात्रं) श्री मृत्युञ्जय दैवत्यं श्रीमृत्युञ्जय देव प्रीतये सर्वारिष्ट निवृत्तिपूर्वकं, अल्प मृत्युनिवारणार्थं ब्राह्मणाय दास्ये ॐ तत्सन्नमम । दानवाक्यम्—कामधेनोः समुदभूतं देवानामुत्तमं हविः । आयुर्वृद्धिकरं दातुं राज्यं पातु सदैव माम् ॥ ॐ स्वस्ति ॥ कांसे की कटोरी सहित घृत दान देवै ।

अभिषेकमन्त्राः—दूर्वाभिः आग्नपल्लवैः वा अभिषेकं कुर्युः । (यजमान का मुख पूर्व को, ब्राह्मणों का मुख उत्तर को होना चाहिये) ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवैशिवनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणानेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥ ॐ अग्निर्देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता । ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ४. शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ४. शान्तिः—शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥ सुशान्तिर्भवतु । सर्वादिष्ट प्रशान्तिर्भवतु ॥ सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मा विष्णु महेश्वराः । वासुदेवो जगन्नाथस्तथा संकर्षणो विभुः ॥ सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः । ग्रहस्त्वामभिक्षिचन्तु धर्म कामार्थ सिद्ध्ये ॥ यत्पापं रोगः शोकं दुःखं दारिद्र्यं तद् दूरे प्रतिहतमस्तु । अमृताभिषेकोऽस्तु ॥

तिलपात्रदानम्—सुसुवर्णं तिलपात्रं सम्पूज्य—संकल्पः—अमुको ऽहं सकल पाप क्षयपूर्वकं श्री विष्णुदेव प्रीतये—सुसुवर्ण—इदं तिलपात्रं ब्राह्मणाय दास्ये ॐ तत्सत्० । ब्राह्मणं अर्घ्यं गन्धाक्षतादिभिः सम्पूज्य—तिलाः पुण्याः पवित्राश्च सर्व काम फल प्रदाः । शुक्लाश्चैव तथा कृष्णा विष्णुगात्र समुद्भवाः ॥ यानि कानि च पापानि ब्रह्म हत्या समानि च । तिलपात्र प्रदानेन तानि नश्यन्तु मे सदा । । तिलाः स्वर्णं समायुक्ता दुरित क्षय कारकाः । विष्णोः प्रीतिकरा नित्यमतः शान्ति प्रयच्छत । । स्वस्ति इत्युक्त्वा—ॐ कोदादिति पठेत् । । अथ अच्छिद्रविधिः (तुलसी दल सहित विष्णुपादोदक पात्र में लेकर) ॐ व्रतानां व्रत राजेन्द्र व्रतानां व्रतमुत्तमम् । ॐ व्रतच्छिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं यज्ञ कर्मसु । सर्वं भवतु मेऽच्छिद्रं ब्राह्मणा भवतां गिरा । । ब्राह्मणा यानि भाषन्ते मन्यन्ते तानि देवताः । सर्व देवमयो विप्रो न तद्वचनमन्यथा । विप्रैः सम्भाषितं सर्वं सम्पूर्णं भवति ध्रुवम् । अन्न व्यंजन पानेषु शय्यायां ताम्रभाजने । यदि भुक्तमभुक्तं वा स्वप्नान्तरमथापि वा । दन्तान्तर विलग्नं वा क्षम्यतां मधुसूदन । । व्यास वाल्मीकि वचनात्पराशर वशिष्ठयोः । गर्ग गौतम धौम्यात्रि कश्यपांगिरसां तथा । वचनान्नारदादीनां पूर्णं भवतु ते कृतम् । ।

उपवासो व्रतं चैव स्नानं तीर्थं जपस्तपः ।

विप्रैः सम्भाषितं सर्वं सम्पूर्णं भवति ध्रुवम् । ।

मयाकृतं—अमुक उपवास—अमुकव्रत—अमुक तीर्थयात्रा यां विधिहीनं कालहीनं देशहीनं क्रीयाहीनं श्रद्धाहीनं तत्सर्वं सुकृतमस्तु यन्नकृतं तत् श्री विष्णु प्रसादात् ब्राह्मण—वचनात् पूर्णमस्तु, अस्तु परिपूर्णम् चरणामृतपान करे । नैमिषाच्च प्रयागाच्च गंगा सागर संगमात् । कुरुक्षेत्राद दशगुणं शालग्राम शिलोदकम् । अकाल मृत्युहरणं सर्व व्याधि विनाशनम् विष्णु पादोदकं पीत्वा शिरसाधारयाम्यहम् । ।

विष्णु-सर्वदेव नीराजन-ॐ अविनयमपनय विष्णो दमय मनः शमय मृगतृष्णां भूतदयां विस्तारय, तारय संसार सागरतः ॥१॥ दिव्यधुनीमकरन्द परिमल परिभोग सच्चिदानन्दे । श्रीपतिपदारविन्दे भव भय खेद छिन्दे वन्दे ॥२॥ सत्यपि भेदापगमे नाथ तवाहं न मामकीनस्त्वम् । सामुद्रोहि तरंग क्वचन समुद्रो न तारंग ॥३॥ उदधृत नग नगभिदनुज दनुज कुलामित्र मित्र शशि दृष्टे । दृष्टे भवति प्रभवति न भवति किं भव तिरस्कारः ॥४॥ मत्स्यादिभिरवतारै रवतारवताऽवता सदा वसुधाम् । परमेश्वर परिपाल्यो भवता भवताप भीतोऽहम् ॥५॥ दामोदर गुण मन्दिर सुन्दर वदनारविन्द गोविन्द । भवजलधि मथन मन्दर परमं दरमपनय त्वं मे ॥६॥ नारायण करुणामय शरणं करवाणि तावकौ चरणौ । इति षट्पदी मदीये वदन सरोजे सदा वसतु ॥७॥

ॐ अग्निज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा । सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥
अग्निर्वर्च्यो ज्योतिर्वचः स्वाहा । सूर्यो वर्च्यो ज्योतिर्वचः स्वाहा ॥
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।

ॐ चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्नी तथैव च । त्वमेव सर्व ज्योतीषि आरातिं प्रतिगृह्यताम् ॥

दुर्गा सप्तशती से होम विधिः

पाठ द्वारा होम में न्यास ध्यान सहित कवच अर्गला कीलक (न्यासादि) की आवृत्ति करें, प्रथम अध्याय से त्रयोदश पर्यन्त सात सौ आहुतियाँ देवें । सम्पुट में इक्कीस सौ आहुति होंगी । बीज मन्त्र (ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै

विच्चे) से होम करे । केवल एक अध्याय से कभी होम न करे । ऐसी स्थिति में मध्यम चरित्र (द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ

विच्ये) से होम करे । केवल एक अध्याय से कभी होम न करे । ऐसी स्थिति में मध्यम चरित्र (द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ अध्याय) से होम का विधान है । पाठ में, होम में अध्याय समाप्ति पर इति बध, अध्याय, इन शब्दों का उच्चारण न करे । इनके स्थान पर यों बोले—ॐ जय जय श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये सत्याः सन्तु मम कामाः । (यजमान कामाः) ।

प्रथम चरित्र महाकाली का 'ऐं' बीज है । मध्यम चरित्र महालक्ष्मी का 'ह्रीं' बीज है । पंचमाध्याय से १३ पर्यन्त महासरस्वती का 'क्लीं' बीज है ।

१. प्रथम अध्याय से होम पूर्ण होने पर उल्टे पान पर शाकल्य, घृताक्त—कमलगङ्गा (घी में डुबा कर) सुपारी, दो लौंग, इलायची सुचि में रखें, उठकर आहुति देवें ।

मंत्रः—ॐ अम्बे ऽम्बिके ऽम्बालिके न मानयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ।

ॐ सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै ब्रह्म विष्णु रुद्रवन्दितायै वटुक भैरव सिंह वाहनादि सहितायै ऐं बीजाधिष्ठात्र्यै महाकाल्यै महाहुतिं समर्पयामि स्वाहा ॥ बैठकर सुवा से पाँच आहुति घी की देवें ।

ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा ।

२. द्वितीय तृतीय चतुर्थ अध्यायों की समाप्ति पर पूर्ववत् सामग्री गुग्गुल सहित रखकर—ॐ अम्बे ऽम्बिके ॐ सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै ब्रह्मविष्णु रुद्र वन्दितायै, वटुक भैरव सिंहवाहनादिसहितायै ह्रीं बीजाधिष्ठात्र्यै, अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै महालक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि स्वाहा ॥ पाँच पाँच आहुति घी की ।

विशेष—गर्जगर्ज क्षणं मूढ मधुयावत्० में शहद की आहुति सुवि में पान पर रखकर उठकर देवें । पाँच आहुति घी भी । चतुर्थ अध्याय में पायस व मिश्री की आहुतियाँ । ॐ शूलेन पाहि नो देवि० इत्यादि चारमंत्रों से आहुति न देवें । इनके स्थान पर “ॐ नमश्चण्डिकायै स्वाहा” “अथवा ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा” से चार आहुति देवें ।

३. पंचमाध्याय से त्रयोदश पर्यन्त उत्तर चरित्र में पूर्ववत् सामग्री रखकर “ॐ अम्बेऽम्बिके० ॐ सांगायै० क्लीं बीजाधिष्ठात्र्यै श्रीविद्यायै महासरस्वत्यै महाहृतिं समर्पयामि स्वाहा ।। पांच आहुति घी ।। पञ्चम अध्याय समाप्ति पर पुष्प ऋतुफल ।। कपूर भी रखें । षष्ठ अध्याय की समाप्ति पर भोजपत्री विशेष है । सातवें में दो जायफल ।। ८वें में रक्तचन्दन, कत्था, जोड़ापान ।। ६वें तथा १०वें में केला व बिल्वफल ११वें में खीर का हवन, १२वें में ऋतुफल, केला ।। १३वें में फूल व फल ।। विशेष—११वें में रोगानशेषानपिहंसि० से गिलोय की आहुति । सर्वाबाधाप्रशमनत्रैलोक्य० से पीली सरसों या सफेद मिर्च गोल ।। भक्ष्यान्त्याश्च तानुग्रान्० से अनार व दाड़िम के फूल ।

ततो मां देवता स्वर्गे० से रक्तचन्दन ।। शकम्भरीति विख्याति० से साग की आहुति । दिव्यैधूपैस्तुधूपिता (१३वें) से धूप । खंडं खंडं च चक्रेण० फल काटते हुये ।। मषी वर्ण मभूत्तदा० । से कज्जल की आहुति ।।

अथ देवी अष्टोत्तरशतपूजा (कूर्मचलीयरीति)

ॐ तारायै नमः । ॐ एक जटायै नमः । ॐ नृलीलायै नमः । ॐ नोलोत्पलायै नमः । शर्वायै० । खगेन्द्रायै० । खण्डपरशोः प्रियायै० । खण्डेन्दुधारिण्यै० लम्बोदर्यै० । व्याघ्रचर्मवृतकट्यै० । पीनपयोधरायै० । चन्द्रसूर्याग्निनेत्रायै० । दंष्ट्राकोटि समुज्ज्वलायै० । ललज्जिह्वायै० । जटाजूट—पिंगलैकविराजितायै० । पार्श्वद्वयलसज्जयवत नीलोत्पलस्रजे०

चतुर्भुजायै० । खड्गभुजायै० कर्त्रीखर्पर धारिण्यै० अनन्ततारिण्यै० । २० । अभयतारिणी देव्यै० । नीलोत्पलसम वक्त्रायै० । मुंडमाला विभूषणायै० । शङ्खवर्ण शिवारूढायै० । कल्पवल्लीवनस्थितायै० । श्मशानमध्यजायै० । देव्यै० ।

चतुर्भुजाय०। खड्गभुजाय० कर्त्रीखर्पर धारिण्यै० अनन्ततारिण्यै०। १२०। अभयतारिणी देव्यै०। नीलोत्पलसम
वक्त्राय०। मुंडमाला विभूषणाय०। शुभ्रवर्ण शिवारूढाय०। कल्पवल्लीवनस्थिताय०। श्मशानमध्यजायै०। देव्यै०।
शिवायै०। मुंडविराजितायै०। पाटलायै०। पद्म नाग कृत रूप विराजितायै०। कुन्दाभ वासुकी नाग कृत मेखलायै०।
शिव प्रियायै०। दुर्वादल श्यामवर्ण कर्कोटकोपवीतिन्यै०। अतिशुभ्र महापद्महारायै०। हरप्रियायै०। कनकाभ्रशंखपाल
कृत कर्णिकायै०। उमायै० धूम्राभ्र श्रेष्ठ कुलिककृत केयूरिकायै०। अम्बिकायै०। १४०। जपाभ्र तक्षक श्रेष्ठ कृत
कुडलमंडितायै०। अतिनीलानन्तनागकृतजूतायै०। हिमाद्रिजायै०। महाभीमायै०। महोग्रायै०। मौल्यवस्त्र भूषिण्यै०।
ज्वलदग्निचितामध्य संस्थितायै०। परमेश्वर्यै०। त्रैलोक्य विजयायै०। ज्वालायै०। सरस्वत्यै०। चामुण्डायै०।
कालरात्रिरूपिण्यै०। जगज्जागरिण्यै०। गौर्यै०। ब्रह्मतारायै०। भगवत्यै०। अपराजितायै०। काकिनीतारिणी देव्यै०।
जगद्धात्र्यै०। १६०। जगद्रूपायै०। चिद्रूपायै०। रुद्रतारिण्यै०। बुद्धितत्त्वात्मिका देव्यै०। सदाशिवहूँ दिक्
स्थितायै०। घोर-घोर तराघोरायै०। शिवपर्यंक विराजितायै०। चिदानन्द ब्रह्मरूपायै०। भैरवतारिण्यै०।
वज्रविरोचनीयायै०। मातंगिन्यै०। विश्वमोहिन्यै०। चंडमुडतारिणी देव्यै०। प्रचंडकाल रूपिण्यै०। जय तारिण्यै०।
विजयतारिण्यै०। महालक्ष्म्यै०। उग्रतारिणी देव्यै०। आधारतारिणी देव्यै०। प्रचंड दैत्यदर्पघ्न्यै०। १८०। कान्त्यै०।
शान्तिरूपिण्यै०। वामेश्वर्यै०। घोर रूपायै०। घनस्तन्यै०। त्रयस्त्रिंशद् देवी देव रूपिण्यै०। कपालिन्यै०। मंगलायै०।
भद्रकाल्यै०। वशिष्ठाराधितायै०। प्रह्लै०। उग्रायै०। महोग्रायै०। वज्रायै०। काल्यै०। महाकाल्यै०। महाविद्यादेव्यै०।
महादेव्यै०। अखिल तारिणी देव्यै०। वामरूपायै०। १९०। आदिशक्त्यै० ॐ वाराह्यै०। अखिल वाग् रूपिणी
दुर्गायै०। अखंड वाग् रूपिणी क्षमायै०। ब्रह्मवाग् रूपिणी धात्र्यै०। विष्णुवाग् रूपिणी शिवायै०। रुद्रवाग् रूपिणी
स्वाहायै०। सर्ववाग् रूपिणी स्वधायै नमः। १९०८। वेदोक्त दुर्गा पूजा हमारी महायज्ञ दर्पण में देखें।।

नवरात्रविधान (दुर्गापूजा)

ध्यानम्—ॐ विद्युद्दाम समप्रभां मृगपति स्कन्धस्थितां भीषणां कन्याभिः करवाल खेटविलसद्वस्ताभिरासेविताम् । हस्तैश्चक्र गदासि खेटविशिखौश्चापं गुणं तर्जनीं विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे । ॐ महिषघ्नीं महादेवीं कुमारीं सिंह वाहिनीम् । दानवैस्तर्जयन्तीं च सर्व काम दुघां शिवाम् । ॥ ध्यायामि मनसा दुर्गां नाभि मध ये व्यवस्थिताम् । आगच्छ वरदे देविदेव्य दर्प विनाशिनि ॥ जटाजूट-समायुक्ताम्-अर्धेन्दुकृतशेखराम् । लोचनत्रयसंयुक्तां पीनोन्नतपयोधराम् ॥ ग्रैवेयं दक्षिणे दद्यात् खड्गं चक्रं क्रमादधः । तीक्ष्णं बाणं तथा शक्तिं वामहस्तेषु चिन्तयेत् ॥ ॐ दुर्गादेव्यै नमः ध्यानम् समर्पयामि ॥ आवाहनम्—एहि दुर्गे महाभागे रक्षार्थं मम सर्वदा । आवाहयाम्यहं देवि सर्वकामार्थं सिद्ध्ये । एह्योहि दुर्गे दुरितौघ नाशिनि प्रचंड दैत्यौघ विनाश कारिणि । उमे महेशास्व शरीर धारिणि स्थिरा भव त्वं मम यज्ञ कर्मणि ॥ ॐ दुर्गा देव्यै नमः आवाहनम् समर्पयामि ॥ आसनम्—अनेक रत्न संयुक्तं नानामणि गणान्वितम् । कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥ पाद्यम् (कर्पूर मिश्रित जल से)—कर्पूर द्रव्य कस्तूरी कश्मीरादिसुवासितम् । पाद्यमेतत्सुख स्पर्शं गृहाण सुरसुन्दरि ॥

अर्घ्यम्—(घण्टावादन सहित) निधीनां सर्व रत्नानां त्वमनर्घ्य गुणाह्वसि । सिंहोपरिस्थिते देवि गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते ॥ अर्घ्यागमाचमनीयम्—ॐ कर्णरेणु सुगन्धेन सुरभि स्वादुशीतलम् । तोयमाचमनीयार्थं देवि त्वं प्रतिगृह्यताम् ॥ स्नानं गंगादि जलेन—मन्दाकिन्याः समानीतैर्हमाभोरुहवासितैः स्नानं कुरुष्व देवेशि सलिलैश्च सुगन्धिभिः ॥ मधुपर्क स्नानम् (२ भाग शहद, १ भाग घी, १ भाग दधि । दधिमधुघृत युक्तं पात्रयुग्म समन्वितम् ।

मधुपर्कं गृहाण त्वं शुभदा भव शोभने ॥ सुगन्धित तैलेनस्नानम्—स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकेश्वरि महानघे ॥

प्रतिगृह्यताम् ।। स्नानं गंगादि जलेन-मन्दाकिन्याः समानीतेहाम्भोरुहवासितैः स्नानं कुरुष्व देवाश साललश्य सुगन्धिभिः ।। मधुपर्क स्नानम् (२ भाग शहद, १ भाग घी, १ भाग दधि । दधिमधुघृत युक्तं पात्रयुग्म समन्वितम् ।।

मधुपर्कं गृहाण त्वं शुभदा भव शोभने ।। सुगन्धित तैलेनस्नानम्-स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकेश्वरि महानघे ।। सर्वलोकेषु शुद्धासि ददामि स्नेहमुत्तमम् ।।

तप्तोदकेन स्नानम्-ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवैश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।। पञ्चामृतेन स्नानम्-कपिलादधि संयुक्तं शर्करा मधुसर्पिषा । पञ्चामृतं गृहाणेदं प्रसीद परमेश्वरि ।। शुद्धोदकस्नानम्-गंगा च यमुना चैव तुंगभद्रा सरस्वती । नर्मदा सिन्धु कावेरी ताम्यः स्नानार्थमाहृतम् ।। आचमनीयम्-ॐ अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ।। (विशेष फल के उद्देश्य से श्रीसूक्त तथा चतुर्थां याय के (शक्रादि के) २३ श्लोकों से महाभिषेक करें) अंगप्रोक्षणार्थपुष्पम्-ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ।। वस्त्रम्-(दो वस्त्र) पट्टवस्त्रद्वयं सूक्ष्मं देवानामपि दुर्लभम् । परिधेहि सदा भद्रे सुरासुर नमस्कृते ।। वस्त्रांगमाचमनीयम्-ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ।। आभूषणानि-रत्न कंकण वैडूर्य मुक्ताहार विराजितम् । सुप्रसन्ने महादेवि भूषणं प्रतिगृह्यताम् ।।

चन्दन गन्धकुंकुम्-चन्दनागरु कर्पूर कुंकुमादि सुशोभिते ।। कस्तुरी रोचना युक्तं गन्धं गृह नमोऽस्तुते ।। अक्षताः । (साबुत चावल) अक्षतान् धवलान्देवि सिद्धगन्धर्व सेविते । अभीष्टकुरु मे सिद्धिं शुम्भासुर विमर्दिनी ।। कण्ठसूत्रम् (चरेऊ) ॐ सौभाग्य सूत्रं वरदे सुवर्ण मणि संयुते । कंठे बध्नामि देवेशि सौभाग्यं देहि मे सदा ।। कंकण चूड़ी आदि-काचिकैश्चित्रवर्णैश्च कंकणैः सुविराजितैः । करभूषाः प्रदास्यामि गृहाण परमेश्वरि ।। सिन्दूर बिन्दी-मस्तकाभरणं देवि सिन्दूरं नाग सम्भवम् । वाञ्छितार्थं प्रदे देवि सिन्दूरं प्रति गृह्यताम् ।।

कज्जलम्-चक्षुभ्यां कज्जलं दिव्यं सुभगे शान्ति कारके । कर्पूर ज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि ।
विशेष-आभूषण-हार कंकण केयूर मेखला कुंडलादिभिः । रत्नाढ्यं कुंडलोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥

सिन्दूरम्-सिन्दूरं रक्तवर्णं च सिन्दूर तिलक प्रिये ।

भक्त्या दत्तं मया देवि सिन्दूरं प्रति गृह्यताम् ॥

अबीर गुलाल-नाना परिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम् । अबीर नामकं चूर्णं गृह्यतां जगदीश्वरि ॥

अवगुण्ठनम् (घूँघट) ॐ अव्यक्तवाङ्मनः चक्षुः श्रोत्राद् दूराति- गद्यते । स्वतेजः पंजरेणाशु वेष्टिता भव
सर्वतः ॥ नानापुष्पाणि-(अंगुष्ठ तर्जनी योगात् ज्ञानमुद्रया) पुष्पैर्नानाविधैर्दिव्यैः कुमुदै रथ चम्पकैः । पूतिजासि
महादेवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ पुष्पमाला-ॐ पद्म शंखज पुष्पादि शतपत्रैर्विचित्रितम् ॥ पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण
त्वं सुरेश्वरि ॥

बिल्वपत्राणि-अमृतोद्भवश्रीवृक्षो महादेवि प्रियः सदा । बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि ॥ अथ
अंगपूजा-(पुष्पाक्षतैः) ॐ दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि नमः ॥ ॐ महाकाल्यै नमः गुल्फौ पूज० नमः ॥ ॐ मंगलायै
नमः जानुद्वयं पूज० नमः ॥ ॐ सिंहवाहिन्यै नमः ऊरुद्वयं पूजयामि नमः ॥ ॐ भद्रकाल्यै नमः कटिं पूजयामि नमः ॥
ॐ कमलवासिन्यै नमः नाभिं पूजयामि नमः ॥ ॐ शिवायै नमः उदरं पूजयामि नमः ॥ ॐ क्षमायै नमः हृदयं पूजयामि
नमः ॥ ॐ कौमार्यै नमः स्तनौ पूजयामि नमः ॥ ॐ उमायै नमः हस्तौ पूजयामि नमः ॥ ॐ महागौर्यै नमः दक्षिणबाहुं
पूजयामि नमः ॥ ॐ वैष्णव्यै नमः वामबाहुं पूजयामि नमः ॥ ॐ स्कन्द मात्रे नमः स्कन्धौ पूजयामि नमः ॥ ॐ रमायै

नमः ॥ ॐ कामाय नमः स्तौत्वा पूजयामि नमः ॥ ॐ उमाय नमः हस्ता पूजयामि नमः ॥ ॐ रमायै पूजयामि नमः ॥ ॐ वैष्णव्यै नमः वामबाहुं पूजयामि नमः ॥ ॐ स्कन्द मात्रे नमः स्कन्धौ पूजयामि नमः ॥ ॐ रमायै

नमः कंठं पूजयामि नमः ॥ ॐ सरस्वत्यै नमः मुखं पूजयामि नमः ॥ ॐ रौद्रायै नमः श्रोत्रे पूजयामि नमः ॥ नारायण्यै नमः नासिकां पूजयामि नमः ॥ ॐ महिषमर्दिन्यै नमः नेत्रे पूजयामि नमः ॐ कालरात्र्यै नमः ललाटं पूजयामि नमः ॥ ॐ महेश्वर्यै नमः शिरः पूजयामि नमः ॥ ॐ कात्यायन्यै नमः मुकुटं पूजयामि नमः ॐ महादेव्यै नमः ॥ सर्वाङ्गपूजयामि नमः ॥ तत आवरणदेवताः पूजयेत्—(गन्धाक्षतपुष्पैः) ॐ आधार शक्तये नमः ॥ ॐ प्रकृत्यै नमः ॥ ॐ अनन्तायै नमः ॥ ॐ वाराह्यै नमः ॥ पृथिव्यै ० सुधादुग्धपायै ० पाणिदीपिन्यै ० चिन्तामणि गृहायै ० श्मशान्यै ०

पारिजातिन्यै ० रक्त वेदिकायै ० रक्तसिंहायै ० ब्रह्माण्यै ० विमलासिन्यै ० उत्कर्षिन्यै ० ज्ञानायै ० क्रियायै ० योगायै ० सत्यायै ० धर्मिन्यै ० अकर्मिन्यै ० ऐश्वर्यायै ० अनैश्वर्यायै ० वैराग्यायै ० अवैराग्यायै ० जयायै ० विजयायै ० शैलपुत्र्यै ० महागौर्यै ० सिद्धयै ० ॐ दुर्गायै नमः ॥

धूपम्—(देव्या वाम भागे) दशाङ्गं गुगुलं धूपं चन्दनागरु संयुतम् । आघ्रापितं मया भक्त्या धूपम्मे प्रतिगृह्यताम् ॥ दीपम्—रक्तवर्त्तियुतं तैलदीपं देव्या वाम भागे—(तथा आटे के ६ दीपक घी के देवी के दक्षिण या सामने भाग में) दीपपूजनम्— ॐ भक्त्या दीपान्प्रयच्छामि तुभ्यं देवि सुरेश्वरि । त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीप ज्योतिर्नमोस्तु ते ॥ दीपनिवेदनम्—ॐ घृतवर्त्तिं समायुक्तं महातेजो महोज्ज्वलम् । दीपंददामि देवेशि सुप्रीता भव सर्वदा ॥ ततो नैवेद्यम्—(पंचमेवा पंचमिताई दही बतासे मिश्री पक्वान्न पायस आदि भोग लगावै) अन्नं चतुर्विधं स्वादुरसैः षड्भिः समन्वितम् । नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्तिं मे ह्यचलां कुरु ॥ जलम्—ॐ कामारि वल्लभे देवि कुर्वाचमनमम्बिके । वन्दे निरन्तरं चरणौ प्रसीद वरदे नमः ॥ जपम्—ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥ (अथवा ॐ दुं दुर्गायै नमः) देव्या वामहस्ते जपं निवेदयेत्—ॐ गुह्याति गुह्यगोप्त्रीत्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु

मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ।। नारिकेल अर्पण (या गोला अर्पण) नारिकेलं च नारंगं कलिंगं मज्जिरं तथा । उर्वारुकं च देवेशि गृह्यतां परमेश्वरि ।। ताम्बूलम् (लौंग इलायची सुपारी कर्पूरमिश्रित जोड़ापान) पूंगीफलं महादिव्यं नागवल्ली दलान्वितम् । एलादि चूर्णं संयुक्तम् ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।। गन्ना केला आदि-फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् । तस्मात्फल प्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ।। दक्षिणा द्रव्यम्-ॐ पूजाफल समृद्धयर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि । स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान्कुरु मनोरथान् ।।

छत्रपूजन-ॐ वृहस्पतेच्छदिरसि पाप्मनो मानन्तर्धेहि तेजसो यशसो मामन्तर्धेहि ।। (गन्धाक्षत पुष्पैः)

अष्टोत्तरी पूजा संकल्पः-ॐ विष्णुः ३ अमुकोऽहं श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलावाप्तये सकल मनोवाञ्छित सिद्ध्ये श्री दुर्गा देव्या प्रीतये बिल्व पत्रादिकैः अष्टोत्तरशत नामार्चनं करिष्ये ।

छन्दः ॐ अस्य श्री दुर्गा देव्या अष्टोत्तर शतनाम मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिरनुष्टुप् छन्दः दुर्गा देवता श्री दुर्गा देव्या प्रीत्यर्थं बिल्वपत्रादिकैः अष्टोत्तरशत नामभिः पूजने विनियोगः ।

(गीता प्रेस गोरखपुर की प्रामाणिक दुर्गा सप्तशती में विश्वसार-तन्त्रोक्त दुर्गा अष्टोत्तर शत नामों से पूजा-)

ॐ सत्यैनमः ॐ साध्वयै नमः ॐ दुर्गायै नमः ॐ आर्यायै नमः ॐ भव प्रीतायै नमः ॐ भवान्यै नमः ॐ भव मोचन्यै नमः ॐ जयायै० आद्यायै० त्रिनेत्रायै० शूलधारिण्यै० पिनाक धारिण्यै० चित्रायै० चन्द्रघण्टायै० महातपायै० मननशक्त्यै० बुद्धयै० अहंकारायै० चित्तरूपायै० चितायै० । २० ।। चित्त्यै० सर्वमंत्रमय्यै० सद्गुपायै० सत्यानन्द स्वरूपिण्यै० अनन्तायै० भाविन्यै० भव्यायै० भव्यरूपायै० अभव्यायै० सदागत्यै० शिवप्रियायै० देवमात्रे०

चिन्तायै० रत्नप्रियायै० सर्वविद्यायै० दक्षकन्यायै० दक्षयज्ञ विनाशिन्यै० अपर्णायै० अनेकवर्णायै० पाटलायै० ४०
पाटलावत्यै पद्माम्बरपरीधान्यै० कल मंजीर रंजिन्यै० अमेयविक्रमायै० क्रूरायै० सुन्दर्यै० सुरसुन्दर्यै० वनदुर्गायै०
मातंगिन्यै० मतंग मुनि पूजितायै० ब्राह्म्यै० लक्ष्म्यै० माहेश्वर्यै० ऐन्द्र्यै० कौमार्यै० वैष्णव्यै० चामुण्डायै० वाराह्यै०
पुरुषाकृत्यै० विमलायै० ॥६०॥ उत्कर्षिण्यै० ज्ञानायै० क्रियायै० नित्यायै० बुद्धिदायै० बहुलायै० बहुलप्रेमायै० सर्व
वाहन वाहिन्यै० निशुम्भ शुम्भ हन्यै० सर्वासुर विनाशिन्यै० महिषासुर मर्दिन्यै० मधुकैटभ हन्यै० चंडमुड विनाशिन्यै०
सर्वदानव घातिन्यै० सर्वशास्त्रमर्त्यै० सत्यायै० सर्वास्त्रधारिण्यै० अनेकशस्त्र हस्तायै० अनेकास्त्रधारिण्यै०
कुमार्यै० ॥८०॥ एककन्यायै० कैशोर्यै० युवत्यै० यतिरूपायै० अप्रौढायै० प्रौढायै० वृद्धमात्रे० बलप्रदात्र्यै०
महोदर्यै० मुक्तकेशायै० घोररूपायै० महाबलायै० अग्निज्वालायै० रौद्रमुख्यै० कालरात्र्यै० तपस्विन्यै० नारायण्यै०
भद्रकाल्यै० विष्णुमायायै० जलोदर्यै० १०० शिवदूत्यै० कराल्यै० अनन्तायै० परमेश्वर्यै० कात्यायन्यै० सावित्र्यै०
प्रत्यक्षायै० ब्रह्मवादिन्यै० ॥१०८॥

ततो नीराजनम—नीराजनं सुमंगल्यं कपूरेण समन्वितम् । चन्द्रार्क वह्नि सदृशं महादेवि नमोस्तु ते ॥
महानीराजनं कृत्वा विशेषार्घ्यं दद्यात्—ॐ कालिके दुर्गमे देवि ह्यम्बिके दुःख नाशिनि । गृहाणार्घ्यं महादेवि सर्वपाप
हराभव ॥३॥

मंत्र पुष्पाञ्जलिः—सुरासुरार्चिते देवि सिद्ध गन्धर्वसेविते । जगत्पाप हरे देवि त्राहि मां शरणागतम् ॥ सौम्यरूपे
घोररूपे चण्डरूपे नमोस्तु ते । विश्वरूपे नमस्तुभ्यं त्राहि मां शणागतम् ॥ बुद्धिं देहि यशो देहि जयं देहि द्विषो
जहि । मूढतां हर मे देवि त्राहि मां शरणागतम् ॥ पुत्रान्देहि धनं देहि सौभाग्यं देहि देवि मे । सर्वान्कामांश्च मे
मातर्देहि देवि नमोस्तु ते ॥

दुर्गागायत्री—(इसमें अन्य गायत्री भी हैं) ॐ महादेव्यै च विद्महे दुर्गायै धीमहि । तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥
 प्रदक्षिणा—यानि कानि च० साष्टांग प्रणाम—ॐ नमः सर्व हितार्थायै जगदाधार दायिके । साष्टांगोऽयं प्रणामस्ते
 प्रयत्नेन मया कृतः । नमस्ते देवि देवेशि नमस्ते ईप्सित प्रदे । नमस्ते जगतां धात्रि नमस्ते शंकरप्रिये ॥ पुनः
 प्रार्थना—ॐ सर्वरूपमयी देवी सर्व देवीमयं जगत् । अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम् ॥

विसर्जन मंत्रः—ॐ उत्तिष्ठ देवि चण्डेशि शुभां पूजां प्रगृह्य च । कुरुष्व मम कल्याणमष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥
 ॐ दुर्गे देवि जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिता । सम्वत्सरे व्यतीते तु पुनरागमनाय वै ॥

देवीस्तुति (आदि शक्ति की प्रार्थना)

छन्दः—जब विधि न विष्णु न ईश वासव नैव धनपति जलपती,

यम नैव पावक नैव जलनहि वायु अम्बर गुणसती ।

नहि सूर्य शशि नहि बुद्धि इन्द्रिय अहंकार यदा नहीं,

तिहि काल मातु अशेष केवल मण्डले इक ही तुही । १॥

जय कुन्दकलिसम दन्त छवि गलबिच सुशोभित हारके,

मस्तक विराजत हीर दिव्य सुवर्ण कर्ण सुपूरके ।

घन केशपाश सुमल्लिका लिपटी सुमालति मालिके,

कश्मीरबिन्दु, विराजभाले जय त्रिनेत्र विशालिके । १२ ।।
जय पाश अंकुश कर विराजिनि अभय वर मुद्रामयी,
जय अरुण वर्ण सुवर्णिनी परिधान नव सुषमामयी ।
श्रृंगार दिव्य विराजिनी मन पूर्ण वाञ्छा दायिनी,
त्रैलोक्य अनुपमरूप नमनं मूर्ति जय हास्यायनी । १३ ।।
जय मातु साम्यावस्थिते माया उपाधि विभूषिते,
जय प्रकृति ब्रह्म स्वरूपिणी कल्याणि मातु सुरूपिते ।
जय देवि जय महादेवि जय शिव रूपिणी सुप्रणाम ते,
भरि भक्ति शीशनवाय घनआनन्द देहि प्रणाम ते । १४ ।।
जग जननि योगी जनन के मन दीप्ति दायिनी जय उमे,
चैतन्य रूप प्रकाशिनी ब्रह्माण्ड व्यापिनि चेतने ।
जय कर्मफल भव छेदिनी ब्रह्मादि सुर मुनि सेविते,
जय मातु ज्ञान प्रभामयी जय जगत पालिनि देवते । १५ ।।
जय चरण शरण प्रदायिनी संसार सागर तारिणी,

जय पंच प्राणादिक युता सम्पूर्ण भाव प्रकाशिनी ।
जय मातु अव्याकृत स्वरूपिणि ब्रह्ममूर्ति नमोऽस्तुते ।,
जग जननि नमन विराट रूपिणि सूत्रमूर्ति नमः ॥६॥
दोहा- जय सर्वान्तर्यामिनी जय भुवनेश्वरि मात ।
नित आनन्द प्रदायिनी अलख तत्व तव गात ॥
तिहारी जय जय मैया जय ॥२॥

इति श्री घनानन्दाचार्य विरचित देवी स्तुति ॥ (दुर्गा भक्ति मानस से उद्धृत)

अपराध-क्षमापन

न कीनी पूजा माँ प्रथम वय बाल्ये व्यतिगतम्,
द्वितीये मोहान्धे भजन जप ध्याने मति नहीं ।
तृतीये आयामे शरण नहि मातः यदिगतम्,
तुरीये वैराग्ये शिथिल तनु भूते गति कथम् ॥१॥
भजँ कैसे माता भजन विधि ज्ञाने पटु नहीं,
कहँ क्या पूज्ये माँ तव चरण मेरी रति नहीं ।

कहूँ क्या पूज्ये माँ तव चरण मेरी रति नहीं।

६८

कहाँ मैं अज्ञानी कपट अति मेरे अलस में,
मुझे दे मेरी माँ पद कमल सेवा पर-सुखा॥३॥

यथा गंगा तीरे भजन जल पानं पर सुखं,
तथा तेरी पूजा भजन जप ध्यानं सुख करम्।

असारे संसारे मनुज तनु धारे नहिं फलम्,
किमन्ते काले माँ कठिन भव पारे गति कथम्॥३॥

न वाछा सत्यं मे यश विभव मोक्षे नहि धने,
परं वाछा तेरे चरणं मे मति सदा।

तदा मे सौभाग्य दरस तव मातेश्वरि यदा,
तदा सर्व सारं निखिल जनिभूतं सफल मे॥४॥

दिया तूने माता मनुज तनु दीने खल सुते,
अहो ते स्नेहं मे निज सुत कपूते अति कृपा।

तु ही पूज्या माता चरण रज तेरी इह सुखा,
तु ही सेव्या माता शरण यह तेरी पर सुखा॥५॥

६९

सतो भावे तू ही रजसि तम तू ही भगवती
तु ही ॐ कारी मा त्रिगुणमयि तुभ्यं प्रणतयः।
तु ही ब्रह्माणी तू हरि-चरण सेवी गिरिसुता
तु ही दुर्गा काली सफल फल पूर्णागिरि तु हि॥६॥

तु ही वाराही मां जग जननि राधा तु ही सिया
तु ही गंगा गीता हरसि सब पापं कलिकृतं,
महामाये तू ही सकल भव कूपं कलयसि,
लगादे पारं मा भव जलधि मग्ना तरणि मे॥७॥

तुही स्वाहा रूपा विविध विध यज्ञे, तुहि स्वधा,
तुही वैष्णो मैया सकल वरदानी तु मनसा,
तु ही कल्याणी तू असत सतकारी तुहि परा,
तु ही वाणी विद्या परम पद दानी सुमतिदा॥८॥

अहो माँ तेरे हैं जगति बहु भक्ता अगणिता,
परं मेरे जैसे विरल खल तेरे नहि सुता।

कभी कोई माता निज सुत कपूतं त्यजति क्या ?
मुझे क्यों त्यागा माँ उचित यह कैसे तु हि बता ॥६॥

दोहा-आदि शक्ति आनन्दमयि घटघट तेरो बास,
मन वाञ्छित फल दायिनी पूर्ण करो सब आस ॥
तुम्हारी जय जय मैया जय, तुम्हारी जय जय मैया जय ॥

(पुस्तक के अन्त में आराधना, उपासना, पुष्पांजलि हैं)

रचयिता-पं० घनानन्द आचार्य, पो० भुवाली (नैनीताल) उ० प्र०

कुमारीपूजनम्

(वायव्य कोण से ईशान पर्यन्त, बैठवे, उत्तराभिमुख होकर पूजें, पूजन समये अन्यः कश्चिदपि मध्ये नागच्छेत् । दो वर्ष से दस वर्ष पर्यन्त, से अधिक न हों, प्रथम वटुक पूजन) संकल्पः-अद्येह० श्री दुर्गा प्रसाद सिद्धि द्वारा सर्वापछान्ति पूर्वकं मम (सर्वेषां) अभीष्ट सिद्धये (अमुक देवता प्रीतये कृतस्य अमुक कर्मणः सांगता सिद्धये) वटुक सहितं कुमारीणां पूजनमहं करिष्ये ताश्च मिष्टान्न पक्वान्नादिभिः भोजयिष्ये । वटुक ध्यानम्-ॐ करकलित कपाल कुण्डली दण्डपाणिस्तरुण तिमिर नील व्याल यज्ञोपवीती क्रतु समय सपर्या विघ्न विच्छेद हेतुर्जयति वटुक नाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥ ॐ ह्रीं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरुकुरु वटुकाय ह्रीं । इति वटुकं सम्पूज्य ॐ मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं

मातृणां रूप धारिणीम् । नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यां संपूजयाम्यहम् । (पादप्रक्षालन, हस्तप्रक्षालन गन्धाक्षत पुष्प,
 पुष्पमाला, से चुनरी आदि फल, मिष्ठान्न पक्वान्न दक्षिणादि से पूजे) तत्र मंत्राः—(सर्व प्रथम दो वर्ष की कन्या)
 दुःख दारिद्र्य नाशाय शत्रूणां नाशनाय च, आयुषे बल वृद्धयर्थं कुमारीम्पूजयाम्यहम् ॥ ॐ कौमार्यै नमः ॥ १ ॥ त्रिपुरां
 त्रिपुराधारां त्रिवर्षा ज्ञानरूपिणीम् । त्रैलोक्य वन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ॥ ॐ त्रिमूर्त्यै नमः ॥ २ ॥ कलात्मिकां
 कलातीतां कारुण्य हृदयां शिवाम् । कल्याण जननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥ ॐ कल्याण्यै नमः ॥ ३ ॥
 अग्निमादि गुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकाम् ॥ अनन्त शक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥ ॐ रोहिण्यै नमः ॥ ४ ॥
 कामचारां शुभां कान्तां काल चक्र स्वरूपिणीम् ॥ कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम् ॥ ॐ कालिकायै
 नमः ॥ ५ ॥ चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्ड प्रभञ्जनीम् । पूजयाम्यद्य त्वां देवीं चण्डिकां चण्डविक्रमाम् ॥ ॐ चण्डिकायै
 नमः ॥ ६ ॥ सदानन्दकरीं शान्तां सर्वदेव नमस्कृताम् । सर्वभूतात्मिकां लक्ष्मीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम् ॥ ॐ शाम्भव्यै
 नमः ॥ ७ ॥ दुर्गमे दुष्करे कार्ये भवदुःख विनाशिनीम् । पूजयाम्यद्यत्वां भक्त्या दुर्गा दुर्गति नाशिनीम् ॥ ॐ दुर्गायै
 नमः ॥ ८ ॥ सौभाग्यधनधान्यादि वाञ्छितार्थ फलाप्तये । सुभद्रां पूजयाम्यद्य दासी दास विवृद्धये ॥ ॐ सुभद्रायै
 नमः ॥ ९ ॥ (नीराजन प्रणाम । कन्यायै यजमान के शिर पर अक्षत छोड़ें) कन्या लक्षणम्—ब्राह्मणीं सर्व कार्येषु जयार्थे
 नृपवंशजाम् । लाभार्थे वैश्यकन्यां च पुत्रार्थे शूद्रजां यजेत् ॥ वार्षिक पूजा विवरण—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन
 ध्वजा रोपण, कलशस्थापन जौ बोना, पंचांग सुनना, नवरात्र प्रारम्भ, देवी स्थापन आदि ।

रामनवमी

ॐ विष्णुः ॥३॥ अद्येह० श्री रामनवम्यां पुण्यतिथौ श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलावाप्तये श्री रामनवमी व्रतांगत्वेन सुवर्णप्रतिमायां (शालग्राम शिलायां वा) सपरिवारस्य श्रीरामचन्द्रदेवस्य प्रतिष्ठावाहन पूर्वकं पूजनं करिष्ये ॥ ततः पंचामृतेन प्रतिमां संस्नाप्य प्रतिष्ठा यवैः—ॐ एतन्ते० ॐ भूर्भुवः स्वः अस्यां प्रतिमायां जानकी सहित श्रीरामचन्द्र देव इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ पीठपूजा—ॐ विमलायै नमः ॥ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ॥ ॐ ज्ञानायै नमः ॥ क्रियायै० योगायै० सत्यायै० प्रसिद्धयै० प्रकृत्यै० अनुग्रहायै० ॐ नमो भगवते सकल शक्ति युक्ताय अनन्ताय योग पीठात्मने नमः ॥ ध्यानम्—ॐ ध्यायेदाजानु बाहु धृतशर धनुषं बद्ध पदमासनस्थं, पीतं वासो वसानं नव कमल दल स्पर्धि नेत्रं प्रसन्नम् ॥ वामांकारूढ सीता मुख कमल मिलल्लोचनं नीररदाभम्, नानालंकार दीप्तं दधतमुरु जटा मण्डलं रामचन्द्रम् ॥ जानकी सहिताय श्री रामचन्द्राय नमः ध्यानं समर्पयामि ॥ आवाहनम् आसनम् पाद्वम् अर्घ्यम्—तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्द लक्षणम् ॥ तापत्रय विनिर्मुक्त्यै तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम् ॥ स्नानम्—ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ सभूमि ८. सर्वतस्पृत्वा त्यतिष्ठददशांगुलम् ॥ स्नानांगमाचमनीयम् ॥ वस्त्रम्—मायाचित्र पटच्छिन्नं निज गुह्यो रुतेजसम् ॥ निरावरण विज्ञानं वासस्ते कल्पयाम्यहम् ॥ आचमनीयम् ॥ यज्ञोपवीतम्—यस्यशक्तित्रयेणंदसम्प्रोतमखिलं जगत् ॥ यज्ञसूत्राय तस्मै ते यज्ञसूत्रं प्रकल्पये ॥ आच० ॥ गन्धम्—परमानन्द सौरभ्यपरिपूर्णं दिगन्तरम् ॥ गन्धं गृहाण परमं कृपया जगदीश्वर ॥ यवान् समर्पयेत् श्रीरामचन्द्राय नमः ॥ पुष्पाणि समर्प्य तुलसी दलानि—तुलसीं हेमरूपां च रत्नारूपां च मंजरीम् ॥ भवमोक्ष प्रदां तुभ्यमर्पयामि

हरिप्रियाम् ।। आवरणपूजा—ॐ हनुमते नमः ॐ सुग्रीवाय नमः । भरताय० विभीषणाय० लक्ष्मणाय० अंगदाय० शत्रुघ्नाय० जाम्बवते० धृष्टये० जयन्ताय० विजयाय० सुराष्ट्राय० राष्ट्रवर्दनाय० अकोपाय० धर्मराजाय० सुमन्ताय० । इन्द्राय० अग्नये० यमाय० निऋतये० वरुणाय० वायवे० कुबेराय० ईशानाय० ब्रह्मणे० अनन्ताय० । वज्राय० शक्तये० कालदण्डाय० खड्गाय० पाशाय० अंकुशाय० गदायै० त्रिशूलाय० पद्माय० चक्राय नमः ।।

अथ अंगपूजा—ॐ जानकी नाथाय नमः पादौ पूजयामि ।। ॐ माधवाय नमः जानुनी पूजयामि ।। कामपतये० गुह्यं० (उदक् स्पर्श) । वामनाय० कटिं० । पद्मनाभाय० नाभिं० । विश्वमूर्तये० उदरं० । ज्ञानगम्याय० हृदयं० । संगिने कण्ठं । सहस्रबाहवे० बाहू० । योगयोगिने० चक्षुषी० । उरगाय० ललाटं० । नाकसुरेशाय० नासिका० । श्रवणेशाय० श्रवणे पूजयामि । सर्वकामप्रदाय० शिखां० । सहस्रशीर्ष्णे० शिरः० । सर्वरूपिणे नमः सर्वांगं पूजयामि ।। धूपम् दीपम् नैवेद्यम्—सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविध व्यंजनान्वितम् । निवेदयामि भवते गृहाण जगदीश्वर ।। ॐ सांगाय सायुधाय सावरणाय श्रीरामचन्द्राय नमः नैवेद्यं विनिवेदयामि ।। जपम्—श्रीरामचन्द्राय नमः ।। गुह्याति० ताम्बूल पूंगीफल, फलं द्रव्यम् च दत्त्वा नीराजनं कुर्यात् ।

अर्घ्यदानम्—दशानन वधार्थाय धर्म संस्थापनाय च । दानवानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च ।। परित्राणाय साधूनाम् जातो रामः स्वयं हरिः । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभिः सहितो हरे ।। ततः प्रार्थना—ॐ आपदामपहत्तारं दातारं सर्व सम्पदाम् । लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ।। अपराध सहस्राणि क्रियन्ते ऽहर्निशंमया । दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व जगदीश्वर ।। भूमौ स्खलित पादानां भूमि रेवावलम्बनम् । त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं मम ।। दक्षिणां दत्त्वा मंत्रपाठः ।।

वैशाखस्नानम् (मधुसूदन पूजा)

(लक्षवर्तिका)

स्नान संकल्पः—अमुकोऽहं श्रुति स्मृति पुराणोक्त फला वाप्तये सकल पापक्षय द्वारा श्रीमधुसूदन प्रीत्यर्थं प्रातर्विष्णु स्मरण पूर्वकं हविष्याशनेन मेष संक्रान्तिमारभ्य वृषसंक्रान्ति पर्यन्तं वैशाख स्नानं करिष्ये । अद्येह० अमुकी देवी सभर्तृका ऽहं कृतसंकल्प सिद्धये लक्षवर्ती व्रतांगत्वेन सुवर्ण प्रतिमायां श्रीलक्ष्मीयुतस्य नारायण देवस्य पूजनं करिष्ये । गन्धाक्षतैः—द्वारपालपूजा ।। पूर्व—ॐ नन्दाय नमः ।। ॐ सुनन्दाय नमः ।। दक्षिणे—ॐ चण्डाय नमः ।। ॐ प्रचण्डाय नमः ।। पश्चिमे—ॐ बलाय नमः ।। ॐ प्रबलाय नमः उत्तरे—ॐ भद्राय नमः ॐ द्वारदेवताभ्यो नमः) द्वारपूजा—द्वारया देव देवस्य द्वारं रक्षतु यत्नतः । निवार्य विघ्न संघात मित्याज्ञा परमेश्वरी ।। पीठपूजा—पूर्व—ॐ धर्माय नमः ।। आग्नेये—ॐ अधर्माय नमः दक्षिणे—ॐ ज्ञानाय नमः ।। नैऋत्ये—ॐ अज्ञानाय नमः ।। पश्चिमे ॐ वैराग्याय नमः ।। वायव्ये—ॐ अवैराग्याय नमः ।। उत्तरे—ॐ ऐश्वर्याय नमः ।। ईशाने—ॐ अनैश्वर्याय नमः ।। ततः पूर्वदि क्रमेण अष्टशक्तीः पूजयेत्—ॐ विमलायै नमः । ॐ उत्कर्षिण्यै नमः । ॐ ज्ञानायै नमः । ॐ क्रियायै नमः ॐ योगायै नमः । प्रद्वये० सत्यायै० अनुग्रहायै नमः ।। मध्ये—ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्व भूतात्मने वासुदेवाय योग पीठात्मने (नमः) ।। अग्न्युत्तारण पूर्वकं प्रतिमां पंचामृतेन संस्नाप्य प्रतिष्ठां प्राण प्रतिष्ठां च कुर्यात् ।। ॐ एतन्ते देव० ॐ भूर्भुवः स्व अस्यां प्रतिमायां भगवन् विष्णो इहागच्छ इहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव ।।

ॐ आं ह्रीं क्राँ यं रं लं वं शं सं हं क्षं अः श्री विष्णोः प्राणा इह प्राणाः ॐ आं ह्रीं जीव ।। ॐ आं ह्रीं०

सर्वेन्द्रियाणि० इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै
मामहेति च कश्चन ।। (१५ बार ॐ कार जपकर बोले—अनेन पंचदश संस्कारान् सम्पादयिष्ये ।।

ध्यानम्—दक्षिणाधस्तन करादारभ्यै तत्प्रदक्षिणाम् । शंखं चक्राम्बुज गदा विभिर्षि मधुसूदन ।।

ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पदम् नाभं सुरेशं विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभांगम् । लक्ष्मीकान्तं कमल
नयनं योगिभिर्ध्यानं गम्यं वन्दे विष्णुं भवभय हरं सर्व लोकैकनाथम् ।। ॐ लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः । ध्यानं समर्पयामि ।

आवाहनम्—ॐ लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः । आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि ।। पादयोः पादम् । हस्तयोः अर्घ्यम्
तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्द लक्षणम् । तापत्रय विनिर्मुक्त्यै तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम् ।। आचमनीयम् । स्नानम्—पंचामृतेन
गंगादि जलेन च । आचमनीयम् । वस्त्रम्, यज्ञो० ।

अष्टगन्ध—मलयोद्भव सौरभ्यमनाघ्रातं सुनिर्मलम् । कंकुमागरु कस्तूरी कर्पूरादि समन्वितम् ।। अक्षतार्थं यवान्
अथवा श्वेत तिलान् समर्पयेत् ।। पुष्पाणि पुष्पमालां च०

तुलसी दलानि—तुलसीं हेमरूपां च रत्नारूपां च मंजरीम् । भवमोक्ष प्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिं प्रियाम् ।।
अथ अंगपूजा—ॐ कालाय नमः शिरः पूजयामि । ॐ विष्णवे नमः ललाटं पूजयामि । ॐ वह्नये नमः नेत्रे
पूजयामि । ॐ रवये नमः कर्णौ पूजयामि । ॐ दामोदराय नमः नासिकां पूजयामि । ॐ हरयेनमः मुखम्० ॐ रुद्राय
नमः कण्ठम्० ॐ शेषायनमः स्कन्धौ० ॐ जगद्व्यापिने नमः बाहू० ॐ तेजोरूपिणे नमः स्तनौ० ॐ निशाकराय
नमः वक्षः० ॐ निरंजनाय नमः उदरं० ॐ कलाध्यक्षाय नमः नाभिं० ॐ विश्वरूपिणे नमः कटिं० ॐ जगत्प्रभवे नमः

जघने० ॐ स्वप्रकाशाय नमः ऊरू० ॐ स्वयं ज्योतिषे नमः जानुनी० । चतुर्व्यूहाय नमः गुल्फौ० ॐ जनाश्रयाय

नमः वक्षः० ॐ निरंजनाय नमः उदरं० ॐ कलाध्यक्षाय नमः नाभिं० ॐ विश्वरूपिणे नमः कटिं० ॐ जगत्प्रभवे नमः

७६

जघने० ॐ स्वप्रकाशाय नमः ऊरू० ॐ स्वयं ज्योतिषे नमः जानुनी० । चतुर्व्यूहाय नमः गुल्फौ० ॐ जनाश्रयाय नमः पादौ० परब्रह्मणे नमः पादाग्रे पूजयामि ।।

आवरण पूजा-दक्षिणे-ॐ सावित्री सहिताय ब्रह्मणे नमः ।। उत्तरे-ॐ उमा सहिताय शम्भवे नमः । पुरतः-ॐ गरुडाय नमः । पृष्ठेअनन्ताय नमः । पूर्वादि-अष्टदिक्षु-ॐ सुदर्शनाय नमः । ॐ पात्रचजन्याय नमः ॐ कौमोदक्यै० । नन्दकाय० । इषुभ्यो० । शार्गाय० हलाय० । मुसलाय० ।। अग्रे-ॐ कौस्तुभाय नमः । ॐ वनमालायै० ॐ श्रीवत्साय नमः । पूर्वादि क्रमेण-ॐ नन्दाय नमः । सुनन्दाय० चण्डाय० । प्रचण्डाय० बलाय० । प्रबलाय० । कुमुदाय० । कुमुदेक्षणाय० । विदिक्षु-ॐ दुर्गायै नमः । विनायकाय० व्यासाय० विष्वक्सेनाय० ।

वामे-श्री गुरुभ्यो नमः । दिक्पालाः-ॐ इन्द्राय नमः । अग्नये० यमाय० निऋतये० वरुणाय० । वायवे० कुबेराय० ईशानाय० ब्रह्मणे० अनन्ताय० । मेषादि राशिभ्यो नमः । ॐ ज्योतिश्चक्राय नमः । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय सर्वभूतात्मने सर्ववरणसहिताय ।।

प्रार्थना-अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्यासमर्पये तुभ्यमित्येताऽवरणार्चनाः ।। ततो धूपं दीपं नैवेद्यम् जपम्-ॐ विष्णवे नमः ।। ॐ गुह्याति० ।। फलानि ताम्बूलदलानि द्रव्यं च दत्त्वा ।

अष्टोत्तरी-ॐ विष्णुः ।। ३ ।। इति संकल्प्य, छन्दः-ॐ अस्य श्री वैष्णवाष्टोत्तरशतनाम मंत्रस्य भगवान् वेदव्यास ऋषिरनुष्टुप् छन्दः सर्व भूतात्मको वासुदेवो देवता ममात्मनश्चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्ये यव तुलसी दलादिभिः श्री विष्णोः अष्टोत्तरशत नामभिः पूजने विनियोगः ।। ॐ श्रीकृष्णाय नमः । कमलापतये० । वासुदेवाय० ।

७७

सनातनाय० वसुदेवात्मजाय० सौम्याय० लीला मानुष विग्रहाय० श्रीवत्स कौस्तुभधराय० यशोदा नन्दवत्सलाय० हरये० चतुर्भुज पदम चक्र गदा शंखाद्यायुधाय० देवकीनन्दनाय० श्रीशाय० नन्दगोप प्रियात्मजाय० यमुनावेग संहारिणे० बलभद्रप्रियानुजाय० पूतना जीवित हराय० शकटासुर भञ्जनाय० नन्दब्रजजनानन्दिने० सच्चिदानन्द विग्रहाय० नवनीत विलिप्तांगाय० नवनीत नटाय० अनघाय० नवनीत नवाहाराय० मुद्युकुन्दवरप्रदाय० षोडश स्त्रीसहस्रेशाय० त्रिभंगमधुराकृतये०। शुद्धवागमृताब्धीन्दवे० गोविन्दाय० गोविदाम्पतये० वत्स वाटी चराय० अनन्ताय० धेनुकासुरभञ्जनाय० तृणीकृत तृणावर्ताय० यमलार्जुन भञ्जनाय० उत्ताल तालभेत्रे० तमाल श्यामलाकृतये० गोप गोपीश्वराय० योगिने० सूर्य कोटि समप्रभाय० इलापतये० परज्योतिषे०।

गोवर्द्धनाचल-उद्धारकाय० गोपालाय० सर्वपालकाय० अजाय० निरञ्जनाय० कामजनकाय० कञ्जलोचनाय० मधुहर्त्रे० मथुरानाथाय० द्वारिकानाथाय० बलिने० वृन्दावनान्त सञ्चारिणे० तुलसीदाम विभूषिताय० मुरारये० यादवेन्द्राय० यदूदयाय० वनमालिने० पीतवाससे० पारिजातापहारकाय० मुष्टिकासुर चाणूर मल्लयुद्ध विशारदाय० कंसारये० नरकान्तकाय० स्यमन्तकमणिहर्त्रे० नरनारायणात्मकाय० कुब्जाकृष्टाम्बराय० मायिने० परमपुरुषाय० अनादये० ब्रह्मचारिणे० वृष्णिव्यसन कर्षकाय० शिशुपालशिरश्छेत्रे० दुर्योधन कुलान्तकाय० विदुराक्रूरवरदाय० विश्वरूप-प्रदर्शकाय० सत्य संकल्पाय० सत्यभामारताय० जयिने० सुभद्रापूर्वजाय० विष्णवे० भीष्म मुक्ति वरदाय० जगद्गुरवे० जगन्नाथाय० वेणुनाद विशारदाय० वृषभासुर विध्वंसिने० बाणासुरान्तकाय० युधिष्ठिर प्रतिष्ठात्रे० बर्हिर्वह्निवत्सकाय० पार्थ सारथये० अव्यक्ताय० गीतामृतमहोदधये० दामोदराय० कालियफण माणिक्य रंजित

श्रीपदाम्बजाय० यज्ञभोक्त्रे० दानवेन्द्र विनाशनाय० नारायणाय० परब्रह्मणे० पन्नगाशनवाहनाय० जल क्रीडासमासक्त

श्रीपदाम्बुजाय० यज्ञभोक्त्रे० दानवेन्द्र विनाशनाय० नारायणाय० परब्रह्मणे० पन्नागशनवाहनाय० जल क्रीडासमासक्त गोपीवस्त्रापहारकाय० पुण्यश्लोकाय० तीर्थपादाय० वेदवेद्याय० दयानिधये० सर्वभूतात्मकाय० सर्वग्रहरूपिणे० परात्पराय नमः । ततो महानीराजनम् । । पाँच सौ वक्तियाँ प्रातः तथा पाँच सौ मध्याह्न की आरती में प्रज्वलित करें । विशेषार्घ्यम्—ॐ नारायण जगन्नाथ लक्ष्मीकान्त दयानिधे । गृहाणार्घ्यं मयादत्तं व्रतसम्पूतिं हेतवे । ।

नमः कमलानाभाय—नमस्ते जल शायिने । नमस्तेस्तु हृषीकेश गृहाणार्घ्यं नमोस्तु ते । ।

प्रदक्षिणा—ॐ यानि कानि० साष्टांगप्रणाम—ॐ नमः सर्वहितार्थाय जगदाधार हेतवे । साष्टांगोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मयाकृतः । । (माँथा टेकना)

पुनः पुष्पाञ्जलिः—ॐ नमस्ते कमलाकान्त गृहाण कुसुमाञ्जलिम् । अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे । ।
ॐ सांगाय सायुधाय सपरिवाराय सावरणाय लक्ष्मी सहिताय श्री नारायणाय नमः ।

अथ संकष्ट नाशनस्तोत्रम्—ॐ नमो मत्स्य कूर्मादि नाना स्वरूपैः सदा भक्त कार्योद्यतायार्ति हन्त्रे । विधात्रादि सर्ग स्थिति ध्वंसकर्त्रे गदा शंख पद्मादि हस्ताय तेऽस्तु । रमानाथ मायाऽसुराणां निहन्त्रे भुजंगारि यानाय पीताम्बराय । मखादि क्रिया पाक कर्त्रे प्रहर्त्रे शरण्याय तस्मै नताः स्मो नताः स्मः । । नमो दैत्य सन्तापितामर्त्य दुःखा चल ध्वंस दम्भोलये विष्णवे ते । भुजंगेशतल्पे शयायार्कचन्द्र द्विनेत्राय तस्मै नताः स्मो नताः स्मः । । नमः प्रावृडारम्भ सम्बन्धि पाथोधर श्यामलांगाय कृष्णाय तुभ्यम् । नमो लोक शोकाब्धि संशोषकाय कृपा सिन्धवे बन्धवे सेवकानाम् । नमः पदम् योन्यादि वृन्दार केश स्फुरन्मौलि रत्नप्रभा मंजरीभिः । समुद्रासिताम्बुध्य जायास्तु तुभ्यं सदासम्मनो वासिने

केशवाय ॥ ॐ विष्णुः ३ ॥ अमुकी देवी सभर्तृकाहं कृत संकल्प सिद्धये गृहीत विष्णु लक्षवर्ती व्रतांगत्वेन कृतायाः श्रीविष्णुपूजायाः सांगफलप्राप्तये इमां दक्षिणां ब्राह्मणाय दास्ये ॐ तत्सन्म मम ॥ (पूर्णाहुति के दिन शय्यादान, गोदान, कुमारी-पूजनादि समस्त यज्ञांग कर्म करके विसर्जन करे) नैमिषाच्च० । अकालमृत्यु हरणम्० ॥

अथ अक्षय तृतीयायां घट दान विधिः-विष्णुः ३ ॥ अमुकोऽहं श्री परमेश्वर प्रीतये उदकुम्भदानस्य पूर्वम्-कुम्भस्थ देवतानां यथामिलितो पचारैः पूजनं करिष्ये । एतन्ते० ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मादयो देवा उदकुम्भोपरि इहागच्छन्तु० ॥

ध्यानम्-ॐ प्रतद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः । यस्योरुषु त्रिषु विक्रमेष्वधि क्षियन्ति भुव नानि विश्वा ॥ इति मंत्रेण आवाहनादि नीराजनान्तं सम्पूज्य ॐ धर्मघटाय नमः इति नाम मंत्रेण वा ॥

दानं दत्त्वा, ततः प्रार्थना-एष धर्म घटो दत्तो ब्रह्मविष्णु शिवात्मकः । अस्य प्रदानात्सफला मम सन्तु मनोरथाः ॥ गन्धोदक तिलैर्मिश्रं सान्नं कुम्भं फलान्वितम् सफलं वाञ्छितं दद्यात्-अक्षय्यमुपतुष्टु ॥ ब्राह्मणं सम्पूज्य दद्यात् ॥

सत्तुदानम्-प्रजासृजा यतः प्रोक्ताः शक्तयो यज्ञ कर्मणि । तस्मात्सत्तु प्रदानेन प्रीयतां मे प्रजापतिः ॥ अश्वत्थार्चनमपि प्रशस्यते ॥ (पीपल पूजा)

(योऽश्वत्थमर्चयेद् देव मुदकेन समन्ततः । कुलानामयुतं तेन तारितं स्यान्न संशयः) ॥ अर्थात् पीपल में जल चढ़ाने से हजारों कुलों का तारण होता है ।

अश्वत्थमंत्रः-ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता । गोभाजऽ इत्किला सथ यत्सन्वथ पूरुषम् ॥

अश्वत्थमंत्रः—ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता । गोभाजऽ इत्किला सथ यत्स्नवथ पूरुषम् ॥
 प्रार्थना—ॐ अश्वत्थाय वरेण्याय सर्वेश्वर्य प्रदायिने । अनन्तशिवरूपाय वृक्षराजाय ते नमः ॥ इति—अक्षय तृतीया
 विधिः ॥

अथ गंगादशहरा—ॐ विष्णुः ३ ॥ अमुकोऽहं कृत संकल्प सिद्धये दशपापहरायां दशम्यां पुण्यतिथौ अस्यां
 मृतौ (प्रतिमायां वा) सपरिवारायाः श्री गंगादेव्या यथा लब्धोपचारैः पूजनं करिष्ये ।

प्रतिष्ठा—ॐ एतन्ते० ॐ भूर्भुवः स्वः अस्यां प्रतिमायां सपरिवारा गंगादेवि इहागच्छ इह तिष्ठ सुप्रतिष्ठिता
 वरदा भव ॥

ध्यानम्—चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च सर्वावयव शोभिताम् । पूर्णकुम्भसिताम्भोज वरदाभयसत्कराम् ॥
 श्वेतपट्टपरीधानां मुक्तामणि—विभूषिताम् । ततोध्यायेत् सुसौम्यां च चन्द्रायुतसमप्रभाम् ॥ चामरैर्वीज्यमानां च
 श्वेतच्छत्रोपशोभिताम् । सुप्रसन्नां च वरदां करुणार्द्रहृदन्तराम् ॥ सुधाप्लावित भूपृष्ठां दिव्यगन्धानुलेपनाम् ।
 त्रैलोक्य पूजितां गंगां देवादिभिरभिष्टुताम् ॥ सितमकर निषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां कश्चुत कलशोद्यत्सोत्पलामत्यभीष्टाम् ।
 विधि हरि हर रूपां सेन्दुकोटीर चूडां कलित सित दुकूलां जाह्नवीं त्वां नमामि ॥ श्री गंगायै नमः ध्यानं समर्पयामि ।
 नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गंगायै स्वाहा । नमो भगवत्यै दशपापहरायै गंगायै नारायण्यै रेवत्यै शिवायै दक्षायै
 अमृतायै विश्वरूपिण्यै नन्दिन्यै ते नमो नमः ॥ ॐ नारायणाय नमः । ॐ रुद्राय नमः । ॐ ब्रह्मणे नमः । ॐ सूर्याय
 नमः । ॐ भगीरथाय नमः । ॐ हिमाचलाय नमः । इत्यावाह्य आसनम्, पाद्यम्, अर्घ्यम्, आचमनीयम्, स्नानम् । आच०

वस्त्रद्वयम्, यज्ञोपवीतम् । गन्धः अक्षताः पुष्पाणि । अंगपूजा—ॐ भगवत्यै नमः । ॐ दशपापहरायै नमः । गंगायै नमः । नारायण्यै० रेवत्यै० शिवायै० दक्षायै० अभूतायै० बिम्बरूपिण्यै नमः । धूपं दीपं नैवेद्यम् । जपम्—ॐ गंगायै नमः । ॐ गुह्यातिगुह्य गोप्त्री त्वं० ताम्बूलम् फलम् द्रव्यं च समर्प्य नीराजनं कृत्वा विशेषार्घ्यं निवेदयेत्—ब्रह्मपात्रसमुद्भूते गंगे त्रिपथगाभिनि । त्रैलोक्यवन्दिते देवि गुहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ।।

प्रदक्षिणा नमस्कारः—नमः शिवायै गंगायै शिवदायै नमोनमः । नमस्ते विष्णुरूपिण्यै ब्रह्ममूर्त्यै नमो नमः ।। नमस्ते रुद्ररूपिण्यै शांकर्यै ते नमो नमः । सर्वदेवस्वरूपिण्यै नमो भेषजमूर्त्यै ।। सर्वस्व सर्वव्याधीनां भिषक्श्रेष्ठ्यै नमोऽस्तु ते । स्थाणुजंगमसंभूतविषहन्त्र्यै नमो नमः ।। गंगा गंगेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि । मुच्यते सर्वपापेभ्यो । वैष्णुलोकं स गच्छति ।। भगवति तव तीरे नीरमात्राशनोऽहं विगतविषयतृष्णाः कृष्णमाराधयामि । सकलकलुषभंगे स्वर्गसोपानसंगे तरलतर तरंगे देवि गंगे प्रसीद ।। परदारपरद्रव्यपरद्रोहपराङ्मुखः, गंगा ब्रूते कदागत्य मामयं पावयिष्यति ।।

घटदानम्—अमुकोऽहं कृताया श्रीगंगादेव्याः पूजायाः सांग फल प्राप्तये इमां दक्षिणां तथा शर्करोदक पूरितान् इमान् उदक कुम्भांश्च ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दास्ये ॐ तत्सन्मम । आशिषं दत्त्वा विसर्जयेत् ।। (मीठा शर्बत पिलावै)

अथ वट सावित्री पूजा

ॐ विष्णुः ३ अमुकी देव्यहं श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलावाप्तये मम भर्तुः, आयुरारोग्यादि—अभिवृद्धये आत्मनश्च

जन्म जन्मनि—अवैधव्य सिद्धये पुत्र पौत्राभिवृद्धये च अनुष्ठित सावित्री व्रतांगत्वेन (अस्यामूर्त्तौ) वटपत्रे पट्टलिखित

जन्म जन्मनि-अवैधव्य सिद्धये पुत्र पौत्राभिवृद्धये च अनुष्ठित सावित्री व्रतांगत्वेन (अस्यांमूर्त्तौ) वटपत्रे पट्टलिखित प्रतिमायां वा सपरिवारायाः सावित्री देव्याः षोडशोपचारैः प्रतिष्ठा वाहनपूर्वकं पूजनं करिष्ये ।। प्रतिष्ठा० ॐ भूर्भुवःस्वः सावित्री ब्रह्माणौ इहागच्छतमिहितिष्ठतम् सुप्रतिष्ठितौ वरदौ भवतम् ।। तथा द्वादश-ग्रथियुत डोरकः सुप्रतिष्ठितो भव ।। ध्यानम्-पदमपत्रासनस्थश्च ब्रह्माध्येयश्च तुरुर्मुखः । सावित्री तस्य ध्यातव्या वामोत्संगतासती ।। ॐ आदित्यवर्ण धर्मज्ञा साक्षमालाकरा सदा । ध्यायामि तां जगद्धात्रीं सावित्रीं वेदमातरम् ।। अथ आवाहनम्-ब्रह्मणा सहितां देवीं सावित्रीं लोकमातरम् । सत्यवन्तं धर्मराजं वटं चावाहयाम्यहम् ।। ॐ कारपूर्विके देवि वीणा पुस्तकधारिणि । वेदमातर्नमस्तुभ्यं-अवैधव्यं प्रयच्छ मे ।। सपरिवाराभ्यां सावित्री ब्रह्माभ्यां नमः । आवाहनं समर्पयामि । आसनम्-ब्रह्मणा सह सावित्रि सत्यवत्सहितेऽनघे । गृहाणासनकं हैमं धर्मराज सुरेश्वरि ।। ॐ कारपूर्विके० ।। पाद्यम् गंगाजलं समानीतपाद्यार्थं ब्रह्मणः प्रिये । भक्त्या दत्तं धर्मराज सावित्रि प्रतिगृह्यताम् ।। ॐ कारपूर्विके० ।

अर्घ्यम्-गंगादिभ्यः समानीतं फलपुष्पसमन्वितम् । अर्घ्यं गृहाण सावित्रि मम सत्यव्रतप्रिये ।। ॐ कारपूर्विके० ।। आचमनीयम् । स्नानम् । शुद्धोदकस्नानम् ।

युग्म वस्त्रम् (दो वस्त्र)-सूक्ष्मतन्तुयुतं वस्त्रयुग्मं कार्पास सम्भवम् । सावित्रि सत्यवत्कान्ते भक्त्या दत्तं प्रगृह्यताम् ।। आचमनीयम् (यज्ञोपवीतम्) कुंकुम चन्दनरोली-कुंकुमागरु कर्पूर कस्तूरी रोचना युतम् । चन्दनं ते

मयादत्तं सावित्री-प्रतिगृह्यताम् ॥ अक्षताः पुष्पाणि ॥ भूषणानि-भूषणानि च दिव्यानि मुक्ताहार युतानि च । त्वदर्थमुपक्लृप्तानि गृहाण शुभ लोचने ॥ सौभाग्यपिटारी-हरिद्रा कुंकुमं चैव सिन्दूरं कज्जलान्वितम् । सौभाग्यद्रव्यं संयुक्तं सावित्री प्रतिगृह्यताम् ॥

अथ अंगपूजा-ॐ सावित्र्यै नमः पादौ पूजयामि । ॐ प्रसवित्र्यै नमः जानुनी पूजयामि । ॐ कमलपत्राक्ष्यै नमः । कटिं पूजयामि । ॐ भूत धारिण्यै नमः उदरम्पूजयामि । गायत्र्यै० कण्ठं० । ॐ ब्रह्मणः प्रियायै नमः सर्वाङ्गं पूज० ।

अथ ब्रह्मण अंग पूजा-ॐ धात्रे नमः पादौ पूजयामि । ज्येष्ठाय० उदरं० परमेष्ठिने० मेढं० (उदकस्पर्शः) ॐ अग्निरूपाय० कटि० । वैद्यसे० उदरं० । पद्मनाभाय० नाभिं० । विधात्रे० कण्ठं० । हिरण्य गर्भाय० मुखं० । ब्रह्मणे० शिरः० । विष्णवे० सर्वाङ्गं पूजयामि । धूपं दीपं नैवेद्यम्-अन्नं चतुर्विधं स्वादुरसैः षड्भिः समन्वितम् । मया निवेदितं भक्त्या नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् । क्षणं ध्यात्वा जपेत्-ॐ सावित्री देव्यै नमः । । गृह्यातिगृह्य गोप्त्री त्वं० । फलम् ताम्बूलम् द्रव्यम् । नीराजनम् । कृत्वा विशेषार्घ्यम्-पतिव्रते महाभागे वह्नियाने शुचिस्मिते । दृढव्रते दृढमते भर्तृश्चप्रियवादिनि । अवैधव्यं च सौभाग्यं देहि त्वं मम सुव्रते । । पुत्रान् पौत्राँश्च सौख्यं च गृहाणार्घ्यं नमोस्तु ते । त्वया सृष्टं जगत् सर्वं सदेवासुरमानुषम् । सत्यव्रतधरो देव ब्रह्मरूप नमोस्तु ते । त्वं कर्मसाक्षी लोकानां शुभाशुभविवेचकः । गृहाणार्घ्यं धर्मराज वैवस्वत नमोस्तु ते । । प्रदक्षिणा नमस्काराँश्च कुर्यात् । सावित्री प्रसवित्री च सततं ब्रह्मणः प्रिया । पूजितासि द्विजैः सर्वैः सर्वैर्मुनिगणैस्तथा । । त्रिसन्ध्यं सर्वभूतानां वन्दनीयासि सुव्रते । यथा कृतमिमां पूजां त्वं गृहाण नमोऽस्तु

ने ॥ ॐ ऋणार्तिहरे नेत्रि नीणापस्तकधारिणि । वेदमातर्नमस्तभ्यं सौभाग्यं च प्रयच्छ मे । । सपरिवाराभ्यां

ते ।। ॐ कारपूर्विके देवि वीणापुस्तकधारिणि । वेदमातर्नमस्तुभ्यं सौभाग्यं च प्रयच्छ मे ।। सपरिवाराभ्यां सावित्रीब्रह्माभ्यां नमः ।। प्रार्थनां कृत्वा-सावित्रि ब्रह्मगायत्रि सर्वदा प्रियभाषिणि । तेन सत्येन मां पाहि दुःखसंसारसागरात् ।। त्वं गौरी त्वं शची लक्ष्मीस्त्वं प्रभा चन्द्रमण्डले । त्वमेव भूर्जगन्माता त्वमुद्धर वरानने ।। सौभाग्यं कुलवृद्धिं च देहि त्वं मम सुव्रते । यन्मया दुष्कृतं सर्वं कृतं जन्मशतैरपि । भस्मीभवतु तत्सर्वमवैधव्यं च देहि मे । सावित्री त्वं यथा देवि चतुर्वर्षशतायुषम् । पतिं प्राप्तासि गुणिनं मम देवि तथा कुरु ।। ब्रह्मणः प्रार्थना-कर्मसाक्षिन् जगत्पूज्य सर्वबन्धो प्रसीद मे । सम्बत्सरव्रतं सर्वं परिपूर्णं तदस्तु मे ।।

तत्र संकल्पः-ॐ विष्णुः ३ अद्येहेत्यादि अमुकी देव्यहं श्रीवट सावित्री व्रतपूजासांगता सिध्यर्थम् इदं फल वस्त्राद्युपेतं वंशपात्रसहितं सौभाग्यद्रव्यम् इमां सुपूजितां सौवर्णीं सावित्री प्रतिमां च ब्राह्मणाय तुभ्यं संप्रददे । तथा दानप्रतिष्ठा सिध्यर्थम् इमां दक्षिणां ब्राह्मणाय दास्ये ॐ तत्सन्मम ।। दानवाक्यम् उपायनमिदं द्रव्यं व्रतसंपूर्तिहेतवे । वाणकं द्विजवर्याय सहिरण्यं ददाम्यहम्-

अथ हरकाली व्रतपूजा-ॐ विष्णुः ३ अमुक गोत्रा अमुकराशिः अमुकी देवी-अहं पुत्र पौत्राद्यभिवृद्धिद्वारा सर्वसुख सौभाग्य सम्पत्प्रवृद्धये श्री हरकाली व्रतांगत्वेन विरूढसस्यमध्य स्थापितायां मृण्मय्यां श्री हरकाली प्रतिमायां हरिततृणमध्ये श्री हरकाल्या यथालब्धोपचारैः पूजनं करिष्ये । प्रतिष्ठा-एतन्ते ॐ भूर्भुवः स्वः गौरीमहेश्वरौ इहागच्छतम् इह तिष्ठतम् सुप्रतिष्ठितो तरदौ भवतम् ।।

ध्यानम्-हरनाम समुत्पन्ने हरकालि हरप्रिये । सर्वदा सस्यपूर्तिस्थे प्रणतार्ति हरे नमः । ध्यानं समर्पयामि ।

आवाहनम् । आसनम् । पाद्यम् । अर्घ्यम्—मन्दारमाला कुलितालकायै कपालमाला कृतशेखराय । दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय । आवाहनादि नीराजनान्तम् । ॐ गौरीमहेश्वराभ्यां नमः इति नाम मंत्रेण सम्पूज्य प्रार्थयेत् । ॐ वीरभद्र महाकाल नन्दीश्वर विनायकाः मम प्रसादसुमुखा भवन्त्वर्चा प्रयोगतः । । दक्षिणासंकल्पं कृत्वा० हरकालीं प्रणम्य विसर्जयेत् ।

श्रावणी (रक्षाबन्धन)

रक्षा बन्धन के विषय में शास्त्रवचन—पुरोधा नृपतेरक्षां सम्यग् बध्नीत मानवै० । पुरोहित रक्षा बाँधे, ब्राह्मणैः क्षत्रियैः वैश्यैः शूद्रैरन्यैश्च मानवैः । कर्त्तव्यो रक्षिका बन्धो द्विजान् सम्पूज्य यत्नतः । अर्थात् । ब्राह्मणों का पूजन भलीभाँति करके रक्षाबन्धन करें । यदि श्रावणी पूर्णमासी के दिन ग्रहण पड़ रहा हो तो उपाकर्म पंचमी के दिन करें इस प्रकार शास्त्र वचनों के अनुसार पुरोहित प्रतिष्ठा की हुई रक्षा बाँधते हैं । श्रद्धापूर्वक उन्हें दक्षिणा दी जाती है । अतः रक्षा और जनेऊ प्रतिष्ठा की हुई पहनें । यही परम्परा भी है ।

यज्ञोपवीत—प्रतिष्ठा (रक्षाबन्धन)

(ताम्रपात्र में जौ कुश दूर्वा सरसों गन्धाक्षत गोमय दधि सहित रक्षासूत्र तथा यज्ञोपवीत स्थापित करें ।)

जलेन प्रक्षालनम्—ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवः । ॐ तान ऊर्जे दधात न । ॐ महेरणाय चक्षसे ।

ॐ यो वः शिवतमो रसः । ॐ तस्य भाजयतेह नः । ॐ उशतीरिव मातरः । ॐ तस्माऽऽरंगमामव ।

ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ । ॐ आपो जनयथा च नः ॥

(तब दश बार गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित जल के छीटे देकर तन्तुओं में ६ तन्तु देवताओं का आवाहन करे)

छन्दः १—ओंकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः परमात्मा देवता प्रथम तन्तौ ॐ कारावाहने विनियोगः । ॐ
ओंकाराय नमः । प्रथम तन्तौ ओंकारमावाहयामि ।

छन्दः २—ॐ अग्निन्दूतमिति मन्त्रस्य विरूपाक्ष ऋषिर्गायत्री छन्दः अग्निदेवता द्वितीय तन्तौ—अग्न्यावाहने
विनियोगः । ॐ अग्निन्दूतं पुरोदधे हव्य वाहमुपब्रु वे । देवाँ २ ॥ आसादयादिह ॥ ॐ अग्नये नमः द्वितीय
तन्तौ—अग्निमावाहयामि ॥

छन्दः ३—ॐ नमोस्तु सर्पेभ्य इति मन्त्रस्य प्रजापति ऋषिः सर्पा देवता अनुष्टुप् छन्दः तृतीय तन्तौ
सर्पाणामावाहने विनियोगः । ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु येऽन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ ॐ
सर्पेभ्यो नमः । तृतीय तन्तौ सर्पानावाहयामि ॥

छन्दः ४—ॐ वय ४. सोम इति मन्त्रस्य बन्धु ऋषिर्गायत्री छन्दः सोमो देवता चतुर्थ तन्तौ सोमावाहने
विनियोगः । ॐ वय ४. सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि ॥ ॐ सोमाय नमः । चतुर्थ तन्तौ
सोममावाहयामि ॥

छन्दः ५—ॐ उदीरता इति मन्त्रस्य शंख ऋषिः पितरो देवता त्रिष्टुप्, छन्दः पञ्चम तन्तौ पितृणामावाहने
विनियोगः । ॐ उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः । असंयडईयुरावृकाऽऋतज्ञास्ते नो वन्तु पितरो
हवेषु । ॐ पितृभ्यो नमः । पञ्चम तन्तौ पितृनावाहयामि ॥

६. ॐ प्रजापत इति मन्त्रस्य हिरण्यगर्भ ऋषिः प्रजापतिर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः षष्ठतन्तौ प्रजापत्यावाहने विनियोगः ।

ॐ प्रजापतये नत्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽस्तु वय ८. स्याम पतयोरयीणाम् । ॐ प्रजापतये नमः । षष्ठतन्तौ प्रजापतिमावाहयामि ।।

७. ॐ आनो नियुद्धिरिति मन्त्रस्य वशिष्ठऋषि स्त्रिष्टुप् छन्दः वायुर्देवता सप्तमतन्तौ वायोरावाहने विनियोगः । ॐ आनो नियुद्धिः शतिनीभिरध्वर ८. सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञ ८. वायोऽस्मिन्सवने मादयस्व यूय पात स्वस्तिभिः सदा नः । ॐ वायवे नमः सप्तमतन्तौ वायुमावाहयामि ।।

८. ॐ असियम इति मन्त्रस्य भार्गव यमदग्नि दीर्घ तमस ऋषयस्त्रिष्टुप् छन्दो यमो देवता अष्टम तन्तौ यमावाहने विनियोगः । ॐ असियमोऽस्यादित्योऽअर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेनासि सोमेन समया विपुक्त आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि । ॐ यमायनमः । अष्टम तन्तौ यममावाहयामि ।।

९. ॐ विश्वेदेवा इति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिर्गायत्री छन्दः नवम तन्तौ विश्वे देवानामावाहने विनियोगः । ॐ विश्वेदेवासऽआगत श्रृणुतामऽ इम ८. हवम् । इदं बर्हि निषीदत । ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । नवम तन्तौ विशे देवान्- आवाहयामि ।। ततो ग्रन्थि देवानामावाहनम्-प्रथम ग्रन्थि मध्ये ॐ ब्रह्मयज्ञानमित्यस्य प्रजापति ऋषि ब्रह्मा देवता त्रिष्टुप् छन्दः प्रथम ग्रन्थि मध्ये-ब्रह्मावाहने विनियोगः । ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोर्वेनऽआवः सबुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमस तश्चविव । ॐ ब्रह्मणे नमः प्रथम ग्रन्थि मध्ये

ब्रह्माणमावाहयामि । द्वितीयग्रन्थि-ॐ इदं विष्णुरित्यस्य मेधातिथिऋषिः विष्णुर्देवता गायत्री छन्दः द्वितीय ग्रन्थिमध्

ब्रह्माणमावाहयामि । द्वितीयग्रन्थि—ॐ इदं विष्णुरित्यस्य मेधातिथिऋषिः विष्णुर्देवता गायत्री छन्दः द्वितीय ग्रन्थिमध्
ये विष्णोरावाहने विनियोगः । ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाँ सुरे ॥ ॐ विष्णवे नमः ।
द्वितीय ग्रन्थि मध्ये विष्णुमावाहयामि ॥

३. तृतीय ग्रन्थि—ॐ तमीशान मित्यस्य गौतम ऋषिर्जगती छन्द ईशानो देवता तृतीय ग्रन्थिमध्ये ईशावाहने
विनियोगः । ॐ तमीशानज्जगतस्तस्थुषस्पतिं धियज्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम् । पूषानो यथा वेदसामसद वृधे रक्षिता
पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ॐ ईश्वराय नमः ॥ तृतीय ग्रन्थिमध्ये ईश्वरमावाहयामि ॥

प्रतिष्ठा—ॐ एतन्ते देव सवितर्यज्ञ ८. प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञपतिं तेन मामव । मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य
बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तन्नो त्वरिष्टं यज्ञ ८. समिमं दधातु विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ । ॐ भूर्भुवः स्वः यज्ञोपवीत
तन्तु देवता ग्रन्थित्रयाधिपाश्च (तथा रक्षा सूत्राणि) इहा गच्छन्तु इह तिष्ठन्तु ॥ स्पर्शन् मंत्रं पठेत्—ॐ प्राणानां
ग्रंथि रसि रुद्रो मा विशतान्तकः तेनानेनाप्यायस्व । ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति संस्थाप्य यज्ञोपह्वानि प्रतिष्ठापयामीति
वदेत् ॥

यवाक्षतैः प्रतितन्तुं पूजयेत् । ॐ ओंकार दैवत्याय प्रथम तन्तवे नमः ॐ अग्निदैवत्याय द्वितीय तन्तवे नमः ॥
ॐ भगदैवत्याय तृतीय तन्तवे नमः ॥ ॐ सोम दैवत्याय चतुर्थ तन्तवे नमः ॥ पितृदैवत्याय पञ्चम तन्तवे नमः ॥
ॐ प्रजापति दैवत्याय षष्ठ तन्तवे नमः । ॐ वायु दैवत्याय सप्तम तन्तवे नमः ॥ ॐ सूर्य दैवत्याय अष्टम तन्तवे
नमः ॥ ॐ विश्वेदेवा दैवत्याय नवम तन्तवे नमः ॥ ॐ ब्रह्म दैवत्याय प्रथम ग्रन्थये नमः ॥ ॐ विष्णु दैवत्याय द्वितीय
ग्रन्थये नमः ॥ ॐ ईशदैवत्याय तृतीय ग्रन्थये नमः ॥

ॐ यज्ञोपवीता कारस्याधिपतये पर ब्रह्मणे नमः ।। इति सम्पूज्य आदित्याय प्रदर्शयेत् । ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्मृतं मर्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।। (तब १०८ बार ॐ कार का जप तथा गायत्री जप करे ।) ततो दक्षिण हस्तेन स्पर्शन् मंत्रं जपेत्—ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टि वद्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमाऽ मृतात् । ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुन्धिम्पतिवेदनम् । उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुत ।। (तब १० बार गायत्री से अभिमंत्रित जल से पुनः सिञ्चन करे) ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति गन्धादिभिः पूजयेत् ।

धारणविधिः—आचम्य जलं गृहीत्वा—ॐ यज्ञोपवीतमिति परमेष्ठी ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः लिंगोक्ता देवता श्रौतस्मार्त्तकर्मनुष्ठानाधिकार सिद्धये यज्ञोपवीत धारणे विनियोगः ।

धारणमंत्रः—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्रं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतंबलमस्तुतेजः ।। यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्यत्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि (पुराना जनेऊ त्याग—) एतावद्दिन पर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया । जीर्णत्वात् त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम् ।।

रक्षा बौधने का मन्त्र—येन बद्धो बलीराजा दानवेन्द्रो महाबलः । तेन त्वामपि बध्नामि रक्षे मा चल मा चल ।। रक्षा सुरक्षा भूयात् ।।

।। संकष्टहरचतुर्थी पूजा ।।

दीपं प्रज्वाल्य आचम्य शंखघोष गणपत्यादि पुष्पाञ्जलि अर्घस्थापनं सूर्यार्घदानं भूतोत्सादनं पुनरर्घस्थापनम्

संकल्पः—अघोह० अमुक नाम सम्बत्सरे दक्षिणायने वर्षत्तो भाद्रपदमासे कृष्णपक्षे संहष्टहर चतुर्थ्यां पुण्य तिथौ

संकल्पः—अद्यैह० अमुक नाम सम्वत्सरे दक्षिणायने वर्षतौ भाद्रपदमासे कृष्णपक्षे संहष्टहर चतुर्थ्यां पुण्य तिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्र अमुकराशिः अमुक शर्मा, वर्मा गुप्त (अमुक गोत्रा अमुकराशिः अमुकीदेवी सभर्तृकाऽहं) सपत्नीकोऽहं विद्या आरोग्य धनधान्य सुख सन्तति प्राप्तिपूर्वक सपरिवारस्य मम सर्वसंकष्ट निवारणार्थं श्री गणपतिप्रसाद सिध्यर्थम् संकष्टहर चतुर्थी व्रतांगत्वेन अमुक प्रतिमायां (मूर्तौ वा) श्रीगणपति देवस्य यथालब्धोपचारैः पूजनं करिष्ये । पुष्पाक्षतैर्द्वारपूजा—पूर्व—ॐ वक्रतुण्डाय नमः । ॐ एकदन्ताय नमः । ॥ दक्षिणे—महोदराय० गजाननाय० । ॥ परिचमे—लम्बोदराय० । ॥ विकटाय० । ॥ उत्तरे—विघ्नराजाय० धूम्रवर्णाय० । ॥ ततः पीठपूजा (अरुणाक्षतैः) ॐ तीव्रायै नमः ज्वालिन्यै० नन्दायै० भोगदायै० कामरूपिण्यै० उग्रायै० तेजोवत्यै० सत्यायै० विघ्न विनाशिन्यै० । मध्ये—ॐ सर्वशक्ति कमलासनाय नमः । ॥ प्रतिष्ठा—ॐ एतन्ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमवतेन यज्ञपतिं तेन मामव । मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमंतनोत्वरिष्टं यज्ञं स मिमं दधातु विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामो ३ प्रतिष्ठ । ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अस्यां मूर्तौ (प्रतिमायां) संकष्टहरं गणपतिदेव इहागच्छ इहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव । ध्यानम्!—ॐ लम्बोदरं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं रक्तवर्णकम् । नानारत्नसुवेषाढ्यं प्रसन्नास्यं विचिन्तये । ॥ ध्यायेगजाननं देवं तप्तकाञ्चनसुप्रभम् । चतुर्भुजं महाकायं सूर्यकोटिं समप्रभम् । ॥ आवाहनम्—आगच्छ विघ्नराजेन्द्र स्थानेचात्र स्थिरो भव । यावद्ब्रतं समाप्येत तावत्सन्निहितो भव । ॥ आगच्छ त्वं जगन्नाथ सुरासुर नमस्कृत । अनाथनाथ सर्वज्ञ विघ्नराज कृपां कुरु । ॥ ॐ नमो भगवते हेरम्बाय मदामोहिताय मम संकष्टं निवारय निवारय स्वाहा । ॥ ॐ संकष्टहरगणपतये नमः । आवाहनं समर्पयामि । ॥

आसनम्—गोप्ता त्वं सर्वदेवानामिन्द्रादीनां विशेषतः । भक्त दारिद्र्यनुच्छ्रीमन् एकदन्त नमोस्तु ते ॥ आसनं सम० । पाद्यम्—मोदकानामर्पणेन भक्तानां वरदायक । देव देव नमस्तेऽस्तु भक्तानां फलदो भव ॥ ॐ लम्बोदराय नमः पाद्यम् समर्पयामि ॥

अर्घ्यम्—ॐ गणानान्त्वा गणपति ४. हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ४. हवामहे निधीनान्त्वानिधिपति ४. हवामहे । वसोमम आहमजानि गर्भधमात्वमजासिगर्भधम् ॥ महाकाय महारूप, अनन्तफलदायक । देव देव नमस्तुभ्यं सर्वेषां पाप नाशन ॥ अर्घ्यम् समर्पयामि । आचम० स्नानं पंचामृतेन—स्नानं पंचामृतैर्देव गृहाणगणनायक । अनाथनाथ सर्वज्ञ संकष्टात्तारयस्वमाम् ॥ ॐ संकष्टहरगणपतये नमः, स्नानं समर्पयामि । शुद्धोदक० स्नानम् । वस्त्रं (दो लाल वस्त्र) रक्त वस्त्र युगं देव देवांग सदृशप्रभम् । गृहाण मंगलकरं लम्बोदर हरात्मज ॥ वस्त्रं समर्पयामि । आचम० ॥

यज्ञोपवीतं—राजतं ब्रह्मसूत्रं च कात्र्यनस्योत्तरीयकम् । आरक्तं ब्रह्मसूत्रं च गृहाण गणनायक ॥ यज्ञोपवीतं सम० आचम० । गन्धं—गृहाणेश्वर सर्वज्ञ दिव्यं चन्दनमुत्तमम् । करुणाकर अब्जाक्ष गौरीसुत नमोऽस्तु ते ॥ अक्षताः परमा दिव्याः कुंकुमाक्ताः सुशोभनाः । तान् स्वीकुरु गणाधीश सर्वसिद्धि प्रदोभव ॥ पुष्पाणि—केतक्यादीनि दिव्यानि मालत्यादीनि वै प्रभो । मया नीतानि पूजार्थं पुष्पाणि स्वीकुरु प्रभो ॥ पुष्पमाला—सुगन्धिपुष्प मालां च गृहाण गण नायक । विनायक नमस्तुभ्यं शिवसूनो नमोऽस्तु ते ॥

अथ अंगपूजा—ॐ गणेश्वराय नमः पादौ पूजयामि । ॐ विघ्नराजाय० नमः जानुनी पूजयामि । ॐ आखुवाहनाय० ऊरू पू० । ॐ हेरम्बाय० कटिं पू० । ॐ कामारि सूनवे० नाभिं पू० । ॐ लम्बोदराय० उदरं पू० ।

गौरी सत्ताय० स्तनौ पू० । गणनायकाय० हृदयं पू० । स्थलकण्ठाय० कण्ठं पू० । स्कन्दाग्रजाय० स्कन्धौ पू० ।

गौरी सुताय० स्तनौ पू० । गणनायकाय० हृदयं पू० । स्थूलकण्ठाय० कण्ठं पू० । स्कन्दाग्रजाय० स्कन्धौ पू० । पाशहस्ताय० हस्तान् पू० । गजवक्त्राय० वक्त्रं पू० । विघ्नहर्त्रे० हलाटं पू० । सर्वेश्वराय० शिरः पू० । ॐ गणाधिपाय नमः सर्वांग पूजयामि । आवरणपूजा (अक्षतैः) ॐ विघ्ननाशनाय नमः ॐ विनाकाय० वीराय० शूराय० वरदाय० इभवक्त्राय० एकदन्ताय० लम्बोदराय० ब्राह्म्यै० माहेश्वर्यै० वैष्णव्यै० वाराह्यै० इन्द्राण्यै० चामुण्डायै० महालक्ष्म्यै० विद्यायै० विधायै० भोगदायै० विघ्नघातिन्यै० विधिप्रदायै० पापघ्न्यै० पुण्यायै० शशिप्रभाय० इन्द्राय० अग्नये० यमाय० निऋतये० वरुणाय० वायवे० कुबेराय० ईशानाय० ब्रह्मणे० अनन्ताय० वज्राय० शक्तये० कालदण्डाय० खड्गाय० पाशाय० अङ्कुशाय० गदायै० त्रिशूलाय० पद्माय० चक्राय० वक्रतुण्डाय० एकदंष्ट्राय० महोदराय० गजाननाय० विकटाय० धूम्राय० ॐ सर्वसंकष्ट निवारणाय नमः ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यमित्येता वरणार्चना ।। धूपं ।। दीपं ।। नैवेद्यम् । शर्कराखण्डखाद्यानि दधि क्षीर घृतानि च । आहारोभक्ष्य भोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।। सगुडान्सघृतांश्चैव मोदकान्तिलनिर्मितान् । गृहाण विघ्नराजेन्द्र संकष्टात्तारयस्व माम् ।। एकं मोदकं गणाधिपाय दद्यात् ।।

नैवेद्यांगमाचमनीयम्—ॐ संकष्टहरगणपतये नमः । जपम्—ॐ संकष्टहर गणपतये नमः ।। ८ ।। ॐ गृह्यातिगृह्य गोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात् गणेश्वर ।। नाना ऋतुफलानिफलान्यमृत कल्पानि सुखादून्यघनाशन । अर्पितानि यथाशक्त्या गृहाण गणनायक ।। ताम्बूलम् दत्त्वा दक्षिणा द्रव्यं—हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः । अनन्त पुण्य फलद मतः शान्तिं प्रयच्छ मे ।।

अलंकारान् समर्पयामि—अलंकारान्महदिव्यान् नानामणिगणा न्वितान् । गृहाणविघ्न राजेन्द्र संकष्टात्तारयस्व
माम् ।। सिन्दूरम्—ॐ सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुम सन्निभम् । गृहाण विघ्न राजेन्द्र संकष्टात्तारयस्वमाम् ।। अथ
मोदक दान संकल्पः—ॐ विष्णुः ३ ।। अद्यहेत्याद्युच्चार्य संकष्टहर चतुर्थी व्रत सादगुण्यार्थं श्रीसंकष्टहर गणपति
देव प्रीतये इमान् दशमोदकान् सफलान् सदक्षिणान् घृत ताम्बूल सहितान् ब्राह्मणाय दास्ये ॐ तत्सन्नमम् । ब्राह्मणमह
र्यादिभिः सम्पूज्य मोदकान् गृहीत्वा ब्रूयात्—विघ्नेश विप्ररूपेण गृहाण दशमोदकान् । दक्षिणाघृत ताम्बूल गुड़ युक्तान्
ममेष्टदः । मोदकान् दत्त्वा—दाता विघ्नेश्वरो देवो गृहीता सर्व विघ्नराट् । तस्मादिदं मयादत्तं परिपूर्णं तदस्तु मे ।।
प्रतिग्रहमंत्रः—ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेशिवनोर्बाहुभ्याम्पूष्णोहस्ताभ्याम्० ।।

गणपतिं प्रार्थयेत्—ॐ विनायक नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय । निर्विघ्नं कुरु मे देव शुभ कार्येषु सर्वदा ।।
एकं मोदकं गणाधिपाय दद्यात् ।

दूर्वाकुरपूजा (दो दो दूर्वा अक्षत सहित, दूर्वा का अग्रभाग अपनी ओर करें)

दूर्वार्पणम् प्रणामञ्च कुर्यात्—ॐ गणाधिप नमस्तेस्तु ॐ गणाधिपाय नमः ।। ॐ उमापुत्र नमस्तेस्तु । ॐ
उमापुत्राय नमः ॐ अधनाशन नमस्तेस्तु । ॐ अघ नाशनाय नमः ।। ॐ विनायक नमस्तेस्तु । ॐ विनायकाय नमः ।।
ॐ ईशपुत्र नमस्तेस्तु । ॐ ईशपुत्राय नमः ।। ॐ सर्वसिद्धि प्रदायक नमस्तेस्तु । ॐ सर्वसिद्धि—प्रदायकाय नमः ।।
ॐ एकदन्त नमस्तेस्तु । ॐ एकदन्ताय नमः ।। ॐ इभ वक्त्राय नमः ।। ॐ इभ वक्त्राय नमः ।। ॐ मूषक वाहन
नमस्तेस्तु । ॐ मूषकवाहनाय नमः ।। ॐ कुमारगुरवे नमस्तेस्तु ।। ॐ कुमारगुरवे नमः ।। ॐ चतुर्थीशनमस्तेस्तु ।

ॐ चतुर्थीशाय नमः (ॐ सर्व संकष्ट नाशनाय नमः) ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि । एवानो दर्व

ॐ चतुर्थीशाय नमः (ॐ सर्व संकष्ट नाशनाय नमः) ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि । एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च । ॐ नमो भगवते हेरम्बाय मद मोहिताय मम संकष्टं निवारय निवारय स्वाहा । नीराजनम् कृत्वा विशेषार्घ्यम् (शंख से विशेषार्घ्य) ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक । भक्तानामभयं कर्त्ता त्राता भय भवार्णवात् । वरदत्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थदः । अनेन सफलाघ्येण वरदो भव सर्वदा । त्रिवारं दद्यात् । पुष्पाञ्जलिः—ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय । लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय । नागाननाय श्रुति यज्ञ—विभूषिताय गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते । प्रदक्षिणा—यानि कानि० ।

प्रार्थना—महासंकष्टदग्धोऽहं गणेश शरणंगतः । तस्मात् मनोरथान् सर्वान् कुरु सर्वेश्वरेश्वर । सर्वदेवादि देवाय सर्वसिद्धिप्रदायिने । साष्टांगोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः । नमो हेरम्बमदविमोहिताय मम संकष्टं निवारय निवारय स्वाहा । दक्षिणा संकल्पः—ॐ विष्णुः ३ अमुकोऽहं सर्व संकष्टनिवृत्तिद्वारा संकष्टहरगणपतिप्रीतये संकष्टहरचतुर्थी व्रतपूजायाः सांगफलप्राप्तये इमां दक्षिणां ब्राह्मणाय दास्ये ॐ तत्सन्मम । ब्राह्मणं पूजयेत् । चन्द्रमसः पूजनम् (कांस्यपात्र में चन्दन से चन्द्रमण्डल बनाकर आवाहन करे)

ध्यानम्—श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेताश्वः श्वेतभूषणः । गदापाणिर्द्विबाहुश्च ध्यातव्यो वरदः शशी । ॐ चन्द्रमसे नमः । ध्यानम् समर्पयामि । ॐ इमन्देवेतिगौतमऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सोमोदेवता सोमावाहने विनियोगः । ॐ इमन्देवाऽअसपत्न ४. सुवध्वं महते क्षत्रायमहते ज्येष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्य पुत्रममुष्य पुत्रमस्यैविशऽएष वोमी सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा । ॐ भूर्भुवः स्वर्यमुनातीर देशोद्भव आत्रेयसगोत्र शुक्लवर्ण

भगवन् सोमइहागच्छ इहतिष्ठ इत्यावाह्य । आसनम् पाद्यम् दत्त्वा ।। अर्घ्यदानम्—(गन्धाक्षत फल द्रव्य सहित सप्तवारं दद्यात्) ॐ क्षीरसागर सम्भूत सुधा रूपनिशाकर । गृहाणार्घ्यं शशांकेंदं गणेशप्रीतिवर्द्धन । क्षीरोदार्यं सम्भूत अत्रिगोत्रसमुद्भव । गृहाणार्घ्यं मयादत्तं रोहिण्या सहितः शशिन् ।। ॐ रोहिणी सहिताय चन्द्रमसे नमः ।। गन्धाक्षत श्वेत पुष्पादिभिः पूजयेत् ।। ततौ दक्षिणादानादि कर्म कृत्वा विसर्जयेत् ।।

।। अमुक्ताभरण सप्तमी पूजा ।।

ॐ विष्णुः ३ अमुकीदेव्यहं श्री साम्बसदाशिव प्रीति पूर्वकं एहिका ऽमुष्मिक सकल सुख सौभाग्य सन्तति वृद्धये अमुक्ताभरण सप्तमी व्रतांगत्वेन पट्टलिखितयोः गौरी महेश्वरयोः प्रतिष्ठा वाहन पूर्वकं पूजनं करिष्ये ।। ॐ एतन्तेति० ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गौरी महेश्वरौ इहागच्छतं इहतिष्ठतं सुप्रतिष्ठितौ वरदौ भवतम् ॐ भूर्भुवः स्वः डोरक सुप्रतिष्ठितौ भव । ध्यानम्—कैलास शिखरासीनं वृषारूढं पिनाकिनम् । कर्पूरस्फटिकाभासमुमयासहितं विभौ ।। ॐ पंचाननं दशभुजं शरच्चन्द्र महोज्ज्वलम् । ध्याये प्रसन्न मनसमम्बिका सहितं शिवम् ।। श्री गौरी महेश्वराभ्यां नमः ।। ध्यानंसमर्पयामि ।। आवाहनम्—देवदेवं महादेवं चन्द्र दूढं महाद्युतिम् । गजचर्मपरीधानं साम्बमावाहयाम्यहम् ।। आसनम्—शंकराय नमस्तुभ्यं नमस्त्रिपुरहारिणे । नमस्तेस्तु महादेव स्थास्यतामुमया सह ।। पाद्यम्—विश्वेश्वर नमस्तुभ्यं विश्वरूप नमोनमः । हिमाचल सुता सार्धं पाद्यं वैप्रतिगृह्णाताम् ।। अर्घ्यम्—नीलकण्ठ महास्थाणो चन्द्रसूर्याग्नि लोचन । गृहाणार्घ्यं मयादत्तमुमयासह शंकर ।। आचमनीयम्—पत्रवक्त्र नमस्तेस्तु गन्धका सुर सूदन । आचम्यतां महादेव उमया सह शंकर ।।

स्नानम् पचामृतेन—पयोदधि घृतं चैव मधु शर्करयान्वितम् । पत्र्यामृतं हि स्नानार्थमुमयासह गृह्णाताम् । ॐ

स्नानम् पंचामृतेन—पयोदधि घृतं चैव मधु शर्करयान्वितम् । पञ्चामृतं हि स्नानार्थमुपयासह गृह्यताम् । ॐ गौरी महेश्वराभ्यां नमः ॥ स्नानांगमाचमनीयम् दद्यात् ॥ वस्त्रम्—वासोदशदिशो यस्य विश्वस्य परमात्मने । वस्त्र युग्मं प्रयच्छामि साम्बदेवाय ते नमः ॥ वस्त्रांगमाचमनीयम् ॥ यज्ञोपवीतम्—उपवीतं सोत्तरीयं नागभूषण भूषितम् । गृहाण सोमविमलं मया दत्तमिदं शुभम् ॥ यज्ञोपवीतांगमाचमनीयम् ॥ गन्धम्—गन्धकपूर संयुक्तं दिव्य—चन्दनमुत्तमम् । विलेपनम् प्रयच्छामि शिवायामिततेजसे ॥ सिन्दूर विन्दी शृंगारः ॥ सिन्दूरमरुणा भासं जपाकुसुमसन्निभम् । पूजितासि महादेवि सिन्दूरेण शुभेन च ॥ ॐ गौर्यै नमः सिन्दूरादिकं समर्पयामि । ॐ गौरी महेश्वराभ्यां नमः । अक्षतान् समर्पयामि । पुष्पाणि—माल्यादीनिसुगन्धीनि देशकालोद्भवानि च । पूजार्थमुपनीतानि पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् । ६ रूपः—त्रैलोक्य पावनानन्त परमात्मन् जगद्गुरौ । चन्दनागरुकपूर धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ दीपः—पुरत्रयं पुरायेन दीपितं विशिखाग्निना । तस्मै दीपं प्रयच्छामि साम्बायामित तेजसे ॥ नैवेद्यम्—यस्य कण्ठे कालकूटममृतादतिरिच्यते । ददामि तस्मै नैवेद्यं साम्बाय परमात्मने । क्षणंध्यात्वा जपेत् ॥ ॐ गौरी महेश्वराभ्यां नमः ॥ फलम्—नारिकेल फलं जम्बू फलं नारंगमुत्तमम्, कूष्माण्डं पुरतोभक्त्या कल्पितं प्रतिगृह्यताम् । फलं समर्पयामि ॥ ताम्बूलम् ॥ दक्षिणा द्रव्यं दत्त्वा ॥ नीराजनम् कृत्वा प्रार्थयेत्—यस्य शक्रादयो देवानमन्ति चरणाम्बुजम् ॥ तस्मै शिवाय शान्ताय नमस्कारं करोम्यहम् । महादेव महाराज प्रीत्यापाप प्रणाशन । अस्माकं कुर्वतां पूजां साधु वाऽसाधु योजिताम् ॥ ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि भवतो विहितां च याम् । तां पूरय महादेव सहगौर्या महेश्वर ॥ अथ नवीन दोरक ग्रहणम्—देव—देव जगन्नाथ सर्व सौभाग्य दायक । गृह्णामि दोर रूपं त्वां पुत्र पौत्र धारयामि । दोरकधारणम्—सप्तसामोपगीतं त्वां सप्त लोकमहेश्वरम् । सूत्रग्रन्थिस्थितं नित्यं धारयामि स्थिरो भव । अथ जीर्णदोरक उत्तारणम्—हर पापानि सर्वाणि तुष्टि

कुरु दयानिधे । प्रसन्नः सन्नुभाकान्त दीर्घायुः पुत्रदो भव ॥ दक्षिणां संकल्पं कृत्वा—शंकरः प्रतिगृह्णाति शंकरो वै ददाति च । शंकरस्तारको देवः शंकराय नमो नमः ॥ ततो विसर्जयेत् ॥

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पूजा

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी जिस दिन अर्द्धरात्रि में अष्टमी हो, उस दिन व्रत करे । श्रीकृष्ण जयन्तीअगले दिन मनावे ॥ १) अर्द्धरात्रे तु रोहिण्यां यदा कृष्णाष्टमी भवेत् । तस्यामभ्यर्चनं शौरेर्हन्ति पापं त्रिजन्मजम् ॥ (तिलों से स्नान करके व्रत करे ॥ श्रीकृष्ण, वसुदेव, देवकी, बलदेव, यशोदा, नन्द, गौर्वे, यमुना, षष्ठी, स्कन्द प्रद्युम्न, षट्कृतिका बनाकर पूजे)

ॐ विष्णुः ॥ ३ ॥ अद्योहेत्यादि—उच्चार्य श्रीकृष्णजन्माष्टमी तिथौ चतुर्वर्ग सिद्धिद्वारा श्रीकृष्ण देव प्रीतये श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रतांगत्वेन पट्टलिखित प्रतिमासु (सुवर्ण प्रतिमायां, अस्यां मूर्तौ वा) सपरिवारस्य श्रीकृष्ण देवस्य तथा सर्वेषां मथुरावासिनां गोकुल वासिनां च यथा लब्धो पचारैः प्रतिष्ठावाहनपूर्वकं पूजनं करिष्ये द्वारपूजा—पूर्व—ॐ नन्दाय नमः । ॐ सुनन्दाय नमः । दक्षिणे—ॐ चण्डाय नमः । पश्चिमे ॐ बलाय नमः । ॐ प्रबलाय नमः । उत्तरे—ॐ भद्राय नमः । ॐ सुभद्राय नमः ॥

प्रतिष्ठा—ॐ एतन्ते देव सवित० ॐ भूर्भुवः स्वः अस्यां मूर्तौ श्रीकृष्ण देव सांग सपरिवार इहागच्छ इहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव । तथा पट्टलिखितान्यदेवताः सर्वे मथुरागोकुलवासिनश्च इहागच्छत इह तिष्ठत सुप्रतिष्ठता वरदा भवत ॥ पीठपूजा—ॐ विमलायै नमः । ॐ उत्कर्षिण्यै नमः । ज्ञानायै० क्रियायै० योगायै० प्रहै० सत्यायै० ईशानायै० अनुग्रहायै० । मध्ये—ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्व भूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्म संयोगपीठात्मने ॥

अथ देवकी ध्यानम्—ॐ गायद्भिः किन्नराद्यैः सतत परिवृता वेणु वीणा निनादैः शृंगरादर्श कुम्भप्रवरवृत्तकरैः

अथ देवकी ध्यानम्—ॐ गायद्भिः किन्नराद्यैः सततं परिवृता वेणु वीणा निनादैः शृंगरादर्शं कुम्भप्रवरवृत्तकरैः किंकरैः सेव्यमाना । पर्यङ्के स्वास्तृते या मुदितं तरं मुखी पुत्रिणी सम्यगास्ते सा देवी देवमाता जयति सुवदना देवकी दिव्यरूपा ॥ ॐ देवक्यै नमः ध्यानम् समर्पयामि ॥

अथ श्रीध्यानम्—पादौ संवाहन्ती श्रीदेवक्याश्चरणान्तिके ।
निषण्णा पङ्कजे पूज्या नमो देव्यै श्रियै इति ॥ ॐ श्रियै नमः ॥

अथ श्रीकृष्ण ध्यानम्—ॐ अर्कोद्यादभं किरीटान्वितं मकरलसत्कुण्डलं दीप्तिं राजत् केयूरं कौस्तुभोल्लास-
दधिकं रुचिरहारं पीताम्बरं च । नाना रत्नांशुभिर्नाभरणशतयुतं श्रीधराशिलष्टदेहं वन्देदोः सक्तलीलाम्बुरुहदरगदं
विश्ववन्द्यं मुकुन्दम् ॥ ॐ श्रीकृष्णाय नमः ध्यानं समर्पयामि । ॐ सर्वभ्यो मथुरावासिभ्यो गोकुलवासिभ्यो नमः
ध्यानं समर्पयामि ॥

आवाहनम्—ॐ नवनीलघनश्यामं नलिनारयणं लोचनम् । शंखचक्रगदापद्मपीताम्बरधरं हरिम् ॥ ॐ
श्रीकृष्णाय नमः । आवाहनं समर्पयामि । पट्टलिखितं सर्वभ्यो देवेभ्यो नमः । आवाहनं समर्पयामि ॥ तथा
भित्तिस्थचित्रेषु समस्तपरिवारदेवेभ्यो नमः ॥ आवाहनं समर्पयामि ।

आसनम्—श्रीधराय भूधराय गोवर्द्धनधराय च । पुष्पासनं ददाम्येतद्गृह्यतां मदनुग्रहात् ॥ ॐ श्रीकृष्ण
सहितेभ्यो देवेभ्यो नमः आसनं समर्पयामि ॥ पाद्यम्—आवाहितेभ्यो देवेभ्यो नमः । पाद्यं समर्पयामि ॥

अर्घ्यम्—ॐ देवकीगर्भसम्भूतं दैत्यसैन्यविनाशनं । गृहाणार्घ्यमिमन्देव मातुरुत्संगसंस्थित ॥ ॐ
आवाहितेभ्यो देवेभ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि ।

पंचामृतेन स्नानम्-ॐ योगेश्वराय देवाय योगीनां पतये विभो । योगोद्भवाय नित्याय गोविन्दाय नमो नमः ॥
पयो दधिघृतं चैव मधुशर्करया न्वितम् । पंचामृतं मयादत्तं गृह्यतां मदनुग्रहात् ।

स्नानांगमाचमनीयम्-ॐ आवाहितेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥

वस्त्रम्-ॐ नारायण नमस्तेस्तु नमो गरुडवाहन । त्रैलोक्यव्यापकस्त्वं हि वस्त्रं मे प्रतिगृह्यताम् ॥
आचमनम् ॥

यज्ञोपवीतम्-ॐ नारायण नमस्तेस्तु त्राहि मां भक्तवत्सल । ब्रह्मसूत्रं सोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर ।
यज्ञोपवीतांगमाचमनीयम् ॥

गन्धम्-मलयोत्थं तापहरं सुगन्धिद्रव्यसंयुतम् । गंधं गृहाण मे देव भक्तानां मोक्षदायक । ॐ श्री कृष्णाय नमः
तथा सर्वेभ्योगोकुलवासिभ्यो मथुरावासिभ्यो नमः । गन्धम् समर्पयामि । अक्षतार्थं यवान् समर्पयामि श्रीकृष्णाय नमः
पुष्पाणि-योगेश्वराय देवाय योगिनां पतये विभो । योगोद्भवाय नित्याय गोविन्दाय नमो नमः ॥ पुष्पाणि समर्पयामि ॥
तुलसीदलानि-ॐ तुलसीं हेमरूपां च रत्न रूपां च मंजरीम् । भवमोक्ष प्रदां तुभ्यमर्पयामि हरि प्रियाम् ॥
तुलसीदलानि समर्पयामि ।

अंगपूजा-(जौ पुष्प) ॐ गोविन्दाय नमः पादौ पूजयामि । माधवाय० जंघे पू० । मधुसूदनाय० कटिं पू० ।
पदनाभाय० बाहू पू० । दैत्यसूदनाय० हस्तौ पू० । श्री कण्ठाय० कण्ठं पू० । सुमुखाय० मुखं पू० । त्रिविक्रमाय०
नासिकां पू० । पुण्डरीकाक्षाय० नेत्रे पू० । नृसिंहाय० श्रोत्रे पू० । उपेन्द्राय० ललाटं पू० । हरये० शिरः पू० । ॐ

श्रीकृष्णाय नमः सर्वांगम्पूजयामि ॥ आवरणार्चना पूर्वे-ॐ वासुदेवाय नमः । दक्षिणे-ॐ संकर्षणाय नमः । पश्चिमे-ॐ

श्रीकृष्णाय नमः सर्वाङ्गमुजयामि ।। आवरणार्चना पूर्वे-ॐ वासुदेवाय नमः । दक्षिणे-ॐ संकर्षणाय नमः । पश्चिमे-ॐ प्रद्युम्नाय नमः । उत्तरे-ॐ अनिरुद्धाय नमः ।। अभीष्टसिद्धिं मेदेहि शरणागतवत्सल । भक्त्यासमर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चना ।। ११ ।। आग्नेये ॐ शान्त्यै नमः । नैऋत्यै-ॐ श्रियै नमः । वायव्ये-ॐ सरस्वत्यै नमः । ईशाने ॐ रेवत्यै नमः । अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्यासमर्पये तुभ्यं द्वितीया वरणार्चना ।। १२ ।। ॐ शंखाय नमः । ॐ चक्राय नमः ॐ गदायै नमः ॐ पद्माय नमः ॐ वनमालायै नमः ॐ कौस्तुभाय नमः । अभीष्ट सिद्धिं तृतीया वरणार्चना ।। १३ ।। पूर्वे-ॐ गरुडाय नमः । दक्षिणे-ॐ शंखनिधये ॐ । पश्चिमे-ध्वजायै नमः । उत्तरे-पद्मनिधये नमः । अभीष्ट सिद्धिमेदेहि ॐ चतुर्थावरणार्चना ।। १४ ।। आग्नेये-ॐ गणेशाय नमः नैऋत्ये-ॐ आय्यायै नमः । वायव्ये-ॐ दुर्गायै नमः । ईशाने-ॐ स्कन्दाय नमः । अभीष्ट सिद्धिमेदेहि ॐ पञ्चमावरणार्चना ।। १५ ।। अथ इन्द्रादिदशदिक्पालाः-पूर्वादिक्रमेण-ॐ इन्द्राय नमः ॐ अग्नये नमः । ॐ यमाय नमः ॐ निऋतये नमः । ॐ वरुणाय नमः । ॐ वायवे नमः । ॐ कुबेराय नमः । ॐ ईशानाय नमः ॐ ब्रह्मणे नमः । ॐ अनन्ताय नमः ।। अभीष्टसिद्धिं मे देहि ॐ षष्ठ्यावरणार्चना ।। १६ ।। ॐ वज्राय नमः । ॐ शक्त्यै नमः । ॐ कालाय नमः । ॐ पाशाय नमः । ॐ अंकुशाय नमः । ॐ दण्डाय नमः । ॐ खड्गाय नमः । ॐ मुसलाय नमः । अभीष्ट सिद्धिं मे देहि ॐ सप्तमावरणार्चना ।। १७ ।। ॐ ब्राह्म्यै नमः । ॐ माहेश्वर्यै नमः । ॐ कौमार्यै नमः ॐ वैष्णव्यै नमः । ॐ वाराह्यै नमः । ॐ इन्द्राण्यै नमः । ॐ चामुण्डायै नमः । ॐ वैनायक्यै नमः । अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं-अष्टमावरणार्चना ।। १८ ।। धूपम्-ॐ यज्ञेश्वराय देवाय तथा यज्ञोद्भवाय च । यज्ञानाम्पतये तुभ्यं गोविन्दाय नमो नमः । वनस्पतिरसदभूतो ॐ । दीपम्-साज्यं च वर्ति संयुक्तं वह्निना दीपितं मया । दीपं गृह्णान्तु भो देवास्त्रैलोक्य

तिमिरापहम् ॥ नैवेद्यम् (तुलसीदल सहित) — ॐ विश्वेश्वराय विश्वाय तथा विश्वोद्भवाय च । विश्वस्यपतये तुभ्यं गोविन्दाय नमो नमः ।

(पंचमेवा पंचमिठाई दही माखन मिश्री आदि) शर्कराखण्ड खाद्यानि दधि क्षीर घृतानि च । आहारो भक्ष्य भोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ नाभ्याआसीदन्तरिक्ष 8. शी० । त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये । गृहाणसम्मुखो भूत्वा प्रसीद जगदीश्वर ॥ आचमनीयम् ॥ जपम् ॐ श्रीकृष्णाय नमः । (ॐ नमो भगवते वासुदेवाय) ॥ ॐ सर्वेभ्यो मथुरावासिभ्यो गोकुल वासिभ्यो नमः ॥

जलम् — ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्तारो गृह्णत्वस्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु भो देवाः प्रसादात्भवतां मम ॥ फलम् — फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् । तस्मात्फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः । ताम्बूलम् ॥ भूषणार्थं द्रव्यम् ॥

(चन्दन, जौ तथा तुलसीदल अर्पण) — ॐ केशवाय नमः । ॐ नारायणाय० । माधवाय० । गोविन्दाय० । विष्णवे० । मधुसूदनाय० । त्रिविक्रमाय० । वामनाय० । श्रीधराय० । हृषीकेशाय० । पद्मनाभाय० । दामोदराय० । संकर्षणाय० । वासुदेवाय० । अनिरुद्धाय० । पुरुषोत्तमाय० । अधोक्षजाय० । नारसिंहाय० । अच्युताय० । जनार्दनाय० । उपेन्द्राय० । हरये० । कृष्णाय० ।

ॐ प्रणवाय नमः ॥ (इसी प्रकार पट्टलिखित अन्य देवताओं को गन्धाक्षत पुष्प से पूजे) ॐ देवक्यै नमः । ॐ वसुदेवाय नमः । ॐ कश्यपाय नमः । गणेशाय० । बलभद्राय० । दुर्गायै० । यशोदायै० । शेषनागाय० । महादेवाय० ।

दित्यै० । नन्दाय० । प्रजापतये० । दक्षाय० । आदित्याय० । सोमाय० । यमुनायै० । कल्याय० । चतुर्मुखाय० ।

दित्यै० । नन्दाय० । प्रजापतये० । दक्षाय० । आदित्याय० । सोमाय० । यमुनायै० । कल्याय० । चतुर्मुखाय० ।
कालनेमिने० । धन्वन्तरये० । विश्वाय० । गजेभ्यो० । अश्वेभ्यो० गंगायै० । यमुनायै० । इन्द्राय० ।
शस्त्रपाणिभ्यो० । गन्धर्वेभ्यो० । यक्षेभ्यो० । किन्नरेभ्यो० । कंसाय० । चित्रगुप्ताय० । स्वर्गाय० । गृहेभ्यो० ।
विद्याधरेभ्यो० । अप्सरोभ्यो० । नागेभ्यो० । पर्वतेभ्यो० । गोभ्यो० । पक्षिभ्यो० । नरनारिभ्यो० । ॐ सर्वेभ्यो
मथुरावासिभ्यो गोकुलवासिभ्यो नमः । ततो नीराजनम् । ॐ अविनयमपनय विष्णो० ।।

शंखेन अर्घ्यदानम्— ॐ जातः कंसवधार्थाय भूभारोत्तारणाय च । देवानां च हितार्थाय धर्मसंस्थापनाय च । ।
पाण्डवानां हितार्थाय दैत्यानां निधनाय च । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं देवक्या सहितो हरे । ।

प्रार्थना-ॐ अवतार सहस्राणि करोषि मधुसूदन । न ते संख्याऽवताराणां केऽपि जानन्ति वै प्रभो ।। देवा ब्रह्मादयो वापि स्वरूपन्निविदुस्तव । अतस्त्वां पूजयाम्यद्य मातुरुत्संगसंस्थितम् ।। चन्द्रमसः पूजनम् ।। ॐ इमन्देवाऽ० ।

ॐ चन्द्रमसे नमः इति सम्पूज्य अर्घ्यदानम्—ॐ क्षीरोदारण्व सम्भूत, अत्रिनेत्र समुद्रव । गृहाणार्घ्यं शशांकेश
रोहिण्यासहितः शशिन् । । जीव मातृका—ॐ कल्याणी मंगला भद्रा पुण्या पुण्यमुखी तथा । जया च विजया चैव
सप्तैता जीव मातरः । । गन्धाक्षतपुष्पैः पूजनम्—

ॐ कल्याण्यै नमः । ॐ मंगलायै नमः । ॐ भद्रायै नमः । पुण्यायै० । पुण्यमुख्यै० । जयायै० । विजयायै० इति सम्पूज्य नीराजनान्ते संकल्प पूर्वकं सवोधाराः पातयेत् । ॐ वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु त्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥

षष्ठीपूजनम्—अद्येह० पूर्वकृत संकल्प सिद्धये श्रीकृष्ण देवस्य षष्ठी महोत्सव कर्मणि तदगत्वेन षट् कृतिकानां स्कन्द प्रद्युम्नयोः षष्ठीदेव्याश्च प्रतिष्ठावाहनपूर्वकं पूजनं करिष्ये । प्रतिष्ठा—ॐ एतन्ते० ॐ भूर्भुवः स्व० षट् कृतिकाः । स्कन्दप्रद्युम्नौ षष्ठी देवि च इहागच्छत इह तिष्ठत सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत ॥

स्कन्दध्यानम्—मयूर वाहनारूढो द्विभुजो बालरूप धृक् । मुदगरं वाम हस्ते तु शक्तिं दक्षिणतो न्यसेत् ॥ ॐ स्कन्दाय नमः । ध्यानं समर्पयामि ॥ प्रद्युम्नध्यानम्—प्रद्युम्नस्तु महाबाहुः शंख चक्र गदाधरः । चक्रं दक्षिण हस्ते स्याद् वाम हस्ते धनुस्तथा ॥ शंखं च दक्षिणे दद्यात् वामहस्ते गदां तथा ॥ ॐ प्रद्युम्नाय नमः ध्यानं समर्पयामि ॥ षष्ठी ध्यानम्—चतुर्भुजां महादेवीं तुंगपीनस्तनीं शिवाम् । मयूर वाहनारूढां रक्त वस्त्र धरां शुभाम् ॥ शूल शक्ति वराभीतिहस्तां ध्याये महेश्वरीम् । प्रफुल्ल पद्म वदनामर्द्ध पदमासन स्थिताम् ॥ श्री षष्ठी देव्यै नमः । ध्यानं समर्पयामि ॥

षट् कृतिका ध्यानम्—शिवा सम्भूति नामा च प्रीतिः सन्नतिरेव च । अनसूया क्षमा चेति षडेताः कृतिकाः स्मृताः ॥ ॐ जगन्मातर्जगद्धात्रि जगदानन्द कारिणि । नमस्ते देवि कल्याणि प्रसीद मम कृतिके ॥

पुरा देवैः पूजितासि ब्रह्म विष्णु शिवादिभिः । अस्माभिरपि देवि त्वं पूज्यसे भक्तिपूर्वकम् ॥

देहि—अस्य बालकस्यायुर्दीर्घन्तुभ्यं नमो नमः ॥ ॐ षट् कृतिकाभ्यो नमः ॥ नैवेद्यान्तं सम्पूज्य ॐ षष्ठीदेव्यै नमः । ॐ स्कन्दाय नमः ॐ प्रद्युम्नाय नमः ॥ ॐ शिवायै नमः । ॐ सम्भूत्यै नमः । ॐ प्रीत्यै नमः । सन्नत्यै नमः । ॐ अनसूयायै नमः । ॐ क्षमायै नमः । इति जपेत् ॥ फल ताम्बूल द्रव्यैः सम्पूज्य नीराजनं कृत्वा प्रार्थयेत् ॥ नमः

कुमाराय महाबलाय स्कन्दाय ते स्कन्दित दानवाय । नवार्क बिम्ब द्युतये नमोस्तु ह्यमोघ शक्ति ग्रह पाणये ते ॥

ॐ जगन्मातर्जगद्धात्रि जगदानन्द कारिणि । नमस्ते देवि कल्याणि प्रसीदमम कृत्तिके ।

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रमपश्येमा क्षमिभ्यजत्रास्थिरैरङ्गैः स्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर्व्यसेमहि देवहितं यदायुः ॥ इति मंत्रेण श्वेत पट लिखित नामाक्षराणि एतन्तेति प्रतिष्ठाप्य श्रीकृष्ण नामा दीर्घायुर्भूयात्-इति शंखेन श्रावयेत् ॥ दक्षिणां दत्त्वा मंत्राशिषं दद्यात् ॥

हरितालिकाव्रत पूजा

(कथा सहित)

श्री शिव पार्वती की प्रतिमा सुवर्ण या मिट्टी की बनाते हैं कदली स्तम्भ से मण्डप को बनावे । सायंकाल स्नान से निवृत्त होकर गणेशादि पुष्पाञ्जलिः ।

पूजा संकल्पः—अद्यहं दक्षिणायने वर्षर्तौ भाद्रपदमासे शुक्ल पक्षे अमुक वासरे हरितालिका तृतीयायां पुण्यतिथौ अमुकगोत्रा अमुकी देव्यहं सकल पापक्षयपूर्वकं सप्त जन्म सौभाग्य—अवैधव्य पुत्रपौत्रादि सकल

समृद्धिपूर्वक शिवलोक प्राप्ति कामनया गौरीमहेश्वर प्रीतये सोपवास हरितालिका व्रत निमित्तकं यथाशक्ति जागरणपूर्वकं च अस्यां मूर्तौ (प्रतिमायां वा) गौरीमहेश्वरयोः यथालब्धोपचारैर्यथाज्ञानेन च प्रतिष्ठावाहनपूर्वकं पूजनं करिष्ये । ॐ एतन्तेति प्रतिष्ठा ॐ भूर्भुवः स्वः अस्यां मूर्तौ गौरीमहेश्वरौ इहागच्छतम् इहतिष्ठतम् सुप्रतिष्ठितौ वरदौ भवतम् ।। गौरी महेश्वरौ ध्यानम्-मन्दार माला कुलितालकायै कपाल मालांकित शेखराय । दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ।। अक्षतैरावाहनम्-देविदेवि समागच्छ प्रार्थयेऽहं जगन्मये । इमां मया कृतां पूजां गृहाणसुरसत्तमे । देवदेव समागच्छ प्रार्थयेऽहं जगत्पते । तावत्वं प्रीतिभावेन मूर्तौ सन्निहितोभव । श्री गौरीमहेश्वराभ्यां नमः । आवाहनं समर्पयामि । आसनम्-भवानित्वं महादेवि सर्वसौभाग्यदायिके । अनेकरत्नसम्पृक्तमासनं प्रतिगृह्यताम् ।। देवदेव नमस्तुभ्यं सहस्रशिरसे नमः । नमस्तेकृतिवासाय स्वासनं प्रतिगृह्यताम् । श्रीगौरीमहेश्वराभ्यां नमः । आसनं समर्पयामि । पादाम्-शिवपत्न्यै नमस्तुभ्यं शिवाय सततं नमः । शिवप्रीतियुतानित्यं पादाम् प्रतिगृह्यताम् । श्री गौरीमहेश्वराभ्यां नमः पादार्थं जलं समर्पयामि ।। अर्घ्यम्-श्रीपार्वतिमहाभागे शंकरप्रियवादिनि ।। अर्घ्यं गृहाण कल्याणि भर्त्रा सह पतिव्रते ।। वरेण्ययज्ञपुरुषः प्रजापालनतत्पर । नमस्ते देवदेवेश गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते ।। श्रीगौरीमहेश्वराभ्यां नमः । आचमनीयम्-राज्यं सौभाग्यदे देवि प्रसन्नाभव पार्वति । आचम्यतां महाभागे रुद्रेण सहितेऽनघे ।। पंचामृतेनस्नानम्-पयोदधिघृतं चैव मधुशंकरयान्वितम् । पंचामृतेन पूतेन स्नानं प्रतिगृह्यताम् ।

गंगादिजलेन स्नानम्-कालिन्दी नर्मदा गंगा पुण्यतोयंशुभं जलम् । मणिकर्णजलं शुद्धं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।। श्रीगौरीमहेश्वराभ्यां नमः । शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि । स्नानांगमाचमनीयं समर्पयामि । लोकानां तुष्टिकर्त्री त्वं मुक्तिदा च सदा नृणाम् । वाञ्छितं देहि मे नित्यं सुप्रीता भव सर्वदा ।। श्रीगौरीमहेश्वराभ्यां नमः अंगप्रोक्षणार्थं पुष्पं समर्पयामि ।

वस्त्रद्वयम्-वस्त्रयुग्मगृहाणेदं देविदेवस्य बल्लभे । सर्वसिद्धिप्रदे देवि मंगलं कुरु मे सदा । वस्त्रांगमाचमनीयम् । गन्तोपावीतम्-राजनवंदनाय च कांचन उज्जोत्तरीयकम् । गृहाणदेवदेवेश ममज्यौग्यां वितर्दय ।।

फलानि—फलेन फलितं सर्वं त्रेलोक्यं सचराचरम् । तस्मात् फल प्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः । । ताम्बूलम्—पूंगीफलं महद्वियं नाग बल्ली दलान्वितम् । एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् । दक्षिणां समर्पयेत् । नीराजनम् कृत्वा विशेषार्घ्यं दद्यात् तत्रमंत्रः—ॐ गौरीहर महेशान व्रतसम्पूतिं हेतवे । गृहाणार्घ्यमयादत्तं फलपुष्पाम्बु संयुतम् । ।

पुष्पाञ्जलि—मन्दारमालाकुलितालकार्यै कपालमालाकिंत शेखराय । दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय । । पुत्रान् देहि धनं देहि सौभाग्यं देहि मे सदा । सर्वान्कामांश्च मे देहि देवि तुभ्यं नमो नमः । येन कामेन देवि त्वं पूजितासि महेश्वरि । राज्यं सौभाग्यं सम्पत्तिं मह्यं देह्यम्ब पार्वति । । दक्षिणा संकल्पं कृत्वा ब्राह्मणमर्घ्यदिभिः सम्पूज्य दक्षिणां दद्यात् ।

अथ हरतालिका व्रतकथा—(लिंग पुराण के अनुसार) (एक बार कैलाश शिखर पर बैठे भगवान शंकर से पार्वती जी ने पूछा—हे नाथ यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो अत्यन्त गोपनीय और विशेष फलदायक व्रत मुझे बताओ, श्री शंकर बोले—हे देवि गोपनीय तथा विशेष फलदायक व्रत बतलाता हूँ । मन को एकाग्र करके सुनो । भाद्रपद मास की शुक्लपक्ष की तृतीया तिथि हस्त नक्षत्र से युक्त होने पर इस व्रत से पाप नष्ट हो जाते हैं । तुमने इस व्रत को पहले भी किया था । पर्वतों के पिता राजा हिमवान के यहाँ गंधर्व सिद्ध गुह्यक आदि का निवास है । वहीं पर तुमने अपने बाल्यकाल में कठिन तप किया था । तुम्हारी कठिन तपस्या को देखकर तुम्हारे पिता हिमवान को चिन्ता हुई कि इस कन्या को किसे प्रदान करूँ ? उसी समय देवर्षि नारद वहाँ पहुँचे । उनके स्वागत सत्कार के उपरान्त हिमवान ने पूछा हे भगवान आप किसलिए पधारें हैं ? तब नारद मुनि बोले कि मुझे वासुदेव विष्णु ने भेजा है । तुम विष्णु को अपनी कन्या प्रदान करो । हिमवान के तथास्तु कहने पर नारद अन्तर्धान हो गये । तब हिमवान के कथन को सुनकर गौरी रोती हुई सखी के साथ निर्जन घने वन में लुप्त हो गई । हिमवान दुःखी होकर सर्वत्र ढूँढने लगे । शिवजी कहते हैं कि हे पार्वती तुमने उस घने वन की एक पर्वत गुफा में प्रविष्ट होकर समस्त भोगों को त्यागकर भाद्रशुक्ल तृतीया हस्त

नक्षत्र के दिन बालू का शिवलिंग बनाकर मेरी पूजा की और रात्रि में जागरण किया था । उस व्रत के प्रभाव से मेरा आसन विचलित हो गया था तब तुमको मैंने दर्शन दिये । तुमने मुझे वर रूप में मांगा था । मैंने "तथास्तु" कहा । प्रातःकाल तुमने विसर्जन किया ।

नक्षत्र के दिन बालू का शिवलिंग बनाकर मेरी पूजा की और रात्रि में जागरण किया था। उस व्रत के प्रभाव से मेरा आसन विचलित हो गया था तब तुमको मैंने दर्शन दिये। तुमने मुझे वर रूप में मांगा था। मैंने "तथास्तु" कहा। प्रातःकाल तुमने विसर्जन किया। तभी हिमवान् ढूँढते-ढूँढते वहाँ पहुँचे। उनके पूछने पर तुमने पूर्वजन्म के वृत्तान्त को उनसे बतलाकर मुझे पति के रूप में पाने की बात कही। घर जा कर तब प्रसन्न चित होकर उन्होंने विवाह विधि सम्पन्न की।

पूजा विधि बतलाते हुए शंकर भगवान् बोले—हे देवि जो स्त्री इस व्रत को करती है वह समस्त पापों से छुटकारा पाकर मन वाञ्छित फल प्राप्त करती है। हरतालिका व्रत कथा श्रवण मात्र से अश्वमेध यज्ञ और वाजपेय यज्ञ का फल प्राप्त होता है। अतः इस दिन अन्न गृहण नहीं करना चाहिए। पूर्णव्रती होकर श्रद्धा भक्ति से पूजा करनी चाहिए और कथा श्रवण करनी चाहिए। भक्ति का फल श्रद्धा पर है।

श्री ऋषिपंचमी व्रतपूजा विधि:

ॐ सुमुखश्चेत्यादिना गणेशाय पुष्पाञ्जलिं समर्प्य। पूजासंकल्पं कुर्यात्। ॐ विष्णुः ३ अद्येहेत्यादि० अमुकसंवत्सरे दक्षिणायने वर्षत्तौ भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे ऋषिपञ्चम्यां पुण्यतिथौ अमुकगोत्रामुकराशिः अमुकी देव्यहं मम प्रथमऋतुदर्शनादारभ्य शरीरावसानपर्यन्तं ज्ञानतोऽज्ञानतो वा रजस्व लावस्थाकृतसम्पर्कजनितदोषपरिहाराय यथोक्तफलावाप्तये अरुन्धतीसहित कश्यपादि सप्तर्षिप्रीतये ऋषीणां पूजनं करिष्ये। एतन्तेति प्रतिष्ठा। ॐ भूर्भुवः स्वः सारुन्धतीकाः सप्तर्षयः सुप्रसिद्धा वरदा भवन्तु।

ध्यानम्—मूर्तिब्रह्मण्य देवर्षे ब्रह्मण्यतेज उत्तमम्। सूर्यकोटिप्रतीकाश मृणिवृन्दं विचिन्तयेत्॥
आवाहनम्—आवाहयाम्यहम् सप्तमनीन् ज्ञानविशारदान्। पूज्यान् सर्वस्य लोकस्य व्रतसादगुण्यकारणात्॥ आवाहनं

समर्पयामि ॥ आसनम्—ऋग्यजुः सामवेदानाम् स्वरूपेभ्यो नमो नमः । पुराणपुरुषेभ्यो हि देवैर्षिभ्योऽस्तु स्वासनम् ॥ आसनं समर्पयामि ॥ पाद्यम्—गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तं सुगन्धि विमलं जलम् । पाद्यम् तत् प्रतिगृह्णन्तु कश्यपाद्या महर्षयः । अर्घ्यम्—तापत्रय हरं दिव्यं गन्धपुष्पाक्षतैः सह । सप्तर्षयः प्रगृह्णन्तु दत्तमर्घ्यं मया शुभम् ॥ आचमनम्—कर्पूरवासितं तोयं सुवर्णकलशे स्थितम् । ददाम्याचमनं भक्त्या मुनीनां प्रीतये सदा ॥ आचमनं समर्पयामि ॥ पंचामृतस्नानम्—पयोदधि घृतं चेत्यादिना पंचामृतस्नानं समर्पयामि ॥ स्नानांगमाचमनीयम् (वस्त्रं) यज्ञोपवीतम् गन्धम् अक्षतान् पुष्पाणि च समर्पयामि ॥ अंगपूजाकश्यपाय नमः ० अत्रये ० भरद्वाजाय ० विश्वामित्राय ० गौतमाय ० जमदग्नये ० वशिष्ठाय ० अरुन्धत्यै नमः ॥ कश्यपोत्रिभरद्वाजो विश्वामित्रश्च गौतमः । जमदग्निर्वशिष्ठश्च अरुन्धत्या सहाष्टकाः ॥ कश्यपादिसप्तऋषिभ्यो नमः ॥ धूपम् । दीपम् नैवेद्यम्—नानापक्वान्नं समर्पयामि ॥ क्षणं ध्यात्वा जपम् ताम्बूलम् भूषणार्थं द्रव्यम् नीराजनम् ।

अर्घ्यदानम्—कश्यपोत्रिभरद्वाजो विश्वामित्रोऽथ गौतमः । जमदग्निर्वशिष्ठश्च अरुन्धत्या सहाष्टकाः । नभस्ये शुक्लपंचम्यामर्चिता ऋषिसत्तमाः । दहन्तु पापं मे सर्वं गृह्णन्त्वर्घ्यं नमो नमः ॥ प्रार्थना—ब्रह्मर्षिभ्यो नमश्चास्तु देवर्षिभ्यो नमो नमः । सर्वपापहरेभ्यो हि वेदविद्भ्यो नमो नमः ॥ अद्योह ० अमुकी देव्यहं ऋषिपंचमीव्रतांगत्वेन कृताया ऋषिपूजायाः सादगुणयार्थं इमां दक्षिणां ब्राह्मणाय दास्ये । ब्राह्मणमर्घ्यादिभिः सम्पूज्य दक्षिणां दत्वा मंत्रांशिषं दद्यात् ॥

अथ दूर्वाष्टमी पूजा

ॐ विष्णुः ३ अमुकी देव्यहं अक्षयसौभाग्यसन्तति प्राप्तये दूर्वाष्टमीव्रतं करिष्ये । तदंगत्वेन दूर्वायाः षोडशोपचारैः पूजनं करिष्ये ॥

प्रतिष्ठा—एतन्नेति प्रतिष्ठाप्य ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दूर्वे सुप्रतिष्ठिता भव ॥ ध्यानम्—त्वं दूर्वेऽमृतजन्मासि वन्दितासि सुरासुरैः । सौभाग्यं सन्ततिं दत्त्वा सर्वकार्यकरी भव ॥ यथा शाखाप्रशाखाभिः विस्तृतासि महीतले । तथा ममापि सन्तानं देहि त्वमजरामरम् ॥ श्रीदूर्वायै नमः ध्यानं समर्पयामि ॥ आवाहनादि नीराजनान्तम् पूजयेत् ॥

अनन्तचतुर्दशी पूजा

(मध्याह्न व्यापिनी ग्राह्या) सुमुखश्चेत्यादिना गणेशाय पुष्पाञ्जलिं समर्प्य । कलशस्थापनविधिना कलशं संस्थाप्य । पूजासंकल्पः—ॐ विष्णुः ३ मम सकृदुद्भूतस्य श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलावाप्तये क्षेमस्थैर्यादि प्राप्तये अनन्तचतुर्दशी व्रतं करिष्ये । प्रतिष्ठा० ॐ भूर्भुवः स्वः अस्यां दर्भमय मूर्तौ अस्मिन् दोरकेच अनन्तदेव सुप्रतिष्ठितो वरदो भव । ततस्तु मूलमंत्रेण नमस्कृत्य ध्यानम्—नवाग्रपल्लवाभासं पिंगाभ्रश्मश्रुलोचनम् । पीताम्बरधरं शार्ङ्गशंखचक्रगदाधरम् । प्रसन्नवदनं विष्णुं विश्वरूपं विचिन्तयेत् ॥ श्रीअनन्तदेवाय नमः ध्यानं समर्पयामि ।

आवाहनम्—आगच्छानन्त देवेश तेजोराशे जगत्पते । क्रियमाणामिमां पूजां गृहाण पुरुषोत्तम ॥
आसनम्—नानारत्नसमायुक्तम् कार्तस्वरविभूषितम् । आसनं देवदेवेश गृहाण पुरुषोत्तम । आसनं समर्पयामि ॥

पाद्यम्—गंगादिसर्वतीर्थेभ्यो मया यत्नात् समाहृतम् । क्षयंकर—महादोषं मेघतोयविषापह । रत्नवल्लभ देवर्षे लकावास नमोऽस्तुते ।।

अर्घ्यम्—अनन्तानन्तदेवेश अनन्त गुणसागर । अनन्तानन्त रूपोऽसि गृहाणाघ्र्यं नमोऽस्तुते । आचमनीयम् स्नानम् । वस्त्रम् यज्ञोपवीतम् गन्धम् अक्षताः पुष्पाणि । अथ अंगपूजा—ॐ अनन्ताय नमः पादौ पूजयामि । ॐ सकर्षणाय नमः गुल्फौ पू० । ॐ कालात्मने० जानुनी पू० । विश्वरूपिणे० जंघे पू० । विश्वरूपाय० कटिं पू० । विश्वकर्त्रे० मेढ्रं पू० । “उदक् स्पर्शः” ॐ पदनाभाय नमः नाभिं पू० । परमात्मने० हृदयं पू० । श्री कण्ठनाथाय० कण्ठं पू० । शास्त्रास्त्र धारिणे० बाहू पू० । वाचस्पतये० मुखं पू० । कपिलाय० चक्षुषी पू० । केशवाय० ललाटं पू० । सर्वात्मने० शिरः पू० । अथ ग्रन्थीनां गन्धाक्षत पुष्पैर्नाममंत्रैः पूजनम्— ॐ श्रियै नमः ॐ मोहिन्यै० पदिमन्यै० महाबलायै० अजायै० मंगलायै० वरदायै० शुभायै० जयायै० विजयायै० जयन्त्यै० पापनाशिन्यै० विश्वरूपिन्यै० सर्वमंगलायै नमः । १४ ।। ततो ग्रन्थि देवतापूजनम्—ॐ विष्णवे नमः ॐ अग्नये नमः ॐ सूर्याय० सहस्राक्षाय० पितामहाय० इन्द्राय० पिनाकिने० विघ्नेशाय० स्कन्दाय० सोमाय० वरुणाय० पवनाय० पृथिव्यै० वसुभ्यो नमः ।। (तब चौदह उपचार १४ पुष्प, १४ पत्र अर्पण करे) ॐ श्रीमदनन्तदेवेभ्यः श्रीभूमिसहितेभ्यो नमः धूपं दीपं नैवेद्यम् आचमनीयम् जपम्— ताम्बूलपूगीफलम् द्रव्यं नीराजनम्—प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयेत्—

प्रार्थना—नमस्ते भगवन्भूयो नमस्ते धरणीधर । नमस्ते सर्व नागेन्द्र नमस्ते मधुसूदन ।। नमस्ते देवदेवेश नमस्तेगरुडध्वज । नमस्ते कमलाकान्त अनन्ताय नमो नमः ।। अनन्त कामान्मे देहि सर्वकामवरप्रद । अनन्ताय नमस्तुभ्यं पुत्रपौत्रादि वर्द्धन । अनन्तसर्वकामानामधिपः सर्वकामदः । व्रतेनानेन सुप्रीतो भवत्विहसदामयि ।।

दक्षिणादानम् । ततो नवीनदोरक—ग्रहणम् ।। अनन्तः कामदः श्रीमाननन्तो दोररूपकः । अनन्त कामान्मे देहि पुत्रपौत्रं सिवर्त्तन ।। अनन्त संख्या महासमते मग्नं समभ्यादय वासुदेव । अनन्तरूपे विनियोजयस्व अनन्त सत्राय नमो नमस्ते ।।

दक्षिणादानम् । ततो नवीनदोरक-ग्रहणम् ॥ अनन्तः कामदः श्रीमाननन्तो दोररूपकः । अनन्त कामान्मे देहि पुत्रपौत्र विवर्द्धन ॥ अनन्त संसार महासमुद्रे मग्नं समभ्युद्धर वासुदेव । अनन्तरूपे विनियोजयस्व अनन्त सूत्राय नमो नमस्ते । गन्धाक्षतैः पूजनम्-अनन्तगुण रत्नाय विश्वरूप धराय च । सूत्र ग्रन्थिषु संस्थाय अनन्ताय नमो नमः । अथ जीर्ण दोरक-उत्तारणम्-नमः सर्व हितार्थाय जगदाधार हेतवे । जीर्ण दोर ममुं देव विसृजेऽहं त्वदाज्ञया ॥ ततो मंत्राशिषं दधात् ।

अगस्त्यार्घदानमंत्राः-संकल्पं कृत्वा-ध्यानम्-पुरुषाकृतिकं शान्तं जटा मुकुट मण्डितम् । कमण्डलुकरं देवं मृगैश्च परिवारितम् । मृत्युघ्नं विषहन्तारमिष्टदंस्त्रध्वरं मुनिम् ॥ ध्यायेदगस्त्यं ब्रह्मर्षिं धातृणामभयं करम् ॥ आवाहनादिनी राजनान्तं सम्पूज्य अर्घ्यदान संकल्पं कुर्यात्-यथोक्तफला वाप्तये अगस्त्य-ऋषि प्रीतये अर्घ्यदानं करिष्ये । (जलदुग्धदूर्वा नारियल खजूर आदि शंख में रखकर घुटने टेक कर दोनों हाथों से अर्घ्य देवें) ॐ अगस्त्यः खनमानः खनित्र प्राजापत्यं लवमीक्षमाणः । उमावर्णा वृषिर्ग्नः पुपोष योगाय योपतये योगस्त अगस्त्याय नमो नमः काशपुष्पप्रतीकाश वह्निमासत सम्भव । मित्रावरुणयोः पुत्र कुम्भ योने नमोऽस्तुते ॥ विन्ध्यवृद्धि क्षयकर मेघतोयविषापह । रत्नवल्लभ देवर्षे लंकावास नमोऽस्तुते ॥ आतापिमारितो येन वातापि च निपातितः ॥ समुद्रः शोषितो येन लोपामुद्रापते नमः । येनोदितेन पापानि विलयं यान्ति व्याधयः । तस्मै नमोस्त्वगस्त्याय सशिष्याय सपुत्रिणे, शरे पुण्यं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च । लंकाद्वारे समुदितः अर्घ्यं नः प्रतिगृह्यताम् ॥ लोपामुद्रायै अर्घ्यदानम्- राजपुत्रि महाभागे ऋषिपत्नि वरानने । लोपामुद्रे नमस्तुभ्यमर्घ्यं मे प्रतिगृह्यताम् । दक्षिणासंकल्पः-अगस्त्यार्घ्य दानस्य सांगतासिद्धये सुपूजितां अगस्त्य प्रतिमां कलशं नाना उपस्कर सहितां दक्षिणां ब्राह्मणाय दास्ये ॥

॥ कार्तिके आकाश दीप दानम् ॥

अद्येह० श्री राधा दामोदर प्रीतये अद्यारभ्य कार्तिकमासपर्यन्तं यथा सम्भवं आकाशे दीपदानं करिष्ये । दीपं प्रज्वाल्य सम्पूज्य ।

दानमंत्रः—दामोदराय नमसि तुलायां दोलयासह । प्रदीपंते प्रयच्छामि नमोऽनन्तायवेधसे ॥

॥ कार्तिक मास स्नान विधिः ॥

संकल्पः—श्रुति स्मृति पुराणोक्तफलावाप्तये सर्व पापक्षयपूर्वकं धर्मार्थं काम मोक्ष सिद्धये श्री राधादामोदर प्रीतये प्रातः स्नानमहं करिष्ये । स्वअभिषेकः—ॐ त्रिधाभूद्देवकार्यार्थं यः पुराभक्ति भावतः । विष्णुर्वै सर्वपापघ्नः पुनातु कृपयात्रमाम् ॥ विष्णो राज्ञा मनुप्राप्य कार्तिकेव्रत कारकान् । रक्षन्ति देवा सर्वस्ते मां पुनन्तु सवासवाः ॥ अथमृतिकालेपनम्—ॐ अश्वक्रान्तेरथक्रान्ते विष्णु क्रान्ते वसुधारे मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ॥ ॐ मानस्तोकेतनयेमान आयुषिमानो गोषुमानोऽश्वेषुरीरिषः । मानो विरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ॥ गंगादि जलेन स्नानम्—ॐ पंचनद्याः सरस्वती तु पञ्चधासो देशेऽभवत्सरित् ॥ ॐ गंगाद्याः सरितः सर्वास्तीर्था निजलदा नदाः । आयान्तु स्नानकालेऽस्मिन् दुतिक्षय कारकाः ॥ ॐ गंगा गंगेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि । मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णु लोकं स गच्छति ॥ अर्घ्यदानम्—नमः कमलनाभाय नमस्ते जल शायिने ॥ नमस्तेस्तु हृषीकेश गुहाणाघर्घ्यं नमोस्तुते ॥

॥ कार्तिके राधा दामोदर पूजा ॥

॥ कार्तिके राधा दामोदर पूजा ॥

संकल्प-अमुकोऽहं श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलावाप्तये सकलपापक्षय पूर्वकं श्री राधा दामोदर प्रीत्यर्थं कार्तिक स्नानांगत्वेन सुवर्ण प्रतिमायां श्री राधादामोदरस्य पूजनम् करिष्ये ।

तथा श्री तुलसी देव्याश्चपूजनं करिष्ये । ध्यानम्-दक्षिणाधस्तनकरादारभ्यै तत्प्रदक्षिणम् । शंखचक्रगदापदमैः देवो दामोदरोच्यते । श्री राधा दामोदराभ्यां नमः । ध्यानम् समर्पयामि । । तुलसीध्यानम्-तुलसी हेम रूपां च रत्नरूपांचमंजरीम् । विष्णुप्रिये नमस्तुभ्यं तुलसिदेवि नमोस्तुते । । आवाहनम् आसनम् पाद्यम् अर्घ्यम् आचमनीयम् स्नानम् वस्त्रम् यज्ञोपवीतम् गन्धाक्षत पुष्पादिभिः सम्पूज्य । । तुलसी चढ़ाना-तुलसी हेम रूपां च रत्न रूपां च मञ्जरीम् । भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरि प्रियाम् ।

अंगपूजा-ॐ महीधराय नमः पादौ पूजयामि । ॐ केशवाय नमः कटिं पू० । नारायणाय० उदरं पू० । वामनाय० कण्ठं पू० । श्री धराय० बाहू पू० । गोविन्दाय० मुखं पू० । सहस्राक्षाय० नेत्रे पू० । सर्वेश्वराय० ललाटं पू० । विष्णवे० शिरःपू० । ॐ दामोदराय नमः सर्वांगमूजयामि । । धूपं दीपं नैवेद्यं फलं ताम्बूलं दक्षिणा द्रव्यं दत्त्वा श्री राधा दामोदराभ्यां नमः जपेत् । । नीराजनम् कृत्वाअर्घ्यं दानम्-व्रत्तिनः कार्तिके मासे स्नातस्य विधिवन्मम । गृहाणाध्वं मयादत्तं राधयासहितोहरे । प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयेत् । ।

दामोदर नमस्तेस्तु नमस्ते भक्तवत्सल । नमस्ते कमलाकान्त वासुदेव नमोस्तुते । देवैस्त्वंनिर्मिता पूर्वमर्चितासि मुनीश्वरैः । नमस्ते तुलसिदेवि पापं हर हरिप्रिये । संकल्प सहित दक्षिणादानम् । दीपदान

मंत्र-दीपोज्ञानप्रदो नित्यं देवातानां प्रियः सदा । दानेनास्य भवेत्सौख्यं शान्तिर्मे वाञ्छितं फलम् । सज्योतिर्गुणपात्रं च दीपं धृतसमन्वितम् । सुखदं चास्य दानेन शान्तिरस्तु सदामम ॥ दीपः पापहरः प्रोक्तः अंधकार विनाशनः । दीपेन लभ्यते तेजस्तस्माद्दीपं ददामि ते ॥

अथ महालक्ष्मी पूजा विधिः

गणपति आदि पंचदेव पुष्पाञ्जलिः आचम्य अर्घं संस्थाप्य सूर्यार्घदान भूतोत्सादनादि कृत्वा संकल्पः-ॐ विष्णुः अद्येह० मम सकुटुम्ब सपरिवारस्य सर्वारिष्ट निवृत्तिपूर्वकं अलक्ष्मी परिहार पूर्वकं सर्वाभीष्ट प्राप्त्यर्थं आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धयर्थं व्यापारे लाभार्थं वा धनधान्य समृद्धिं प्राप्तिं कामनयाश्रुति स्मृतिपुराणोक्त फलावाप्तये अस्यां मूर्तौ प्रतिमायां वा संगायाः सपरिवारायाः श्रीमहालक्ष्म्याः लेखन्यादि कुबेरादीनां प्रतिष्ठावाहनपूर्वकं पूजनं करिष्ये तथा श्रीसूक्तस्य अमुकावृत्तिं करिष्ये (ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये) पीठपूजा-ॐ मण्डूकाय नमः । ॐ कालाग्निरुद्राय नमः । ॐ आधारशक्तये नमः । ॐ कूर्माय नमः । ॐ धरायै नमः । ॐ सुधासिन्धवे नमः । ॐ श्वेतद्वीपाय नमः । ॐ मणिहर्म्याय नमः ॐ हेमपीठाय० ॐ सुराधिपाय नमः । आग्नेयपादे-ॐ धर्माय० । नैऋत्यपादे-ॐ ज्ञानाय नमः । वायव्यपादे-ॐ वैराग्याय नमः । ईशानपादे-ॐ ऐश्वर्याय नमः । पूर्व-ॐ अधर्माय नमः । दक्षिणे-अज्ञानाय नमः । पश्चिमे-अवैराग्याय नमः । उत्तरे-ॐ अनैश्वर्याय नमः ।

मध्ये-ॐ अनन्ताय नमः । ॐ तत्त्वपद्माय० ॐ आनन्दमयकन्दाय० । ॐ सविन्नालाय० ॐ विकारमयकेशरेभ्यो० ॐ प्रकृत्यात्मक पत्रेभ्यो० ॐ पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायै० ॐ सं० सूर्यमण्डलाय० ॐ चं चन्द्रमण्डलाय० ॐ

अङ्गिनिमण्डलाय ॐ सं सत्वाय ॐ रं रजसे ॐ तं तमसे ॐ आं ॐ आत्मने ॐ अं अन्तरात्मने ॐ पं परमात्मने ॐ
 ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने ॐ मां मायातत्त्वाय ॐ कं कालतत्त्वाय ॐ विं विद्यातत्त्वाय ॐ पं परतत्त्वाय ॐ विभूतये ॐ
 ॐ उन्नतये ॐ कान्तये ॐ सृष्ट्यै ॐ उत्कृष्ट्यै ॐ ऋद्धयै ॐ सन्तत्यै ॐ मध्ये-ॐ सर्वशक्ति कमलासनाय
 नमः । प्रतिष्ठा-ॐ एतन्ते देव सवितर्यज्ञ ८ ० समिमन्दधातु विश्वेदेवा सइहमादन्तोम्प्रतिष्ठ ॐ भूर्भुवः स्वः अस्यां
 प्रतिमायां (मूर्त्तौ) महालक्ष्मि इहागच्छ इहतिष्ठ तथा इन्द्रकुबेरादयोदेवा इहागच्छन्तु इहतिष्ठन्तु । आवरण देवताः
 पूजयेत् ॐ उमायै नमः । ॐ श्रियै नमः । ॐ सरस्वत्यै नमः । ॐ दुर्गायै नमः । ॐ धारिण्यै नमः । ॐ गायत्र्यै नमः ।
 ॐ देव्यै नमः । ॐ उषायै नमः । ॐ पद्महस्तायै नमः । ॐ सुभूषणायै नमः । ॐ दक्षिणपादप्रक्षालनोद्यतायै नमः ।
 ॐ सूर्यसुतायै ॐ धृतातपत्रायै ॐ वरुणाय ॐ शंखनिधये ॐ पद्मनिधये ॐ आदित्यादिनवग्रहेभ्यो नमः ।
 ॐ मेषादिद्वादशराशिभ्यो नमः । ॐ ऐरावताय नमः । ॐ पुण्डरीकाक्षाय ॐ वामनाय ॐ कुमुदाय ॐ अञ्जनाय ॐ
 ॐ पुष्पदन्ताय ॐ सार्वभौमाय ॐ सुप्रतीकाय ॐ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो नमः । ॐ वज्राय नमः । ॐ शक्तये ॐ
 ॐ दण्डाय ॐ खड्गाय ॐ पाशाय ॐ अंकुशाय ॐ गदायै ॐ त्रिशूलाय ॐ ततोऽध्यानम्-या सा पद्मासनस्था
 विपुल कटि तटी पद्मपत्रायताक्षी गम्भीरावर्तनाभिः स्तनभर नमिता शुभ्रस्त्रोत्तरीया । लक्ष्मीदिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणि
 गणखचितैः स्नापिता स्वर्णकुम्भैर्नित्यं सा पद्महस्तावसतु मम गृहे सर्व मांगल्य युक्ता । ॐ पद्मासनायै महालक्ष्म्यै
 नमः ध्यानं समर्पयामि । आवाहनम्-महालक्ष्मि समागच्छ पद्मनाभगृहादिह । पूजां गृहाण श्रीरूपेत्वदर्थं देवि सम्भृता ।।
 आसनम्-आलयं ते निगदितं कमलं कमलालये । अमले कमले ह्यस्मिन् स्थितिं मत्कृपया कुरु । पाद्यम्-गंगादि
 सलिलाधारं तीर्थं तोयाभिपूरितम् । दूरयात्राश्रमहरं पाद्यं मे प्रतिगृह्यताम् ।

अर्घ्यम्-न मे जन्मनि दौर्भाग्यं न मे जन्म दरिद्रता । महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं अर्घ्यं मे प्रतिगृह्यताम् ॥
 स्नानम्-(श्रीसूक्तेन) पयोदधिघृतं चैव मधुशर्करयान्वितम् । पञ्चामृतं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ श्रीश्वते
 लक्ष्मीश्चपत्न्या ब्वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मइषाण सर्वलोकम्मइषाण ॥
 स्नानांगमाचमनीयम् दद्यात् । वस्त्रं-तन्तु सन्तान संसक्तं कलाकौशेय कल्पितम् । सर्वांगाभरणं दिव्यं वसनं
 परिधीयताम् । वस्त्रांगमाचमनीयम् ।

गन्धम्-मलयाचल सम्पन्नं नानापन्नगमूषितम् । शीतलं बहुलामोदं चन्दनं प्रतिगृह्यताम्-
 अक्षताः-अक्षन्मीमदन्तद्वयप्रिया अधूषत अस्तोषत स्वभानवो विप्रान्निविष्टयामती योजन्विन्द्रतेहरिः । पुष्पाणि-माल्यादीनि
 सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो । मयानीतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥ पुष्पमाला-पुष्पैर्नानाविधैर्वैद्यैर्गुम्फिता
 तव हेतवे । पुष्पमालां प्रयच्छामि महालक्ष्मि प्रगृह्यताम् ॥ दूर्वा-विष्णवादि सर्व देवानां प्रियपत्रां सुशोभनीम् । क्षीरसागर
 संभूतां दूर्वां स्वीकुरु सर्वदा । अथ अंगपूजा-ॐ चपलायै नमः पादौ पूजयामि । ॐ चञ्चलायै नमः जानुनी पू० ।
 ॐ कमलायै० कटिं पू० । ॐ कात्यायन्यै० नाभिं पू० । ॐ जगन्मात्रे० जठरं पू० । ॐ विश्ववल्गुभायै० वक्षस्थल
 पू० । ॐ कमलवासिन्यै० भुजौ पू० । पद्मकमलायै० मुखं पू० । ॐ कमलपत्राक्ष्यै० नेत्रत्रयं पू० । ॐ श्रियै० शिरः
 पू० । ॐ महालक्ष्म्यै नमः सर्वांगम् पू० । (पूर्वादि क्रम से आठ दिशाओं में अष्ट सिद्धियों का पूजन) ॐ अणिम्ने
 नमः । ॐ महिम्ने नमः । ॐ गरिम्ने नमः । ॐ लघिम्ने नमः । ॐ प्राप्त्यै नमः । ॐ प्राकाम्यै नमः ॐ ईषितायै नमः ।
 ॐ वाशितायै नमः । (पुनः पूर्वादि क्रम से अष्टलक्ष्मी पूजन) ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः । ॐ सौभाग्य
 लक्ष्म्यै नमः । ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः । ॐ काम लक्ष्म्यै नमः । ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः । ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः । ॐ योगलक्ष्म्यै

नमः । ततो धूपम्-वनस्पति रसोदभूतो गन्धाढ्यः सुमनोहरः । आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् । दीप
 दर्शयामि । नैवेद्यम् (खीले) । देवताह्वयं सुस्वादुः भूधराधर धान्यजम् । षड्रसैरन्वितं दिव्यं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।

नमः । ततो धूपम्-वनस्पति रसोदभूतो गन्धाढ्यः सुमनोहरः । आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् । दीपं दर्शयामि । नैवेद्यम् (खीले) । देवताह्वयं सुस्वादुः भूधराधर धान्यजम् । षड्रसैरन्वितं दिव्यं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् । नैवेद्यांगमाचमनीयम् क्षणं ध्यात्वा जपेत्-ॐ ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै कमल धारिण्यै सिंहवाहिन्यै स्वाहा ।

अथवा-ॐ श्री ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै स्वाहा । ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात् सुरेश्वरि ।। (तब स्याही दवात कलम बहीखाता आदि पूजै-) ॐ महाकाल्यै नमः सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।। स्वस्तिक बनाकर बहीखाता लेखनी पूजन-वीणापुस्तक धारिण्यै नमः इति गन्धादिभिः पूजयेत् । पूंगीफलताम्बूलम्-पूंगीफलं महद्विषं नागवल्लीदलान्वितम् । एलादिचूर्णं संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् । फलम्-इदं फलं मया देवि स्थापितं पुरतस्तव । तेन में सफला वाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि । भूषणार्थद्रव्यम्-ॐ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ।। नीराजनम्-अन्तस्तेजो बहिस्तेज एकीकृत्यामित प्रभम् । आरार्तिकमिदं देवि गृहाण मदनुग्रहात् ।। (दोनो हाथों से विशेषार्घ्य फल गन्धाक्षत कुशादि द्रव्य सहित घुटने टेककर तीन बार) ॐ न मे जन्मनि दौर्भाग्यं न मे जन्म दरिद्रता । महालक्ष्मि नमस्तुभ्यमर्घ्यं मे प्रतिगृह्यताम् । प्रार्थना-विष्णोर्वक्षसि पदमे च शंखे चक्रे तथांबरे । लक्ष्मीर्नित्या यथाऽसि त्वं मयि नित्या तथा भव ।। अथ सुखरात्र्यां विशेषः । विश्व रूपस्य भार्याऽसिपदमे पदमालये शुभे । महालक्ष्मिनमस्तुभ्यं सुखरात्रिं कुरुष्व मे ।। वर्षाकाले महाघोरे यन्मया दुष्कृतं कृतम् । सुखरात्रिप्रभावेण तन्मे लक्ष्मीर्व्यपोहतु ।। आख्याता भूतले देवि सुखरात्रि नमोऽस्तुते । नमस्ते सर्व देवानां वरदात्रि हरिप्रिये । या गतिस्त्वप्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात् ।। अथ इन्द्र कुबेर पूजनम्-इन्द्रध्यानम्-चतुर्दन्तगजारूढो बज्रपाणिः पुरन्दरः । शची पतिश्च ध्यातव्यो नानाभरण भूषितः ।। ॐ इन्द्राय नमः ।।

कुबेर ध्यानम्—विमानवरमारुढं यक्षैश्च परिवारितम् । रत्नानां भास्वरूपाणां निधिपं दीप्ततेजसम् ॥ ॐ क्लीं
 कुबेराय नमः । गन्धाक्षत आदिभिः इन्द्रकुबेरौ सम्पूज्य प्रार्थयेत्—ॐ विचित्रैरावतस्थाय भास्वत्कुलिशपाणये ।
 इन्द्राणीपतयेतुभ्यं देवराजाय वै नमः । कुबेरप्रार्थना ॐ धनदाय नमस्तुभ्यं निधि पदमाधिपायच । त्वत्प्रसादात् धनं
 धान्यं सम्पदः सन्तु मे सदा ॥ ब्राह्मणं सम्पूज्य दक्षिणा द्रव्यं दद्यात् । यथाशक्ति श्रीसूक्तपाठं, लक्ष्मी सूक्त पाठं
 महालक्ष्मी अष्टक पाठं च कारयेत् । ॐ हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् । चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो
 ममावह ॥ १ ॥ ताम्ममावह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं विन्देऽयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ २ ॥
 अश्वपूर्णां रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम् । श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मादेवीर्जुषताम् ॥ ३ ॥ कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारा
 माद्राज्वलन्तीं तृप्तातर्पयन्तीम् । पदमे स्थितां पदमवर्णां, तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ४ ॥ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं
 श्रियं लोके देव जुष्टामुदाराम् । तांपदमनेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणोमि ॥ ५ ॥ आदित्यवर्णे
 तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ विल्वः । तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ ६ ॥
 उपैतुमांदेवसखः कीर्तिश्चमणिना सह । प्रादुर्भूतोऽस्मिराष्टेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥ ७ ॥ क्षुत्पिपासामलाज्येष्टामलक्ष्मीं
 नाशयाम्यहम् । अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥ ८ ॥ गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं
 सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ९ ॥ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि । पशूनांरूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां
 यशः ॥ १० ॥ कर्दमेनप्रजा भूतामयि सम्भव कर्दम् । श्रियं वासय मे कुलेमातरंपदमालिनीम् ॥ ११ ॥ आपः सृजन्तु स्निग्ध
 तानिचिवलीत वस मे गृहे । नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ १२ ॥ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिगलांपदमालिनीम् ।
 चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥ १३ ॥ आर्द्रां यस्कुरिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् । सूर्यां हिरण्यमयीं

लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥ १४ ॥ तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो

लक्ष्मीं जातवेदो मआवह ॥१४॥ तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् । सूक्तं पंचदशर्चज्व श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥

लक्ष्मी सूक्त—पदमानने पदमऊरु पदमाक्षि पदमसम्भवे । तन्मे भजसि पदमाक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥१॥ अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने । धनं मे जुषतां देवि सर्वकामाश्च देहि मे ॥२॥ पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वादि गवे रथम् । प्रजानां भवतीमाता आयुष्मन्तं करोतु मे ॥३॥ धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः । धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणं धनमश्विना ॥४॥ वैनतेय सोमं पिब सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥५॥ न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभामतिः । भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां सूक्तं जापिनाम् ॥६॥ सरसिजनिनये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे । भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरी प्रसीद मह्यम् ॥७॥ विष्णु पत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् । विष्णोः प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युत वल्लभाम् ॥८॥ महालक्ष्मीं च विदमहे विष्णुपत्नीं च धीमहि । तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥९॥ पदमानने पदिमनि पदमपत्रे पदमप्रिये पदमदलायताक्षि । विश्वप्रिये विश्वमनोनुकूले त्वत्पादपदम् हृदि सन्निधत्स्व ॥१०॥ आनन्दः कर्दमः श्रीदशिकवलीत इति विश्रुताः । ऋषयः श्रियपुत्राश्च श्रीदेवी देवता श्रियः ॥११॥ श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते । धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥१२॥ ऋणरोगादि दारिद्र्य पापक्षुदपमृत्यवः । भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥१३॥ ॐ नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते । शंख चक्र गदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥१४॥ ॐ नमस्ते गरुडारूढे कोलासुर भयकरि । सर्व पाप हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥१५॥ ॐ सर्वज्ञे

सर्व वरदे सर्व दुष्ट भयंकरि । सर्व दुख हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥३॥ ॐ सिद्धि बुद्धि प्रदे देवि भुक्ति मुक्ति प्रदायिनी । मन्त्र मूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥४॥ ॐ आद्यन्त रहिते देवि आदि शक्ति महेश्वरि । योगजे योग संभूते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥५॥ ॐ स्थूल सूक्ष्म महारौद्रे महाशक्ति महोदरे । महापाप हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥६॥ पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्म स्वरूपिणी । परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥७॥ ॐ श्वेताम्बर धरे देवि नानालंकार भूषिते । जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥८॥ ततो दक्षिणा संकल्पं कृत्वा ब्राह्मणं पूजयेत् । प्रार्थना—ॐ आपद्धनध्वान्तसहस्रभानवः समीहितार्थार्पणकामधेनवः । अपार संसार समुद्रसेतवः पुनन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः ॥ (तब दीप माला जगावे और खीले बिखेरकर रात्रि में जागरण करे।)

अथ गोवर्द्धन पूजा—अद्येह० श्रीकृष्णदेव प्रीतये गोपालगोवर्द्धनपूजनं करिष्ये । ॐ भूर्भुवः स्वः गोपाल गोवर्द्धन इहागच्छ इहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव ॥ पूजामंत्र—गोवर्द्धन धराधार गोकुल त्राण कारक । विष्णु बाहुकृतोच्छाय गवां कोटि प्रदोभव ॥ आवाहनादि नीराजनान्तं पूजयेत् ॥

यमदीपदानं सायंकाले यथा संख्यकान् दीपान् प्रज्वाल्य श्रीयमप्रीतये दीपदानं करिष्ये इति संकल्पं कृत्वा । ध्यानम्—ध्यायेन्नित्यं यमं देवं पितृनाथं महाबलम् । सूर्यपुत्रं महाकायं महिषोपरि संस्थितम् ॥ दीपदान मंत्र—दीपो ज्ञानप्रदो नित्यं दीपस्तिमिरनाशनः । तस्माद् ददामिदीपं वै नमः सूर्यात्मजन्मने ॥ आवाहनादि नीराजनान्तं सम्पूज्य प्रार्थयेत्—अग्निदग्धाश्च ये जीवा येन दग्धाकुले मम । उल्मुकज्योतिषा दग्धास्ते यान्तु परमां गतिम् ॥ यमलोकं परित्यज्य आगता ये महालये । उज्ज्वलज्योतिषां वर्त्म प्रपश्यन्तु व्रजन्तु मे ॥

श्री तुलसी पूजनम्

दीपं प्रज्वाल्य, आचम्य, सर्वदेवपुष्पाञ्जलिः अर्घस्थापनं, सूर्यार्घदानं, भूतोत्सादनम् पुनरर्घं संस्थाप्य संकल्पः (प्राग्मुखीभूत्वा) ॐ विष्णुः ।।३।। मम समस्त पातकशमनपूर्वकं भर्त्रा सह अखण्डित सुख सौभाग्य सन्तत्यायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धि-अभीष्ट सिद्धिद्वारा (अनादिमध्यनिधनाय) त्रैलोक्य प्रतिपालिनीं वृक्षस्वरूपिणीं पार्वतीबीजसम्भूतां वृन्दाभस्मनिःस्थितां त्रैलोक्यपावनीं कीनाशमार्गान्धकारध्वंसिनीं श्री विष्णु वल्लभां यथा लब्धोपचारैर्यथाज्ञानेन च पूजनं करिष्ये ।। पीठपूजा-ॐ पद्मायै नमः । ॐ पुण्यशीलायै नमः । ॐ सुशीलायै नमः । ॐ जयायै नमः । ॐ विजयायै नमः । ॐ सर्वाधनाशिन्यै नमः । ॐ त्रैलोक्यपाविन्यै नमः । ॐ मोक्षदायै नमः । ॐ रत्न वेदिकायै नमः । ॐ वैराग्यायै नमः । ॐ ऐश्वर्यायै नमः । ॐ प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः । ॐ विकृतिमयकेसरेभ्यो नमः । ॐ पंचाशद्वर्णबीजाढ्यकर्णिकायै तुलस्यै नमः ।

अथ ध्यानम्-ध्यायेच्च तुलसीं देवीं श्यामां कमललोचनाम् । प्रसन्नां पद्म कल्हारवराभयचतुर्भुजाम् ।। किरीट-हार केयूर कुण्डलादि-विभूषिताम् । धवलांशुक संयुक्तां पद्मासन निषेविताम् ।। श्री तुलसी देव्यै नमः ६ यानं समर्पयामि ।। आवाहनम्-देवि त्रैलोक्य जननि सर्वलोकैकपावनि । आगच्छ वरदे मातः प्रसीद हरिवल्लभे । श्री तुलसीदेव्यै नमः आवाहनार्थेऽक्षतान् समर्पयामि ।। आसनम्-सर्वदेवमये देवि सर्वदा विष्णु वल्लभे । देवि स्वर्ण-मयं दिव्यं गृहाणासनमव्यये । पाद्यम्-(दो आचमन जल पेर धोने के निमित्त) सर्वतीर्थमयाकारे सर्वदेव नमस्कृते । पाद्यं दत्तं मया देवि तुलसीदं प्रसीद मे ।। अर्घ्यम्-गन्धपुष्पसमायुक्तं सर्वेषां प्रीतिदायकम् । अर्घ्यं गृहाण

देवि त्वं दैत्यान्तकरणप्रिये ।। आचमनीयम्—(कर्पूरमिश्रित) कर्पूरवासितं तोयं सुवर्ण कलशे स्थितम् ।। दत्तमाचमनीयं च गृहाण हरिवल्लभे । स्नानम् पंचामृतेन—पयोदधि घृतं चैव मधुशर्करं यान्वितम् । पंचामृतमिदं देवि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।। शुद्धोदकस्नानम् गंगादि जलेन—गंगा सरस्वती रेजा पयोष्णीनर्मदाजलैः स्नापितासि मया देवि प्रीत्यातत्प्रतिगृह्यताम् ।। स्नानांगमाचनीयम् श्रीतुलसीदेव्यै नमः । अंगप्रोक्षणार्थं पुष्पम्—श्रीतुलसीदेव्यै नमः । वस्त्रम्—उपवस्त्रम्—क्षीरो दमथनोद भूते चन्द्रलक्ष्मी सहोदरे । गृह्यतां णरिधानार्थमिदं रक्तांबरं शुभे । कंचुकीमुपवस्त्रं च नानावर्णसमन्वितम् । गृहाण त्वं मया दत्तं तुलसि भयहारिणि ।। वस्त्रांगमाचमनीयम् ।। श्रीतुलसीदेव्यै नमः । सूत्रेण वेष्टनम् कृत्वा केसर कुंकुम युक्तं गन्धविलेपनम्—केशरादि समायुक्तं चन्दनादि समन्वितम् ।। कस्तूरिका समायुक्तं कुंकुमं प्रतिगृह्यताम् ।।

अक्षताः—अक्षतांश्च नहादेवि तुलसि सौख्यदायिके । अर्पयामि सदा भक्त्या सुखसन्ततिं लब्धये ।। शृंगारसामग्री—हार कंकण केयूर मेखला कुण्डलादिभिः । रत्नाढ्यं कुण्डलोपेतं गृह्यतां परमेश्वरि ।। सिन्दूरकाजल—हरिद्रा कुंकुमचैव सिन्दूरं कज्जलान्वितम् । मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ।। पुष्पाणि—या दृष्टा निखिलाघसङ्घशमनी, स्पष्टावपुः पाविनी, रोगाणाम् भिवन्दिता निरसनी सिक्तान्तकत्रासिनी । प्रत्यासत्तिं विधायिनी भगवतः कृष्णस्य संरोपितान्यस्ता त्वच्चरणेविमुक्त फलदातस्यैतुलस्यै नमः । धूपम् दीपम् । नैवेद्यम्—शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च । आहारो भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।। नैवेद्यांगमाचमनीयम् जपम्—श्री तुलसीदेव्यै नमः । गुह्याति गुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपमसिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि ।। फलम् ताम्बूलम् दक्षिणाद्रव्यम् ।। कर्पूरादिभिः नीराजनम्—नीराजयामि सततं हरिवल्लभे त्वां कर्पूरवर्तिभिरलं सुखदायकत्वात् । पादौ

भजाम्यविरतं तव देवि माये वंशाय सौख्यमपि देहि बलं च पूर्णम् ।। अर्घ्यदानम् । प्रार्थना पुष्पाञ्जलिः—सौभाग्यं

भजाम्यविरतं तव देवि माये वंशाय सौख्यमपि देहि बलं च पूर्णम् ।। अर्घ्यदानम् । प्रार्थना पुष्पफजलिः—सौभाग्यं सन्ततिं देवि धनं धान्यं च मे सदा । आरोग्यं शोकशमनं कुरु मे माधव प्रिये । देवैस्त्वं निर्मितापूर्वमर्चितासिमुनीश्वरैः ।। अतो मां सर्वदा भक्त्या कृपादृष्ट्या विलोकय । पतेरा युश्च भाग्यं च सदा देहि हरिप्रिये ।। पूतना भय संत्रासाद रक्षितश्च यथा हरिः । तथा संसार संत्रासाद् रक्ष मे वंशमुत्तमम् । तुलसि श्रीसखि शुभे पापहारिण पुण्यदे । नमस्ते नारदनुते नारायण मनः प्रिये ।। प्रदक्षिणा—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च । तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणापदेपदे ।।

प्रणाम—विष्णु प्रियकरे देवि तुलसि सुखदायिके । प्रणामन्ते करोम्यद्य पतेरायुष्यवर्द्धके ।। अथ तुलसी मंगलम्—श्रीमत्कार्तिक शुक्लगा तिथि वराचैकादशी द्वादशी तस्यां गोरजलग्नके वधुरौ साक्षाज्जगन्नायकौ । श्रीकृष्णस्तुलसी विवाहमकरोत् तस्मिन् विवाहोत्सवे तौ देवौ भवतां सदाशुभ करौ लक्ष्मीकरौ मंगलम् ।। यस्यस्मृत्यां ब्राह्मणं अध्यर्थादिभिः सम्पूज्य दक्षिणां दद्यात् ।

॥ मार्ग शीर्ष स्नानम् ।।

स्नानसंकल्पः—अमुकोऽहं सकलपापक्षयपूर्वकं श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलावाप्तये श्रीविष्णु प्रीत्यर्थं अद्यारभ्य मार्गशीर्ष पूर्णिमा पर्यन्तं एकभुक्त हविष्याशनेन प्रातर्मध्याह्नस्नानेन त्रिकाले केशव पूजनपूर्वकं श्री केशवप्रीत्यर्थं च मार्गशीर्षस्नानं करिष्ये । पूजासंकल्पः—सकलपापक्षयपूर्वकं कृत संकल्प सिद्ध्ये मार्गशीर्ष स्नानांगत्वेन सुवर्ण प्रतिमायां श्री केशवस्य पूजनं करिष्ये ।। प्रतिष्ठा० ॐ भूर्भुवः स्वः श्री केशव इहागच्छ इह तिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो

भव । ध्यानम्—शंखचक्रगदापद्मैर्दक्षिणोर्ध्वकरक्रमात् । ध्यातव्यः केशवो देवश्चिन्तितार्थफलप्रदः । आवाहनम् ।।
 आसनम् ।। पाद्यम् ।। अर्घ्यम् ॐ नमः कमलनाभाय नमस्ते जल शायिने । नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोस्तुते ।।
 ततो नीराजनान्तं सम्पूज्य अर्घ्यदानं कुर्यात्—ॐ नमः सहस्र शीर्षाय सहस्राक्षायते नमः । सहस्रनाम्ने देवेश गृहाणार्घ्यं
 नमोस्तुते ।। ततो ब्राह्मणाय सुवर्ण प्रतिमासहितं दक्षिणादानादिकं कुर्यात् ।।

। पौषमासे सूर्यपूजा ।।

(प्रथम कांसे के पात्र में लाल अष्ट कमल बनाकर सुवर्ण प्रतिमा रखे) संकल्पः—मम समस्त रोग निरसनद्वारा
 आयुष्यादिसकलकामनापूर्तिसिद्धये श्री भास्कर देव प्रीत्यर्थं यन्त्रे प्रमियायां वा श्रीभास्कर देवस्य पूजनं करिष्ये ।।
 प्रतिष्ठा० ॐ भूर्भुवः स्वः भगवन् सूर्य सांगसपरिवार इहागच्छ० । ध्यानम्—जपा कुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
 तमोरि सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ।। आवाहनम् ।। पाद्यम् ।। अर्घ्यम्—भो—भो सूर्य महद्भूत
 ब्रह्मविष्णुशिवात्मक । अर्घ्यं भक्त्या मयादत्तं गृहाण परमेश्वर ।। आचमनम् ।। स्नानपंचामृतेन । गंगाजलेन ।।
 वस्त्रम् ।। यज्ञापवीतम् । गन्धाक्षत पुष्पैः सम्पूज्य—

आवरणपूजा—ॐ ब्रह्मणे नमः । ॐ जयन्ताय० । इन्द्राय० । अग्नये० । यमाय० । निऋतये० । वरुणाय० ।
 वायवे० । सोमाय० । ईशानाय० । अप्सरोगणेभ्यः० । गन्धर्वाप्सरोभ्यः० । गुह्यकेभ्यः० । विद्याधरेभ्यः नमः ।।
 अंगपूजा—ॐ मित्राय नमः पादौ पूजयामि । ॐ रवये नमः जंघे पूजयामि । सूर्याय० जानुनी पू० । आदित्याय० जठरं
 पू० । सवित्रे० हृदयं पू० । अकार्य० स्तनौ पू० । भास्कराय० कंठं पू० । अर्यमणे० स्कन्धौ पू० । प्रभाकराय० हस्तौ

प० । अहस्कराय० मुखं पू० । ब्रह्मे० नासिकां पू० । जगदेकचक्षुषे० नेत्रे पू० । सवित्रे० कर्णौ पू० । त्रिगुणात्मधारिणे०

पू० । अहस्कराय० मुखं पू० । ब्रध्ने० नासिकां पू० । जगदेकचक्षुषे० नेत्रे पू० । सवित्रे० कर्णौ पू० । त्रिगुणात्मधारिणे० ललाटं पू० । विरञ्चिनारायणशंकरात्मने० शिरः पू० । ॐ तिमिरनाशिने नमः सर्वाङ्ग पूजयामि । धूपम् । दीपम् । नैवेद्यम् । ताम्बूलम् । सफलदक्षिणा द्रव्यम् । नीराजनम् । अर्घ्यम्—नमः सहस्रकिरण सर्वव्याधिविनाशन । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं संज्ञया सहितो रवे । । प्रदक्षिणा प्रार्थना—ॐ नमः सवित्रे जगदेकचक्षुषे जगत्प्रसूति स्थिति नाशहेतवे । त्रयीमयाय त्रिगुणात्म धारिणे विरञ्चि नारायण शंकरात्मने । । भानो भास्कर मार्त्तण्ड चण्डरश्मे दिवाकर । आयुरारोग्य विजयं विद्यां देहि नमोस्तुते । नमः सर्वहितार्थाय जगदाधारहेतवे । । साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः । ।

माघस्नानविधिः

गणपतिं सम्पूज्य ॐ विष्णुः ३ अमुकोऽहं कृतसंकल्प सिद्ध्यर्थं माघस्नानांगत्वेन सुवर्ण—प्रतिमायां श्रीवेणीमाधवयोः यथामिलितोपचारैः पूजनं करिष्ये । । प्रतिष्ठा—ॐ भूर्भुवः स्वः वेणी माधवौ इहागच्छतम् इहतिष्ठतम् सुप्रतिष्ठितौ वरदौ भवतम् । । ध्यानम् । आवाहनम् । आसनम् । पाद्यम् । अर्घ्यम्—माघे मासि महादेव व्रतस्थोऽहं जगत्पते । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं माघवाद्य प्रसीद मे । नमः लक्ष्मिपते विष्णो सहस्राक्षाय ते नमः । सहस्रनाम्ने देवेश गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते । नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने । । नमस्तेऽस्तु हृषीकेश गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते । स्नानं । स्नानाङ्गमाचमनीयम् । वस्त्रम् । यज्ञोपवीतम् । गन्धम् । अक्षताः पुष्पाणि । धूपम् । दीपम् । नैवेद्यम् । ताम्बूलम् । फलम् । भूषणार्थं द्रव्यम् । क्षणं ध्यात्वा जपम् । ॐ श्रीवेणीमाधवाभ्यान्त्रमः । । नीराजनम् । पूर्वमंत्रेण अर्घ्यदानम् । प्रार्थना—दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषाणाय च । प्रातः स्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम् । । मकरस्थे रवौ

माघे गोविन्दाच्युतमाधव । स्नानेनानेन मे देव यथोक्तफलदो भव ॥ ॐ विष्णुः ३ अद्यहेत्यादि० अमुकोऽहं मकरसक्रान्तिम्—आरभ्यापरसंक्रान्तिपर्यन्तं कृतस्य माघस्नानांगमाधवपूजनस्य सांगफलप्राप्त्यर्थं इमां सुपूजितां सौवर्णीं माधवप्रतिमां ब्राह्मणाय दास्ये ॐ तत्सत् नमम । तेन श्रीवेणीमाधवौ प्रीयेताम् । ब्राह्मणपूजनम् । ततो वेणीमाधवप्रतिमां ब्राह्मणाय सम्प्रददे । तिलमोदकदानम्—तिलाः पापहराः पुण्याः गुडः सर्वरसोत्तमः । तिलमोदकदानेन माधवः प्रीयतां मम । दीपदानमंत्रः—दीपो ज्ञानप्रदो नित्यं देवतानां प्रियः सदा । दानेनास्य भवेत्सौख्यं शान्तिर्मे वाञ्छितं फलम् ॥ सज्योतिर्गुणपात्रं च दीपं धृतसमन्वितम् । सुखदं चास्य दानेन शान्तिरस्तु सदा मम ॥ दीपः पापहरः प्रोक्तः अंधकार विनाशनः । दीपेन लभ्यते तेजस्तस्माद्दीपं ददामि ते ॥ इति माघस्नानादिविधिः ॥

आमलकी एकादशी (धात्रीपूजन)

अद्येह० अद्य आमलकी—एकादश्यां सकलपापक्षयं द्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीतये धात्रीमूले (धात्री छायायां) श्री विष्णुपूजां सुवर्णप्रतिमायां (जामदग्न्यरामस्यपूजां) च करिष्ये प्रतिष्ठा ॐ भूर्भुवः स्वः जामदग्न्यरामइहागच्छ इहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव ॥ नमः सहस्रशीर्षाय सहस्राक्षायते नमः । सहस्रनाम्ने देवेश प्रसीद त्वं ममाच्युत ॥ आवाहनम् आसनम् पाद्यम् अर्घ्यदानमंत्रः—नमस्ते देव देवेश जामदग्न्य नमोस्तुते ॥ गृहाणार्घ्यमिमं देवऽमलक्यासहितो मम ॥ धात्रि धातृ समुद्भूते सर्वपातक नाशिनि । आमलक्यै नमस्तुभ्यं गृहाणार्घ्यमिमं मम ॥ स्नानम् आचमनीयम् वस्त्रम् यज्ञोपवीतम् गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्प्य । अंगपूजा—ॐ विश्वरूपायै नमः पादौ पूजयामि । सुरूपायै नमः कटिं पू० ।

अब्धिसम्भवायै नमः हृदयं पू० । लोकमात्रे नमः मुखं पू० । धात्र्यै नमः शिरः पू० । श्रीविष्णो अंगपूजा—ॐ दामोदराय नमः पादौ पू० । ॐ केशवाय नमः कटिं पू० । ॐ नारायणाय नमः उदरं पू० । ॐ वासनाय नमः कर्णं पू० । ॐ

अब्धिसम्भवार्यै नमः हृदयं पू० । लोकमात्रे नमः मुखं पू० । धात्र्यै नमः शिरः पू० । श्रीविष्णो अंगपूजा—ॐ दामोदराय नमः पादौ पू० । ॐ केशवाय नमः कटिं पू० । ॐ नारायणाय नमः उदरं पू० । ॐ वामनाय नमः कण्ठं पू० । ॐ श्रीधराय नमः बाहुद्वयं पू० । ॐ सर्वेश्वराय नमः ललाटं पू० । ॐ विष्णवे नमः शिरः पू० । ॐ जामदग्न्यरामाय नमः सर्वांगं पूजयामि । धूपं दीपं नैवेद्याम् जपम्—ॐ विष्णवे नमः ॐ धात्र्यै नमः ताम्बूलं पूगी फलम् फलानि द्रव्यम् दत्त्वा नीराजनम् । तब ८ दीये जलाकर दध्यक्षत पुंज और ८ बार धागे से लपेट कर प्रदक्षिणा करे । तब १६ बार नमस्कार करे—ॐ शान्त्यै नमः । ॐ कान्त्यै नमः । ॐ मेधायै नमः । प्रकृत्यै० विष्णुपत्न्यै० महालक्ष्म्यै० रमायै० इन्दिरायै० कमलायै० सावित्र्यै० कमनीयायै० कल्याण्यै० अत्युक्तायै० जगद्धात्र्यै० गायत्र्यै० धृत्यै नमः । १६ । । विशेषार्घ्यम्—जामदग्न्य नमस्तेस्तु रेणुकानन्दवर्द्धन । आमलकीकृतच्छाय भुक्ति मुक्ति वरप्रद । धात्रि धातृ समुदभूते सर्वपातक नाशिनि । आमलक्यै नमस्तुभ्यं गृहाणार्घ्यादकमम् । । प्रार्थना—धात्रि देवि नमस्तुभ्यं सर्वपाप क्षयंकरि । वर्धस्व कुरु मां देवि धनवन्तं तथा कुरु । । पुत्रान् पौत्रान्बलं प्रज्ञां देहि मे जगदीश्वरि । सम्वत्सर कृतं पापं दूरीकुरु ममाक्षये । । दक्षिणां दत्त्वा विसर्जयेत् । । (कुछ लोग पितरों के निमित्त धात्री में जल चढ़ाते हैं । पितरों का नामोच्चारण करके—ते सर्वे तृप्तिमायान्तु धात्रीमूले निषेचनात् । ।)

॥ अथ गोदान विधिः ॥

ॐ विष्णुः ३ । । श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्तये (अमुक कर्मनिमित्तकं श्री यज्ञ पुरुष प्रीतये) गोदानं करिष्ये

तत्प्रतिग्रहार्थं ब्राह्मणस्य पूजन पूर्वकं वरणं करिष्ये । तथा (सवत्सायाः) गोः पूजनं च करिष्ये ॥ ब्राह्मणम् सम्पूज्य
पूर्वाभिमुखीं गां तदुरत्तरतो वत्सं कृत्वा पूजयेत्-ध्यानम्-आवाहयाम्यहं देवीं गां त्वां त्रैलोक्यमातरम् । यस्याः स्मरण
मात्रेण सर्वं पापैः प्रमुच्यते ॥ त्वं देवी त्वं जगन्माता त्वमेवासि वसुधरा । गायत्री त्वं च सावित्री गंगा त्वं च सरस्वती
तृणानि भक्षसे नित्यममृतं स्रवसे तथा ॥ भूतप्रेतपिशाचौश्च पितृदेवतमानुषान् सर्वास्तारयसे देवि नरकात्पापसंकटात् ॥
ध्यानं समर्पयामि । आवाहनम् अक्षतैः-ॐ गवे नमः (अथवा सवत्सायै गवे नमः) पाद्यम् (पेर धोवै) नमो वो विश्वमूर्तिभ्यो
विश्वमातृभ्य एव च । लोकाधिवासिनीभ्यश्च रोहिणीभ्यो नमो नमः । गो अग्रपादाभ्यां नमः गोः पश्चात् पादाभ्यां
नमः ॥ अर्घ्यम्-देहस्था चैव रुद्राणां शंकरस्य सदाप्रिया । धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥ गौरास्याय नमः ॥ गो
विष्णोर्वक्षसि या देवी स्वाहा या च विभावसोः । चन्द्रार्कशक्रशक्तिर्या सा धेनुर्वरदाऽस्तु मे ॥ गोः श्रृंगाभ्यां नमः । गो
कर्णाभ्यां नमः । चतुर्मुखस्य या लक्ष्मीर्या लक्ष्मीर्धनदस्य च लक्ष्मीर्या लोकपालानां सा धेनुर्वरदास्तु मे । गोः पृष्ठाया
नमः । स्वधात्वं पितृ मुख्यानां स्वाहा यज्ञभुजां तथा । सर्वं पापं हरा धेनुस्तास्माच्छान्तिं प्रयच्छ मे । गोः पुच्छाय नमः
वस्त्रम् (दो वस्त्र) आच्छादने मया दत्तं सम्यक् शुद्धं सुनिर्मलम् । सुरभि वस्त्रं दानेन प्रीयताम् परमेश्वरि । गन्धम्-सर्व
देव प्रियं देवि चन्दनं चन्द्र सन्निभम् । कस्तूरी कुंकुमाद्यं च गौर्गन्धं प्रतिगृह्यताम् । ॐ गवे नमः । अक्षताः-ॐ
अक्षन्नीमदन्तद्व्यवप्रिया अधूषत अस्तोषत स्वभानवो विप्रा न विष्टयामतीयोजान् विन्दते हरिः ॥ पुष्पाणि माल्यादीनि
सुगन्धीनि मालत्यादीनि तानि वै । मया नीतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥ पुष्पमालां च समर्पयेत् ॥ धूपं
आनन्दकृत् सर्वलोके देवानां च सदा प्रिये । गोस्त्वंपाहि जगन्नाथे धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

दीपम्-साज्यं सुवर्तिसंयुक्तं वह्निना दीपितं मया । दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥ नैवेद्यम्-(गोप्रासः)

दीपम्-साज्यं सुवर्तिसंयुक्तं वह्निना दीपितं मया । दीपं गृहाण देवेशि त्रैलोक्यतिसिरापहम् ॥ नैवेद्यम्-(गोप्रासः) सुरभित्वं जगन्माता नित्यं विष्णुपदे स्थिता । गोप्रासो हि मया दत्तो नैवेद्यं प्रति गृह्यताम् ॥ जपम्-ॐ गवे नमः-(ॐ सवत्सायै गवे नमः) गुह्याति गुह्य गोप्त्रीत्वंगृहाणास्मात्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि ॥ फलम्-फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् । तस्मात्फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥ ताम्बूलम्-पूंगीफलं महादिव्यं नागवल्ली दलान्वितम् । ऐलादि चूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ भूषणार्थं द्रव्यम् दत्त्वा ॥ अथ अंगपूजा-श्रृंगमूले ॐ ब्रह्मविष्णुभ्यां नमः । शिरोऽग्रे ॐ सर्वतीर्थेभ्यो नमः । शिरोमध्ये ॐ महादेवाय नमः । ललाटे ॐ गौर्यै नमः । नासारन्ध्रे ॐ षण्मुखाय नमः । नासापुटयोः ॐ कम्बलाश्वतराभ्यां नमः । दन्तेषु ॐ वायवे नमः जिह्वायां ॐ वरुणाय नमः । ह्रूकारे-ॐ सरस्वत्यै नमः (गण्डयोः ॐ मासपक्षाभ्यां नमः ॥ ओष्ठयोः-ॐ सन्ध्याद्वयाभ्यां नमः । ग्रीवायां-ॐ रक्षोभ्यो नमः । कुक्षौ-ॐ साध्येभ्यो नमः । जंघासु-ॐ धर्माय नमः । खुरमध्ये ॐ गंधर्वेभ्यो नमः । खुराग्रे-ॐ कुलपर्वतेभ्यो नमः । खुरपश्चिमभागे-ॐ अप्सरोगणेभ्यो नमः । पृष्ठे-ॐ एकादशरुद्रेभ्यो नमः । सर्वसन्धिषु-ॐ वसुभ्यो नमः । श्रोत्रयोः-ॐ पितृगणेभ्यो नमः । पुच्छे-ॐ सोमाय नमः । पुच्छ केशेषु-ॐ सूर्यरश्मिभ्यो नमः । गोमूत्रे ॐ गंगायै नमः । गोमये-ॐ यमुनायै नमः । क्षीरे-ॐ सरस्वत्यै नमः । दध्नि-ॐ नर्मदायै नमः । घृते-ॐ वह्नये नमः । रोमेषु-ॐ देवकोटिभ्यो नमः । उदरे-ॐ पृथिव्यै नमः । स्तनेषु-ॐ चतुः सागरेभ्यो नमः । एते यस्याः तनौ देवाः सा धेनुर्वरदामम् ॥ नीराजनम्-ॐ अग्निर्ज्योतिः० । प्रार्थना-ॐ नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च । नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ॥ गावो मगाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः । गावो मे पार्श्वयोः सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥ पंचगावः समुत्पन्ना मथ्यमाने महोदधौ । तासां मध्ये तु यां नन्दा तस्यै देव्यै नमो नमः ।

गवामंगेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश । यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च ॥ ब्रह्मा—दयस्तथा देवा रोहिण्यः
 पान्तु मामतः । कुशाक्षतजलैः सार्द्धं गृहीत्वा पुच्छमादृतः ॥ कराभ्यां तर्पयेद् देवान्देवतीर्थेन मन्त्रवित् । प्राजापत्येनमनु
 जान् पितृन् पित्र्येण तर्पयेत् ॥ (कुश जौ सुवर्ण सहित गोपुच्छ लेकर पूरब मुख होकर यजमान सतत जलधारा
 देवतीर्थ से देवे) ब्रह्मा विष्णुर्महादेवः कार्तिकेयो गणधिपः । पुष्पचापो महेन्द्रश्च भगवानच्युताग्रजः । देवाः समस्ताः
 सगणाः सवाहन परिच्छदाः । वसवोष्टौ द्वादशार्काः रुद्रा एकादशैव तु ॥ विश्वेदेवाश्चसाध्याश्च मरुतो मातरस्तथा ।
 गन्धर्वा गुह्यकाश्चैव सागराः सरितस्तथा । राक्षसाः यक्षवेतालाः पूतना पर्वता द्रुमाः । तीर्थान्यप्सरसश्चैव पशवः पन्नगाः
 खगाः ॥ ऋक्षाणि राशयो योगा मासवर्षर्तु वासराः । अन्येच ये युगा कल्पास्तथा मन्वन्तराणि च ॥ भुवनानि दिशः
 काष्ठाः तथा सर्वेन्द्रियाणि च, ॐ कारश्चैव गायत्री छन्दास्यंगानि चैव हि ॥ वेदाश्च स्मृतयश्चैव पुराणानि तथैव
 च । अयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वो मन्त्रगह्वरः ॥ औषध्यो वनसंभूता ग्राम्याश्चैव सुपिपलाः । सानुगादेवताश्चैव मुनयः
 सगणास्तथा । ऋषयश्चर्षिपत्न्यश्च सिद्धाश्च सगणास्तथा । प्रजाः प्रजापतिश्चैव येऽन्ये विघ्नविनायकाः ॥
 विद्याधराश्च दैत्याश्च आचार्या गुरवस्तथा । डाकिन्यः क्षेत्रपालाश्च भैरवाश्चाष्ट संख्यकाः ॥ स्थावरा जंगमाश्चैव
 भूतग्रामश्चतुर्विधः । अक्षयेणामृतैर्नैव मंगलेन सुवारिणा ॥ गोपुच्छाग्रच्युतेनेह मदतेन हि तेऽखिलाः । शाश्वती
 तृप्तिमायान्तु राहुकेतु समन्विताः ॥ इन्द्रो वह्नियमोरक्षो पाशी वारुणनाधिपः । ईशो ह्यनन्तो ब्रह्मा च । सर्वे ते
 तर्पितामया सावित्र्या सह लोकेशः सलक्ष्मीकश्चतुर्भुजः ॥ महेशश्चोमयासार्द्धं तृप्तिमायान्तुशाश्वतीम् । अत्रिर्वशिष्ठो
 भृंगु गौतमो च मरीचिदक्षौ पुलहः पुलस्त्यः ॥ प्राचेतसः कश्यपविश्वमित्रो तथा अगस्त्यो भृगुजो मुनिश्च । अन्येच
 सर्वेभ्यो पुंगवाश्च गृह्णन्तु दत्तं जलमद्य तुष्टाः ॥ यज्ञोपवीतं कण्ठावरोहणं कृत्वा अक्षत मिश्रित जलेन—सनकः

सनन्दनश्च तथैव च सनातनः कपिलश्चासुरिश्चैव वोढुः पञ्चशिखस्तथा । ते तृप्तिमखिला यान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः ॥

सनन्दनश्च तथैव च सनातनः कपिलश्चासुरिश्चैव वोढुः पञ्चशिखस्तथा । ते तृप्तिमखिला यान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः ॥
 ततो अप्सव्यं कृत्वा तिलमिश्रित जलेन पितृस्तर्पयेत् । कव्यवाडनलः सोमो यमश्चैवार्यमा तथा ॥ अग्निष्वाताः
 सोमपाश्च तथा वह्निषदश्च ये । तर्पितास्तृप्तिमायान्तु शाश्वतीं गोप्रसादतः ॥ यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चांतकाय
 च । वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च ॥ औदुम्बराय दधनाय नीलाय परमेष्ठिने । वृकोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय
 वै नमः ॥ पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः । माता पितामही चैव तथैव प्रपितामही ॥ मातामहो प्रमातामहो
 वृद्धप्रमातामहस्तथा । मातामही प्रमातामही वृद्धमातामही तथा । अक्षयां तृप्तिमायान्तु गोलांगूलच्युतोदकैः ॥ पितृवंशे
 मृता ये च मातृवंशे च ये मृताः ॥ गुरुश्वशुरबन्धूनां ये चान्ये बान्धवाः मृताः येऽबान्धवा बान्धवा ये अन्यजन्मनि
 बान्धवाः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोत्सृष्टवारिभिः ।

त्रिकं मातामहाद्यं च माता मह्यादिकं त्रयम् ।
 ते च ताश्च प्रदत्तं मे स्वीकुर्वन्तु मुदा जलम् ॥
 ये मृता वै पितृव्याश्च मातुलाः श्वशुरास्तथा ।
 आचार्य गुरु मित्राद्यास्ते गृह्णन्तु शुभं जलम् ॥
 ये च सम्बन्धिनः पुत्रा बहिदाह विवर्जिताः ।
 अपमृत्यु मृताये च ते तृप्तिं च लभन्तिवह ॥
 पितृवंशे मृतायेच मातृवंशे च ये मृताः ।
 गुरुश्वशुरबन्धूनां ये चान्ये बान्धवा मृताः ॥

ये मे कुले लुप्त पिण्डा क्रिया लोप गताश्च ये ।
 विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताऽज्ञाताः कुले मम ॥
 ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणैः ।
 गोत्रे मदीये विसुतामृता ये गोत्रे च मातुर्मम ये विपन्नाः ॥
 गर्भच्युताः श्राद्ध विवर्जिताश्च तेभ्यः स्वधानेन जलेन भूयात् ।
 ये रौरवादौ नरके निमग्नाः क्रिया विलुप्ताश्च कृतोपकाराः ।
 जन्मान्तरे ये ममदासभूतास्ते ऽक्षय्य तृप्तिहिचिरं भजन्ताम् ॥
 ये बान्धवाऽबान्धवा ये ऽन्य जन्मनि बान्धवाः ।
 ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणैः ॥
 (धेनुपुच्छं करे कृत्वा तर्पणं च करोति यः ।
 आत्मानं तारयेद्विप्रो दशपूर्वान्दशापरान् ॥)
 सन्तर्पिता मया ये च गोपुच्छोदक तर्पणैः ।
 आयुर्वृद्धिं तथा तुष्टिं मेधां सन्ततिमुत्तमाम् ॥
 आरोग्यं धन लाभं च सन्तुष्टाश्च ददतु मे ।
 आज्यपात्रं करे कृत्वा कनकेन समन्वितम् ॥

निक्षिप्य पुच्छं तस्मिंस्तु घृतदुग्धं प्रगृह्य च ।

निक्षिप्य पुच्छं तस्मिंस्तु घृतदुग्धं प्रगृह्य च ।
सतिलं ब्रह्मपाणौ तु विधिनादानमाचरेत् ॥

सव्येन संकल्प-ॐ विष्णु ३ ॥ इमां गां (सवत्सां) सुपूजितां रुद्रदैवत्यां यथाशक्ति अलंकृताम् निखिलदुःख
दौर्भाग्य दुःस्वप्न अमुकग्रह बाधा शान्तिपूर्वकं आयुरारोग्य धनधान्य द्विपद चतुष्पद संतति प्राप्ति पूर्वक गोरोम-तुल्य
वत्सरावधि स्वर्गलोक प्राप्ति कामः श्रीलक्ष्मीनारायण प्रीतये अमुक गोत्राय अमुक प्रवराय अमुकशाखिने
अमुकवेदाध्यायिने (सपत्नीकाय) ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ दानवाक्यम्-यज्ञसाधन भूताया विश्वस्याघौघनाशिनी ।
विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा ॥ इत्युच्चार्य संकुश जलाक्षत गोपुच्छं विप्रहस्ते दद्यात् ॥ द्यौस्त्वा ददातु
पृथिवीत्वा प्रतिग्रहातु । ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेशिवनोर्बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम् । ॐ कोदात् कस्मायादात्
कामोदात् कामायादात् कामो दाता कामः प्रतिगृहीता कामैतत् ॐ स्वस्ति । इमां रौद्रीं गां प्रतिगृह्णामि इति वदेत् ॥
ततो दानप्रतिष्ठासंकल्पः-ॐ अद्यहेत्यादि० अमुकोहं कृतैतद्गोदान प्रतिष्ठसिध्यर्थमिदं सुवर्णमग्निदैवतं
यथापरिमितं ब्राह्मणाय तुभ्यं दास्ये ॐ तत्सत् इति दद्यात् ॥ ततो ब्राह्मणः गोपुच्छोदकेन द्यौः शान्तिरिति
मंत्रेणाभिषेकं कृत्वा मंत्राशिषं दद्यात् ॥ ॐ सोमो धेनुः ४. सोमो अर्वन्तमाशु ४. सोमो वीरंकर्मण्यं ददाति । सादन्यं
विदथ्य ४. सभेयां पितृश्रवणं योददान्यदस्मै । इति । ततो दाता यजमानः ब्राह्मणेन समन्वितां गां त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य ।
गावः सुरभयो नित्यं गावो गुग्गुलगन्धिकाः । गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं महत् । पावनं सर्वभूतानां क्षरन्ति
च वहन्ति च । हविषा मन्त्रपूतेन तर्पयन्त्यमरान्दिवि । ऋषिणामग्निहोतृणां गावो होमे प्रतिष्ठिताः । सर्वेषामेवभूतानां

गावः शरणमुत्तमम् । नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च । नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः । ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेकं द्विधा कृतम् । एकत्र मंत्रास्तिष्ठन्ति हविरेकत्र तिष्ठति । गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः । गावो मामुपतिष्ठन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् । दक्षिणा दानं अभिषेकादिकंच कुर्यात् ।।

गावो मामुपतिष्ठन्तु हेमश्रृंग्यः पयोमुचः । सुरभ्यः सौरभेयश्च सरितः सागरास्तथा । गाश्च पश्याम्यह नित्यं गावः पश्यन्तु मां सदा, गावोऽस्माकं वयं तासां यतो गावस्ततोवयम् ।। घृतक्षीर प्रदागावो घृतयोन्यो घृतोद्भवाः । घृतनद्यो घृतावर्त्तास्ता मे सन्तु सदा गृहे ।। एवं रात्रौ दिवा वापि समेषु विषमेषु च । भयेषु च नरो नित्यं कीर्तयन्मुच्यते भयात् ।।

शय्यादानम्

(दक्षिणोत्तर शय्या, सिर की ओर घृतपात्र तथा पैरों की ओर चारबत्ती, नीचे जलपात्र स्थापित करके पूर्वाभिमुख शंखघोष तिलक आचमन पुष्पांजलि सूर्यार्घं दान करके संकल्प करे) । ॐ विष्णुः ३ ।। अमुकोहं श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलावाप्तये अमुकव्रतोद्यापनकर्मणः उत्तरांगत्वेन (अमुक कर्मनिमित्तकम्) श्रीलक्ष्मीनारायण प्रीतये शय्यादानम् करिष्ये तथा शय्योपरि स्थापितायां सुवर्णप्रतिमायां श्रीलक्ष्मीनारायणयोः प्रतिष्ठावाहनपूर्वकं पूजनं करिष्ये । तथा च तत्प्रतिगृहार्थं (सपत्नीकस्य) ब्राह्मणस्य पूजनपूर्वकं वरणं च करिष्ये तत्पूर्वांगत्वेन गणपत्यादि देवानां पूजनं च करिष्ये । गणेशादीन् सम्पूज्य ब्राह्मणं अर्घ्यादिभिः पाद प्रक्षालनपूर्वकं सम्पूज्य वरणं—एभि—गन्धाक्षत पुष्प पुंगीफल माला द्रव्यादिभिः शय्यादान प्रतिग्रहार्थं अमुकगोत्रं प्रवरं वेदिनं शाखिनं विष्णुस्वरूपिणम् अमुकशर्माणम् (सपत्नीकम्) ब्राह्मणम् त्वामहं वृणे । वृत्तोऽस्मि ।। प्रार्थयेत्—यदर्वचनं कृतं विप्र तवविष्णु स्वरूपिणः । सत्सर्वं मम दीनस्य विष्णवेस्तु समर्पणम् ।।

ततो स्वर्णप्रतिमां अग्नि-उत्तारण पूर्वकं पञ्चामृतेन संस्नाप्य प्रतिष्ठा-ॐ एतन्ते० ॐ भूर्भुवः स्वः अस्यां सुवर्ण

ततो सुवर्णप्रतिमां अग्नि-उत्तारण पूर्वकं पञ्चामृतेन संस्नाप्य प्रतिष्ठा-ॐ एतन्ते० ॐ भूर्भुवः स्वः अस्यां सुवर्ण
प्रमिमायां श्रीलक्ष्मीनारायणौ इहागच्छतम् इहतिष्ठतम् सुप्रतिष्ठितौ वरदौ भवतम् ।। ध्यानम्-ॐ सखंख चक्रं
सकिरीट कुण्डलं सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम् सहारवक्षस्थल कौस्तुभश्रियं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम् ।। ॐ
विष्णोर्वक्षसि पदमे च शंखे चक्रे तथाम्बरे । लक्ष्मीर्नित्या यथा देवि तथा नित्या मयि भव ।। युगलध्यानम्-
दक्षिणाधः करे पदं शंखमूर्ध्व करे न्यसेत् । वामे हस्ते ततश्चक्रं लक्ष्मीपृष्ठे करः परः ।। श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः,
ध्यानं समर्पयामि । एवं आवाहनादि नीराजनान्तं सम्पूज्य-

प्रार्थना-ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्यपां सुरे ।। ॐ शान्ताकारं इत्यादिनां प्रार्थ्य
संकल्पः-ॐ विष्णुः ३ श्रीलक्ष्मीनारायण देवप्रीतये (अमुक देवता प्रीतये) इमां शय्यां निद्राकलश घृतकुम्भ चतुर्वर्तिका
पाकादिपात्र सप्तधान्य वस्त्रालंकार दीपिका पादुकोपानद् छत्र चामर-आदर्श कर्पूरागरु ताम्बूल पूगीफल
नारिकेल-एला लवंग जातीफल द्राक्षा दाडिम जम्बीर नारंग कदलीफलादि नाना पुष्प वासित भक्ष्यभोज्य
नानाविध पक्वान्नयुत गोरसादि-उपस्करवतीं प्रजापतिदेवत्याम् श्रीलक्ष्मीनारायण प्रतिमा सहिताम् अमुकगोत्रप्रवराय
अमुकशर्मणे (सपत्नीकाय) ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे । ॐ तत्सन् नमम । दानवाक्यम्-यथा न कृष्णशयनं शून्यं
सागरजं यथा । शय्या ममाप्यशून्यास्तु तथा जन्मनि जन्मनि ।। यस्मादशून्यं शयनं केशवस्य शिवस्य च । शय्या
ममाप्यशून्यास्तु तथा जन्मनि जन्मनि ।। ब्राह्मणः-कोदात् कस्माअदात् कामोऽदात् कामायादात् । कामो दाताकामः
प्रतिग्रहीता कामैततै ।। ॐ स्वस्ति ।। दान प्रतिष्ठा-अमुकोहं शय्यादानकर्मणः सांगफलप्राप्तये इदं सुवर्णं (द्रव्यं
वा) ब्राह्मणाय दास्ये (ब्राह्मण नैवेद्य ग्रहण करके उठे) प्रदक्षिणा अभिषेकादि विसर्जनान्तं कर्म कुर्यात् ।।

पार्थिवपूजा (शिवाचर्चन)

(दीप प्रज्वलित करके स्वस्तिवाचन पूर्वक पूर्वांग कर्म, पंचकोणात्मक मध्य में ॐ कार सहित पीठ बनाकर उस पर पार्थिव शिव बनावे। सन्तानप्राप्त्यर्थ, शात्मली तण्डुल पिष्ट या मक्खन के, धन धन्य वृद्धि हेतु बाँबी की मृत्तिका के, रोग निवारणार्थ—गोबर के पार्थिव बनावे, बछड़े के गोबर की भस्म तथा रुद्राक्ष धारण)

भस्मधारणम्—ॐ शुद्धस्फटिक संकाशामेकवक्त्रां चतुर्भुजाम् । मृगटंक धरां देवीं वराभय करां शिवाम् ॥ सर्व काम प्रसविनीं सर्वोपद्रव नाशिनीम् । सदा शिवसखीं साध्वीं निगमाध्व विहारिणीम् । नमामि मातरं त्वाहं सर्वाभीष्ट प्रदां सदा । विभूतिं धारयाम्यद्य शिवपूजाभिलाषुकः । । वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्मणा शंकरेण च । अतस्त्वां धारयाम्यद्य विभूते भूतिदा भव । । ॐ भूर्भुवः स्वः क्लीं क्लीं फट् स्वाहा ॐ नमः शिवाय (इस मंत्र से एकादश बार अभिमन्त्रित करके धारण करे) धारणविधिः—ॐ ब्रह्मणे नमः—ललाटे । ॐ हव्य वाहनाय नमः—हृदये । ॐ स्कन्दाय नमः—नाभौ । ॐ पूष्णे नमः कण्ठे । ॐ रुद्राय नमः—दक्षिण बाहुमूले ॐ आदित्याय नमः—दक्षिण बाहुमध्ये । ॐ शशिने नमः—दक्षिण मणिबन्धे । ॐ वामदेवाय नमः—वाम बाहुमूले । ॐ प्रभञ्जनाय नमः । वाम बाहुमध्ये । ॐ वसुभ्यो नमः—वाम मणि बन्धे । ॐ हराय नमः—पृष्ठे । ॐ शम्भवे नमः—ककुदि । ॐ परमात्मने नमः—शिरसि । ॐ शिवाय नमः—पृष्ठे । ॐ शम्भवे नमः—ककुदि । ॐ परमात्मने नमः—शिरसि । ॐ शिवाय नमः—सर्वांगेषु । । अथ रुद्राक्ष धारणम्—ॐ अघोर ॐ ह्रीं अघोरतर ॐ हौं हां नमस्ते रुद्ररूप हौं स्वाहा । ततः संकल्पः । ॐ विष्णुः ३ । । अमुकोऽहं अमुक कामनया सकल पापक्षय पूर्वक दीर्घायुरारोग्यप्राप्तिद्वारा श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलावाप्तये, मनोवाञ्छित फल प्राप्त्यर्थ अमुक

कामनया अमुकव्रतांगत्वेन श्रीसाम्ब सदाशिव प्रीतये चतुर्वर्ग सिद्धये अमुक द्रव्यनिर्मितानां अमुक संख्यकानां पार्थिव
प्रतिष्ठा—ॐ

कामनया अमुकव्रतांगत्वेन श्रीसाम्ब सदाशिव प्रीतये चतुर्वर्ग सिद्धये अमुक द्रव्यनिर्मितानां अमुक संख्यकानां पार्थिव
 लिंगानां प्रतिष्ठा प्राणप्रतिष्ठा पूर्वकं अमुक संख्यकावृत्ति रुद्राभिषेक पाठ (पठन) पूर्वकं पूजनं करिष्ये । । प्रतिष्ठा-ॐ
 एतन्ते० ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक द्रव्य निर्मिता अमुक संख्यकाः पार्थिवलिंगेश्वराः प्रतिमाः इहागच्छन्तु इह तिष्ठन्तु
 सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु । । तदुपरि श्रीसदाशिव इहागच्छ इह तिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव । प्राण प्रतिष्ठा-ॐ
 अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्म विष्णु शिवा ऋषयः सामानि छन्दांसि क्रियामय वपुः प्राणाख्यादेवताः
 आं बीजम् ह्रीं शक्ति क्रौं कीलकम् प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः । ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं
 शिवस्य प्राणा इह प्राणाः । (१४ अक्षर) ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हंसः सोऽहं शिवस्य जीव इह स्थितः । ।
 ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ् मनश्चक्षुः श्रोत्र जिह्वाघ्राण पाणि
 पादपायूपस्थानां देवा इहागत्य स्वस्तये सुखेन चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । । मातृ कान्यासः-ॐ अस्य श्री मातृकान्यासस्य
 ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः श्रीसृष्टिमातृका सरस्वती देवता ह्रौं बीजानि स्वराः शक्तयोः मातृकान्यासे विनियोगः ।
 शिरसि-ॐ ब्रह्मर्षये नमः । मुखे-ॐ गायत्री छन्दसे नमः । हृदि-ॐ सृष्टि कर्तृमातृका सरस्वती देवतायै नमः ।
 नाभौ-ॐ हल बीजेभ्यो नमः । पादयोः स्वराशक्तिभ्यो नमः । प्राणायामम् कृत्वा ध्यानम्-आधारे लिंगनाभौ प्रकटित
 हृदये तालुमूले ललाटे, द्वे पत्रे षोडशारे द्विदश दशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के । वासान्ते बालमध्ये ड फ क ठ हसिते
 कण्ठ देशे स्वराणां हं सं तत्त्वार्थ युक्तं सकल दल गतं वर्णरूपं नमामि । । अकरादि षडंग न्यासः-ॐ अं कं खं
 गं घं ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ इं चं छं जं झं ञं ई तर्जनीभ्यां नमः । ॐ उं टं ठं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः ।
 ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ औं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ अं यं रं लं वं शं

षं सं हं अः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः । अथ हृदयादिन्यासाः—ॐ अं कं खं गं घं ङं आं हृदयाय नमः । ॐ इं चं
 छं जं झं ञं ई शिरसे स्वाहा । ॐ उं टं ठं डं णं ऊं शिखायै वषट् । ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुम् ।
 ॐ ओं पं फं बं भं मं औं नेत्र त्रयाय वौषट् । ॐ अं यं रं लं वं षं संहं अः अस्त्राय फट् । ॐ ध्यानम्—
 पंचाशल्लिपिभिर्विभज्य मुख दोर्हत्पदम् वक्षस्थलां भास्वन्मौलिनिबद्ध चन्द्रशकलामपीन वक्षोरुहाम् । मुद्रामक्षगुणं
 सुधाढय कलशं विद्यां चहस्ताम्बूजैर्विभ्रणामनलात्मिकां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये । ॥ द्वारपूजा—ॐ अस्त्राय फट् । ॥
 पूर्वे—ॐ नं नन्दिने नमः । अग्नेयाम्—ॐ मं महाकालाय नमः । दक्षिणे ॐ गं गणपतये नमः । नैऋत्याम्—ॐ वृं वृषभाय
 नमः । पश्चिमे—ॐ भूं भृंगरिडये नमः । ॥ वायव्याम्—ॐ स्कं स्कन्दाय नमः । उत्तरे—ॐ उं उमायै नमः । ईशाने—ॐ
 चं चण्डीश्वराय नमः । अथ पीठ पूजा—(पूर्वादि से ईशानपर्यन्त) ॐ वामायै नमः । ॐ ज्येष्ठायै नमः । ॐ श्रेष्ठायै
 नमः । ॐ रौद्रायै नमः । ॐ काल्यै नमः । ॐ कल विकरण्यै नमः । ॐ बल विकरण्यै नमः । ॐ बल प्रमाथिन्यै नमः ।
 ॐ सर्व भूत दमन्यै नमः । ॐ मनोन्मादिन्यै नमः । ॐ नमो भगवते सकल गुणात्मकाय अनन्त शक्तियुक्ताय
 अनन्त-योगपीठात्मने । ॐ हौं ह्रीं जूं सः हराय नमः इति द्रव्य ग्रहणम् । ॐ हौं ह्रीं जूं सः महेश्वराय नमः इति
 संघटनम् । ॐ हौं ह्रीं जूं सः शूलपाणये नमः (स्थापनम्) । ॐ हौं ह्रीं जूं सः पिनाकपाणये नमः इति आवाहनम् । ॥
 अथ शिवध्यानम्—ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजत गिरेनिभं चारु चन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशु मृग वरा भीति
 हस्तं प्रसन्नम् । पदमासीनं समतात्स्तुतममरणैर्ब्याघ्र कृतिं वसानं विशवाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रत्रिनेत्रम् ।
 ॐ दक्षोत्संगनिषण्णकुंजरमुखं प्रेम्णा करेणामृशन् वामोरुस्थितवल्लभां क हृदयं स्कंदं परेणामृशन् इष्टाभीतिवरद्वयं
 करयुगे बिभ्रत प्रसन्नाननो भूयान्नः शरदिन्दुसुन्दरतनुः श्रेयस्करः शंकरः । ॐ चन्द्रकोटिप्रतिकाशं त्रिनेत्रं

चन्द्रभूषणम् । आपिगल जटाजूटं रत्नमौलिविराजितम् । ॐ हौं ह्रीं जूं सः आवाहनम् । आगच्छपंचानन चन्द्रमौले

चन्द्रभूषणम् । आपिंगल जटाजूटं रत्नमौलिविराजितम् ॥ ॐ हौं हीं जूं सः आवाहनम् । आगच्छपंचानन चन्द्रमौले प्रसीद संसार भयार्तिनाशन । करोमि ते पादसरोजपूजां गृहाण मृत्युंजय भक्तवत्सल ॥ स्वामिन्सर्वजगन्नाथ यावत् पूजावसानकम् । तावत्त्वं प्रीतिभावेन लिंगेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥ ॐ हौं हीं जूं सः शिवाय नमः । आसनम्—रम्यं विचित्रं मणिपीठसंज्ञकं सिंहासनं चाष्टदलाब्जयुक्तम् । वामादिशक्त्यान्वितमीश तुभ्यं नमः शिवायेति समर्पयामि ॥ वृषभं नन्दिनामानं रथं यस्य सदाशिव । पुष्पासनं गृहाणेदमुमया सहितः प्रभो ॥ ॐ हौं हीं जूं सः शिवाय नमः । पाद्यम्—श्यामांक दूर्वाब्जसिताभ्रविष्णु क्रांतान्वितं धर्मवतीजलैर्वा गृहाण सर्वेश्वर पाद्यमद्य नमः शिवायेति समर्पयामि । कैलाशशिखरे रम्ये शक्त्या युक्तः सदाशिवः । सुगंधिं शीतलं तोयं पाद्यार्थं तव गृह्यताम् ॥ ॐ हौं हीं जूं सः शिवाय नमः ॥ ॐ हौं हीं जूं सः शिवायेति समर्पयामि । गृहाण शैलेन्द्रसुतपतेऽर्घ्यं नमः शिवायेति समर्पयामि ॥ ताप त्रय हरं दिव्यं परमानन्द लक्षणम् । तापत्रय विनिर्मुक्त्यै तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम् ॥ ॐ हौं हीं जूं सः शिवाय नमः । अर्घ्यं समर्पयामि ।

आचमनीयम्—कर्पूर कंकोल लवंग जाती समन्वितैर्विष्णुपदोद्भवाद्भिः । श्रीपंचवक्त्राचमनं कुरु त्वं नमः शिवायेति समर्पयामि । सर्वलोक हितासक्त सर्व पाप विनाशन । भक्त्या निवेदितं देव कुरुष्वाचमनं प्रभो ॥ ॐ हौं हीं जूं सः शिवाय नमः । मधुपर्कम् (२ भाग शहद, १ भाग घी, १ भाग दही) सर्वकालुष्य हीनाय परिपूर्ण सुखात्मने । मधुपर्कं हि देवाय कल्पयामि च तेऽनघ ॥ ॐ हौं हीं जूं सः शिवाय नमः । अथदुग्धम्—ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः पयोस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम् । देवैर्या वन्दिता धेनुः सर्व पाप प्रणाशिनी । तत्क्षीर स्नापितो देवो नित्यं मे वरदोभवेत् ॥ ॐ हौं हीं जूं सः शिवाय नमः ॥ अथदधि—ॐ दधि क्राब्णोऽकारिषं

जिष्णोरश्वस्य व्याजिनः । सुरभिणो मुखाकर्त्तृ प्रण आयूँ षितारिषत ॥ कामतोऽकामतो वापि यन्मया दुष्कृतं कृतम् । तत्सर्वं विलयं यातु दधिस्नानेनमेशिव ॥ ॐ हौं हीं जूँ सः शिवाय नमः । घृतम्—घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथिवी मधुदुधे सुपेशसा । द्यावा पृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजिरेभूरिरेतसा । रसाढ्यमुत्तमं त्वाज्यं देवानां च सदा प्रियम् । तेन त्वं स्नापितो देव निधिकान्तिप्रदोभव । ॐ हौं हीं जूँ सः शिवाय नमः ॥ मधु—ॐ मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतू अग्नेरन्तः श्लेषोऽसि कल्पेतां द्यावापृथिवी कल्पन्तामप ओषधः कल्पन्तामनयः पृथङ्मम ज्येष्ठाय सव्रताः ॥ इदं मधुमया दत्तं तव प्रीत्यर्थमेव च । स्नानार्थमर्पितं देव गृह्यतां मदनुग्रहात् ॥ ॐ हौं हीं जूँ सः शिवाय नमः । शर्करा—ॐ अपाप्यायस्व समेतुते विश्वतः सोमवृण्यम् । भवावाजस्य संगथे ॥ यमलोक भयत्रस्तः शरणं त्वां गतः शिव । खण्डस्नानेन देवेश मां कुरुष्व सुखान्वितम् ॥ ॐ हौं हीं जूँ सः शिवाय नमः ॥ पंचामृतेन स्नानम्—पयोदधि घृतं चैव मधुशर्करयान्वितम् । पंचामृतं हि स्नानार्थं गृहाण मनदुग्रहात् ॥ शुद्धोदकस्नानम्—ॐ देवाधिदेव सर्वज्ञ सर्व पाप विनाशक । स्नापितोऽसि मया देव भक्तानामभयप्रद ॥

रुद्राभिषेकः—(पहला क्रम—नमका चमका, इसमें प्रथम अध्याय (रुद्री) से प्रारम्भ करके सात अध्याय तक सीधी आवृत्ति करें । अष्टम अध्याय में ४ द, १२, १५, १८, २१, २३, २४, २५ वें मंत्र के अन्त में नमस्ते रुद्रमन्यव० पंचम अध्याय के १६ मंत्रों (रुद्रसूक्त) का १० बार पाठ होता है । एकबार शुरु में स्वतः हो जाने से उन १६ मंत्रों की ११ आवृत्ति होती है । यह एक क्रम है । दूसराक्रम—षट् षष्ठी नील सूक्तं च पुनः षोडश मेव च । एषते द्वे नमस्ते द्वे नतं विद्वयमेव च ॥ मीढुष्टम चत्वारिह्यत श्चशतरुद्रियम् ॥

साङ्गोपाङ्गस्नानम्—(तिलसर्षपादि मिश्रित तप्तोदकेन) परमानन्द बोधाब्धिनिमग्ननिज मूर्तये ।

साङ्गोपाङ्गस्नानम्—(तिलसर्वपादि मिश्रित तप्तोदकेन) परमानन्द बोधाब्धिनिमग्ननिज मूर्तये । साङ्गोपाङ्गमिदं स्नानं कल्पयामि प्रसीद मे । ॐ हौं ही० स्नानाङ्गमाचमनीयम्—ॐ सर्वपापरं दिव्यं गांगेयं निर्मलं जलम् । आचम्यतां महादेव मां कुरुष्व सुखान्वितम् ॥ ॐ हौं ही जूँ सः० ॥ अङ्गप्रोक्षणीयम्—ॐ हौं ही जूँ सः शिवाय नमः ॥ वस्त्रम्—विचित्रवस्त्राणि सुवासितानि सुवर्णसूत्रैः परिनिर्मितानि । मृदूनि मृत्कुजय संगृहाण नमः शिवायेति समर्पयामि । विश्वकर्म कृतं दिव्यं निजगुह्योरुतेजसम् । निरावरण विज्ञानं वासस्ते कल्पयाम्यहम् ॥ ॐ हौं ही जूँ सः शिवाय नमः ॥ यज्ञोपवीतम्—सुवर्णसूत्रैर्घटितं मनोरमं मुक्ताफलैः संग्रन्थितं महार्हम् । यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं नमः शिवायेति समर्पयामि ॥ यस्य शक्ति त्रयेणंदं सम्प्रोतमखिलं जगत् । यज्ञसूत्राय तस्मै ते यज्ञसूत्रं प्रकल्पये ॥ ॐ हौं ही जूँ सः शिवाय नमः । यज्ञोपवीतांग माचमनीयम्—ॐ हौं ही जूँ सः शिवाय नमः । गन्धम्—ॐ उशीर काश्मीर सिताश्रपदम् श्रीखण्डमन्दार हिमाम्बुयुक्तम् । गृहाण मृत्कुजय गन्धमुत्तमं नमः शिवायेति समर्पयामि ॥ मलयाचल सम्पन्नं नाना पन्नग रक्षितम् । शीतलं बहुलामोदं चन्दनं प्रतिगृह्यताम् । ॐ हौं ही जूँ सः शिवाय नमः ॥ भस्म ॥ अक्षताः—(साबुत चावल तिल सहित) शुभ्रान् शरच्चन्द्र मरीचि सन्निभान् अखण्डितान्कृष्ण तिलैः समन्वितान् ॥ गृहाण मृत्कुजय धूर्जटेऽक्षतान्नमः शिवायेति समर्पयामि ॥ अक्षतान्बन्धु पुत्रादीन् रक्ष कार्याक्षि वाङ्मनः । अन्तश्चैवाक्षतं कृत्वा मेऽक्षतान्प्रीतिमावह । ॐ हौं ही जूँ सः शिवाय नमः ॥ पुष्पाणि—श्री बिल्वपत्रैस्तुलसीदलैर्वा मन्दार जाती करबीर पुष्पैः । प्रसीद विश्वेश्वरपूजयामि नमः शिवायेति समर्पयामि । पुष्पमाला—अनेक वर्ण पुष्पैश्च ग्रथितां सुमनोहराम् । बिल्वपत्रयुतां माला गृहाण सुमनोहराम् । (धतूरा निगुडी बिल्वपत्र तथा कमल पुष्पों की माला अर्पण करे) त्वदीय वन सम्भूतं नाना गुणमनोहरम् । अतीव सौरभं पुष्पं गृह्यतां

परमेश्वर । ॐ हौं हीं जूं सः शिवाय नमः । ततो बिल्वपत्राणि—ॐ त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम् । त्रिजन्म पाप संहारमेक—बिल्वं शिवावर्पणम् (बिल्वपत्र को अधोमुख अर्पण करे) त्रिशार्खैर्बिल्व पत्रैश्च हृच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः तव पूजां करोम्यद्य ह्येकबिल्वं शिवावर्पणम् । शालग्रामेषु विप्राणां तडागं दश कूपयोः । यज्ञ कोटि सहस्राणामेकबिल्वं शिवावर्पणम् । दर्शनाद् बिल्वपत्रस्य स्पर्शनात् पापनाशनम् । अघोर पाप संहारमेक बिल्वं शिवावर्पणम् । अमृतोद्भव वृक्षस्य महादेवो महेश्वरः । तव पूजां करोम्यद्य ह्येकबिल्वं शिवावर्पणम् । अज्ञानेन कृतं पापं सर्वं नश्यत्वनिर्मलम् । तव पूजां करोम्यद्य ह्येकबिल्वं शिवावर्पणम् । एकैकबिल्वपत्रैश्च कोटियज्ञफलं लभेत । महादेवेशपूजार्थमेकबिल्वं शिवावर्पणम् । तुलसी दल निर्गुण्डी जम्बीरामलकं तथा । पत्रबिल्वं समाख्यातमेक बिल्वं शिवावर्पणम् । ॐ हौं हीं जूं सः शिवाय नमः । तुलसी मंजरी—तुलस्यमृत जन्मासि केशवस्य सदा प्रिये । त्वद्दलैर्मंजरीभिश्च प्रीतो भवतु मे शिवः । ॐ हौं हीं जूं सः शिवाय नमः ।

ॐ सर्वं गताय नमः । अर्कं पुष्पं समर्पयामि । (आक) ॐ भूतनाथाय नमः । अपामार्गं समर्पयामि । साजी (चिड़चिटा) ॐ सर्वगुह्याय नमः धत्तूरं समर्पयामि । धत्तूरकैश्च योलिंगं सकृत्पूजयते नरः । स गोलक्षफलं प्राप्य शिव लोके महीयते । सुगन्धित पदार्थ—ॐ हौं जूं सः शिवाय नमः । आवरणपूजा— । २२ । ॐ ब्रह्मणे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ स्कन्दाय नमः । ॐ महाकालाय नमः । ॐ शूलिने नमः । ॐ उमायै० । ॐ महेश्वराय नमः । ॐ नन्दिकेश्वराय नमः । ॐ इन्द्राय नमः । ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः । ॐ भवाय जल मूर्तये नमः ॐ रुद्राय अग्नि मूर्तये नमः । ॐ उग्राय वायु मूर्तये नमः । ॐ भीमाय आकाश मूर्तये नमः ॐ पशुपतये यजमान मूर्तये नमः । ॐ महीधराय० । महाघोराय० महत् तत्त्वाय० । महत्तत्त्वरूपाय० । ॐ हौं हीं जूं सः शिवाय नमः अंगपूजा—(उदकैर्बिल्वपत्रैर्वा

पश्वैश्च तुलसीदलैः तिलाक्षतैर्यजन्यस्तु जीवन्मुक्तो न संशयः । ॐ देवाधिदेवाय नमः पादौपूजयामि । ॐ शिवाय

पुष्पैश्च तुलसीदलैः तिलाक्षतैर्यजन्यस्तु जीवन्मुक्तो न संशयः ।।) ॐ देवाधिदेवाय नमः पादौ पूजयामि ।। ॐ शिवाय नमः जानुनी पूजयामि ।। ॐ शंकराय नमः जंघे पूजयामि ।। ॐ शूलपाणये नमः गुल्फौ पू० ।। ॐ शम्भवे नमः कटिं पू० ।। ॐ स्वयम्भुवे नमः गुह्यं पूजयामि । (उदकस्पर्शः) ॐ महादेवाय नमः नाभिं पू० । ॐ विश्वकर्त्रे नमः उदरं पू० । ॐ सर्वज्ञाय नमः हृदयं पू० । ॐ नीलकण्ठाय नमः कण्ठं पू० । ॐ श्री कण्ठाय नमः चिबुकं पू० । ॐ सर्वतोमुखाय नमः मुखं पूजयामि ।। ॐ महेश्वराय नमः नासिकां पूजयामि । ॐ त्रिनेत्राय नमः नेत्रे पू० । ॐ शशि भूषणाय नमः शिरः पू० ।। ॐ देवाधि देवाय नमः सर्वांगं पूजयामि ।। ॐ हौं ह्रीं जूं सः शिवाय नमः ।

धूपम्—वनस्पति रसोद्भूतो० ॐ हौं ह्रीं जूं सः शिवाय नमः पंचदीपान्प्रज्वाल्य—दीपावलिं मया दत्तां गृहाण परमेश्वर । आरात्तिक प्रदानेन ममतेजो विवर्द्धय । दीपान्सम्यूज्य ॐ हौं ह्रीं जूं सः शिवाय नमः ।। नैवेद्यम्—शर्कराखण्ड खाद्यानि दधि क्षीरघृतानि च । आहारो भक्ष्य भोज्यं च नैवेद्यम् प्रतिगृह्यताम् ।। सुसंस्कृतान्नं सघृतं पयोयुतं सशर्करं हाटक पात्र संयुतम् । नैवेद्यमेत्प्रगृहाण शम्भो नमः शिवायेति समर्पयामि ।। इदममृत स्वरूपं नैवेद्यं समर्पयामि ।। जलम्—ॐ नाड्याऽआसीदन्त रिक्ष ८ शीष्णोद्यौः समवर्त्तत० । गंगाजलं सर्वगुणैर्युतं विभो विष्णवर्द्धिं जातं हिम बालुकान्वितम् । स्थितं पवित्रे कल धौत पात्रे गृहाण पानीयमिदं सुशीलतलम् । (गरल) (पारा) अर्पण करे)

नैवेद्यांगमाचमनीयम्—सर्वलोक हितार्थाय सर्वपापविनाशन । कुरुष्वाचमनं देव शिव भक्त्या निवेदितम् ।। धूपमाघ्रापयामि । दीपं दर्शयामि ।। नैवेद्यं निवेदयामि ।। ॐ सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्रीसाम्बसदाशिवाय—इदममृतस्वरूपं नैवेद्यं समर्पयामि ।। ॐ हौं ह्रीं जूं सः शिवाय नमः । जपार्थे विनियोगः ॐ अस्य

श्री षडक्षर शिवमंत्रस्य वामदेव ऋषिः पंक्तिश्छन्दः सदाशिवो देवता पूर्वकृत संकल्प सिद्धये जपे विनियोगः । ॐ
 शिवायनमः (ॐ नमः शिवाय) ॥ १०८ ॥ ॐ गुह्यातिगुह्य गोप्तात्वं गुहाणास्मत्त्वृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु भो देव
 त्वत्प्रसान्महेश्वर ॥ ताम्बूलम्—पूंगीफलं महद्विव्यं नागवल्ली दलान्वितम् । एला लवंग संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥
 ॐ हौं ही जूँ सः शिवाय नमः नानाफलानि—फलेन फलितं सर्वत्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ तस्मात्फल प्रदानेन पूर्णाः
 यन्तु मनोरथाः ॥ विल्वफलम् । अष्टोत्तरीपूजा संकल्पः—ॐ विष्णु अमुकोऽहं (सपत्नीकोऽहं) अमुकद्रव्यनिर्मितानां,
 अमुक संख्याकानां पार्थिव लिंगानां (अमुकशिवस्य) बिल्वपत्र तुलसीदल तुलसीमंजरी यव तिलाक्षत दूर्वा पुष्पादिभिः
 (कालेतिल) अष्टोत्तर शत नामार्चनं करिष्ये । विनियोगः—ॐ अस्य श्री शिवाष्टोत्तर शतनाम मंत्रस्य नारायण ऋषि
 रनुष्टुप् छन्दः श्रीसदाशिवो देवता गौरी उमाशक्तिः ममाभीष्टसिद्धये श्री साम्बसदा शिवप्रीतये बिल्वपत्रादिकैरष्टोत्तर
 शतनामभिः पूजने विनियोगः ॥ ॐ शिवाय नमः । ॐ महेश्वराय नमः । ॐ शम्भवे० पिनाकिने० शशिशेखराय०
 वामदेवाय० विरूपाक्षाय० कपर्दिने० नीललोहिताय० शंकराय० शूलपाणये० खट्वांगिने० विष्णुबल्लभाय०
 शिपिविष्टाय० अम्बिकानाथाय० श्रीकण्ठाय० भक्तवत्सलाय० भवाय० शर्वाय० त्रिलोकेशाय० श्री शितिकण्ठाय०
 शिवाप्रियाय० उग्राय० कपालिने० कामारये० गन्धकासुरसूदनाय० गंगाधराय० ॥ १२७ ॥ ललाटाक्षाय० कालकालाय०
 कृपानिधये० भीमाय० परशुहस्ताय० मृगपाणये० जटाधराय० कैलासवासिने० कवचिने० कठोराय० त्रिपुरान्तकाय०
 वृषांकाय० वृषभारूढाय० भस्मोद्धूलितविग्राहाय० सामप्रियाय० स्वरमयाय० त्रिमूर्तये० अनीश्वराय० सर्वज्ञाय०
 परमात्मने० सोमसूर्याग्निलोचनाय० हविषे० यज्ञमयाय० सोमाय० पंचवक्त्राय० सदाशिवाय० विश्वेश्वराय ॥ ५४ ॥
 वीरभद्राय० गणनाथाय० प्रजापतये० हिरण्यरेतसे० दुर्धर्षाय० गिरीशाय० गिरिशाय० अनघाय० भुजंगभूषणाय०

भर्गाय० गिरिधन्विने० गिरिप्रियाय०, कृत्तिवाससे० पुरारातये० भगवते० प्रमथाधिपाय० मृत्युञ्जयाय० सूक्ष्मतनवे०
 जगद्व्यापिने० जगद्गुरवे० व्योमकेशाय० महासेनाय० जनकाय० चारुविक्रमाय० रुद्राय० भूतपतये० स्थाणवे ॥ ८१ ॥

भर्गाय० गिरिधन्विने० गिरिप्रियाय०, कृत्तिवाससे० पुरारातये० भगवते० प्रमथाधिपाय० मृत्युजयाय० सूक्ष्मतनवे०
 जगद्व्यापिने० जगद्गुरवे० व्योमकेशाय० महासेनाय० जनकाय० चारुविक्रमाय० रुद्राय० भूतपतये० स्थाणवे॥ ८१॥
 अहिर्बुध्न्याय० दिगम्बराय० अष्टमूर्तये० अनेकाल्मने० सात्त्विकाय० शुद्धविग्रहाय० शाश्वताय० खण्डपरशवे० अजाय०
 पाशविमोचकाय० मृडाय० पशुपतये० देवाय० महादेवाय० अव्ययाय० प्रभवे० पूषदन्तभिदे० भगनेत्रभिदे०
 अपवर्गप्रदाय० १००॥ अव्यग्राय० अव्यक्ताय० अनन्ताय० दक्षाध्वरहराय० सहस्राक्षाय० तारकाय० हराय० सहस्र
 पदे० ॥ ॐ साम्बसदा शिवाय नमः ॥ नैवेद्यम् उत्थाप्य—वाणरावणचण्डीशनन्दिभृगिरिटादयः । सदाशिव प्रसादोऽयं
 सर्वे गृह्णन्तु शाम्भवाः ॥ नीराजनम्—ॐ जयदेव महादेव जयशंकर शाश्वता जयसर्वसुराध्यक्ष जय सर्वसुराच्चिर्वत ॥
 जय सर्वगुणातीत जय सर्ववरप्रद । जयनित्यं निराधार जय विश्वभराव्यय ॥ जयविश्वेकवन्द्येश जय
 नागेन्द्रभूषण ॥ जयगौरीपते शम्भो जय चन्द्रार्कशेखर ॥ जय कोट्यर्कसंकाश जयानन्तगुणाश्रय । जय रुद्र
 विरुपाक्ष जयाचिन्त्य निरंजन ॥ जय नाथ कृपासिन्धौ जयभक्तार्ति भंजन । जय दुस्तरसंसारसागरोत्तारण प्रभो ॥
 प्रसीद मे महाभाग संसारार्तस्य खिद्यतः । सर्वपापक्षयं कृत्वा रक्ष मां परमेश्वर ॥ महादारिद्र्यमग्नस्य महापापहतौजसः
 महाशोकविनष्टस्य महारोगातुरस्य च ॥ ऋणभार परीतस्य दह्यमानस्य कर्मभिः । ग्रहैः प्रपीड्यमानस्य प्रसीद
 परमेश्वर ॥ दरिद्रः प्रार्थयेद्देवं पूजान्ते गिरिजापतिम् । अर्थाढ्यो वापि राजा वा प्रार्थयेद्देवमीश्वरम् । दीर्घमायुः
 सदारोग्यं कोशवृद्धिर्बलोन्नतिः ममास्तु नित्यमानन्दः प्रसादात्तव शंकर ॥ शत्रवः संक्षयं यान्तु प्रसीदन्तुमम ग्रहाः ।
 नश्यन्तु दस्यवो राष्ट्रे जनाः सन्तु निरामयाः ॥ दुर्भिक्षमारीसन्तापाः शमं यान्तु महीतले । सर्वेश्वर्यं समृद्धिश्च भूयात्
 सुखमया दिशः ॥ अन्तस्तेजो बहिस्तेजः एकीकृत्यामितिप्रभो । आरार्तिकमिदं देव गृहाण मम सिद्धये ॥

विशेषार्घ्यम्—रक्ष—रक्ष महादेव रक्षत्रैलोक्य रक्षक । भक्तानामभयं कर्ता त्राताभयभवार्षवात् ।। वरदत्वं वर देहिवाञ्छितं वाञ्छितार्थदः । अनेन सफलाध्यर्णेण वरदो भव सर्वदा ।। प्रार्थना—ॐ हे चन्द्रचूड मदनान्तक शूलपाणे स्थानो गिरीश गिरिजेश महेश शम्भो । भूतेश भीतिभवसूदन मामनाथं संसार दुःखगहनाज्जगदीश रक्ष । हे पार्वती हृदयवल्लभ चन्द्रमौले भूताधिप स्मरहर प्रमथाधिनाथ । हे वामदेव भव रुद्र पिनाकपाणे संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष । हे विश्वनाथ शिव शंकर देवदेव गंगाधर प्रमथनायक नन्दिकेश । वागीश्वरान्धकरिपो हर लोकनाथ संसार दुःख गहनाज्जगदीश रक्ष । विश्वेश विश्वभुवनाश्रित विश्वरूप ताप त्रयोपशमनैक गुरौ भवेश । हे दीननाथ करुणामय दीनबन्धो संसारदुःख गहनाज्जगदीश रक्ष । पंचरत्नमिदं स्तोत्रं यः पठेत्प्रयतः शुचिः । पुत्रपौत्रादिकं सौख्यं लभते नात्र संशयः । षडक्षरस्तोत्र—ॐ काररूपाय महेश्वराय नमो नकाराय निरंजनाय । मकार रूपाय महेश्वराय नमः शकाराय शशांक मौलये ।। वकार रूपाय विरूप च क्षुब्धे नमो यकाराय यमादितारिणे । अथ शिवपंचाक्षर—ॐ नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वराय नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै न काराय नमः शिवाय ।। १ ।। मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वर प्रमथनाथमहेश्वराय । मन्दारपुष्पवहुषुसुपूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय ।। २ ।। शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द—सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय श्री नीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै शकाराय नमः शिवाय ।। ३ ।। वशिष्ठ कुम्भो द्रवगौतमार्यमुनीन्द्र देवा चित्तशेखराय । चन्द्राकवैश्वानरलोचनाय तस्मै व काराय नमः शिवाय ।। ४ ।। यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय । दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै य काराय नमः ।। ५ ।। पंचाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ । शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदत ।। ६ ।। विशेष प्रार्थना—नमोऽस्तु स्थाणुरूपाय ज्योतिर्लिङ्गामृतात्मने । चतुर्मूर्तिमवस्थाय भासिताङ्गाय शम्भवे ।।

सर्वज्ञानविज्ञानप्रदानक महात्मने । नमस्ते देवदेवेश सर्वभूतहिते रत ।। अनन्तकान्ति—सम्पन्न ह्यनन्तासनसंस्थित ।। अनन्तशक्ति सम्भोग परमेश्वर नमोऽस्तु ते ।। बहुरूप महारूप सर्वरूपोत्तमोत्तम । व्याघ्रचर्मसमासीन दृढव्रत नमोऽस्तु

सर्वज्ञानविज्ञानप्रदानक महात्मने । नमस्ते देवदेवेश सर्वभूतहिते रत । । अनन्तकान्ति-सम्पन्न ह्यनन्तासनसंस्थित । । अनन्तशक्ति सम्भोग परमेश्वर नमोऽस्तु ते । । बहुरूप महारूप सर्वरूपोत्तमोत्तम । व्याघ्रचर्मसमासीन दृढव्रत नमोऽस्तु ते । परात्पर परातीत उत्पत्तिस्थितिकारक । सर्वार्थसाधनोपाय विश्वेश्वर नमोऽस्तु ते स्वभावनिर्मलाकर सर्वव्याधि विनाशन । योगी योगप्रदो यज्ञो योगेश्वर नमोऽस्तु ते । । प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा तु लिङ्गस्तवमुदीरयेत् । लिङ्गस्तव महत्पुण्यं यः शृणोति सदा नरः । । नोत्पद्यते हि संसारे स्थानं प्राप्नोति शम्भवम् । तस्मात् सर्व प्रयत्नेन शृणुयात् पार्थिवस्तवम् । । पापकंचुकनिर्मुक्तः प्राप्नोति परमं पदम् । । आत्मा त्वं गिरिजापतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं, पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः । संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो, यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् । । शिवो गुरुः शिवो देवः शिवो बन्धुः शरीरिणाम् । । शिव आत्मा शिवो जीवः शिवादन्यन्न किंचन । । नमस्ते देवदेवेश नमस्ते धरणीधर । नमस्ते जगतां नाथ त्राहि मां शरणागतम् । । ॐ हरभवं शिवरुद्र चन्द्रमौले गिरिश गणेश महेश पार्वतीश । इति मम वदतो दिनानि यान्तु स्मरहर किं बहुजल्पकल्पनाभिः । । भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम् । त्वयि जाताऽपराधानां त्वमेव शरणं प्रभो । । अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे-पदे । कः परः सहनोलोके केवलं स्वामिनं विना । । अपराध सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया । दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरः । । कोटयो ब्रह्माहत्यानामगम्यागम्यकोटयः । सद्यः प्रलयमायान्ति महादेवस्य कीर्तनात् । । वयं धन्या वयं धन्यं वयं धन्या जगत्पते । शिवे भक्तिः शिवे भक्तिः शिवे भक्तिर्भवे भवेत् । । सदा भूयात् सदा भूयात् सदा भूयान्न संशयः । । मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नस्त्वत्समो न हि । इति सच्चिन्त्य सं चिन्त्य प्राणान्सन्धारयाम्यहम् । । मा मतिः परदारेषु पर द्रव्येषु मा मतिः परापवादिनी जिह्वा मा भूज्जन्मनि जन्मनि । करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं

वा श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् । विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व । जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो ।। शिवतत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर यादृशोसि महादेव तादृशाय नमो नमः ।। प्रदक्षिणा—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च । तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे ।। पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पापसम्भवः त्राहि मां पार्वतीनाथ शरण्यो मे भवाधुना । सर्वपापक्षयं कृत्वा ह्यभीष्टं कुरु मे प्रभो ।। ॐ हौं ह्रीं जूं सः शिवाय नमः । दक्षिणा संकल्प—ॐ विष्णुः ३ अमुकोऽहं श्रुति स्मृति—पुराणोक्त फलावाप्तये अमुककामनया अमुकव्रतांग त्वेन अमुकशिवलिंगोपरि श्री सदाशिवस्य पूजनकर्मणः सांगफलप्राप्त्यर्थं न्यूनातिरिक्त परिपूर्णतासिद्धये इदं सुवर्णं सुवर्णनिष्कयीभूतं द्रव्यं वा ब्राह्मणाय (ब्राह्मणभ्यो वा) विभज्य दास्ये, ॐ तत्सन्न मम । (दशाशहवनादि कर्म भी करे ।।)

श्री सत्यनारायण पूजा विधि

घृष्टं च तुलसी काष्ठं कर्पूरागरु योगतः । अथवा केसरैर्योज्यं हरिचन्दनमुच्यते ।। (कदली स्तम्भ तथा पद्म आदि से सुरम्य मण्डप बनावे । तण्डुलों के ऊपर भगवान् विष्णु (सत्यनारायण) जी की प्रतिमा स्थापित करे । गाय का दूध । (कच्चा) दधि, घृत, मधु शक्कर से पंचामृत । अष्टोत्तरी में जौ तुलसीदल विशेष हैं । बिल्वपत्र तथा श्वेत तिल । गंगाजल, केला सवाया प्रसाद ।। पूर्वाभिमुख सपरिवार बैठकर शान्तचित्त होकर पूजे । पूर्वांगपंचांग कर्म करके पूजा संकल्प करे) ॐ विष्णुः ३ ।। अद्योहं अमुकोऽहं श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलावाप्तये सकल मनोवाञ्छित सिद्धिद्वारा अस्यां मूर्तौ (सुवर्णप्रतिमायां) श्रीसत्यनारायणदेवस्य यथालब्धोपचारैः पूजनं करिष्ये ।

पीठपूजा—ॐ विमलायै नमः । उत्कर्षिण्यै नमः । ज्ञानायै० । क्रियायै० । योगायै० । प्रहै० । सत्यायै० ।

ईशानायै० । मध्ये अनुग्रहायै ॐ नमो भगवते सर्व देवात्मने श्री सत्यनारायण सर्वात्म संयोग पीठात्मने ।। (अप्रतिष्ठित प्रतिमा हो तो प्रतिष्ठा, प्राणप्रतिष्ठा करके पीठ पर स्थापित करे) प्रतिष्ठा-ॐ एतन्ते देव सवितर्यज्ञ ८. प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमवतेन यज्ञपतिं तेन मामव । मनो जूतिज्जुषतामाज्यस्य ब्रह्मस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं तज्ञ ८. स मिमं दधातु विश्वेदेवासइह मादयन्तामो प्रतिष्ठ ॐ भूर्भुवः स्वः अस्यां सुवर्णं प्रतिमायां श्रीसत्यनारायणदेव इहागच्छ इह तिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव ।। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं श्री सत्यनारायण देवस्य प्राणा इह प्राणा । ॐ आं ह्रीं० श्री सत्यनारायण देवस्य जीव इह स्थितः । एवं सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रघ्राण पाणि पादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखंचिरं तिष्ठन्तुस्वाहा । अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ।। (१५ बार ॐ कार की आवृत्ति करे) अनेन श्री सत्यनारायण देवस्य पञ्चदश संस्कारान् सम्पादयिष्ये । (ऐसा उच्चारण करके गन्धाक्षत पुष्प संक्षेप में चढ़ावै)

अथ ध्यानम्-ॐ ध्याये सत्यं गुणातीतं गुणत्रय समन्वितम् । लोकनाथं त्रिलोकेशं कोस्तुभाभरणं हरिम् ।। नवाम्भोज नेत्रं रमा केलिपात्रं चतुर्बाहु चामीकरं चारुगात्रम् जगत्त्राण हेतुरिपुधूम्रकेतुं सदा सत्यनारायणं स्तौमि देवम् ।। ॐ सत्यनारायणदेवाय नमः ध्यानं समर्पयामि ।। आवाहनम्-दामोदर समागच्छ लक्ष्म्या सह जगत्पते । इमां मया कृतां पूजां गृहाण सुरसत्तम । ॐ सत्यनारायण देवाय नमः । आवाहनं समर्पयामि ।। वरं देहि सुरश्रेष्ठ दासोऽहं तव सर्वदा । आसनं देव देवेश गृहाण पुरुषोत्तम ।। आसनं समर्पयामि ।।

पाद्यम्-नारायण नमस्तेऽस्तु नरकार्णव तारक । पाद्यं गृहाण देवेश मम सौख्यं विवर्द्धय ।। गंगा च यमुना चैव नर्मदा च सरस्वती । तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम् । अर्घ्यम्-व्यक्ताव्यक्त स्वरूपाय हृषीकपतये नमः ।

मयानिवेदितं भक्त्या गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते । अर्घ्यांगमाचमनीयम्—ॐ मन्दाकिन्यास्तु यदवारि सर्वपापहरं शुभम् । तदिदं कल्पितं देव सस्यगाचम्यतां त्वया । गंगा जलेन स्नानम्—गंगा च यमुना चैव चन्द्रभागा सरस्वती । कृष्णा च गौतमी वेणी क्षिप्रसिन्धुस्तथैव च । । तापी पयोष्णी रेवा च ताभ्यो नीरं समाहृतम् । प्रसन्नो भव देवेश कुरु स्नानं जगत्पते । पंचामृतेन स्नानम् । । पयो दधि घृतं चैव मधु शर्करयान्वितम् । । पत्र्यामृतं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् । । शुद्धोदकस्नानम्—परमानन्द बोधाब्धिनिरग्न निजमूर्तये । सांगोपांगमिदं स्नानं कल्पयामि प्रसीद मे । ॐ श्री सत्यनारायण देवाय नमः स्नानांगमाचमनीयम् समर्पयामि । अंगप्रोक्षणम् (पुष्पेण) वस्त्रोपवस्त्रम्—(दो पीले वस्त्र) वेद सूत्र समायुक्ते यज्ञ साम समन्विते । सर्ववर्णं प्रदे देव वाससी ते विनिर्मिते । । वस्त्रांगमाचमनीयम् । यज्ञोपवीतम्—ब्रह्मविष्णुमहेशेन निर्मितं ब्रह्मसूत्रकम् । यज्ञोपवीतदानेन प्रीयतां कमलापतिः । यज्ञोपवीतांगमाचमनीयम् चन्दनम् (अष्टगन्ध—चन्दन, अगर, हल्दी (रोली) वनहल्दी, कुंकुम, गोलोचन, जटामांसी, मुरा, कर्पूर केसर, तुलसीकाष्ठ में से कोई ४. पदार्थ) ॐ श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुश्रेष्ठं चन्दनं प्रतिगृह्यताम् । । ॐ त्वां गन्धर्वाऽखनैस्त्वामिन्द्रस्त्वां वृहस्पति त्वामोषधे सोमो राजाविद्वान् यक्ष्मा दमुच्यत । । अक्षतार्थं यवान् (जौ चढ़ावें) पुष्पाणि—माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो । मयानीतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् । पुष्पमाला—ॐ सत्यनारायणदेवाय नमः । ।

आवरणपूजा—(गन्धाक्षत पुष्प से विष्णु के १४ आवरण देवता) ॐ ब्रह्मणे नमः । ॐ जयन्ताय नमः । ॐ इन्द्राय नमः । ॐ अग्नये नमः । ॐ यमाय नमः । ॐ निऋतये नमः । ॐ वरुणाय नमः । ॐ वायवे नमः । ॐ सोमाय नमः । ॐ ईशानाय नमः । ॐ अप्सरोगणेभ्यो नमः । ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः । ॐ गुह्यकेभ्यो नमः । ॐ विद्याधरेभ्यो नमः ।

अथ अंगपूजा—(जौ) ॐ दामोदराय नमः पादौ पूजयामि । ॐ माधवाय नमः जाननी पूजयामि । ॐ कामपतये नमः

अथ अंगपूजा—(जौ) ॐ दामोदराय नमः पादौ पूजयामि । ॐ माधवाय नमः जानुनी पूजयामि । ॐ कामपतये नमः गुह्यं पूजयामि । (उदकस्पर्शः) ॐ वामन मूर्तये कटिं पू० । पद्मनाभाय नाभिं पू० । विश्व मूर्तये० उदरं पू० । ज्ञानगम्याय० हृदयं पू० । नारायणाय० कण्ठं पू० । सहस्र बाहवै० बाहू पू० । योगिने० चक्षुषी पू० । उरगाय० ललाटं पू० । नागेश्वराय० नासिकां पू० । श्रवणेशाय० श्रवणे पू० । सर्वकामदाय० शिखां पू० । सहस्रशीर्ष्णे नमः शिरः पू० । ॐ सर्वरूपिणे नमः सर्वांगं पूजयामि । तुलसीदलानि (२४) ॐ केशवाय नमः ॐ नारायणाय नमः । माधवाय० । गोविन्दाय० । विष्णवे० । मधुसूदनाय० । त्रिविक्रमाय० । वामनाय० । हृषीकेशाय० । पद्मनाभाय० । दामोदराय० । संकर्षणाय० । वासुदेवाय० । अनिरुद्धाय० । पुरुषोत्तमाय० । अधोक्षजाय० । नारसिंहाय० । अच्युताय० । जनार्दनाय० । उपेन्द्राय० । हरये० । कृष्णाय० । ॐ प्रणवाय नमः । । (धूप में गन्धाक्षत चढ़ावै) धूपम्—वनस्पतिरसोदिव्यो गन्धाढ्यः सुमनोहरः । आग्नेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् । । दीपः (चार बत्ती घृतपूर्ण) चतुर्वर्तिं समायुक्तं घृतेन च सुपूरितम् । अन्धकार विनाशाय गृहाण जगदीश्वर । । दीपपूजनम्—ॐ भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने । त्राहि मां निरयाद घोराद् दीप ज्योतिर्नमोस्तुते । । (देवता के वाम भाग में धूप, दाहिने भाग में दीप) दीपं प्रणमेत्—शुभं करोतु कल्याणमारोग्यं सुखसम्पदाम् । मम बुद्धि प्रकाशं च दीप ज्योतिर्नमोस्तुते । ।

शंखपूजनम्—शंखादौ चन्द्र दैवत्यं कुक्षौ वरुण देवता । पृष्ठे प्रजापतिश्चैव । ह्यग्रे गंगा सरस्वती । । त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया, शंखेतिष्ठन्तिविप्रेन्द्र तस्मात् शंखं प्रपूजये । । (शंख के मुख में शंख गायत्री पढ़े) ॐ पञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि । तन्नः शंखः प्रचोदयात् । घण्टापूजनम्—आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु राक्षसाम् । घण्टापूजां करोम्यद्य सर्वकार्यार्थं सिद्ध्ये । । (तुलसीदल सहित नैवेद्य) ततो नैवेद्यम्—(पंचमेवा

पंचमिठाई बतासे दही घी आदि तथा चार प्रकार का अन्न का प्रसाद) अन्नं चतुर्विधं स्वादुरसैः षड्भिः समन्वितम् ।
 मया निवेदितं देव नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ शर्कराखण्ड खाद्यानि दधिधीर घृतानि च । आहारो भक्ष्य भोज्यं च नैवेद्यं
 प्रतिगृह्यताम् । जलं गृहीत्वा निवेदयेत्-ॐ नाभ्याऽऽसीदन्तरिक्ष ८ शौर्णोद्यौः समवर्तत । पदम्याभूमिर्दिशः श्रोत्रा
 तथा लोकाँ २ऽअकल्पयन् ॥ ग्रासमुद्रांप्रदर्शयेत्-ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ
 उदानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा । नैवेद्यांगमाचमनीयम् गंगादिजलेन 'सर्वपापहरं दिव्यं गांगेयं निर्मलं जलम् ।
 आचमनं मया दत्तं गृह्यतां पुरुषोत्तम । जपम्-(१०८ तुलसी की माला से) श्री सत्यनारायण देवाय नमः ॐ गुह्याति
 गुह्य गोप्तात्वं गृह्णाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात्सुरेश्वर (जल द्वारा जप अर्पण) ताम्बूलम्-(दो
 लौंग इलायची सुपारी कपूर सहित) पूंगीफलं महद्विव्यं नागवल्ली दलान्वितम् । एला लवंग संयुक्तं ताम्बूलं
 प्रतिगृह्यताम् । फलानि समर्पयेत्-ॐ फलेन फलितं सर्व त्रैलोक्यं सचराचरम् । तस्मात्फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु
 मनोरथाः । इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि । । भूषणार्थं द्रव्यम्-ॐ
 यद्दत्तं यत्परादानं यत्पूर्तं याश्च दक्षिणाः तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्देवेषु नो दधत् ॥ कृतायाः पूजायाः सादगुण्यार्थं इमां
 सफल-दक्षिणां समर्पयामि । । अथ अष्टोत्तर शत नामपूजनम्-संकल्पः-ॐ विष्णु ३ । । अमुकोऽहं० सकल
 मनोवाञ्छित फल प्राप्तये श्री सत्यनारायण देवप्रीतये यवतुलसीदल बिल्वपत्रादिकैः श्रीसत्यनारायण देवस्य अष्टो
 त्तरशत नामार्चनं करिष्ये । विनोयोगः-ॐ अस्य श्रीसत्यनारायण-अष्टोत्तर शतनाम मंत्रस्य नारायण ऋषिः,
 अनुष्टुपछन्दः श्रीसत्यनारायणो देवता श्री सत्यनारायणदेव-प्रीतये यव तुलसीदल विल्वपत्रादिकैः, अष्टोत्तर शत
 नामभिः पूजने विनोयोगः । ११०८ । ।

ॐ वासुदेवाय नमः । ॐ हृषीकेशाय नमः । ॐ वामनाय नमः । ॐ जनातीताय नमः । ॐ जनार्दनाय नमः ।
 ॐ हरये नमः । ॐ कृष्णाय नमः, ॐ श्रीवत्साय नमः । ॐ गरुडध्वजाय नमः, ॐ वाराहाय नमः । ॐ पुण्डरीकाक्षाय
 नमः । ॐ नृसिंहाय नमः । ॐ नरकान्तकाय नमः । ॐ अव्यक्ताय नमः ॐ शाश्वताय नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ
 अनन्ताय नमः । ॐ अजाय नमः । ॐ अव्यायाय नमः । ॐ नारायणाय नमः । ॐ जगदध्यक्षाय नमः । ॐ गोविन्दाय
 नमः । ॐ कीर्तिभाजनाय नमः ॐ गोवर्धनधराय नमः । ॐ देवाय नमः । ॐ भूधराय नमः । ॐ भुवनेश्वराय नमः,
 ॐ वेदवेत्रे नमः ॐ यज्ञपुरुषाय नमः । ॐ यज्ञेशाय नमः ॐ यज्ञवाहनाय नमः । ॐ चक्रपाणिने नमः । ॐ गदापाणिने
 नमः । ॐ शंख पाणिने नमः । ॐ नरोत्तमाय नमः । ॐ वैकुण्ठाय नमः । ॐ दुष्टदमनाय नमः । ॐ भूगर्भाय नमः ।
 ॐ पीतवाससे नमः । ॐ त्रिविक्रमाय नमः । ॐ त्रिकाल ज्ञाय नमः । ॐ त्रिमूर्तये नमः । ॐ नन्दिकेश्वराय नमः ।
 ॐ रामाय नमः । ॐ हयग्रीवाय नमः । ॐ भीमाय नमः । ॐ रौद्राय नमः । ॐ भवोद्भवाय नमः । ॐ श्रीपतये नमः ।
 ॐ श्रीधराय नमः । ॐ श्रीशाय नमः । ॐ मंगलाय नमः ॐ सर्वमंगलाय नमः । ॐ दामोदराय नमः । ॐ दमोपेताय
 नमः । ॐ केशवाय नमः । ॐ केशिसूदनाय नमः । ॐ वरेण्याय नमः । ॐ वरदाय नमः ॐ माधवाय नमः ॐ वसुदाय
 नमः । ॐ हिरण्यरेतसे नमः । ॐ दीप्ताय नमः । ॐ पुराणाय नमः । ॐ पुरुषोत्तमाय नमः । ॐ सकलाय नमः । ॐ
 निष्कलाय नमः । ॐ शुद्धाय नमः । ॐ निर्गुणाय नमः । ॐ गुणसंस्थिताय नमः । ॐ हिरण्यतनुसंकाशाय नमः । ॐ
 सूर्यसुतसमप्रभवे नमः ॐ मेघश्यामाय नमः । ॐ चतुर्बाहवे नमः । ॐ कुशलाय नमः । ॐ कमलेक्षणाय नमः । ॐ
 ज्योतिरूपाय नमः । ॐ स्वरूपाय नमः । ॐ हरिसंस्थिताय नमः । ॐ ज्ञानकूटस्थाय नमः । ॐ अचलाय नमः । ॐ
 ज्ञानाय नमः । ॐ परमाय नमः । ॐ प्रभवे नमः । ॐ योगीशाय नमः । ॐ योगनिष्ठाय नमः । ॐ योगिने नमः । ॐ

योगरूपिणे नमः । ॐ ईश्वराय नमः । ॐ सर्वभूतसमप्रभाय नमः । ॐ सर्वज्ञाय नमः । ॐ सर्वरूपाय नमः । ॐ सर्वेशाय नमः । ॐ सर्वतोमुखाय नमः । ॐ अच्युताय नमः । ॐ शान्ताकाराय नमः । ॐ भुजगशयनाय नमः । ॐ पद्मनाभाय नमः । ॐ सुरेशाय नमः । ॐ विश्वाधाराय नमः । ॐ गगनसदृशाय नमः । ॐ मेघवर्णाय नमः । ॐ शुभांगाय नमः । ॐ लक्ष्मीकान्ताय नमः । ॐ कमलनयनाय नमः । ॐ योगिभिर्ध्यानगम्याय नमः । ॐ भवभयहराय नमः । ॐ सर्वलोकैकनाथाय नमः । १९०८ । ततो नीराजनं कुर्यात्—

चार बतियों से (कपूर सहित) आरती उतारें । ॐ अविनय मपनय विष्णो०० । अग्निज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा । सूर्याज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा, अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्योव्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा । ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा । चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च । त्वमेव सर्व ज्योतींषि आरात्तिं प्रतिगृह्यताम् । । विशेषाष्ट र्यम्फलसहितम् (घुटने टेककर) नमः कमल नाभाय नमस्ते जल शायिने । नमस्तेस्तु हृषीकेश गृहाणाध्वं नमोस्तुते । । दामोदर जगन्नाथ भक्तानां भय नाशन । मया निवेदितं भक्त्या ह्यध्वं मे प्रतिगृह्यताम् । । मन्त्रपुष्पाञ्जलिः—लोकात्मा सर्व भूतात्माऽनिमेष स्तुति सम्भवः । जन्ममृत्यु जराव्याधि संसार भयनाशन । । यन्मया भक्तियुक्तेतनपत्रं पुष्पं फलं जलम् । निवेदितं च नैवेद्यं तद् गृहाणानुकम्पया । ।

पुनः प्रणामाञ्जलिः—अमोघं पुण्डरीकाक्षं नृसिंहं दैत्यसूदनम् । हृषीकेशं जगन्नाथं वागीशं वर दायकम् । । गुणत्रयं गुणातीतं गोविन्दं गरुडध्वजम् । जनार्दनं जनातीतं जानकी बल्लभं हरिम् । । प्रणमामि सदा भक्त्या नारायणमतः परम् । दुर्गमे विषमे घोरे शत्रुभिः परिपीडिते । । नित्यमापत्सु सर्वेषु तथा निष्ट भयेषु च । नामान्येतानि

संकीर्त्य-ईप्सितं फल माप्नुयात् ।। सत्यनारायणं देवं वन्देऽहं कामदं विभुम् ।। लीलया रचितं विश्वं येन तस्मै नमो नमः ।।

त्रिःप्रदक्षिणा-यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च । तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे ।।
दक्षिणा संकल्पं कुर्यात् ।।

ब्राह्मणपूजनम्-भूमिदेवा-इति अर्घ्यम् । गघाक्षतपुष्प पुष्पमालादि से वरण करें । वस्त्र यज्ञोपवीत सुपारी जनेऊ द्रव्यादि देवें । शान्तचित्त से कथा श्रवण करके महानीराजन आदि कर्म करें ।। कीर्त्तन, जागरण करें ।

भैरव पूजन

(पाँच पुष्पाञ्जलिः । अर्घस्थापन, सूर्यार्घदान, भूतोत्सादन, पुनरर्घस्थापन) संकल्पः-ॐ विष्णुः ३ ।। अमुकोऽहं श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलावाप्तये मनोवाञ्छित फलावाप्तये आपदुद्धारक वटुक भैरव प्रीत्यर्थ अस्यां प्रतिमायां आपद उद्धारकस्य वटुकभैरवस्य प्रतिष्ठावाहन पूर्वकं पूजनं करिष्ये । एतन्नेति प्रतिष्ठा । ॐ भूर्भुवः स्वः अस्यां प्रमिमायां (अस्यां मूर्त्तौ) वटुक भैरव इहागच्छ इहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव ।। अथ प्राण प्रतिष्ठा ॐ आं ह्रीं क्रौं यैं रैं लैं वैं शैं षैं सैं हैं सः सोऽहं श्री भैरवस्य प्राणा० जीव० सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्रघ्राण पाणि पादपायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । तत अक्षतैः अष्टौ भैरवान् आवाहयेत् १-पूर्व असितांगभैरवाय नमः, प्राच्यां मां रक्ष रक्ष मम कालकण्टकान् भक्ष भक्ष त्वाम् आवाहयामि अत्र तिष्ठ हुं फट् स्वाहा । २-आग्नेये रुरुभैरवाय नमः ३-दक्षिणे चण्ड भैरवाय नमः ४-नैऋत्यै क्रोध भैरवाय नमः ५-पश्चिमे-ॐ उन्मत्त भैरवाय ०

६-वायव्ये-कपाल भैरवाय ० ७-उत्तरे-भीषण भैरवाय नमः ० ८-ईशाने-संहार भैरवाय नमः ० इत्यावाह्य (ततः प्रतिष्ठा) पीठ पूजनम्-ॐ आधार शक्तये नमः । ॐ पृथिव्यै नमः । ॐ कूर्माय नमः । अनन्ताय नमः । ॐ सुधांबुधये नमः । ॐ चिन्तामणि गृहाय नमः । ॐ महोग्रशशानाय नमः । मध्ये-प्रेतवाहनाय नमः । ध्यानम्-कर कलित कपाल कुण्डली दण्डपाणिस्तरुणतिमिर नीलव्याल यज्ञोपवीतिः । क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतुर्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् । ध्यानम्-ध्यायेनीलाद्रिकान्तं शशि शकलधरमुण्डमालं महेशं, दिग्वस्त्रं पिंगकेशं डमरुमसिसृणि खड्गशूलाभयानि । नागं घण्टां कपालंकर सरसिरुहै विभ्रतं भीमद्रुणं सर्पाकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत् किंकिणीनू पुराढ्यम् । श्री भैरवाय नमः । आवाहनम्-देवेश भक्तिखुलभ परिवारसमन्वित । यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिरो भव । आसनम्, पाद्यम्, अर्घ्यम्-तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्द सम्भवम् । तापत्रयविनिर्मुक्त्यै तवार्घ्यकल्पयाम्यहम् ।

आचमनीयम्-स्नानम् पंचामृतेन-पयोदधिघृतं चैव मधुशर्करयान्वितम् । पंचामृतं हि देवेश गृह्यताम् मदनुग्रहात् । शुद्धोदक स्नानम् समर्पयामि । पुष्पेण अंगप्रोक्षणम् कृत्वा । वस्त्रम्-मायाचित्रपटच्छत्रं निजगुह्योरुतेजसम् । निरावरणविज्ञानं वासस्ते कल्पयाम्यहम् । वस्त्रांगमाचमनीयम् गन्धम् कर्पूरसंयुक्तं दिव्यचन्दनमुत्तमम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठ प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् । अक्षताः-अक्षतान् धवलान् देव सुरगन्धर्व पूजित । सर्वदेवनमस्कार्य गृहाण मदनुग्रहात् । पुष्पाणि-सुगन्धीनि सुपुष्पाणि देशकालोद्भवानि च । मया नीतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् । आवरण पूजा-ॐ श्यामवर्णाय नमः । ॐ प्रेतवाहनाय नमः । ॐ गजत्वग्वस्त्रिणे नमः । ॐ महाकालाय नमः । ॐ रुरु भैरवाय नमः । ॐ चण्ड भैरवाय नमः । ॐ असित भैरवाय नमः । ॐ कपालिने नमः । ॐ क्रोधिने नमः । ॐ

उन्मत्त भैरवाय नमः । ॐ संहार भैरवाय नमः । धूपम्-दशांगगङ्गलं धूपं सगन्धं समनोहरम् । आघेयः सर्वदेवानां

उन्मत्त भैरवाय नमः । ॐ संहार भैरवाय नमः । धूपम्-दशांगंगुगुलं धूपं सुगन्धं सुमनोहरम् । आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् । दीपं-सुप्रकाशो महान्दीपः सर्वत्र तिमिरापहः । सबाह्याभ्यन्तरज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् । ततो वटकाष्टकनैवेद्यं सम्प्रोक्ष्य सम्पूज्य (आठ बड़े) मंत्रः-ॐ एहिदेवी पुत्र बटुकनाथ कपिल जटाभासुर त्रिनेत्र स्वांगकिंकिणीक ज्वालामुख मम सर्वविघ्नान्नाशय सवोपचार सहितं भाषटकाष्टबलिं गृह गृह स्वाहा । । सांगाय सपरिवाराय श्रीभैरवाय वटकाष्टक नैवेद्यं समर्पयामि । । क्षणं ध्यात्वा जपं कुर्यात्-मंत्रः-ॐ ह्रीं वं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीम् ।" इति जपं कृत्वा ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मकृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात्सुरेश्वर । अष्टोत्तर शत पूजन संकल्पः-ॐ विष्णुः ३ । । अमुकोहं बटुकभैरवस्य रक्तपुष्पाक्षतादिभिः अष्टोत्तरशतनामभिः पूजनमहं करिष्ये । । विनियोगः-अस्य श्री बटुकभैरव अष्टोत्तरशतनाम मन्त्रस्य वृहदारण्यको ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः श्री वटुक भैरवो देवता श्री वटुक भैरव प्रीतये रक्त पुष्पाक्षतादिभिः अष्टोत्तर शत नामभिः पूजने विनियोगः । ।

ॐ भैरवाय नमः ॐ भूतनाथाय नमः । ॐ भूतात्मने नमः । ॐ भूतभावनाय नमः । ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः । ॐ क्षेत्रपालाय नमः । ॐ क्षेत्रदाय ॐ क्षेत्रियाय ॐ विराटाय ॐ श्मशानवासिने ॐ मांसाशिने ॐ खर्परशिने ॐ स्मरांतकाय ॐ रक्तपाय ॐ पानपाय ॐ सिद्धाय ॐ सिद्धिदाय ॐ सिद्धसेविताय ॐ कंकालाय ॐ कामशमनाय ॐ कलाकाष्ठातनवे ॐ कवये ॐ त्रिनेत्राय ॐ वहुनेत्राय ॐ पिंगललोचनाय ॐ शूलपाणिने ॐ खड्गपाणिने ॐ कंकालाय ॐ धूम्रलोचनाय ॐ अभीरवे ॐ भैरवीनाथाय ॐ भूतपाय ॐ योगिनीपतये ॐ धनदाय ॐ धनवते ॐ धनहर्त्रे ॐ प्रतिभावते ॐ नागहाराय ॐ नागपाशाय ॐ व्योमकेशाय ॐ

कपालभूते० ॐ त्रिलोचनाय० ॐ कालाय० ॐ कपालमालिने० ॐ कमनीयाय० ॐ कलानिधये० ॐ उज्ज्वलनेत्राय०
 ॐ त्रिशिखिने० ॐ त्रिलोकपाय० ॐ त्रिनेत्रतनयाय० ॐ डिंभाय० ॐ शान्ताय० ॐ शान्तजनप्रियाय० ॐ बटुकाय० ॐ
 ॐ वटुवेशाय० ॐ खट्वाङ्गवरधारकाय० ॐ भूताध्यक्षाय० ॐ पशुपतये० ॐ भिक्षुकाय० ॐ परिचारकाय० ॐ
 धूर्ताय० ॐ दिगम्बराय० ॐ शूराय० ॐ हरिणाय० ॐ पांडुलोचनाय० ॐ प्रशान्ताय० ॐ शांतिदाय० ॐ शुद्धाय०
 ॐ शंकराय० ॐ प्रियबांधवाय० ॐ अष्टमूर्तये० ॐ निधीशाय० ॐ ज्ञानचक्षुषे० ॐ तपोमयाय० ॐ अष्टाधाराय०
 ॐ षडधाराय० ॐ सर्पयुक्ताय० ॐ शिखिसखाय० ॐ भूधराय० ॐ भूधराधीशाय० ॐ भूपतये० ॐ भूधरात्मजाय०
 ॐ कंकालधारिणे० ॐ मुण्डिने० नागयज्ञोपवीतवते० ॐ जृम्भणाय० ॐ मोहनाय० ॐ स्तम्भिने० ॐ मारणाय० ॐ
 क्षोभणाय० ॐ शुद्ध नीलारुजनप्रख्याय० ॐ दैत्यहाय० ॐ मुण्डभूषिताय० ॐ बलिभुजे० ॐ बलिभुगनाथाय० ॐ बालाय०
 ॐ बालपराक्रमाय० ॐ सर्वापत्तारणाय० ॐ दुर्गाय० ॐ दुष्टभूतनिषेविताय० ॐ कामिने० ॐ कलानिधये० ॐ कांताय
 ॐ कामिनीवशकृते० वशिने० ॐ सर्वसिद्धिप्रदाय० ॐ वैद्याय नमः । ॐ प्रभविष्णवे नमः ।

नीराजनम् कृत्वा पुष्पाञ्जलिः—तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम । भैरवाय नमस्तुभ्यं ममाज्ञां
 दातुमर्हसि । वाराणस्यां भैरवो देवो संसार भयनाशनः । सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ।। कोटयो ब्रह्महत्यानां
 गम्यागम्यकोटयः । सद्यः प्रलयमायान्तु भैरवस्य च कीर्त्तनात् ।। दक्षिणासंकल्प—ॐ विष्णुः ३ ।। श्रुति स्मृति पुराणोक्त
 फलावाप्तये मनोभिलषितफल प्राप्तये (पूर्वकृत संकल्प सिद्ध्यै) वटुकभैरव प्रीत्यर्थं कृतस्य यथा ज्ञानेन पूजन कर्मणः
 सांगोपांग फल प्राप्त्यर्थं इमां दक्षिणां ब्राह्मणाय दास्ये तथा श्री भैरव देव प्रीतये अष्टौ वटुकान् (८ बालकौ को)
 ब्राह्मणं च भोजयिष्ये । विशेष—बच्चै के जन्म से २२वें दिन वटुक भैरवस्तोत्र पाठ पूजा तथा रोट, भेंट चढ़ाते

ॐ ।

पीपल पूजा (शनिवासर)

संकल्पः मम अमुक स्थान स्थितेन शनिना समस्त पापक्षय पूर्वकं अभीष्ट सिद्धि द्वारा श्री विष्णु देव प्रीतये अश्वत्थ पूजनं करिष्ये । ध्यानम्—अश्वत्थाय वरेण्याय सवैश्वर्य प्रदायिने । अनन्तशिव रूपाय वृक्षराजायते नमः । ॐ अश्वत्थाय नमः ध्यानम् समर्पयामि । आवाहनम्—मूलतोब्रह्म रूपाय मध्यतो विष्णु रूपिणे । अग्रतः शिवरूपाय वृक्षराजायते नमः ॐ अश्वत्थाय नमः आवाहनम् समर्पयामि । आसनम्—अग्निगर्भः शमीगर्भो देवगर्भः प्रजापतिः हिरण्यगर्भो भूगर्भो यज्ञगर्भो नमोस्तुते । इत्यासनम् पाद्यम् आयुर्बलं यशोवर्च, प्रजाः पशुवसूनि च ब्रह्म प्रज्ञां च मे धां च त्वं नो देहि वनस्पते । । अर्घ्यम्—त्वं क्षीरफलकश्चैव शीतलश्च वनस्पते । त्वामाराध्यनरो विद्यादैहि कामुभिकं फलम् । । आचमनीयम्—चलद् दलाय वृक्षाय सर्वदाश्रित विष्णवे । बोधितत्वाय देवाय हयश्वत्थाय नमो नमः । वस्त्रम्—एकादशात्मरुद्रोऽसि वसूनां च शिरोमणिः । नारायणोऽसि देवानां वृक्षराजोऽसि पिप्पलः । यज्ञोपवीतं—क्षीरोदस्त्वं च येनेह येन श्रीस्त्वां निषेवते । सत्येन तेन वृक्षेन्द्र मामपिश्रीर्निषेवताम् । गन्धम्—श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठ गृहाण देव पिप्पल । पुष्पाणि—यं दृष्ट्वा मुच्यते रोगैः स्पृष्ट्वा पापैः प्रमुच्यते । यदाश्रयाच्चिरं जीवीतमश्वत्थं नमाम्यहम् । धूपम् दीपम् नैवेद्यम्—नैवेद्यम् गृह्यतां देव भक्तिं मे हयचलां कुरु । ईप्सितं च बरं देहि परत्रेह गतिं शुभाम् । । जपम्—ॐ अश्वत्थाय नमः । ताम्बूलं पूंगीफलं दक्षिणाद्रव्यम् । नीराजनम् । । प्रार्थना—ऋग्यजुः साममंत्रात्मा सर्वरूपी परात्परः । अश्वत्थो वेदमूलोऽसि ऋषिभिः प्रोच्यते सदा । । आयुः प्रजां धनं धान्यं सौभाग्यं सर्वसम्पदम् । देहि देव महावृक्ष त्वामहं शरणं गतः । अश्वत्थयस्मात्त्वयि वृक्षराज नारायणस्तिष्ठति

सर्व कालम् । अतः श्रुतस्त्वं सततं तरूणां धन्योऽसि चारिष्टविनाशकोऽसि । । सप्त प्रदक्षिणां कृत्वा दक्षिणादानादिकं कर्म कुर्यात् ।

सन्तान गोपाल जप विधि:

दीपं प्रज्वाल्य आचम्य गणपत्यादि सर्वदेव पुष्पाञ्जलि अर्घस्थापन सूर्यार्घ्यदान सकल्पः—अमुकोऽहं मम पुत्र
प्राप्तिबाधक दुष्ट ग्रह (अमुक) बाधा निरसन पूर्वकं दीर्घायुष्यपुत्र प्राप्तये श्री कृष्णदेव प्रीतये अमुक संख्यया
(सपादलक्ष) ब्राह्मण द्वारा जपं कारयिष्ये । ब्राह्मणमध्यादिभिः सम्पूज्य वरण सामग्रीं दद्यात् । विनियोगः ॐ अस्य
सन्तान गोपाल मंत्रस्य नारद ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीगोपालो देवता सन्तान गोपाल प्रसाद सिद्ध्यर्थं जपे
विनियोगः । न्यासाः ॐ देवकी सुत गोविन्द अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ वासुदेव जगत्पते—तर्जनीभ्यां नमः । ॐ देहि मे
तनयं कृष्णमध्यमाभ्यां नमः । ॐ देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पतेकनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ देहि मे तनयं कृष्ण
त्वामहं शरणं गतः करतलपृष्ठाभ्यां नमः । इसी प्रकार हृदय आदि न्यास करे— उपरोक्त मंत्रों से यथा—१—हृदयाय
नमः । २—शिरसे स्वाहा । ३—शिखायै वषट् । ४—कवचाय हुम् । ५—नेत्रत्रयाय वौषट् । ६—अस्त्राय फट् । ध्यानम्—ॐ
वैकुण्ठ तेजसा दीप्तमर्जुनेन समन्वितम् । समर्पयन्तं विप्राय नष्टनानीय बालकान् । अथ जप मंत्रः—ॐ क्लीं देवकी
सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते । देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः क्लीं ॐ । जपान्ते उत्तरन्यासाः । तद्दशांश
हवनानि कर्म कुर्यात् । पुत्रेष्टि मंत्रः—ॐ आदित्यं गर्भं पयसा समङ्घ्रि सहस्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम् परिवृङ्घि ह्रस्वा
माभिम ४. स्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानः । । अनेन मंत्रेण जपं कुर्यात् जपदशांश पायस होमं कृत्वा अवशिष्ट
पायसं साप्राशयेत् तदा सा पुत्रवती भवेत् ।

महामृत्युञ्जय जपविधिः—दीपं प्रज्वाल्य आचम्य गणपति पूजनं कृत्वा संकल्पः—ॐ विष्णुं ३ अद्यहेत्याद्युच्चार्य श्रुतिस्मृति पुराणोक्तफलावाप्तये मम शरीरे (अमकराशः) अमक इर्मणः (अमकरोपशितः) अमकरोपशितः

महामृत्युञ्जय जपविधिः—दीपं प्रज्वाल्य आचम्य गणपति पूजनं कृत्वा संकल्पः—ॐ विष्णु ३ अद्यहेत्याद्युच्चार्य श्रुतिस्मृति पुराणोक्तफलावाप्तये मम शरीरे (अमुकराशेः अमुक शर्मणः शरीरे) अमुकरोग निरसन पूर्वकं सद्य आरोग्यता प्राप्तये श्रीमहामृत्युञ्जय देव प्रीतये श्रीमहामृत्युञ्जयमंत्रस्य जपं करिष्ये । (अमुकसंख्या में एकादश शत या एकादशसहस्र अथवा सपादलक्ष (सवा लाख का संकल्प करे) अथवा ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये । वरणं कृत्वा :—विनियोगः ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जय मंत्रस्य वसिष्ठ ऋषिः श्री मृत्युञ्जय रुद्रो—देवता अनुष्टुप् छन्दः हौं बीजम् जौं शक्तिः सः कीलकं महामृत्युञ्जय देव प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥ अथन्यासाः ॐ वसिष्ठ ऋषये नमः शिरसि । ॐ अनुष्टुप् छन्द से नमः मुखे । ॐ महामृत्युञ्जयाय रुद्रदैवत्याय नमः हृदये । ॐ हौं बीजाय नमः—गुह्ये (उदकस्पर्शः) ॐ जौं शक्तये नमः—पादयोः । ॐ सः कीलकाय नमः—सर्वांगेषु । ॐ अथ करन्यासाः ॐ त्र्यम्बकम्—अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ यजामहे—तर्जनीभ्यां नमः । ॐ सुगन्धिमुष्टिवर्द्धनम्—मध्यमाभ्यां नमः । ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात्—कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्—करतल करपृष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादि न्यासान् कृत्वा ध्यानम्—ॐ चन्द्रोद्भासितमूर्ध्नि सुरपतिं पीयूषपात्रं महद हस्ताब्जेन दधत् सुदिव्यममलं हास्यास्य पंकरुहम् । सूर्याग्नीन्दु विलोचनं करतलैः पाशाक्षसूत्रं कुशाम्भोजं बिभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं तं स्मरे ॥

मृत्युञ्जयमंत्रः—ॐ हौं जौं सः ॐ भू भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टि वर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् स्वः भुवः भूः ॐ सः जौं हौं ॐ ॥ (अत्यन्तभयानक रोग निवृत्ति के लिये महामृत्युञ्जय जप) महामृत्युञ्जय मन्त्र—ॐ हौं जौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टि वर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् । त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिवेदनम् । उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मा मुत स्वः भुवः भूः ॐ सः जौं हौं ॐ ॥ इति जपेत् ॥ (दशांश हवनादिकर्म करके अभिषेक) ॥

मंगलव्रतपूजा

ॐ विष्णुः ३ अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकराशिः अमुकशर्मा अहं श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलावाप्तये सकलबांछितसिद्ध्यर्थम् ऋणव्याधिनाशार्थं पुत्रधनप्राप्तये च अमुक कामनया कृतभौमवार व्रतांगत्वेन यन्त्रे पीठे वा श्रीभौमदेवस्य यथालब्धोपचारैः पूजनं करिष्ये । पीठपूजा—(लाल अक्षतौ से) ॐ रक्तप्रभायै नमः ॐ रक्तायै नमः ॐ रक्तचरणायै० अतिरक्तगन्धायै० रक्तवसनायै० द्रंष्ट्रायै० रक्ताभरणायै० रक्तांगायै० इन्द्राय० अग्नये० यमाय० सुररक्तचरणाय० वरुणाय० वायवे० सोमाय० ईशानाय० ब्रह्मणे० अनन्ताय० । बज्राय० शक्तये० दण्डाय० खड्गाय० निऋतये० निऋतये० वरुणाय० कम्पण्डलवे० चक्राय० । आदित्याय० सोमाय० भौमाय० बुधाय० गुरवे० पाशाय० अङ्कुशाय० गदायै० त्रिशूलाय० कमण्डलवे० चक्राय० । आदित्याय० सोमाय० भौमाय० बुधाय० गुरवे० शुक्राय० शनैश्चराय० राहवे० केतवे० । मंगलाय० भूमिपुत्राय० ऋणहर्त्रे० धनप्रदाय० स्थिरासनाय० महाकालाय० सर्वकर्मविरोधकाय० लोहिताय० लोहिताक्षाय० सामगानां कृपाकराय० धरात्मजाय० कुजाय० भौमाय० भूतिदाय० भूमिनन्दनाय० अंगारकाय० यमाय० सर्वरोगापहारकाय० सृष्टिकर्त्रे० अपहर्त्रे० सर्वकर्मफलप्रदाय० । त्रिकोण मध्ये—मंगलाय सांगाय सायुधाय सपरिवाराय सवाहनाय नमः । एतन्ते० प्रतिष्ठा—ॐ भूर्भुवः स्वः भौमदेव सपरिवारये—मंगलाय सांगाय सुप्रतिष्ठितो वरदो भव । ध्यानम्—बालकारुणवि ग्रहं परिलसद्—बन्धूकवस्त्रावृतं स्वाहा शक्तियुत इहागच्छ हइतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव । शक्तिं शूलमथो गदां च विमलां नित्यं समाबिभ्रत भक्तानुग्रहकारिणं धरणिजं ध्याये सुरक्तनयनं युक्तं चतुर्भिर्भुजैः । शक्तिं शूलमथो गदां च विमलां नित्यं समाबिभ्रत भक्तानुग्रहकारिणं धरणिजं ध्याये स्वहृत् पंकजे । । ध्यानम्—जपाभं शिवस्वेदजं हस्तपद्मैर्गदाशूलशक्तीर्वरं धारयन्तम् । अवनी समुत्थं समेषासनस्थं धरानन्दनं रक्तवस्त्रं भजेहम् । । आवाहनम्—भूमिपुत्रं महाबाहुं सर्वेषां च वरप्रदम् । सर्वदुःखहरं देवं भौममावाहयाम्यहम् । । आसनम्—सुवर्णकर्पटन्यास्तं नानारत्नविभूषितम् । । आसनं च मया दत्तं गृहाण ऋणमोचन । ।

पादाम्—स्वर्गगोदकमेतत्तु सुवर्णकलशाहतम् । पादार्थं च मयानीतं धनदातनमोस्तुते ॥ अर्घ्यम्—मन्दाकिनीजलं चैव नानागन्धसमन्वितम् । अर्घ्यं गृहाण देवेश मंगलाय नमोस्तुते ॥ पंचामृतम्—गंगदिजलेन स्नानम् वस्त्रं, यज्ञोपवीतं, गन्धं, अक्षताः पुष्पाणि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं जपम्—ॐ भौमदेवाय नमः ॥ ताम्बूलं, फलं, भूषणार्थं द्रव्यं, नीराजनं कुर्यात् । अर्घ्यदान मंत्रः—भूमिपुत्रो महातेजा लोहितो भूतिदो विभो । धनार्थी त्वां प्रपन्नोस्मि गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते ॥ भूमिपुत्रमहाकाय भक्तानां भूतिवर्द्धन । गृहाणार्घ्यं मया दत्तमत्र स्वस्तिकरोभव ॥ प्रसीद देवदेवेश विघ्नहन्तर्धरात्मज । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भूमिपुत्र नमोस्तु ते ॥ प्रार्थना—कुजः कुप्रभवोऽपित्वमंगलः परिगद्यसे । अमंगलं निहत्याशुसर्व दायच्छमंगलम् ॥ ऋणहर्त्रे नमस्तेस्तु दुःखदारिद्र्यनाशन । सुख सौभाग्यधनदो भव मे धरणीसुत ॥ ग्रहराज नमस्तेऽस्तु सर्वकल्याणकारक । प्रसादात्तव देवेश सर्वकल्याण भागहम् ॥ देव—दानव—गन्धर्व—यक्ष—राक्षस—पन्नगाः । प्राप्नुवन्ति शिवं सर्वं त्वत्तः पूर्णमनोरथाः ॥ प्रसादं कुरु मे भौम सौभाग्यं मंगलप्रद । बालः कुमारको यस्तु स भौमः प्रार्थितो मया ॥ प्रदक्षिणा, नमस्कारान् समर्पयेत् । (जप का मंत्र) ॐ अग्निमूर्द्धादिवः कुकुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् । अपा २ रेतां २ सिजिन्वति ॥ जप संख्या ७००० (जप करके जप का दशांश खैर की समिधा का हवन करे । मंगलवार व्रत के दिन देवीपाठ हनुमानचालीसा का पाठ करके लड्डू अर्पण करे।)

नवग्रह दान, जप संख्या, नग ।

विशेष ग्रहशांति मेरे द्वारा सम्पादित “महायज्ञ दर्पण” में देखें । सूर्य का दान—गुड़, गेहूँ, लालवस्त्र, सुवर्ण, तौबा, रक्तचन्दन, लालफल, घृत, केशर, लड्डू, माणिक, लाल गाय का दान, कमल पुष्प । जप सात हजार ।

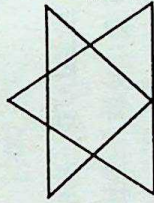
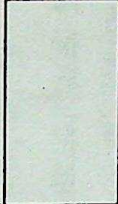
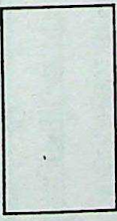
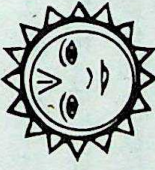
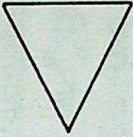
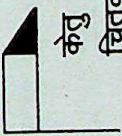
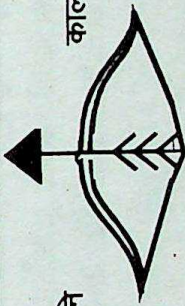
जपमंत्र-ॐ घृणिः सूर्याय नमः ॥ चन्द्रमा का दान-बांस की डलिया, शंख, चावल, दही, कपूर, चाँदी, घृत, सफेद चन्दन, सफेदवस्त्र, सफेदफूल, शक्कर (बूरा) मिसरी, मोती, घृतपूर्ण कुम्भ, वृषभ । जप ग्यारह हजार । जपमंत्र-ॐ सौ सोमाय नमः ॥ मंगल का दान-मूंगा, गेहूँ, ताँबा, गुड़ लालकनेर, लालवस्त्र, घृत । जप दस हजार, जपमंत्र-ॐ अं अंगारकाय नमः ॥ बुध का दान-काँसा, घी, मूँग, हाथी दाँत, हरा वस्त्र, पान, हराफल, हरापीला पुष्प, पन्ना, मिसरी, खाँड़, कपूर, जप नौ हजार । जपमंत्र-ॐ बुं बुधाय नमः ॥ बृहस्पति का दान-हल्दी, धार्मिक पुस्तक, पीला कपड़ा, फलफूल, पुखराज, चने की दाल, सुवर्ण, शक्कर, काँसा । जप उन्नीस हजार । जपमंत्र-ॐ बृ बृहस्पतये नमः ॥ शुक्र का दान-सफेद वस्त्र, सफेद फल, चावल, गौ चाँदी, चन्दन, शंख घृत, शक्कर, हीरा, दही, मिसरी । जप सोलह हजार । जपमंत्र-ॐ शुं शुक्राय नमः ॥ शनि का दान-नमक साबुत उड़द, तेल, काला कपड़ा, भैँस, लोहा, अस्त्र शस्त्र, सरसों, काली गाय, काला कम्बल, नीलम, सुवर्ण, कस्तूरी (खिचड़ी) जप तेईस हजार । जपमंत्र-ॐ शं शनैश्चराय नमः ॥ राहु का दान-काली गौ, तिल, तेल, नीला कपड़ा, लोहा, अश्व, गोमेद, सरसों, बकरी सप्तधान्य, नीला कम्बल, कालाफूल, सुवर्ण व शीशा, राँगा । जप अठारह हजार, जपमंत्र-ॐ रां राहवे नमः ॥ केतु का दान-बकरा, तिल, तेल, छुरी, सप्तधान्य, कम्बल, कुलथी (गहत) लहसुनिया । जप सत्रह हजार, जपमंत्र-ॐ कं केतवे नमः । राहु केतु का दान कम्बल, कुलथी (गहत) लहसुनिया । जप सत्रह हजार, जपमंत्र-ॐ कं केतवे नमः । राहु केतु का दान बुधवार या शनिवार को करना चाहिये । सुवर्ण की अँगूठी में-माणिक, मूंगा, पन्ना, नीलम, चाँदी में-मोती पुखराज, हीरा । लोहे में-नीलम भी । गोमेद और लहसुनिया पंच धातु की अँगूठी में धारण करना चाहिये ।

नवग्रह पीठ (ग्रहशान्ति)

पूरब

उत्तर

दक्षिण

बुध हरित या पीत 	शुक्र श्वेत पंचकोण 	चन्द्र श्वेत 
बृ० पीत 	सूर्य लाल 	मंगल रक्त 
धूम्र केतु वितकबरा 	शनि काला 	राहु काला या नीला 

पश्चिम

१६७

।।अथ पंचगव्यविधिः।।

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पि (घी) कुशोदकम् ।

निर्दिष्टं पंचगव्यं च पवित्रं कायशोधनम् ।।

गाय का-दूध दही घी गोबर गोमूत्र तथा कुशोदक ।। गोमूत्र आधा भाग, दूध व गोबर तीन भाग, दही दो भाग, एक भाग घी व कुशोदक (जल) । गोमूत्र में वरुण देवता का ध्यान-गायत्री मंत्र जपें ।।१।। गोबर में अग्निदेवता का ध्यान-ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्यपुष्टां कशीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपहृये श्रियम् ।।२।। दूध में चन्द्रमा का ध्यान-ॐ आप्यायस्व समेतुते विश्वतः सोम वृष्यम् । भवाव्वाजस्य संगथे ।।३।। दही में वायु का ध्यान-ॐ दधिक्राष्णोऽकारिषं जिष्णो रश्वस्य वाजिनः । सुरभिनोमुखा करत्प्रण आयूँ षितारिषत् ।।४।। घी में सूर्य का ध्यान-ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि । प्रियन्देवाना मना धृष्टन्देवयजनमसि ।।५।। कुशोदक (जल में) हरि का ध्यान (विष्णु) ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे श्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णोहस्ताभ्याम् । दर्भ में (कुश में) सभी देवताओं का वास होने से कुशों से आलोडन करें (ॐ कारेण इत्यर्थः) ॐ आपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जदधातन । महेरणाय चक्षसे । यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिवमातरः । तस्मा अरंगमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः ।।

पंचगव्य पीने का मंत्र-ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके । प्राशनात्पंचगव्यस्य सम्पूर्णं नश्यति ध्रुवम् ।।

अथ षष्ठी महोत्सव क्रमः ।।

(छठी के दिन पुरोहित दम्पति को आमंत्रित करे । वे दो ब्रती हों । पटले पर गोबर से स्कन्द प्रद्युम्न सहित षष्ठी देवी तथा षट्कृतिका बनावे । षष्ठी देवी के शरीर में १६ कौड़ी रखें । दूर्वा के दो कुण्डल बनावे । आग्नेय में आठ दीये स्थापित करे । (अथवा) चावलों के ऊपर दोनों प्रतिमायें स्थापित करे । सायंकाल दोनों दरवाजों पर द्वार मातृका पूजन करे—कुमारी धनदा नन्दा मंगला विपुलाऽचला । पद्मा चैव समाख्याता सदैता द्वारमातरः ।। ॐ द्वारमातृकाभ्यो नमः से आवाहनादि नीराजनान्त (पूजन करके संकल्प सहित घृत धारा देवे) ॐ विष्णुः ३ ।। जातस्य पुत्रस्य (कन्यायाः) दीर्घायुप्राप्तये करिष्यमाणषष्ठी महोत्सव कर्मणि निर्विघ्नतया कार्य सिद्ध्ये पूर्वागत्वेन गणपतेः प्रतिष्ठावाहन पूर्वकं पूजनं करिष्ये ।। गणपति पूजनं कृत्वा प्रार्थयेत्—लम्बोदर महाभाग सर्वोपद्रवनाशनः त्वत्प्रसादादविघ्नेन चिरं जीवतु बालकः ।। मातृपूजा संकल्पः—ॐ विष्णुः ३ ।। अद्येह० अस्य बालकस्य अस्य मातुश्च आयुरारोग्य प्राप्तये सरुलारिष्ट परिहार द्वारा करिष्यमाण षष्ठी महोत्सव कर्मणि सर्वाभ्युदय प्राप्तये तत्पूर्वागत्वेन गणपति सहित गौर्यादि षोडश मातृणां प्रतिष्ठावाहनपूर्वकं पूजनं करिष्ये । तब मातृपूजा करे । वरणपूर्वकं पुण्याहं वाचयित्वा कलशं नवग्रहानावाहय सम्पूज्य स्कन्दप्रद्युम्नयोः पूजनं कुर्यात् । अद्येह० अमुकराशेरस्य बालकस्य आयुरारोग्याभिवृद्धये सर्वोपद्रव विनाशनार्थं गोमयनिर्मितयोः स्कन्द प्रद्युम्नयोः प्रतिष्ठा वाहन पूर्वकं पूजनं करिष्ये । एतन्ते० ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दप्रद्युम्नौ सुप्रतिष्ठितौ भवतम् ।। प्राणप्रतिष्ठा—ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं शं वं सं हं क्षं अः (हंस सोऽहम्) स्कन्द देवस्य प्रद्युम्न देवस्य च प्राणा जीव सर्वेन्द्रियाणि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।

इति प्राण प्रतिष्ठां विधाय । स्कन्द ध्यानम्— वराभय करः साक्षी द्विभुजः शिखिवाहनः । किरीटी कुण्डली देवीदिव्याभरणभूषितः ॥ प्रद्युम्न ध्यानम्—प्रद्युम्नस्तु चतुर्बाहुः शंख चक्र गदाधरः । चक्रं दक्षिण हस्ते स्याद् वामहस्ते धनुस्तथा । आवाहनम्—आगच्छ देवदेवेश मातृवर्ग सम्न्वितः । यावत्करोमि पूजान्ते तावत्वं सुस्थिरो भव ॥ वेदमंत्रेण आवाहनम्—ॐ द्रप्सश्च स्कन्द पृथिविमनुद्यामिमंचयोनिमनुयश्च पूर्वः । समानं योनिमनुसंचरन्तन्द्रप्सज्जु होम्यनुसप्तहोत्राः ।

आसनम्—ॐ षण्मुखाय नमस्तुभ्यं सेनाधिपतये नमः । पुष्पासनेन मे देव प्रसीद परमेश्वर ॥ ॐ स्कन्दाय नमः । आसनं समपर्यामि । ॐ प्रद्युम्नाय नमः । आसनं समर्पयामि ॥ पादम्, अर्घ्यम्, आचमनीयम्, स्नानं पंचामृतेन ॥ वस्त्रम्, यज्ञोपवीतम्, गन्धम्, अक्षताः पुष्पाणि—जलजं स्थलजं वापि पुष्पं कालर्तुसम्भवम् । भक्त्या निवेदितं देव पुष्पं मे प्रतिगृह्यताम् ॥ ततो नाममंत्रैः पूजयेत्—ॐ कुमाराय नमः । ॐ महाप्रभाय नमः । ॐ स्कन्दाय नमः । ॐ स्कन्दितदानवाय नमः ॐ नवार्कबिम्बद्युतये तमः । ॐ अमोघौघतपाणये नमः । ॐ विशालाय नमः । ॐ विचारिणे नमः । ॐ षण्मुखाय नमः । ॐ कामरूपिणे नमः ॐ गुहाय नमः । ॐ धूर्त्रे नमः । ॐ रणेदानव दारणाय नमः । ॐ अर्क प्रतिम प्रभाय नमः ॐ गुह्याय नमः । ॐ लोकभयापहाय नमः । ॐ बालपराक्रमाय नमः । ॐ विशालाय नमः । ॐ अमललोचनाय नमः ॐ विशाखाय नमः । ॐ मनोरमाय नमः । ॐ महाप्रभाय करोत्कटाय नमः । ॐ मयूरोज्ज्वलवाहनाय नमः । ॐ केयूरधराय नमः । ॐ धृतोदग्रपताकिने नमः । ॐ महाप्रभाय नमः । धूपम् दीपम् नैवेद्यम् । भूषणार्थं द्रव्यं नाम मंत्रेण क्षणं ध्यात्वा जपं कुर्यात् । ताम्बूलं पूंगीफलम् । नीराजनम्—अन्तस्तेजो बहिस्तेज एकीकृत्यामित प्रभो । अरार्त्तिकमिदं देव गृहाण मम सिद्ध्ये । प्रार्थना—भो

प्रद्युम्नमहाबाहो लक्ष्मी हृदयनन्दन । कुमारं रक्षमेभीतेः प्रद्युम्नाय नमोस्तुते ॥ त्रेलोक्य पूजितः श्रीमान्सदाविजयवर्द्धनः । सुरक्षांकुरुबालस्य प्रद्युम्नाय नमोस्तुते । कार्तिकेय महाबाहो गौरीहृदयनन्दन । कुमारं रक्ष मे भीतेः कार्तिकेय नमोस्तुते ॥ स्कन्दप्रार्थना-नमः कुमाराय महाप्रभाय स्कन्दायते स्कन्दित दानवाय । नवार्कविबधुतये नमोस्तुते नमोस्त्वमोद्योद्यतशक्तिपाणये ॥ नमो विशालाय विचारिणस्तु नमोस्तुतेषमुखकामरूपिणे । गुहायगूढाभरणायधत्रं नमो रणे दानव दारणाय ॥ नमोस्तु तेऽर्कप्रतिमप्रभाय नमोस्तु गुह्याय तुभ्यम् । नमोस्तुते लोकभयापहाय नमोस्तुते बालपराक्रमाय ॥ नमोविशालामललोचनाय नमो विशाखायमहाव्रताय ॥ नमोनमस्तेस्तुमनोरमाय नमोनमस्तेस्तु करोत्कटाय ॥ नमोमयूरोज्वलवाहनाय नमोस्तु केयूरधराय तुभ्यम् । -नमोधृतोदग्रपताकिनेस्तु नमः प्रभावप्रणतायतुभ्यम् ॥ सेनानये पावकिनेनमोस्तु कृपापरीतामलदिव्यमूर्त्ये । क्रियामयोयज्ञइवामलस्त्वं नमोस्तु षष्ठीशनमोनमस्ते ॥ ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषः परुषस्यरि एवानो दूवेप्रतनु सहस्रेण शतेन च । इतिमन्त्रेण दूर्वाः ॥

अथ षट् कृत्तिका पूजनम्-पूर्ववत्संकल्पं कृत्वा (दध्यक्षतपुंजेषुषट् कृत्तिकानां पूजनं करिष्ये) दध्यक्षतैरावाहयेत्-ॐ भूर्भुवः स्वः भगवति शिवे इहागच्छ इह तिष्ठ पूजार्थं त्वामावाहयामि ॥ (इसी प्रकार सभी का आवाहन करे) सन्नति, अनसूये, संभूते, प्रीते, क्षमे ॥ ६ ॥ प्रतिष्ठा-ॐ एतन्ते० ॐ भूर्भुवः स्वः दध्यक्षतापुंजेषु-आवाहिताः शिवादि षट् कृत्तिका इहागच्छत इह तिष्ठत सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत ॥ ध्यानम्-ॐ शिवासम्भूतिनामा च प्रीतिः सन्नति रेव च । अनसूया क्षमा चेति षडेताः कृत्तिकाः स्मृताः । आवाहनादि नीराजन्तं सम्पूज्य प्रार्थना-ॐ जगन्मातर्जगद्धात्रि जगदानन्द कारिणि । नमस्ते देवि कल्याणि प्रसीद मम कृत्तिके । ना ॐ खड्गायनमः । ॐ शंखाय नमः । ॐ मन्थाय नमः । ॐ वंशाय नमः ॥ ॐ षष्ठीपूजा-ॐ विष्णुः ३ । अमुकराशेरस्य

बालकस्य—सर्वोपद्रव शमनपूर्वकं, आयुरारोग्य, ऐश्वर्याभिवृद्धये गोमयनिर्मित मूर्तौ सांगाया सपरिवारायाः सायुधायाः षष्ठीदेव्याः प्रतिष्ठावाहन पूर्वकं पूजनं करिष्ये ।। प्रतिष्ठा० ॐ भूर्भुवः स्वः षष्ठीदेवि इहागच्छ इहतिष्ठ सुप्रतिष्ठिता वरदा भव । प्राणप्रतिष्ठा—ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं सं हं सः सोऽहम् प्राणा जीव सर्वेन्द्रियाणि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु ।। अथ न्यासाः—ॐ खां हृदयाय नमः । (स्वहृदय तथा षष्ठीहृदय स्पर्श) ॐ खीं शिरसे स्वाहा । ॐ खूं शिखायै वषट् । ॐ खौं नेत्र त्रयाय वौषट् । ॐ खः अस्त्राय फट् ।। अथ करन्यासाः—ॐ खां अगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ खीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ खूं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ खौं अनामिकाभ्यां नमः ॐ खौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ खः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः । षष्ठीध्यानम्—ॐ चतुर्भुजां महादेवीं तुग पीन स्तनीं शिवाम् । मयूरवर मारुदं रक्त वस्त्रधरां शुभाम् ।। सर्वांग भूषितां देवीं पीनोन्नत पयोधराम् । स्रवत्पीयूष वदनां धृत मन्थान वशकाम् ।। नीलोत्पलां तु वामेन स्कन्दमै दधतीं तथा । अधस्स्थित कराभ्यां तु महाषष्ठीं विचिन्तये ।। आवाहनम्—आवाहयिष्ये त्वां देवीं महाषष्ठीति विश्रुताम्, शक्तिरूपेण मे बालं रक्ष जागर वासरे ।।

स्वागतम्—यस्यादर्शनमिच्छन्ति देवाः स्वाभीष्ट सिद्ध्यै । तस्यै ते परमेशान्यै स्वागतं—स्वागतं हि वै ।। कृतार्थोऽहं कृतार्थोऽहं सफलं जीवितंचमे । करोमि देविकल्याणि सुस्वागतमिदं पुनः ।। आसनम्—अन्तर्यामिनि देवेशि सर्वबीजमये शुभे । स्वात्मस्थायै परं शुद्धमासनं कल्पयाम्यहम् ।।

अस्मिन्वरासने देवि सुखासीनेक्षरात्मिके । प्रतिष्ठिता हि त्वं देवि प्रसीद परमेश्वरि । इह प्रतिष्ठिता भव ।। सन्निधौहि, सम्मुखी भव, पादम् गृहाण ।। अर्घ्यम्—पत्रं पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च । षष्ठी देवि मयादत्तं

हृद्यर्घं मे प्रतिगृह्यताम् ।। स्नानम्-ॐ अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ।। स्नानांगमाचमनीयम् दत्त्वा मधुपर्कम्-सर्वकालुष्यहीनायै परिपूर्णं सुखात्मने ।। मधुपर्कमिदं देवि कल्पयामि प्रसीद मे ।। आचमनी० ।। वस्त्रम् गन्धम्-कुंकुमं चन्दनं चैव हरिद्रादि विमिश्रितम् । षष्ठिदेवि मया दत्तं गन्धं गृह्ण नमोस्तुते ।। अक्षतान्समर्प्य पुष्पाणि-ॐ समकख्ये देव्या धिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा मामआयुः प्रमोषीर्माऽअहन्तव वीरं विदेयतव देवि संदृशि ।। दूर्वाः-ॐ काण्डात्काण्डात्० धूपम् दीपम् (आठ दीये प्रज्वलित करे) द्वार पर आठ बड़ों की माला बकरे को पहनाकर कान पकड़ कर शब्द कराते हैं, दान देते हैं, नैवेद्य-फेणी सिंगल अपूप आदि का भोग लगावे) ॐ षष्ठी देव्यै नमः जपम् कुर्यात् ।। फल ताम्बूल द्रव्य नीराजन अर्घ्यदान करके प्रार्थना-जय देवि जगन्मातर्जगदानन्द कारिणि । प्रसीद मम कल्याणि सुतं रक्ष नमोस्तुते ।। (सूतिका को गन्धाक्षत द्रव्य) बालक के प्रतिष्ठा किये हुये वस्त्र देवे । उपसूतिका बालक को वस्त्र पहनावे गन्धाक्षत किये हुये बालक को पूजा स्थान पर लावे । बालक के हाथ से पिता भी षष्ठी के चौके पर पुष्प चढ़ावे । सूतिका अपने दीपक पर पुष्प चढ़ावे ।

देवैस्त्वं पूजिता देवि ह्यावाभ्यामपि पूज्यसे । देह्यस्य बालकस्यायुर्दीर्घं तुभ्यं नमोस्तु ते ।। स्वस्ति मेस्तु गृहे नित्यं त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि । पुत्रोत्सवमहं नित्यं पश्येयं त्वदनुग्रहात् ।। सूतिकाप्रार्थयेत्-तव प्रसादात् तनयस्य वक्त्रं दृष्टं मया देवि नमोस्तुतुभ्यम् । सौभाग्यमारोग्य मभीष्टसिद्धिं देहि प्रजायाश्चिरजीवितं च ।। गौर्व्यापुत्रोयथास्कन्दः शिशुः संरक्षितस्त्वया । तथा ममाप्ययं बालो रक्ष देवि नमो नमः ।। ततः सर्वे स्वस्तिवाक्यं ब्रूयुः ।। जननी सर्व सौख्यानां बालानां च विशेषतः । नारायणीस्वरूपेण बालं मे रक्ष सर्वतः ।। अमुं ममकुलोत्पन्नं रक्ष त्वं देवि बालकम् । पूजितासि

मया भक्त्याचिरंजीवतु बालकः ।। रक्षोभूत पिशाचेषु डाकिनी शाकिनीषु च । मातेव रक्ष मे बालं पन्तगेष्वापदेषु च ।।
(बालक को भूमि पर रखकर हाथ से स्पर्श करते हुये—) ॐ यद्बलं वासुदेवस्य विष्णोरमित तेजसः । भौमस्य
ब्रह्मणस्यैव सर्वं भवतु मे सुते ।। (हाथ जोड़कर प्रार्थना—) ॐ चन्द्रार्कयोर्दिगीशानां दिशां च गगनस्य च । निक्षेपार्थं
मया दत्तं ते मे रक्षन्तु बालकम् ।। अप्रमत्तं प्रमत्तं वा दिवा रात्रमथापि वा ।। रक्षन्तु सर्वदासर्वे देवाः शक्र पुरोगमाः ।।
रक्षत्वं वसुधे देवि सन्ध्येव जगतः प्रिये । आयुः प्रमाणं सकलं देहि देवि नमोस्तु ते ।। ॐ कृत्यानां पररिक्षार्थं तथा
रक्षो भयाय च । रक्षाकर्म करिष्यामि ब्रह्मा तदनुमन्यताम् ।। नागाः पिशाचा गन्धर्वाः पितरो यक्ष राक्षसाः । अभिभवति
ये ये त्वां ब्रह्माद्याघ्नन्तु तान्सदा ।। पृथिव्यामन्तरिक्षे च ये चरन्ति निशाचराः । दिक्षुविदिक्षु ये चान्ये पान्तु ते
त्वान्नमस्कृताः ।। पान्तु त्वामृषयो ब्रह्मा दिव्या राजर्षयस्तथा । आर्वताश्चैव नद्यश्च तथा सर्वे च सागराः ।। अग्नी
रक्षतु ते जिह्वा प्राणान् रक्षतु वायवः । सोमो व्यानं समानं च पर्जन्यः परिरक्षतु ।। उदानं ते विधुः पातु समानं
स्तनयित्वः । बलभित्ते बलं पातु वाचं वाचस्पतिस्तथा । कामन्ते पान्तु गन्धर्वाः सत्यमिन्द्रोऽभिरक्षतु । प्रज्ञां च वरुणो
राजा समुद्रो नाभि मण्डलम् ।। चक्षुः सूर्योर्दिशः श्रोत्रं चन्द्रमा पातु ते मनः । रेतस्ते पान्त्वमा आपो
रोमाण्योषधयस्तथा । आकारन्ते निशापातु देहं पातु वसुन्धरा । वैश्वानरस्तव शिरः पातु विष्णुः पराक्रमम् ।। पौरुषं
पुरुषः श्रेष्ठो ब्रह्मा पातु भ्रुवावुभौ । देहं देह विशेषेण तवपातु वसुन्धरा ।। ब्रवीत स्वस्ति ते ब्रह्माविष्णु रुद्रस्तथैव
च । स्वस्ति वायुस्तथाऽग्निश्च स्वस्ति देवा महोरगाः ।। नारदश्च तथा स्वस्ति करोत्वायुः सदाऽवतु ।। मयैव
कृतरक्षस्त्वं दीर्घमायुरवाप्नुहि ।।

अथ षष्ठी स्तोत्रम्—प्रिय व्रत उवाच—नमो देव्यै महादेव्यै सिद्धयै शान्त्यै नमोनमः । शभायै देवसेनायै षष्ठी

अथ षष्ठी स्तोत्रम्—प्रिय व्रत उवाच—नमो देव्यै महादेव्यै सिद्धयै शान्त्यै नमोनमः । शुभायै देवसेनायै षष्ठी देव्यै नमोनमः । । वरदायै पुत्रदायै धनदायै नमोनः । । सुखदायै मोक्षदायै षष्ठीदेव्यै नमोनमः । । सृष्ट्यै षष्ठांशरूपायै सिद्धायै च नमोनमः । मायायै सिद्धयोगिन्यै षष्ठीदेव्यै नमोनमः । । सारायै शारदायै च परादेव्यै नमोनमः बालाधिष्ठातृदेव्यै च षष्ठीदेव्यै नमोनमः । । कल्याणदायै कल्याण्यै फलदायै च कर्मणाम् । प्रत्यक्षायै स्वभक्तानां षष्ठीदेव्यै नमोनमः । । पूजायै स्कन्दकान्तायै सर्वेषां सर्वकर्मसु । । देवरक्षण कारिण्यै षष्ठीदेव्यै नमोनमः । शुद्ध सत्वस्वरूपायै वन्दितायै नृणां सदा । हिंसा क्रोध विनाशिन्यै षष्ठीदेव्यै नमोनमः । । धनं देहि प्रियां देहि पुत्रं देहि सुरेश्वरि । मानं देहि जयं देहि द्विषो जहि सुरेश्वरि । । धर्मं देहि यशो देहि षष्ठीदेव्यै नमो नमः । देहि भूमिं प्रजां देहि विद्यां देहि सुपूजिते । । कल्याणं च जयं देहि षष्ठीदेव्यै नमोनमः । अथ राहु वेधनम्—ॐ विष्णुः ३ अस्य बालकस्य सर्वोपद्रव शान्ति पूर्वकं आयुरारोग्यैश्वर्याभ्युदय प्राप्तये राहुवेधनं करिष्ये तदंगत्वेन धनुर्बाणयोर्ग्रथामिलितोपचारैः प्रतिष्ठावाहन पूर्वकं पूजनं करिष्ये । । एतन्तेति प्रतिष्ठा० ॐ भूर्भुवः स्वः धनुरिहागच्छ० वाणइहागच्छ० ॐ धनुषे नमः । ॐ बाणाय नमः । इति मंत्रद्वयेन पूजनं कृत्वा नीराजनान्ते पुष्पाञ्जलिः—ॐ सर्वयुध महामात्र सर्वदेवारिसूदन । चाप मां समरे रक्ष साकं शरवरैरिह । धृतं कृष्णेन रक्षार्थं संहारार्थं हरेण च । त्रयीमूर्तिं गतं देवं धनुरस्त्रं नमाम्यहम् । । बाण प्रार्थना—कन्दर्पस्य यथा बाणाः सफलाचार्युनस्य च । रामस्य च यथा बाणास्तथाऽस्माकं भवन्तिह । । लग्न दानम्—अमुकोऽहं अमुक राशेर्बालकस्य (कन्यायाः) राहुवेधन लग्नाद्यत्र कुत्र स्थाने स्थितानां दुष्टानां दुष्टदोषोपशान्त्यर्थं शुभानां शुभफल प्राप्त्यर्थं इमां दक्षिणां ज्योतिर्विदे दास्ये ॐ तत्सन्नमम । । सरसौ सुपारी, हल्दी आदि मांगलिक वस्तुओं की पोटलिका लेकर गृह आधार दारु में शंख घोष सहित वेधे । दक्षिणा संकल्प—अद्येह०

अमुकराशेर्बालकस्य दीर्घायुः प्राप्तये कृतस्य स्कन्द प्रद्युम्न षट्कृतिकादि पूजनपूर्वकं षष्ठी महोत्सव कर्मणः सांगफल प्राप्तये इमां दक्षिणां ब्राह्मणाय दास्ये तथा भूयसीं दक्षिणां नानागोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नटनर्तक गायकदीनानाथेभ्यश्च विभज्य दास्ये ॐ तत्सन्नमम तथा सिद्धात्रेन ब्राह्मणान्बन्धुवर्गाश्च भोजयिष्ये (तब जौ बोवे) सुहागिन पूजा करके बालक माँ को सौपे, भगवन्नाम अंकित वस्त्र से सूतिका सिर बाँधे। रात्रि में नृत्य गीत सहित जागरण करें।। (षष्ठी कथा में पूजा सम्बन्धी विधान है। प्रारम्भ में लिख दिया है अतः कथा नहीं लिखी।।)

नामकर्म

कोरी मिट्टी की चौकोर वेदी। मध्य में सात (सप्तकोण) लालरंग से अग्नि जिह्वा बनावे, स्वस्तिवाचन, गणपतिपूजन, मातृकापूजन, आभ्युदिक, पुण्याहवाचन, कलशस्थापन, दध्यक्षत पुंजों से नवग्रह। रक्षाविधान आचार्यवरण, अग्नि स्थापन, पंचगव्य होम। पुण्याहवाचन के उपरान्त सूतिका कक्ष में दीप जलाये, नूतन वस्त्र शृंगार सामग्री गन्धाक्षत द्रव्य गोला तथा बालक के आभूषण आदि प्रतिष्ठा करके सूतिका को देवे। पंचगव्य पिलाकर सुवा से सूतिका को प्रदक्षिणा क्रम से वेदी के समीप लावे। गणपत्यादि पुष्पाञ्जलि दिलावे, नामाक्षरों की प्रतिष्ठा। पंचगव्य—आलोड्य प्रणवेनैव निर्मथ्य प्रणवेनैव त्रिः पिबेत् प्रणवेन वै। पालाशयेन च पर्णेन स्वर्ण पात्रेण वा पुनः। रौप्यपात्रेण ताम्रेण ब्रह्मतीर्थेन वा पिबेत्। मंत्र—यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके।। प्राशनात्पंचगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्।। गणपति पूजायां संकल्पः—अमुकराशेः बालकस्य (कन्यायाः) करिष्यमाण नामकर्म निष्क्रमण सूर्यावलोकन भूम्यु पवेशन कर्मणि निर्विघ्नतया कार्यं सिद्ध्ये भगवतो गणेश्वरस्य (गोमय गणपतेः)

प्रतिष्ठा वाहनपूर्वकं पूजनं करिष्ये। इस प्रकार प्रतिष्ठा करके गणपति पूजन करे। मातृपूजायां विशेषः— प्रधानदीपं

प्रतिष्ठा वाहनपूर्वकं पूजनं करिष्ये । इस प्रकार प्रतिष्ठा करके गणपति पूजन करे । मातृपूजायां विशेषः— प्रधानदीपं प्रज्वाल्य प्रधान संकल्पः—ॐ विष्णुः ३ ।। अमुक राशेरस्य बालकस्य (कन्यायाः) आयुर्वृद्धये व्यवहारसिद्धये बीजगर्भ समुद्भवैनो निवर्हण द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं नामकर्म करिष्ये तथा अस्य बालकस्य (अस्याः कन्यायाः) श्रीवृद्धये बीजगर्भ समुद्भवैनो निवर्हण द्वारा निष्क्रमण कर्म करिष्ये, तथा अस्य बालकस्य (अस्याः कन्यायाः) आयुर्वृद्धये धनप्राप्तये सूर्यावलोकनं भूयुपवेनं च करिष्ये तथा करिष्यमाण नामकर्म निष्क्रमण सूर्यावलोकन भूयुपवेशन कर्मणां पूर्वागत्वेन मातृपूजा नान्दीश्राद्ध पुण्याहवाचनानि तथा कलशो ब्रह्म वरुण सहित आदित्यादि नवग्रहादीनां दध्यक्षतपुजैः स्थापनं पूजनं च करिष्ये । मातृका पूजन, प्रधानदीप पूजन आभ्युदयिक पुण्याहवाचन कलशनवग्रहरक्षा सूत्र की प्रतिष्ठा पूजा के उपरान्त आचार्य वरण अग्नि स्थापन (पार्थिव नामा अग्नि) कुश कण्डिका द्रव्य त्याग—ॐ विष्णुः ३ ।। अस्य बालकस्य नामकर्मगर्भहोम कर्मणाहं यक्ष्येतत्र आघाराज्य भागदेवताभ्यः इदमाज्यं अग्नये विष्णवे रुद्राय अदभ्यः सवित्रे प्रजापतये अग्नयेस्विष्ट कृते च तथा इदं पंचगव्यं (१०८) गायत्री मंत्रेण तथा इरावती—आदि मन्त्रैः अग्नि आदि देवताभ्यः तथा इदमाज्यं महाव्याहृति देवताभ्यः सर्वप्रायश्चित्त देवताभ्यः अग्नये प्रजापतये च मयापरित्यक्तं यथा दैवतमस्तु तथा पार्थिवनामाग्नेः प्रतिष्ठावाहन पूर्वकं पूजनं करिष्ये । अग्निपूजनम् कृत्वा ॐ प्रजापतये स्वाहाइदम् प्रजापतये । ॐ इन्द्राय स्वाहाइदम् ॐ अग्नये स्वाहा । इदम् ॐ सोमाय स्वाहा इदम् (सप्त कुशैः पंचगव्य होमः कार्यः) ततः गायत्र्या (१०८) पंचगव्य होमम् कृत्वा घृताहुती—ॐ इरावती ६ । नुमतीहिभूत ८. सूपवासिनी मनवेदशस्या व्यस्कभनारोदसी विष्णवेते दाधत्यर्थं पृथिवीमभितोमयूखैः स्वाहा । १ ।। इदं पृथिव्यै ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम् ।। समूढमस्य पाँ सुरेस्वाहा ।। २ ।। इदं विष्णवे ।। ॐ मानस्तो

के तनये मानऽआयुषिमानो गोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः मानोव्वीरान्द्रभामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे
 स्वाहा ॥ ३ ॥ इदं रुद्राय ॥ शन्नोदेवी रभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये शंयोरभि स्रवन्तुनः स्वाहा ॥ ४ ॥ इदमदभ्यः ॥
 ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिता बभूव ॥ यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तुवयः ८ ॥ स्याम पतयो
 रणीया स्वाहा ॥ ५ ॥ इदम् प्रजापतये ॥ ततो ब्रह्मणान्वाग्ध्वः ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा ॥ ६ ॥ इदमग्नये
 स्विष्टकृते ॥ इति पंचगव्यहोमं विधाय भूरादिनवाहुतिर्जुहुयात्—ॐ भूः स्वाहा इदम् अग्नये ॥ ॐ भुवः स्वाहा ॥ इदम्
 वायवे ॥ ॐ स्वः स्वाहा ॥ इदं सूर्याय ॥ ॐ तन्नोइति (हवन प्रकरण में देखें) हुतशेषं पंचगव्यं सूतिकायै दद्यात् ॥ सा
 च प्रणव पूर्वकं ब्रह्मतीर्थेन त्रिः प्राशनाति ॥ ततः मन्त्रः—यत्त्वगस्थितं पापं देहे तिष्ठति मामके ॥ प्राशनाप्तंचगव्यस्य
 दहत्यग्निरिवेन्धनम् ॥ आचारात् ब्रह्मा सु वेणान्वारंभं कारयित्वा सूतिकां भर्तुः समीपे आनयति सा च बालकमके
 गृहीत्वा अग्निप्रदक्षिणीकृत्य भर्तुर्वामत उपविशेत् ॥ (बालक के हाथ से सर्वदेव पुष्पाञ्जलि देकर पूर्णपात्र दान ॥
 वस्त्र में बालक के नामाक्षर लिखकर प्रतिष्ठा करके लग्न दान का संकल्प शंख में लपेट कर दाहिने कान में
 माता—पिता आदि सुनावें) अमुकनामा दीर्घायुर्भूयात् ॥ (अमुक नाम्नी) ॐ विष्णुः ३ ॥ अमुकराशेरस्य बालकस्य
 (कन्यायाः) करिष्यमाण निष्क्रमण कर्मणि सर्वारिष्टनिवृत्तिपूर्वकदीर्घायुरोगयावाप्तये जले दिगीशानां दिशां चन्द्रस्य
 अर्कस्य वासुदेवस्य गगनस्य च पूजनं करिष्ये ॥ प्रतिष्ठा ० ॐ भूर्भुवः स्वः जले दिगीशादि देवा गगनपर्यन्ताः
 सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ॥ ध्यानादिपूजनं कुर्यात् ॐ दिगीशेभ्यो नमः ॥ ॐ दिग्भ्यो नमः ॐ चन्द्राय नमः ॥ ॐ
 अर्काय नमः ॥ ॐ वासुदेवाय नमः ॥ ॐ गगनाय नमः ॥ नीराजनं कृत्वा प्रार्थयेत्—चन्द्रार्कयोर्दिगीशानां दिशां च
 गगनस्य च ॥ निक्षेपार्थमिमं ददिमते मे रक्षन्तु बालकम् ॥ अप्रमत्तं प्रमत्तं वा दिवारात्रमथापि वा ॥ रक्षन्तु सर्वदा सर्वे
 देवाः शक्रपुरोगमाः ॥

अथ सूर्यावलोकनम्—स्वस्तिवाचन पूर्वकं बहिरानीय आदित्यं सम्पूजयेत् । ॐ विष्णुः ३ ।। अमुकोऽहं अमुकगोत्रोत्पन्नस्य अमुक राशेः अमुकशर्मणः पुत्रस्य (कन्यायाः) वैजिक गार्भिक दुरितोपशमनाय आदित्यस्य पूजनपूर्वकं दर्शनं करिष्ये । प्रतिष्ठा—एतन्ते० ॐ भूर्भुवः स्वः भगवन्नादित्य इहागच्छ इहतिष्ठ । ध्यानम्—ॐ ध्येयः सदा सवितृमण्डल मध्यवर्ती नारायणः सरसिजासन सन्निविष्टः केयूरवान्मकरकुण्डलवान् किरीटी हारी हिरण्मयवपुर्धृतशंखचक्रः । ॐ आदित्याय नमः आवाहनम् आसनम्, पाद्यम्, अर्घ्यम् फलपुष्पद्रव्य सहितमर्घ्यदद्यात्—ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते । अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर ।। गन्धादिभिः सम्पूज्य नीराजनम् कृत्वा छन्दः—ॐ तच्चक्षु रितिदध्यंगार्थवर्णपङ्क्तिरुष्णिक् छन्दः सूर्यो देवता सूर्योद्दीक्षणे विनियोगः । ॐ तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ता च्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतंजीवेम शरदः शत दः श्रृणुयामशरदः शतम्प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्यामशरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात् ।। इति बालकाय आदित्यम्प्रदर्शयेत् ततः ॐ पृथिव्यै नमः । ॐ वाराहाय नमः । ॐ कुलदेवतार्यै नमः । इति भूमौ पृथिवीं वाराहं कुलदेवतां च उपचारैः सम्पूज्य भूमि प्रार्थना—(भूमौ शाययेत्) रक्षेनं वसुधे देवि सदासर्वगते शुभे । आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये ।। अचिरायायुष स्त्वस्य ये के च परिपन्थिनः । जीविता रोग वित्तेषु निर्दहंस्वाचिरेतान् ।। वरेण्याशेषभूतानां माता त्वमसि कामधुक् । अजरा चाप्रमेया च सर्वभूतनमस्कृता । द्रव्योपरि पादस्थापनम्—दुग्धेन पादौ स्नापयेत् ।। दक्षिणां दत्त्वा मन्त्राशिषं दद्यात् । जीवमातृका पूजनम्—संकल्प्य—अद्यहं० नाम कर्मणः उत्तरांगत्वेनभित्तलिखितानां (पट्ट लिखितानां) कल्याण्यादिजीवमातृणां यथामिलितोपचारैः प्रतिष्ठावाहनपूर्वकं पूजनं करिष्ये ।। प्रतिष्ठा० ॐ

भूर्भुवः स्वः कल्याण्यादिजीवमातर इहागच्छत इहतिष्ठत सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत ॥ ध्यानम्—कल्याणी मंगला भद्रा पुण्यापुण्यमुखी तथा । जया च विजया चैव सप्तैता जीवमातरः ॥ ॐ कल्याण्यै नमः इत्यादि नाम मंत्रैः सम्पूज्य नीराजनान्ते वसोर्धाराः संकल्पः—अद्येह० नामकर्म कर्मण उत्तरांगत्वेन सकल मंगलाभिवृद्ध्यर्थं कल्याण्यादिजीवमातृणामुपरि गुडसर्पिषावसोर्धाराः पातयिष्ये ॥ सप्तधाराः । ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसिसहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शत धारेण सुप्वा कामधुक्षः । घृत चन्दनम् संकल्पः ॥ १० ॥ महानीराजनम् । रक्षा । घृतछाया अभिषेक तिलक मंत्रपाठादिकं कुर्यात् ॥ जल पूजा (चौका विसर्जन) जलमातृकामत्सी कूर्मी वराही च दर्दुरी मकरी तथा । जलूकी तन्तुकी चैव सप्तैता जलमातृकाः ॥ ॐ जलमातृकाभ्यो नमः । गन्धाक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य जप करके नीराजन करें । वरुण देवता को अर्घ्यदान—ॐ श्वेताभ्रशिखराकार सर्वभूत हितैरेत' । गृहाणार्घ्यं मिमं देव जलनाथ नमोस्तुते ॥

ॐ वरुणाय नमः । पूजा करें । आरती प्रदक्षिणा नमस्कार करके विसर्जन करें ।

नोट—षष्ठी पूजन व नाम करण की पुस्तक भी हमारी अलग से छपी है ।

अथ—अन्नप्राशन विधिः

अन्नप्राशन सौर मास के अनुसार बालक का छठें आठवें मास में, कन्या का पंचम सप्तम मास में करें । गणपति पूजन करके मातृका पूजन में विशेष संकल्पः ॐ विष्णुः ३ अद्येह० अस्य बालकस्य (अस्याः कन्यायाः) मल प्राशन शुद्धान्नाघ ब्रह्मवर्चस तेज इन्द्रियायुर्लक्षण फल सिद्ध्यै बीजगर्भ समुद्भवेनो निर्वहण द्वारा श्री परमेश्वर

प्रीतये, अन्नप्राशनकर्मणः पूर्वाङ्गत्वेन मातृणां पूजनं करिष्ये । (मातृपूजा आभ्युदय, पुण्याहवाचन कलश नवग्रहस्थापन पूजन यथाशक्ति, यथा समय करे । हवन में नवग्रहों के लिये भी आहुति) द्रव्यत्याग संकल्पः—अमुकराशः पुत्रस्य (कन्यायाः) अन्नप्राशन होम कर्मणा यक्ष्ये । तत्र प्रजापतिम् इन्द्रम् अग्निं सोमं देवीं वाचं वाजं आज्येन प्राणमपानं चक्षुः श्रोत्रं च चरुणा शेषेण आज्येन चरुणा च अग्नयेस्विष्टकृते मया परित्यक्तं यथा दैवतमस्तु तथैतद् होम कर्मणि शुचिनामाऽग्नेः प्रतिष्ठावाहनपूर्वकं पूजनं करिष्ये ॥ अग्निं प्रतिष्ठाएतन्ते० ॐ भूर्भुवःस्वः शुचिनामाग्ने० सुप्रतिष्ठितो० ॥ अग्निपूजन करके ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदम्रजापतये । इन्द्राय० अग्नये० सोमाय० इति हुत्वा छन्दः—ॐ देवी वाचमिति भार्गव ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो वाग्देवता होमे विनियोगः । ॐ देवी वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति सा नो मन्देशमूर्जं दुहन्ना धेनुर्वागस्मानुपसृष्टुतैतु स्वाहा । इदं वाचे न मम ॥ “ॐ वाजो नो” इति देवा ऋषयस्त्रिष्टुप् छन्दः अन्नं देवता होमे विनियोगः ॐ वाजो नो अद्यति च द्वितीयं चकारात्प्रथमया ऋचा सह देवी वाचमुपसृष्टुतैतु । वाजो नोऽअद्या प्रसुवाति दानं वाजो देवाँ ऋतुभिः कल्पयति व्वाजोहिमा सर्व्व वीरज्जनान विश्वाऽसा शा व्वाजपतिर्जयेयं स्वाहा । इदं देव्यै वाचि वाजाय च । जुहुयादाज्य भागान्ते स्थाल्याज्येनाहुतीः पृथक् । देवीं वाचामतिज्ञेयाप्रथमीचामृतं पुनः । उक्त्वा स्वाहा विना वाजो नो अद्यति द्वितीयकेति ततश्चरुमभिधार्य स्थालीपाकस्य होमः । ॐ प्राणानात्र मशीय स्वाहा । इदं प्राणाय न मम ॥ ॐ अपानेन गन्धानमशीय स्वाहा । इदमपानाय न मम ॥ ॐ चक्षुषा रूपाण्यशीय स्वाहा इदं श्रोत्राय ॥ (पूजन में ब्रह्मा विष्णु शंकर चन्द्र अर्क दिगीश्वर भूमि दिशाओं का आवाहन दध्यक्षतपुंज से किया हो तो नाम मंत्र से आहुति देवे) ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा ॥ पूर्णपात्र दानादिकर्म कृत्वा पुनर्नूतन वस्त्राणि धारयेत् ॥ (सुवर्ण पात्र में दधिमध्वाज्य सहित ‘हन्त’ कहकर पाँच बार खिलावे ।

मछली वाले सरोवर का जल पिलावे। तब वस्त्र, पुस्तक लेखनी आदि सामग्री उसके आगे रखें) ॥ अन्नप्राशन मंत्रः—ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देहानमीवस्य शुष्मिणः। प्रपदातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे। (शेषान्न बालकों को बांटे।)

जन्मवार विधि

माता बहनें सरसों हल्दी सहित बालक को मंगल स्नान करावें। स्नान संकल्प—अमुकोऽहं सम्वत्सरावच्छिन्न सर्वांरिष्ट निवृत्तिपूर्वकं सुखप्राप्तिकामः तिलकल्कमिश्रित जलेन स्नानं करिष्ये। स्नानं कृत्वा (वस्त्रों की प्रतिष्ठा करके पहनें) वस्त्रपरिधान छन्दः—ॐ परिधास्यै इत्याथर्वण ऋषिः पंक्तिश्छन्दः वासो देवता वस्त्र परिधाने विनियोगः॥ ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुष्ट्वाय जरदष्टिरश्मिः शतं च जीवामि शरदः पुरुची रायस्पोषमभि—संव्ययिष्ये। द्वितीय वस्त्र—छन्दः—ॐ यशसामा इत्याथर्वण ऋषिः पंक्तिश्छन्दो लिंगोक्ता देवता उत्तरीय परिधाने विनियोगः॥ ॐ यशसामा घ्रावा पृथिवी यशसेन्द्रा वृहस्पती यशो भगश्च मा विदद्यशो मा प्रतिपद्यताम्॥ (तिलक आचमन गणपति मातृका पूजन) कलश नवग्रह पूजनादि पूर्वांग कर्म कंकण—यव कुश, दूर्वा सरसों गोमय निम्ब गुग्गुल गोरोचन पूंगीफल कुश द्रव्य से कंकण पोटलिका प्रतिष्ठित कर बाँधे। कंकण प्रतिष्ठा ॐ भूर्भुवः स्वः पोटलिके सुप्रतिष्ठिता वरदा भव॥ मुख्य संकल्पः—अमुकशर्माऽहं आयुष्याभिवृद्धये वर्ष वृद्धिकर्म करिष्ये तत्पूर्वांगत्वेन निर्विघ्नतया कार्यं सिद्धये भगवतो गणेश्वरस्य पूजनं करिष्ये॥ (तब पूर्वांग कर्म करे। चावल के ऊपर श्वेत वस्त्र में दध्यक्षत पुंजों में मार्कण्डेयादि का आवाहन करे कंकण बाँधकर पूजते हैं) ॐ भूर्भुवः स्वः अश्वत्थामन् इहागच्छ इहतिष्ठ पूजार्थं त्वामावाहयामि स्थापयामि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः बले इहागच्छ०॥ व्यास० हनुमन्० विभीषण० कृपाचार्य० परशुराम०। मार्कण्डेय० स्वनक्षत्रेश० प्रकृति पुरुषात्मक माता पितरौ०

दहागच्छतम०। बहान०। भानो० षष्ठीदेवि० कलदेवता० ग्राम० इष्ट०॥ प्रतिष्ठा ॐ एतन्तो देव सवितर्यज्ञ० ॐ

इहागच्छतम्० । ब्रह्मन्० । भानो० षष्ठीदेवि० कुलदेवता० ग्राम० इष्ट० । । प्रतिष्ठा ॐ एतन्ते देव सवितर्यज्ञ० ॐ
 भूर्भुवः स्वः दध्यक्षतपुंजेषु आवाहिता मार्कण्डेयादय इहागच्छन्तु इह तिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत । । ६
 यानम्-वरदाभयपाणिश्च दिव्याभरण भूषितः । शुक्लः सुशील वासश्च पदमस्योपरि संस्थितः । । मार्कण्डेयश्च
 यानम्-ॐ द्विभुजं जटिलं सौम्यं सुवृद्धं चिर जीविनम् । मार्कण्डेयं नरो भक्त्या पूजयेत्प्रयतः शुचिः । । ॐ मार्कण्डेयादि
 मुनिभ्यो नमः । ध्यानं समर्पयामि । । आवाहनादि नीराजनान्तं पूजयेत् ।

ॐ अश्वथाम्ने नमः । ॐ बलिने नमः । ॐ व्यासाय नमः । ॐ हनुमते० ॐ विभीषणाय० ॐ कृपाचार्याय०
 ॐ परशुरामाय० ॐ मार्कण्डेयाय० ॐ कुलदेवतायै (अमुकानाम्ने) नमः । ॐ स्वनक्षत्रेशाय (अमुकाय) नमः । ॐ
 प्रकृतिपुरुषात्मक मातापितृभ्यां नमः । ॐ ब्रह्मणे नमः ॐ भानवे नमः विघ्नेश० प्रजापते० ॐ षष्ठी दैव्यै नमः प्रह्लाद०
 ॐ ग्रामदेवतायै नमः । ॐ इष्टदेवतायै नमः । ॐ आवाहितेभ्यः सर्वेभ्यो नमः (इस प्रकार पूजन तथा नाममंत्रों से जप
 करे) नीराजनं कृत्वा ॐ ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुःशशी भूमि सुतो बुधश्च गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः
 सर्वे ग्रहाः क्षेमकरा भवन्तु । । ॐ मार्कण्डेय महाभाग सप्तकल्पान्त जीविनः । आयुरारोग्य सिद्ध्यर्थमस्माकं वरदो
 भव । । चिरंजीवी यथा त्वं भो भविष्येऽहं तथा मुने । रूपवान् वित्तवांश्चैव श्रियायुक्तश्च सर्वदा । । आयुप्रदः महाभाग
 सोमवंश समुद्रव । महातपो मुनि श्रेष्ठ सप्तकल्पान्त जीविनः । । ॐ मार्कण्डेय मुनये नमस्ते महादायुषे ।
 नाराणामायुरारोग्य-ऐश्वर्यादि सुखप्रद । । सौम्यमूर्ते नमस्तुभ्यं भृगुवंशवराय च । मार्कण्डेय नमस्तुभ्यं दीर्घायुष्यं
 प्रयच्छ मे । ।

षष्ठीदेवी प्रार्थना—ॐ जगन्मातर्जगद्धात्रि जगदानन्द रूपिणि । प्रसीद मम कल्याणि महाषष्ठि नमो नमः ॥
जयदेवि जगन्मातर्जगदानन्द कारिणि । प्रसीद मम कल्याणि महाषष्ठि नमोस्तुते ॥ त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि
चराणि च । ब्रह्मविष्णुहरैः सार्द्धं रक्षां कुर्वन्तु तानिमे ॥ रूपन्देहि यशोदेहि भगं भगवति देहि मे । पुत्रान्देहि धनं
देहि सर्वान्कामाँश्च देहि मे ॥ ततो मातुर्हस्ताद् गुडतिलमिश्रितदुग्धं त्रिः प्रारुणाति । तत्र मंत्रः—
सतिलगुडसंमिश्रम्—अंजल्यर्द्धमितपयः । मार्कण्डेयाद् वरं लब्ध्वा पिबाम्यायुः प्रवृद्धये ॥ ततो रक्षा सूत्रं हस्ते बध्वा
धृतच्छाया अभिषेकादि कर्म कुर्यात् ।

अथ भूमिदान विधिः—(ताँबे के बर्तन में उस भूमि की मिट्टी लाकर गणपत्यादि पुष्पांजलि देकर
अर्घस्थापनादिकर्म करके) संकल्पः—अमुकराशिः अमुकशर्माहं सकलपापक्षय पूर्वकं श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलावाप्तये
षट्षष्ठि सहस्र वर्ष पर्यन्तं स्वर्गलोक निवास कामनया भूमिदानं करिष्ये तदंगत्वेन ब्राह्मणस्य पूजन पूर्वकं वरणं
करिष्ये तथा भूमेः पूजनं च करिष्ये । ब्राह्मणम् अर्घ्यादिमि सम्पूज्य एभिर्गन्धाक्षत पुष्प पूंगीफल वासोद्रव्यैः भूमिदान
प्रतिग्रहार्थं भो विप्र त्वामहं वृणे । वृत्तोऽस्मि ॥ पृथ्वी ध्यानम्—ॐ चतुर्भुजां शुक्लवर्णां कूर्मं पृष्ठोपरि स्थिताम् ।
शंखपदम धरां चक्रशूलयुक्तां धरां भजे ॥ ॐ भूम्यै नमः इति पूजयेत् ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य
भुवनस्य धर्त्री पृथिवीं यच्छ दृ ४. ह पृथिवीं माहि ४. सीः ॥ पाद्यादि नीराजनान्तं सम्पूज्य—दान संकल्पः—पूर्वोक्तं०
इमां भूमिं विष्णु दैवत्यां अमुकगोत्राय प्रवराय वेदाध्यायिने अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रदे ॐ तत्सन्नमम ।
दानवाक्यम्—दानान्यन्यानि नाहन्ति भूमि दानस्य षोडशीम् । कलां तथैव मे भूयात् भूमिदानात्महत्फलम् दानप्रप्ति
संकल्प—इदं सुवर्णं अग्नि दैवत्यं ब्राह्मणाय दास्ये । ततो अभिषेकादि कर्म कुर्यात् ॥

अथ चूड़ाकरणम्

(बालक के बाल काटने की विधि)

शंख घोष पुरस्सरं तिलकं कृत्वा दीपं प्रज्वालय (सरसों हल्दी तैल आदि से मंगलगीत गाती हुई मातायें बहिनें परात के ऊपर स्नान करावें) तिलकं स्वस्तिवाचनम् । गणपति पूजने संकल्पः अद्यैह० अमुकोऽहं अमुकराशेरस्य कुमारस्य करिष्यमाण चूड़ाकरण कर्मणि निर्विघ्नतया कार्यं सिद्ध्ये भगवतो गणेश्वरस्य प्रतिष्ठा वाहन पूर्वकं पूजनं करिष्ये (गणेश पूजा करे) मातृपूजा प्रधान दीपं प्रज्वालय ॐ विष्णुः ३ अमुक राशेरस्य कुमारस्य बीजगर्भ समुद्भवैनो निबर्हण द्वारा बलायुर्वचोभिवृद्ध्ये श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं चोल संस्कारं करिष्ये तदंगत्वेन सकल मंगलाभिवृद्ध्यर्थं गणपति सहित गौर्यादि षोडश मातृणां तथा ब्रह्मण्यादीनां प्रधान दीपस्य च प्रतिष्ठावाहन पूर्वकं पूजनं करिष्ये । (इस प्रकार मातृका पूजन दीप पूजन करे) आभ्युदयिकं तथा पुण्याहवाचनं कृत्वा कलशं स्थापयेत् तत्र दध्यक्षतपुंजेषु—आदि त्यादि नवग्रहादीन् आवाहयेत् । रक्षासूत्राणि कंकणानि च प्रतिष्ठापयेत् । एवं पूर्वांग कर्म कुर्यात् ।। (६ कंकण, तीन ३ की तीन जोटी, १ शिखा, १ बालक के हाथ में बाँधे । १ माता के ।। यवान्कुशान् की विधि से कंकण बनावे) अथ केशाधिवासन संकल्पः (जोटी बाँधना) अद्यैह० अमुकराशेरस्य कुमारस्य चूड़ाकरण सिद्ध्यर्थं केशाधिवासनं करिष्ये । (शिर में ६ कंकणों से जोटी बाँधकर उनकी प्रतिष्ठा करे) ॐ एतन्ते० ॐ भूर्भुवः स्वः गोदानानि सुप्रतिष्ठितानि भवन्तु ।। (ताम्रक्षुर तथा कर्तनी में त्रिगुणित सूत्र बाँधे यदि हवन के उपरान्त जोटी बाँधनी हो तो भूरादि नवाहुति से पहले अवश्य बाँधे)

अथ हवन प्रयोगः (कोरी मिट्टी की चौकोर वेदी के मध्य में सप्तकोणात्मक अग्नि जिह्वा लाल रंग की बनाकर आचार्य वरण करके अग्नि स्थापन करे) द्रव्यत्यागः अग्निप्रतिष्ठा—एतन्नेति ॐ भूर्भुवः स्वः कपिलादि—अग्नय तथा सभ्य नामाग्ने च इहागच्छन्तु इह तिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ।। ध्यानम्—ॐ चत्वारि श्रृंगात्रयोऽस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासोऽस्य त्रिधावद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्या २ ।। ऽआविवेश ।। ॐ आवाहितेभ्योऽग्निभ्यो नमः इति सम्पूज्य नीराजनं कुर्यात् ।। (जिह्वा पूजन रेखापूजन करके चार आहुति घी) ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदम्प्रजापतये ।। ॐ इन्द्राय स्वाहा । इदम् ।। ॐ अग्नये स्वाहा । इदम् ।। ॐ सोमाय स्वाहा । इदम् ।। (नवग्रह मंत्रों से तिलाज्यहोम । अधिदेवता प्रत्यधिदेवता पंचलोकपाल दिक्पालादि नाममंत्र से ।। घी से भूरादि नौ आहुति देकर पूर्णपात्र का संकल्प करे) अद्योह० अमुकराशेरस्य बालकस्य चूड़ाकर्माग होम कर्मणि सांगफल प्राप्तये अपूर्ण पूर्णार्थं च ससुवर्ण इदम्पूर्णपात्रं ब्रह्मन् तुभ्यमहं सम्प्रददे (२०० मुट्टी चावल) मंत्राशीषं दत्त्वा लग्नदानं कुर्यात् ।। ॐ विष्णुः ३ ।। अमुक तिथौ अत्र वासरे अमुक वासरे अमुकनाम महानक्षत्रे (सूर्य जिस नक्षत्र में हो) अमुकनाम दिक्सनक्षत्रे (उस दिन का नक्षत्र) अमुक नाम गुर्वर्क्ष (बृहस्पति जिस नक्षत्र में हो) विष्कम्भादि योगानां मध्ये अमुकनाम योगे अमुकनाम करणे भवार वशात् आनन्दादि योगानां मध्ये अमुकनाम योगे अमुक नाम मुहूर्ते (मुहूर्त दो दो घड़ी के होते हैं दिन में १५ तथा रात्रि में १५ ।। दिन के मुहूर्त—रुद्र भुजंग मित्र पितृ वसु उज्ज्वल विश्व अभिजित् धातृ शक्र अग्नि रक्ष वरुण अर्यमा भग ।। १५ ।।) एवं शुभावस्थायां विशेषतः अस्मिसमये (जो ग्रह जिस राशि में हो) अमुक स्थिते सूर्ये अमुक स्थिते चन्द्रे भौमे बुधे देवगुरौ शुक्रे शनौ राहौ केतौ तथा बालकस्य चूड़ाकरण लग्नात् यत्र कुत्र स्थानस्थितानां (अथवा उस समय के लग्न से ४ । ८ । १२ । तथा पंचमस्थान की शुद्धि के अनुसार जो ग्रह जहाँ पड़ता हो—चूड़ा करणलग्नात्

अमुक स्थानस्थित अमुक ग्रह कृत रिष्ट परिहारार्थं तथा अमुक स्थानस्थित अमुकग्रह द्वारा शुभ फलाधिक्य प्राप्तये इदं द्रव्यं दुष्टानां ग्रहाणां दुष्ट दोषोपशान्तये शुभानां विशेषशुभ फल प्राप्तये इदं सुवर्ण ब्राह्मणाय दास्ये ॐ तत्सन् मम ।। ब्राह्मणं सम्पूज्य दद्यात् । (तब पुरोहित दाहिनी जोटी क्लेदन (भिगोवे) करे । प्रथमं छन्दः—ॐ सवित्रेति प्रजापति ऋषिर्गार्गी च्छन्द आपो देवता क्लेदने विनियोगः । ॐ सवित्रा प्रसूता दैव्याऽआपऽउन्दंत ते तनूम् । दीर्घायुत्वाय वर्चसे ।। (सौल पिरुल से छाँटे । तीन कुश के विष्टर सहित जोटी उतारे) तत्र विनियोगः—ॐ एनावपदिति लम्बायन ऋषिः पंक्तिश्छन्दः सविता देवता केश छेदने विनियोगः । (बहिनें कांसे की थाली में दही मक्खन बछड़े का गोबर रखकर बालक के सम्मुख । माता अंचल करे) ।

केश छेदन मंत्रः—ॐ येना वपत्सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान् । तेन ब्रह्मणो पवते दमस्यायुः जरदष्टिर्यथासत् ।। (दाहिनी जोटी उतार कर सवित्रेति पूर्वमंत्र से पीछे की जोटी भिगावे । पीछे की जोटी उतारने का मंत्रः—) छन्दः—ॐ त्र्यायुषमिति नारायण ऋषि रुष्णिग् छन्दोऽग्निर्देवता केशच्छेदने विनियोगः । ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषं यदेवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम् सवित्रा मंत्र से बाँई जोटी भिगाकर छन्दः—ॐ येनेति प्रजापति ऋषिर्यजुश्छन्दः क्षुरो देवता केश छेदने विनियोगः । ॐ येन भूरिश्वरा दिवं ज्योक्व पश्चाद्वि सूर्यम् । तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय सुश्लोक्याय स्वस्तये ।। इतना कर्म पुरोहित करे ।

(तब नापित को गन्धाक्षत द्रव्य देकर सावधानी से बाल उतारने के लिये कहे) ततः केशान् छित्वा स्नानान्ते प्रतिष्ठापितानि नूतन वस्त्राणि परिधाप्य गन्धाक्षतपुष्प पुष्पमालादिभिः अलंकृत्य त्र्यायुष धारणं कृत्वा सर्वभ्यो देवेभ्यः पुष्पांजलिं बालक हस्तेन दापयेत् । संकल्पः कृतैतच्चूडा करण कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं मिदं सुवर्णमग्नि दैवत्यं

(इदं द्रव्यं वा) वरत्वेन ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे तथा उपविष्ट ब्राह्मणेभ्यो नटनर्तक गायक दीनानाथेभ्यो भूयसी दक्षिणां यथाशेनविभज्यदातु महं उत्सृजे तथा ब्राह्मणान् बन्धुवर्गान् च भोजयिष्ये ।। महानीराजनम् जीवमातृकापूजनं कृत्वा) रक्षा बाँधे, कंकण खोले । अभिषेकादि कर्म करे ।। इति संक्षेपेण चूडाकरण विधिः ।।

अथ कर्णवेध विधिः

(कान छेदने की विधिः)

बालक के तीसरे या पाँचवें वर्ष में चूड़ाकरण तथा कर्ण वेध करे । अद्योह० अमुकराशोर्बालकस्य करिष्यमाण कर्णवेध कर्मणि निर्विघ्नतया कार्य सिद्ध्ये भगवतो गणेश्वरस्य पूजनं करिष्ये ।। (गणेश पूजा करके) मातृ पूजादौ प्रधान संकल्पः अमुकराशोः पुत्रस्य बीजगर्भ समुद्रवैनो निबर्हण द्वारा पुष्टि—आयुः श्रीवृद्धये श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं कर्णवेध कर्म करिष्ये ।। प्रधान दीपं प्रज्वाल्य प्रतिष्ठां कुर्यात् । ॐ भूर्भुवः स्वः गणपति सहित गौर्यादि० इहागच्छन्तु इह तिष्ठन्तु तथा कर्म साक्षिन प्रधान दीप सुप्रतिष्ठितो वरदो भव । (मातृ पूजा करके आभ्युदयिक पुण्याहवाचन कलश में नवग्रह आवाहन स्थापन करके) जले दध्यक्षतपुंजेषु ॐ भूर्भुवः स्वः केशवाय नमः आवाहयामि स्थापयामि ।। एवं सर्वत्र ।। हरये० ब्रह्मणे० चन्द्रमसे० सत्याय० ईशानाय० सूर्याय० दिगीशेभ्यो० नासत्याभ्यां० सरस्वत्ये० गोभ्यो० गुरुभ्यो० (इस प्रकार आवाहनादि पूजन करके नीराजन करे । इष्ट देवता, भिषग्वर ब्राह्मण तथा कान छेदन कर्ता को गन्धाक्षत द्रव्यादि से सम्मानित करे । बालक प्रतिष्ठित वस्त्रादि गन्धाक्षत पुष्पमाला आदि से अलंकृत करके माँ की गोद में बैठाकर लग्नदान करे अस्य बालकस्य कर्णवेध लगनात्० (लग्न दान चूड़करण में देखें) लग्न दान करके गुड़ मोदकं दत्त्वा दक्षिण कर्ण अभिमन्त्रणे

छन्द-ॐ भद्रं कर्णेभिरिति मंत्रस्य प्रजापति ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो लिंगोक्ता देवता दक्षिण कर्णाभिमन्त्रणे विनियोगः ।
 ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षिभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥
 अथ वामकर्णाभिमन्त्रणे छन्दः-ॐ वक्षतिवेदेति भार्गवयमदग्नि दीर्घं तमसा ऋषियस्त्रिष्टुप् छन्दो लिंगोक्ता देवता
 वामकर्णाभिमन्त्रणे विनियोगः । ॐ वक्षन्ति वेदागनिगन्ति कर्णं प्रिय ८. सखायं परिषस्वजाना । योषेवसिङ्क्ते
 वितताधि धन्वज्याऽइय ८. समनो पारयन्ती ॥ इतिकर्णौ वेधयित्वा दक्षिणा संकल्पं कृत्वा जीमातृका पूजनं
 महानीराजनं कुर्यात् (अभिषकादि कर्म करके भोजन करावे) इति कर्ण वेधः ॥

अथ प्रथम रजोदर्शन शान्तिः

दीपं प्रज्वाल्याचम्य गणेशं पूजयित्वा मातृपूजा प्रधानसंकल्पः-ॐ विष्णुः ३ अमुकगोत्रः अमुकराशिः
 अमुकशर्माहं मम अस्यां भार्यायां दुष्ट मासतिथ्यादौ प्रथम रजोदर्शन सूचित सकलारिष्ट शान्तिर्थं नारदः सहितोक्तं
 शान्तिं करिष्ये । तदंगतया पूर्वगानि च सर्वाभ्युदय प्राप्तये ब्राह्मण द्वारा पुण्याह वाचनं तथा होमार्थं ब्राह्मणस्य
 पूजन पूर्वकं वरणं करिष्ये ॥ (ऐसा संकल्प, सम्पूर्ण एक साथ मेरे पूज्य पिताजी स्वर्गीय श्री पं० पुरुषोत्तम जोशी
 जी ने स्वहस्त लिखित दश कर्म में लिखा है । ततो ब्राह्मणमध्यादिभिः सम्पूज्य पुण्याहं वाचयित्वा ततो गोमयेन
 द्विहस्त परिमितं मण्डलं विलिख्य तन्मध्ये धान्या दि तण्डुल यव राशिं च कृत्वा तण्डुलैः कमलं कृत्वा तन्मध्ये
 सर्वौषधियुतं कलशं सम्पूज्य अष्टोत्तरशतं सहस्रं वा गायत्री जपं विधाय तेन कलशोदकेन पंचगव्येन च अभिषिच्य
 स्नापयित्वा (नहलाकर) अग्निस्थापनं कृत्वा तत ईशाने वरुणादि आवाहनार्थं कलशं संस्थाप्य दध्यक्षतपुंजेषु

आदित्यादि नव ग्रहादीन् आवाह्य ब्रह्म वरुण रक्षासूत्र सहितं प्रतिष्ठा पूर्वकं पूजनं कृत्वा वरद नामानं—अग्निमावाह्य सम्पूज्य द्रव्यत्यागः—अद्योह० अमुकोऽहं ममास्यां भार्यायां दुष्ट मासादौ प्रथम रजोदर्शन सूचितारिष्ट शान्तिपूर्वकं सर्वाभ्युदय प्राप्तये नारदोक्त शान्ति कर्मणाऽहं यक्ष्ये तत्र आघाराज्य भाग देवताभ्य इदमाज्यं तथा दूर्वातिलाज्य द्रव्यैः गायत्र्या अष्टोत्तर शत संख्ययाऽहं यक्ष्ये शेषेण चरु—आज्येन (सामग्री और घी से आहुति स्विष्ट कृत को देते हैं) स्विष्टकृतं यक्ष्ये तथा महाव्या हति देवताभ्यः सर्व प्रायश्चित्त देवताभ्योऽग्नये प्रजापतये च इदमाज्यं मया परित्यक्तं यथा दैवत मस्तु ॐ तत्सन्ममम् ॥ (तब चार आहुति आधार भाग—२ आज्यभाग—२ देकर दूर्वातिलाज्यद्रव्य की गायत्री से १०८ आहुति ।) नाममंत्रेण आदित्यादिग्रहादिभ्य ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा । तत आज्येन भूरादि नव आहुतिर्हुत्वा (संश्रवप्राशन से पूर्णपात्रदान तक कर्म करके पूंगीफल आदि द्रव्य से पूर्णाहुतिः) ततः अद्योहेत्यादि० अस्य शान्ति कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थ इदं गोप्रत्याम्नायीभूतं सुवर्णं (द्रव्यं वा) इदं तिलपात्रं ससुवर्णं ब्राह्मणाय दास्ये० ॥ तथा यज्ञ पुरुष प्रीतये सिद्धान्नेन ब्राह्मणान्भोजयिष्ये । क्षेत्रपालाय बलिंदत्वा रक्षाबन्धन घृतछायादर्शन अथ—अभिषेकः—प्रथम रजोदर्शने (अभिषेक) मंत्राः—(गायत्री जप तथा रुद्रसूक्त व श्रीसूक्त के पाठ का विधान है) ।

ॐ आपो हिष्ठा भयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरस्तस्माऽअरंग मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च न । ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिमुष्टिर्वर्द्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योमुक्षीय मामृतात् । ॐ जात वेदसे सुनवाम सोमम राती यतो निदहाति

वेदः । स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥ ॐ समुद्र ज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात् पुनानायन्त्य निविशमानाः । इन्द्रो या वज्री वृषभोरराद ता आपो देवीरिह मामवन्तु ॥ या आपो दिव्या उतवा स्रवन्ति खनित्रिमा उत वा याः स्वयं जाः । समुद्रार्था याः शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु ॥ ॐ त्रायन्तामिह देवास्त्रायन्तां मरुतां गणः त्रायन्तां विश्वा भूतानि यथा यमपरपा असत् ॥ ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामग्नेस्तेजसा सूर्यस्य वर्चसेन्द्रियेणाभिषिंचामि ॥ ॐ याते रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी । तयानस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥ ॐ यज्जाग्रतो दूरमुदैतिदैव तदुसुप्तस्य तथैवैति । दूरगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकन्तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥ (इसके साथ ही शिव संकल्प के सभी मंत्रों से अभिषेक करे ॥) तिलक मंत्र प्राणादि ॥

अथ काक विष्टा शान्ति विधिः

(कौवा पंखों से आघात करे, खरोंच लगावे, सोये में स्पर्श कर दे तथा काक मैथुन दर्शन से स्थान हानि व महारिष्ट निवारणार्थ शान्ति) दीपं प्रज्वाल्य आचम्य सूर्यार्घदानं कृत्वा संकल्पः—ॐ विष्णुः ३ अद्यहेत्याद्युच्चार्य मम काकविष्टा जनित महारिष्ट निरसन पूर्वकं दीर्घायुरारोग्यावाप्तये काकविष्टा शान्तिं करिष्ये । गणपत्यादि पूजनं कृत्वा कलशे दध्यक्षत पुंजेषु लोक पालानावाह्य सुवर्ण प्रतिमायां इन्द्रस्य त्र्यम्बकस्य च पृथक्-पृथक् अग्न्युत्तारणपूर्वकं प्रतिष्ठावाहनपूर्वकं पूजनं कुर्यात् मन्त्रौ—ॐ त्रातारमिन्द्रमवितार मिन्द्र ८. हवे हवे सुहव ८. शूरमिन्द्रम् । हयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ८. स्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः) ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिपुष्टि वर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

इति आवाहनादि नीराजनान्तं सम्पूज्य ततः (१०८+१०८) तिल ताण्डुलाज्यादिभिर्होमं मन्त्रद्वयेन कुर्यात् लोकपालेभ्यो नाममंत्रैर्यथा— ॐ गणेशाय स्वाहा । इदं गणेशाय न मम ॥ ॐ दुर्गायै स्वाहा । इदम० ॥ ॐ वायवे स्वाहा । इदमवायवे न मम । ॐ आकाशाय स्वाहा । इदम० ॥ ॐ अश्विभ्यां स्वाहा । इदमश्विभ्यां न मम । ग्रामदेवता० इष्टदेवता० । प्रायश्चित्त होमं कृत्वा कार्कभ्यो बलिंदद्यात्— ॐ ऐन्द्र वारुण वायव्याः सौम्या वै नैऋतास्तथा । वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमावन्नं मयार्पितम् ॥ ततो हस्तो पादौ प्रक्षाल्य पूर्णाहुतिं कुर्यात् गोदानासम्भवे तिलपात्रं कुर्यात् । अभिषेकं आज्यावलोकनं छायादानं च कृत्वा प्रतिमादानं दक्षिणादानं च कृत्वा विप्रान्भोजयेत् ॥

गृह प्रवेशे विशेष—कुछ देवता एकपद अर्थात् एक कोष्ठक वाले हैं, कुछ देवता द्विपद (दो कोष्ठक) वाले हैं । कुछ त्रिपद हैं अर्थात् तीन कोष्ठक वाले हैं अतः रंग भरने में दो दो तीन—तीन मिलाकर कुल ४५ बनेंगे । मण्डल के बाहर २६ देवताओं की स्थापना होगी । $४५ + २६ = ७१$ देवताओं का आवाहन होगा । पहले $६ + ६ = ८१$ कोष्ठ बनावे, यह गृहप्रवेश का नियम है ।

निवेदक—

पं० घनानन्द जोशी आचार्य
भवाली नैनीताल

“वास्तुवेदी, रंग भरने की विधि”

लाल	पीला	पीला	पीला	लाल	सफेद	काला	काला	धूम्र
पीला	सफेद	पीला	पीला	लाल	सफेद	काला	सफेद	लाल
पीला	पीला	सफेद	काला	काला	काला	लाल	सफेद	सफेद
काला	काला	लाल	पीला	पीला	पीला	सफेद	पीला	पीला
सफेद	सफेद	लाल	पीला	सफेद	पीला	सफेद	काला	काला
काला	काला	लाल	पीला	पीला	पीला	सफेद	लाल	लाल
लाल	लाल	लाल	सफेद	सफेद	सफेद	लाल	काला	काला
लाल	लाल	काला	पीला	सफेद	लाल	सफेद	सफेद	पीला
लाल	पीला	काला	पीला	सफेद	लाल	सफेद	लाल	लाल

वास्तुवेदी में दो अंगुल के चौकोर ८१ कोष्ठक। नक्शे में जो अंक दो या तीन बार आये हैं। उन्हें रंग भरने में मिलाकर एक बनावे। इस प्रकार ८१ कोष्ठकों के ४५ कोष्ठक बनेंगे। दध्यक्षत पुंजो से ४५ शिखादि देवताओं का आवाहन स्थापन। मण्डल के बाहर चरकी आदि ४ स्कन्दादि ४ तथा गणेशादि ८ और दश दिक्पाल सहित कुल २६ देवता कोष्ठों के बाहर स्थापित करे। १०+१० रेखा देवताओं को गन्धाक्षत पुष्प से नाममंत्र से पूजे। रंग भरने का क्रम—पूजा विधि में देखें जैसे—ईशान में १ के अंक में रक्तवर्ण लिखा है। तथा २, ३+३, ४+४ में पीत वर्ण लिखा है। ५+५ में रक्तवर्ण लिखा है। ४५ के सभी अंकों में पीतवर्ण लिखा

च तथा अस्मिन् गृहे शुभ कर्मणां वास्तु देवस्य च शुभतासिद्धिं द्वारा श्री वास्तु पुरुष प्रीतये गृह प्रवेश निमित्तां नवग्रहमखपूर्विकां गृहवास्तुशान्तिं करिष्ये, तत्पूर्वागत्वेन निर्विघ्नतया कार्यं सिद्धये भगवतो गणेश्वरस्य पूजनं करिष्ये । (गणपतिपूजन मातृका पूजन तथा अभ्युदयिक करके पुण्याहवाचन करे) पुण्याहवाचन संकल्पः—करिष्यमाण ग्रहमख पूर्वक नूतन गृह प्रवेशा ख्यकर्मणि (गृहवास्तुशान्ति कर्मणि) पूर्वागत्वेन सकल मंगलाभिवृद्ध्यर्थं ब्राह्मणैः पुण्याहं वाचयिष्ये तदंगत्वेन चतुर्णां ब्राह्मणानां पूजनपूर्वकं वरणं करिष्ये (साम वेदी सहित चारों वेदों के चार ब्राह्मण) अर्घ्यादिभिः सम्पूज्य एभिर्गन्धाः० ततः पुण्याहवाचनं कृत्वा ईशाने ग्रह वेद्याः समीपे पूर्वाभिमुखो भूत्वा दध्यक्षतपुंजेषु नवग्रहादीन् आवाह्य कलशं ब्रह्मवरुण कंकणसहितं स्थापनं कृत्वा पूजन संकल्पः—ॐ विष्णुः ३ । दध्यक्षत पुंजेषु आवाहितानां आदित्यादि नवग्रहादीनां तथा कलशं कंकण रक्षा सूत्र वरुण सहितानां प्रतिष्ठापूर्वकं पूजनं करिष्ये । ॐ एतन्नेति प्रतिष्ठाप्य ध्यानम्—ॐ ब्रह्मामुरारी० ।। (आवाहनादि नीराजनान्त पूजन करके कंकण बाँधे) ततः पूर्वं वास्तुवेद्याः समीपे पूर्वाभिमुख उपविश्य ६+६-८१ कोष्ठकेषु शिख्यादि वास्तु देवानां दध्यक्षत पुंजेषु—आवाहनमस्थापनं कुर्यात् । ईशानादि अथवा आग्नेयादि विदिक्षु लोह शंकु रोपणम्—विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः । अस्मिन्गृहेऽवतिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा । छन्दः—ॐ वास्तोष्पत इति मंत्रस्य वसिष्ठ ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो वास्तुदेवता वास्तु स्थापने विनियोगः ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवो भवानः । यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नोभव द्विपदे शंचतुष्पदे ।।

(वास्तु देवता को सुवर्ण प्रतिमा अग्न्युत्तारणपूर्वक कलशोपरि स्थापित करके वास्तुवेदी के ऊपर शिख्यादि देवताओं के साथ स्थापन पूजन करे) ॐ भूर्भुवः स्वः अस्यां सुवर्ण प्रतिमायां वास्तु पुरुष इहागच्छ इहतिष्ठ पूजार्थं त्वामावाहयामि

स्थापयामि । ईशानादि क्रमेण शिख्यादिदेवानाम्—स्थापनविधिः—ॐ भूर्भुवः स्वः शिखिने नमः शिखिनमावाहयामि स्थापयामि । ॐ भूर्भुवः स्वः पर्जन्याय नमः पर्जन्यमावाहयामि स्थापयामि ।। (एवं सर्वत्र योजयेत्) जयन्ताय० कुलिशायुधाय० सूर्याय० सत्याय० भृषाय० आकाशाय० वायवे० पूर्णे० वितथाय० गृहशताय० यमाय० गंधर्वाय० भृंगराजा० मृगाय० पितृभ्यो० दौवारिकाय० सुग्रीवाय० पुष्पदन्ताय० वरुणाय० असुराय० शोकाय० पापाय० रोगाय० अहये० मुख्याय० भल्लाटाय० सोमाय० सर्पाय० अदितये० दितये० अन्नयो० सावित्राय० जयाय० रुद्राय० अर्यम्णे० सवित्रे० विवस्वते० विबुधाधिपाय० मित्राय० राजयक्ष्मणे० पृथ्वीधराय० आपवत्साय० ब्रह्मणे वा ४५ + २६ — ७१ कुल ।। चरक्यै० विदार्यै० पूतनायै० पापराक्षस्यै० स्कन्दाय० अर्यम्णे० जुंभकाय० पिलिपिच्छाय० गणेशाय० दुर्गायै० वागाय० विभत्साय० उग्रसेनाय० डामराय० महाकालाय० अश्विभ्यां० (इन्द्राय० अग्नये० यमाय० निऋतये० वरुणाय० वायवे० कुबेराय० ईशानाय० ब्रह्मणे० (अथवा रुद्राय०) अनन्ताय० (दश दिक्पालौ को मण्डल से बाहर पूजते हैं) १०+१० रेखाः—ॐ लक्ष्म्यै नमः । ॐ यशोवत्यै नमः । शान्तायै० कान्तायै० विशालायै० प्राणवाहिन्यै० सत्ये० सुमनायै० नन्दायै० सुभद्रायै० । १० ॐ सुरथायै० हिण्यायै० सुव्रतायै० विभूत्यै० विमलायै० प्रियायै० जयायै० ज्वालायै० विशाखायै० विशदायै० । (इन्हीं नाम मंत्रों से हवन भी करे)

संकल्पं कृत्वा प्रतिष्ठा० ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तुपुरुष तथा दध्यक्षतपुंजेषु आवाहिता शिख्यादि देवता इहागच्छन्तु इह तिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ।। (अत्र आं हीं कौं इत्यादिभिः सुवर्ण प्रतिमायां वास्तु पुरुषस्य प्राण प्रतिष्ठां कुर्यात्) ततो ध्यानम्—ॐ नागपृष्ठ समारूढं शूलहस्तं महाबलम् । पाताल नामकं देवं वास्तुदेवं सदा भजे । ध्यानं समपूर्यामि आवाहनम्—आगच्छ भगवन्वास्तो सर्व देवैरधिष्ठित । भगवन् कुरु कल्याणं गृहेऽस्मिन्सुस्थिरोभव ।।

ॐ वास्तु पुरुषाय नमः ॐ शिख्यादि देवताभ्यो नमः आवाहनं समर्पयामि (एवं सर्वत्र) आसनम् पाद्यम् दत्वा अर्घ्यम्—ॐ
 अयोने भगवन्भर्ग ललाटस्वेद सम्भव । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं वास्तु स्वामिन् नमोस्तुते ।। आचमनीयम् ।। पंचामृतेन
 स्नानम्—ॐ घृतेन सीता मधुना समज्यतां विश्वेदे वैरनुमता मरुद्धिः । ऊर्जस्वती पयसा पिबमानाऽस्मान्सीते
 पयसाभ्यां ववृत्स्वः ।। शुद्धोदक स्नानम् । अंगप्रक्षणम् । वस्त्र उपवस्त्रम् च यज्ञोपवीतम् । गन्धम्—श्रीखण्डं चन्दनं
 दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं मया दत्तं कुंकुमेन च संयुतम् ।। अक्षताः—अक्षताः परमा दिव्याः कुंकुमाक्ताः
 सुशोभनाः । मया निवेदिता भक्त्या शुभ्राश्चाति मनोहराः ।। पुष्पाणि—ॐ माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै
 तथा । मयानीतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् । धूपम् दीपम् नैवेद्यम्—ॐ शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्रीर घृतानि
 च । आहारो भक्ष्य भोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।। नैवेद्यांगमाचमनीयं दत्वा क्षणं ध्यात्वा जपेत्—ॐ वास्तु पुरुषाय
 नमः ॐ शिख्यादिभ्यो नमः । ॐ गुह्यातिगुह्य गोप्तारो गृहन्त्वस्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु भो देवाः प्रसादात् भवतां
 मम । फल ताम्बूलादिभिः सम्पूज्य द्रव्यं नीराजनम् । विशेषार्घ्यम्—ॐ पूज्योषि त्रिषु लोकेषु गृहरक्षार्थं हेतवे / त्वद्विना
 च न सिद्ध्यन्ति यज्ञदानादिकाः क्रियाः । अयोने भगवन्भर्ग ललाट स्वेद सम्भव । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं वास्तुदेव
 नमोस्तुते । पुष्पाञ्जलिः—ॐ नमस्ते वास्तुदेवेश सर्वविघ्न हरो भव । शांतिं कुरु सुखं देहि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे ।।
 ॐ वास्तुपुरुष नमस्तेस्तु भूशय्याभिरतः प्रभो । मदगृहं धनधान्यादि समृद्धं कुरु सर्वदा ।। प्रदक्षिणायानि कानि च०
 प्रणामः—ॐ नमः सर्वहितार्थाय जगदाधार हेतवे । साष्टांगोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः ।। अनया पूजया
 वास्तुपीठस्थ देवताः प्रीयन्तां न मम ।। (वहीं पर २० थूमे तथा नाना रंग की एक बालिस्त या एक हाथ की १०
 पताकार्यै पूजकर छतपर रखे अन्त में दिक्पाल पूजन में मकान के चारों ओर १ हाथ प्रमाण पदमादि के १० दण्डों

में ध्वजा फहरावे) ध्वजा विषये शास्त्रवचनम्—ध्वजान् दृष्ट्वा मण्डपे तु लोकपाल समप्रभान् । नश्यन्ति राक्षसाः सर्वे सूर्यलोके तमो यथा । मंत्रः—ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विशीमत० (ध्वजापूर्वादिक्रम से—पीत, रक्त, कृष्ण, नील, श्वेत, हरित, मेघवर्ण, रक्त—१० यही क्रम पताका में है) ॐ ध्वजा पताकाभ्यो नमः सवोपचारार्थं गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामिः प्रार्थना मंत्र—ॐ इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञोऽदित्यानां मरुता २ शर्वोऽउग्रम् महामनसां भुवनस्य वानाङ् घोषो देवानां जयतामुदस्थात् ।। (इस प्रकार पताका मकान की छत पर सभी दिशाओं में १० रखें)

अथ हवन वेदी समीपे गत्वा आचार्य वरण संकल्पः—ॐ विष्णु ३ करिष्यमाण नूतन गृह प्रवेशे गृहवास्तु शान्ति कर्मणि एतत्कर्माङ्ग होम कर्मणि आचार्य कर्मकर्तुं आचार्यस्य पूजनपूर्वकं वरणं करिष्ये, आचार्यम् अर्घ्यादिभिः सम्पूज्य एभिर्गन्धाक्षतपुष्प माला वासोद्रव्यैः होमकर्मणि आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे ।। वृत्तोऽस्मि ।। प्रार्थना—आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनाम्बृहस्पतिः । तथा त्वं मम यज्ञोऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत । त्वं मे आचार्यो भव । अहं भवानि । अथ आचार्यः—त्रिभिर्दभैः पाशूनपसार्य गोमयोदकेनोपलिप्य खड्गेन त्रिस्रो रेखाः कृत्वा (परिचम से पूर्व की ओर) अनामिका अंगुष्ठाभ्यां रेखाभ्यः पाशून उद्धृत्य (तीनों रेखाओं में से मृत्तिका उठाकर)

ईशानकोणे निक्षिपेत् ४ मणिकोदकेन अम्युक्ष्य ५ ताम्र पात्र स्थितमग्निं वेद्यां स्वाभिमुखं (अग्नि का मुख परिचम को करे) स्थापयेत् । तत्रमंत्र—ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे । देवाँ २ ऽऽआसादयादिह । इत्यग्निं संस्थाप्य ब्रह्मावरणं—० कृताकृतावेक्षणाय ब्रह्मकर्म कर्तुं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे० ।। यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेद विशारदः । तथा त्वं मम यज्ञोऽस्मिन्ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ।। इत्थं ऋत्विक् सदस्यानां वरणं कृत्वा प्रार्थयेत्—अस्य

यज्ञस्य निष्पत्तयै भवन्तोभ्यर्चिता मया । सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं शान्तिकं विधि पूर्वकम् ॥ (कुशकण्डिका हवन प्रयोग
 में देखे) ततो द्रव्यत्यागः ॐ विष्णुः ३ अस्मिन्गृहवास्तुशान्तिकर्मणि—इदमाज्यं आधाराज्यभागदेवताभ्यः
 तत्तद्नवग्रहोक्त समित्ति लाज्य पायस चरु बिल्वफलादिद्रव्यैः (तिलाज्यद्रव्यैः) आदित्यादिनवग्रहेभ्यः अष्टोत्तरशत
 संख्यया तथा अष्टाविंशति संख्यया पलाशसमिद्धिः अधि देवताभ्यः एवं प्रत्यधिदेवताभ्यः इन्द्रादिदिक्पालेभ्यः
 विनायकादिलोकपालेभ्यः तथा अमुकसंख्यया शिख्यादिवास्तु देवताभ्यः तथा अमुक संख्यया स्थान इष्ट० ग्राम
 देवताभ्यः तथा शेषेण चरुणा आज्येन च स्विष्टकृते शेषमाज्यं महाव्याहृतिदेवताभ्यः सर्व प्रायश्चित्त देवताभ्यो अग्नये
 प्रजापतये च मया परित्यक्तं यथा दैवतमस्तु तथैतद्धोम कर्मणि कपिलाद्याग्नीनां वरद नामाग्नेश्च प्रतिष्ठावाहन
 पूर्वकं पूजनं करिष्ये ॥ अग्निपूजनम् कृत्वा ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदम्रजा० । ॐ इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय० ॥
 ॐ अग्नये स्वाहा । इदमग्नये नमम ॥ ॐ सोमाय स्वाहा । इदम० ॥ ततो नवग्रहादिहोमं कृत्वा वास्तुहोमं कुर्यात् ।
 प्रथमं आज्याहुतयः—ॐ इह रति रिहमध्वरमिह धृतिरिह स्वधृतिः स्वाहा । इदमग्नये नमम । ॐ उपसृजं धरुणमात्रे
 वरुणो मातरं धयन् रायस्पोषमस्मासुदीधरत्स्वाहा । इदमग्नये नमम ॥ छन्दः ॐ वास्तोष्पते इति मंत्रस्य वसिष्ठ
 ऋषि स्त्रिष्टुप् छन्दो वास्तोष्पतिर्देवता होमे विनियोगः (चार आहुति) ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽनवीमो
 भवानः । यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नोभव द्विपदेशं चतुष्पदे स्वाहा । इदमवास्तोष्पतये नमम ॥ ततः तिलाज्यहोमः
 ॐ अग्निमिन्द्रं बृहस्पतिं विश्वान्देवानुपह्वे सरस्वतीं च वाजिनं च वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा । इदमग्नये इन्द्राय
 बृहस्पतये विश्वेभ्यो देवेभ्यः सरस्वत्यै वाजिनेचनमम ॥ ॐ सर्पदेवजान्त्सर्वान् हिमवत c. सुदर्शनम् ।
 वसुंश्चरुद्रानादित्यानीशानंजगदैः सह ॥ एतान् सर्वान् प्रपद्येऽहं वास्तु मेदत्तवाजिनः स्वाहा । इदं सर्पदेवजनेभ्यो

हिमवतेसुदर्शनाय वसुभ्यो रुद्रेभ्य आदित्येभ्यः ईशानाय जगद्भ्यश्च नमः ॥ ततः शिख्यादिहोमः । ॐ शिखिने स्वाहा । इदम् ॐ पर्जन्याय स्वाहा इदम् ० (शेष देवता ८१ आहुति नाम पूजा क्रम में देखें) ततो (दो आहुति) बिल्वहोमः—ॐ वास्तोस्पते ध्रुव स्थूणा २ सत्र ४. सोम्यानां द्रप्सोभेत्तापुरां शाश्वतीनामिन्द्रो मुनानां सखा शन्नोभवद्विपदेशंचतुष्यदे स्वाहा ॥ इदं वास्तोष्पतये नमः ॥ ॐ अघोरेभ्योऽथवोरेभ्यो घोर घोरतेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्वः शर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्र रूपेभ्यः स्वाहा (१०८ या २८ आहुति देवे) तथा गायत्री, महामृत्युञ्जय ॐ नमः शिवाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे वटुकभैरव, गणपत्यादि । (स्थान देवता, इष्ट देवता, आदि के लिये आहुति देवे । अन्य सभी जप पाठादि का दशांश ।)

(भूरादि नव आहुति, प्रायश्चित्त होम घी से करे । संश्रवप्राशनादि पूर्णपात्र दान होम सांगता अंचलग्रन्थि प्रतिष्ठा पूर्वक लग्नदानं (चतुर्थ शुद्धिः लग्नदानं) कुर्यात् (घर के भीतर के चार मुख्य कोने पूजे) भित्ति स्पर्शः—चावल के बेस्वार से हाथ की छाप २ । ॐ श्रीश्चत्वा यशश्च पूर्वसन्धौ गोपायेताम्—इति पूर्व गन्धाक्षतादिभिः पूजन पूर्वक स्पर्शत् । ११ । ॐ यज्ञश्च त्वा दक्षिणा च दक्षिणे सन्धौ गोपयेताम्—इति दक्षिणे । १२ ॐ अन्नं च त्वा ब्राह्मणश्च पश्चिमे सन्धौ गोपायेताम् । १३ । ॐ ऊर्क्च त्वा सूनुताच उत्तरे सन्धौ गोपायेताम् । १४ । (पूर्णाहुति त्र्यायुषधारण से पूर्व दिक्पाल पूजन क्षेत्रपाल पूजन करे तब घर से बाहर आकर पूर्वदिक्रम से प्रोक्षण करे छत पर वस्त्र बिछावे, क्षेत्रपाल की शिला रखे) विश्वकर्मा पूजन—ॐ विश्वकर्मन् हविषा वावृधानः स्वयं यजस्व पृथिवीमुतधाम् । मुह्यन्त्वन्ये अभितो जनास इहास्माकं मघवा सूरिरस्तु ॥ (शिल्पी पूजनम्) (मकान बनाते समय वास्तु रखे । सुवर्ण पंचरत्नादि सहित वास्तु गाड़ने में सुवर्ण की पूजित वास्तु प्रतिमा हस्तमात्र खोदकर गोमय से लीपकर सप्त धान्यादि से

युक्त कर किसी पात्र में प्रतिमा रखे। गर्त पूजन करे—ॐ ह्रीं आधार शक्तिके पृथिव्यै नमः शैवाल (काई) दध्यक्षतादि के ऊपर रखकर प्रार्थना करे—) ॐ पूजितोऽसि मया वास्तो होमाद्यैरर्चनेः शुभैः। प्रसीद पाहि विश्वेश देहि मे गृहजं सुखम् (महाध्वजा गर्त सहित प्रतिष्ठा करके गाड़े) ध्वजा प्रार्थना—यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च तावत्त्वं सुस्थिरो भव। दुरितं यत्समस्तानां सत्क्रियायै धुनोतु सः।। प्रजाहानिश्च दुर्भिक्षं मा भूज्जगति सर्वदा। त्वत्प्रसादाच्च तत्सर्वं शुभं भवतु नो नमः।। (कन्धा लगाते हुये ध्वजा प्रदक्षिणा करके वास्तु प्रार्थना) सशैल सागरां पृथ्वीं यथा वहसि मूर्धनि। तथा मां वह कल्याणि सम्पत्सन्ततिभिः सदा। गर्त को भरकर घृत दीप प्रज्वलित करके गन्धाक्षतादि से पूजन प्रार्थना—) ॐ नाग पृष्ठ समारूढं शूल हस्तं महाबलम्। पाताल नामकं देवं वास्तुदेवं नमाम्यहम्।।

मूलच्छेदं तृणच्छेदं कृमिकीट निपातनम्। हननं जल जीवानां भूमौ शस्त्रेण घातनम्।।

अनृतं भाषितं यच्च गृहार्थं यत्कृतं मया। तत्सर्वं क्षम्यतां देव गृह शालां शुभं कुरु।।

(नीराजन करके अर्घ्य देकर पुष्पाञ्जलिः) ॐ वास्तु पुरुष नमस्तेस्तु भूशय्या भिरत प्रभो। मद गृहं धन धान्यादि समृद्धं कुरु सर्वदा।। (मकान की प्रदक्षिणा सपरिवार करे रक्त सूत्र वेष्टन मकान को त्रिसूत्र से तीन बार) दुग्ध तिल मिश्रित जलेन अभिषेकम्—ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पु०। ॐ पयः पृथिव्यां०। ॐ द्यौः शान्ति०। यत्पापं०।। (अत्र गोदानमपि भवति) मकान के चारों ओर दशदिक्पाल पूजन पूर्वादि क्रम से प्रदक्षिणा क्रम से गन्धाक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्यादि अर्पण करते हुये प्रणाम करे) पूर्वे—इन्द्र ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इत्यादि।। (ॐ त्रातारिमन्द्र०।। अग्नि, यम, निऋति, वरुण, वायु, कुवेर, ईश ब्रह्मा (पूर्व ईशान मध्ये)। अनन्त (नैऋत्य पश्चिममध्ये)।। पहली प्रदक्षिणा में ८ ईशान तक, दूसरी में ब्रह्मा, तीसरी में अनन्त को पूजे।। १० दीये भी रखे—

उपरोक्त १० ध्वजा सहित ।।) गृह प्रवेशे द्वार पूजा—(वसोर्धारं सहित) कुमारी धनदा नन्दा मंगला विपुला अचला पद्मा चैव समाख्याताः सप्तैता द्वार मातरः । (देहली द्वार चौखट आदि पूजे) गन्धाक्षत पुष्पैः—ॐ पूजितासि मया भक्त्या स्थापिता च स्थिराभव । स्थापितासि मया शाखे सुखदा ऋद्धिदा भव ।। ॐ गणपतये नमः ॐ श्रिये नमः (ऊर्ध्वम्) । दक्षिण शाखा—ॐ धात्रे नमः । वामशाखा—ॐ विधात्रे नमः । अधः—ॐ देहल्यै नमः । ॐ द्वारश्रियै नमः दरबाजे ।। ततो नीराजनं कृत्वा गृहप्रविशेत् । (गीत वादित्र, स्वस्ति वाचन, मंगल घोष, सपरिवार तथा बन्धु वर्ग सहित दाहिने कन्धे में जल कलश रखकर गृह प्रवेश करे) तत्र मंत्रः—

ॐ धर्म स्थूणा राज ८ श्रीस्तूभ महोरात्रे द्वार फलके इन्द्रस्य गृहा वसुमन्तो वरुथिनस्तानहं प्रपद्ये सह प्रजया पशुभिः सह ।। यन्मे किञ्चिदस्यूपहूतः सर्वगण सखाय साधु संवृतस्तां त्वा शाले रिष्ट वीरा गृहान्नः सन्तु सर्वतः ।। (तब चुल्ही बर्तन जल स्थानादि का पूजन करे । पश्चिम में स्नानागार । पूर्व दक्षिण मध्ये—अग्निस्थानम् । पश्चमे—शयनं भोजनालयः । दक्षिण पश्चिम के मध्य में वस्त्रस्थानम् । उत्तरे—भाण्ड कोशः पश्चिमोत्तर मध्ये—पशुस्थानम् । ईशाने देव मन्दिरम् देवताओं का मुख पश्चिम को करे) ततः पूजनम्—ॐ दीपाय नमः । ॐ दक्षिण बाहवे नमः । ॐ वाम बाहवे नमः । ॐ गन्धर्वाय नमः ॐ अग्नये नमः ॐ अन्नपूर्णायै नमः । सन्धान भाण्डे—ॐ ज्येष्ठायै० जले—ॐ वरुणाय नमः । पेषिणी शिला—ॐ सुभगायै नमः ओखली—ॐ रौद्रीपाय नमः । मूसल—ॐ बलभद्र प्रियाय प्रहरणाय नमः । विस्तर—ॐ अनङ्गाय नमः । पृष्ठ—ॐ पुन्नागाय नमः । बल्ली—ॐ किन्नरेभ्यो नमः । छत—ॐ आकाशाय नमः । गृहमध्ये—ॐ क्षेत्रपालाय नमः । लकड़ी कण्डे—ॐ रक्षोजनेभ्यो नमः इत्यादि गन्धाक्षत पुष्पैर्नाममन्त्रेण सम्पूज्य (घर के मध्य में अन्न राशि के ऊपर कलश रखकर दीप प्रज्वलित करके पुण्याह वाचन पूर्वक आशिष देवे प्रातः रक्षाबन्धादिकर्म करे ।

मन्दिर में ध्वजा छत्र घण्टी चढ़ाना

(ध्वजा में जिस देवता की जो सवारी है (वाहन है) उसका चिह्न बनावे। विष्णु की ध्वजा में गरुड़, तथा देवी की ध्वजा में सिंह शिव की ध्वजा में वृषभ का चिह्न बनावे। साथ ही प्रथा है कि शिव की ध्वजा में डमरू त्रिशूल, विष्णु का शंख चक्रादि—तथा सभी प्रकार की ध्वजाओं में स्वस्तिक, श्री ॐ कार आदि बनाते हैं। ध्वजा में घण्टी घँघरू बाधें। मन्दिर या मकान के पूर्व, ईशान उत्तर अथवा मुख्य द्वार के अग्रभाग में ध्वजा गाड़े।)

संकल्पः—मम सपरिवारस्य दुःख दुर्भिक्ष प्रजाहानि समस्त दुरितोपशान्ति पूर्वकं सर्वारिष्ट निवृत्तये (अमुक कामनया) श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त फलावाप्तये (अमुक देवस्य) ध्वजायाः प्रतिष्ठापूर्वकं पूजनं करिष्ये। प्रतिष्ठा—एतन्ते० ॐ भूर्भुवः स्वः अस्यां ध्वजायां अमुक देवस्य अमुकवाहन (वाहन का उच्चारण करे) इहागच्छ इह तिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव ॥ (गन्धाक्षतादि से नीराजन तक पूजन करे) ॥ मंत्रः—ॐ सूर्य कोटि सहस्राभं प्रलयाम्बुद निःस्वनम्। प्रदीप्त दशन प्राणं प्रकाशं मुख कन्दरम् ॥ (गर्त की भूमि प्रतिष्ठा पूजन पंचरत्न प्रक्षेप शंखघोष पुरःसर ध्वज पक्का गाड़ कर प्रदक्षिणा करे (कन्धा लगाये) ॥ मंत्र—ॐ शान्तिस्तुतिर्वचास्तु स्थानस्यायं शुभं भवेत्। प्राणिनः सुखिनः सन्तु राजा च विजयी भवेत् ॥ यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च तावत्त्वं सुस्थिरो भव। प्रजाहानिश्च दुर्भिक्षं माभूज्जगति सर्वदा ॥ (तब गोला या श्रीफल तोड़े) घण्टापूजनम्—(प्रतिष्ठा पूर्वक पूजन करके चढ़ावे) ॐ आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु राक्षसाम् घण्टापूजां करोम्यद्य धर्मकामार्थं सिद्ध्ये ॥ (जिस देवता के निमित्त होवे, उसका पूजन कर के अर्पण करे।) मंत्रः—ॐ चन्द्रमाऽअप्सन्तरा सुपर्णो धावते दिविः रयिं पिशंगं बहुलं पुरुस्पृह चः हरिरेति कनिक्रदत् ॥

इति नीराजनं कुर्यात् । छत्र चढ़ाना—संकल्प पूर्वक देव पूजन करके श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलावाप्तये (अमुक कामनया) अमुक देव प्रीतये प्रतिष्ठा पूर्वक छत्र पूजनं करिष्ये ।। प्रतिष्ठा करके पंचामृत से गन्धाक्षतादि से छत्र का पूजन करे । प्रतिष्ठा पूर्वक अर्पण करे ।। मंत्र—ॐ बृहस्पतेच्छदि रसिपाप्मनोमान्तर्धेहि तेजसो यशसो मामन्तर्धेहि ।। इति सम्पूज्य अर्पयेत् ।।

अमावस्या तथा संक्रान्ति पर्व

(नित्यदान विधिः)

प्रातः स्नानं कृत्वा आचम्य दीपं प्रज्वाल्य शंखघोष पुरस्परं तिलकाक्षतारोपणं, पूर्वाभिमुखोपविश्य कांस्यपात्रे तण्डुलोपरि द्रव्यं (देयवस्तु सद्रव्यं) स्थापयित्वा गणपत्यादि पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा संकल्पः—ॐ विष्णुः ३ अमुकगोत्रोत्पन्नः (अमुकगोत्रा) अमुकराशिः अमुकशर्माहं (अमुकी देव्यहं) श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलावाप्तये अमुककामनया श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं तण्डुलादि दानं करिष्ये, तत् प्रतिग्रहार्थं ब्राह्मणस्य च पूजनपूर्वकं वरणं करिष्ये । ब्राह्मणस्य पाद प्रक्षालनं—ॐ आपद्घन ध्वान्त सहस्रभानवः समीहि तार्थार्पणं काम धेनवः । अपार संसार समुद्र सेतवः पुनन्तु मां ब्राह्मण पाद पांसवः ।। ततः अर्घ्यम् ॐ भूमिदेवा० गन्धाक्षत पुष्पैः सम्पूज्य प्रत्यर्घ्यं दत्त्वा ततस्तण्डुलपात्रं करयोगृहीत्वा—अमुकगोत्राय अमुकप्रवराय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय इदं तण्डुलादिकं तुभ्यमहं सम्प्रददे तथा दानसांगता सिद्ध्ये इमां दक्षिणां च दास्ये ॐ तत्सन्नमम् ।। ब्राह्मणः—ॐ स्वस्ति । ॐ कोऽदात् कस्माअदात् कामोऽदात् कामायादात् कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामैततै । अनेन दानेन श्री परमेश्वरः प्रीयतां नमम ।। ॐ यस्यस्मृत्या च० ॐ अच्युताय नमः ।। ३ ।।

सर्वदेवस्थापनम्

(प्रतिष्ठा विधिः)

सभी देवी देवताओं की प्रतिष्ठा स्थापना की वेदोक्त विधि—विष्णु भगवान्, श्रीराम, कृष्ण भगवान् आदि की प्रतिष्ठा में पुरुषसूक्त (सहस्रशीर्षा आदि सोलह मंत्रों) से तथा शक्ति सम्बन्धी देवियों की स्थापना में श्रीसूक्त ॐ हिरण्यवर्णा हरिणीं० आदि सोलह मंत्रों से और शिवपूजा में रुद्रसूक्त (ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव० आदि सोलह मंत्रों से न्यास तथा पूजन करे। न्यास अनेक हैं यहां पर षोडश न्यास विधि से पूजा व न्यास करे।

संकल्पः ॐ विष्णुः अद्योह० अस्याः स्वर्णमयी अमुकदेव प्रतिमाया घटनादि दोष परिहारार्थं देवता सान्निध्यार्थं च अग्न्युत्तारणपूर्वकं प्राण प्रतिष्ठां करिष्ये। मूर्तिं पात्रे निधाय घृतेन अभ्यज्य दुग्धजल धारां (पंचामृत स्नानं) दद्यात्। अग्न्युत्तारणम्—ॐ हिमस्यत्वा जरायुणाग्ने परिव्यायामसि पावकोऽस्मभ्य द. शिवो नः सुमना भव।। प्राण प्रतिष्ठा० छन्दः—ॐ अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्म विष्णु महेश्वरा ऋषयः सामानि छन्दांसि क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवताः आं वीजम् ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकम् अस्यां प्रतिमायां (अमुक मूर्तौ) अमुक देवतायाः प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं अस्या अमुक देव प्रतिमायाः प्राणाः इह प्राणाः ॐ आं ह्रीं क्रौं० अस्या अमुक देव प्रतिमाया जीवइह स्थितः।। ॐ आं ह्रीं क्रौं० अस्या अमुक देव प्रतिमायाः सर्वेन्द्रियाणि वाङ् मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणपादपायूपस्थानां देवा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।। ततः प्रतिष्ठा—ॐ एतन्ते देव० ॐ भूर्भुवः स्वः अस्यां प्रतिमायां (अस्या मूर्तौ) अमुकदेव इहागच्छ इहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव, ततः संस्कारसिद्ध्ये पंचदश प्रणव आंवृतिः (पन्द्रह बार ॐ कार जपे) अनेन अमुकदेवस्य पंचदश

संस्कारान् सम्पादयिष्ये (ऐसा बोले) करेण स्पर्श कुर्यात्-अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै
 देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ।। न्यासाः (सोलह मंत्रों से अपने शरीर में तथा देवता के अंगों में स्पर्श करे)
 यथा ॐ सहस्रशीर्षा० वामकरे । द्वितीय मंत्रेण (पुरुषएवेद ४. मंत्रेण दक्षिण करे । ३. वामपादे । ४. दक्षिणपादे ।
 ५. वामजानुनि । ६. दक्षिणजानुनि । ७. वामकट्यां । ८. दक्षिण कट्याम् । ९. नाभौ । १०. हृदये । ११. कण्ठे । १२.
 वामबाहौ । १३. दक्षिणबाहौ । १४. मुखे । १५. नेत्रयो । १६. मूर्ध्नि ।। अथ पंच अंग न्यासाः-ॐ अदभ्यः सम्भृतः०-हृदये
 २. वेदाहमेतं०-शिरसि ३. प्रजापतिश्चरति०-शिखायै वषट् ४. यो देवेभ्य०-कवचाय हुम् । ५. रुचं ब्राह्मं० अस्त्राय
 फट् । (सभी देवताओं के न्यास पुरुषसूक्त से तथा शिवन्यास रुद्रसूक्त से इन्हीं उपरोक्त मंत्रों से पूजन करे ।
 ततो ध्यानम्-देवीध्यान-ॐ विद्युदामसम० ।। गणपति-एकदन्तं० ।। विष्णुध्यान-सशख चक्रं० ।। राम का ध्यान-
 ध्यायेदाजानुवाहुं० । कृष्ण का ध्यान-वंशीविभूषित० ।। सत्यनारायण-नवाम्भोजनेत्रं० ।। शिव-ध्यायेनित्यं० ।।
 पुरुषसूक्त-सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् । सभूमि ४. सर्वतस्पृ-त्वात्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम् ।। ११ ।।
 पुरुषएवेद ४. सर्वं यद्भूतं यच्चभाव्यम् । उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ।। १२ ।। एतावानस्य महिमातो
 ज्ज्यायँश्च पूरुषः । पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ।। १३ ।। त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहा भवत्पुनः ।
 ततोविष्वङ् व्यक्रामत्साशानानशनेऽभि ।। १४ ।। ततोविराडजायतविराजोऽधिपूरुषः । सजातोअत्यरिच्यतपश्चाद्
 भूमिमथोपुरः ।। १५ ।। तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम् । पशूँस्तौश्चक्रैव्वायव्या नारण्याग्राम्याश्चये ।। १६ ।।
 तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे । छन्दा २ सिजज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्माद् जायत ।। १७ ।।
 तस्ममादश्वाऽअजायन्तये के चो भयादतः । गावो हजज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताअजावयः ।। १८ ।।

तयज्ञम्बर्हिषिप्रौक्षन्पुरुषंजातमग्रतः । तेनदेवाअजयजन्तसाद्धयाऋषयश्चये । १६ । यत्पुरुषव्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन् ।
 मुखंकिमस्यासीत्किम्बाहूकिमरूपादाउच्येते । १७० । ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्त्यः कृतः । उरुतदस्ययद्वैश्यः पदभ्या
 शूद्रोऽअजायत । १७१ । चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत । श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्चमुखवादगिरजायत । १७२ ।
 नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष ८. शीष्णोर्ध्वः समवर्तत । पदभ्याम्भूमिर्दिशः श्रीत्रात्तथालोकाँ २ ऽअकल्पयन् । १७३ ।
 यत्पुरुषेण हविषादेवायज्ञमतन्वत । व्वसन्तोऽस्यासीदाज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः । १७४ । सप्तास्यासन्न-
 परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः । देवायद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम् । १७५ । यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवा-
 स्तानिधर्माणिप्रथमान्यासन् । तेहनाकम्महिमानः सचन्तयत्रपूर्वसाद्धयाः सन्तिदेवाः । १७६ ।।

अथ रुद्रसूक्तम्—ॐ नमस्तोरुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवेनमः । बाहुभ्यामुततेनमः । १७१ । यातेरुद्रशिवातनूरघोरा
 पापकाशिनी । तयानस्तन्वाशान्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि । १७२ । यामिषुंगिरिशन्तहस्तेबिभर्ष्यस्तवे ।
 शिवांगिरित्रताङ्कुरुमाहि ८. सीः पुरुफजगत् । १७३ । शिवेनवचसात्वा गिरिशाच्छावदामसि । यथानः सर्वमिज्जगदयक्ष्म
 ८. सुमनाऽअसत् । १७४ । अद्धयवोचदधिवक्ताप्रथमोदैव्योभिषक् । अही २ श्चसर्व्वजम्भयन्त्सर्व्वार्श्चयातु-
 धान्योधराचीः परासुव । १७५ । असौ यस्ताम्रोऽरुणउतबभ्रुः सुमंगलः येचैन ८. रुद्राऽअभितो दिक्षुश्रिताः सहस्रशोर्वेषा
 हेडऽईमहे । १७६ । असौयोवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः उत्तैंगोपाऽअदृश्रन्नुदहार्य्यः सदृष्टोमृडयातिनः । १७७ ।
 नमोस्तुनीलग्रीवायसहस्राक्षायमीदुष । अथोयेऽअस्यसत्वानोहन्तेभ्योकरन्मः । १७८ । प्रभुघन्वन्स्त्वमुभयो राल्योर्ज्याम् ।
 याश्चते हस्तऽइषवः पराताभगवोव्वपः । १७९ । व्व्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवौ २ ऽउत । अनेशन्न
 स्ययाऽइषवऽआभुरस्य निषंगधिः । १८० । या तेहेतिर्मीदुष्टम हस्तेबभूवतेधनुः । तयास्मान् विशवतस्त्वमयक्ष्मयाप-
 रिभुज । १८१ । परितेधन्वनोहेतिरस्मान्नवृणक्तुव्विशवतः अथोयऽइषुधिस्तवारेऽअस्मि त्रिधेहितम् । १८२ ।
 अवतत्यधनुष्ट्व ८. सहस्राक्षशतेषुधे । निशीर्य शल्यानाम्मुखाशिवोनः सुमनाभव । १८३ । नमस्तआयुधानातताय

धृष्णवे । उभाब्ध्यामुततेनमोबाहुब्ध्यान्तवधन्वने ॥१४॥ मानोमहान्तमुतमानोऽअर्भं कम्मानऽउक्षन्त मुतमानऽ
उक्षितम् । मानोव्वधीः पितरम्मोतमातरम्मानः प्रियास्तन्ववारुद्वरीरिषः ॥१५॥ मानस्तोके तनयेमानऽआयुषिमानो
गोषुमानो ऽश्वेपुरीरिषः ॥ मानोव्वीरान् रुद्रभामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे ॥१६॥

वास्तु वेदी ६ x ६ = ८१

पूर्व

४६	७०	५०	५४	५८	६२	४७	६३
१	२	३	४	५	७	८	९
३२	३३	३	४	५	७	३४	१०
३१	३१	४४	३७	३७	३८	११	५१
३०	३०	४३	४५	४५	३६	१२	५५
२६	२६	४३	४५	४५	३६	१३	५६
२८	२८	४३	४५	४५	३६	१४	६४
२७	२७	४२	४१	४१	४०	१५	
२६	३६	२३	२२	२१	१६	३५	१६
२५	२४	२३	२२	२१	१६	१८	१७
४६	६६	६०		५६	५२	७१	४८

उत्तर

पश्चिम

२०८

४६	६६	६०	५६	५२	७१	४८
----	----	----	----	----	----	----

परिचय

२०८

